अनुक्रम

श

अ

अक़्ल

अक़्लसे काम लिया तो आदमी संकटसे पार हो जाता है; बेवक़ूफ़ीसे काम लिया तो अफ़लमें फंस जाता है। — योगवाशिष्ठ

अकस्मात

पहले एक बुनियादी बात बता दूं कि ईश्वरके नज़दीक इत्तिफ़ाक़न्, अकस्माती तौरपर, कुछ नहीं होता। — लौंगफ़ैलो

अति

अति दानसे दरिद्रता और अति लोभसे तिरस्कार होता है। अति नाशका कारण है। इसलिए अतिसे सर्वदा दूर रहे। ("अति सर्वत्र वर्जयेत्")। — शुक्रनीति

अतिक्रम

जो सज्जनोंका अतिक्रम करता है उसकी आयु, सम्पत्ति, यश, धर्म, पुण्य, आशिष, श्रेय ये सब नष्ट हो जाते हैं। — भागवत

अतिथि

सच्ची मैत्रीका नियम यह है कि जानेवाले मेहमानको जल्दी रुख़सत करो और आनेवालेका स्वागत करो। — होमर

अद्वैत

अर्जुन, इस ज्ञानका आश्रय लेकर मेरे स्वरूपको प्राप्त कर लेनेवाले प्रलय-कभी नहीं घबराते। — श्रीकृष्ण

अदया

अदयाके सिवाय और कोई कुरूपता नहीं है। — शेक्सपीयर

अध्यवसाय

अध्यवसायी लोग अपने कार्यमें कभी उद्विग्न नहीं होते। — योगवाशिष्ठ

अधिकार

सुन्दर वस्तुओंका नाश करनेके लिए ही मूर्खोंकी पदवृद्धि होती है। — योगवाशिष्ठ

अन्तरात्मा

सर्वोत्तम मार्गदर्शक अपनी अन्तरात्मा है। — अज्ञात

अन्तर्दृष्टि

दुनियामें कुछ ही लोगोंको अन्तर्दृष्टि प्राप्त है। अधिकांश अन्धे हैं। — बुद्ध

अन्न

पतित मनुष्यका अन्न नहीं खाना। — महाभारत, शान्ति पर्व

अनर्थ

यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक – इनमें-से प्रत्येक अनर्थ-कारक हैं, जहाँ चारों हों वहाँ क्या ठिकाना! — हितोपदेश

अनाशक्ति

आसक्ति दुःख है, अनासक्ति सुख। — योगवासिष्ठ

आसक्ति बन्धका कारण है, अनासक्ति मोक्षका। — योगवाशिष्ठ

जो अनासक्त है वह मुक्त है। — योगवाशिष्ठ

अनासक्त पुरुष कर्म करते हुए भी कर्मबन्धनमें नहीं पड़ता। — योगवाशिष्ठ

योद्धा वह है जो संघर्षकी चाट रखता है मगर हार-जीतसे उचाट रहता है। — अज्ञात

अनुभव

स्वानुभवकी बातें शब्दज्ञान हैं; स्वानुभव आत्मज्ञान है, किसीके स्वानुभवकी बातें कहने-सुननेसे कोई आत्मज्ञानी नहीं हो जाता, वह सिर्फ़ शब्द-ज्ञानी है। — अज्ञात

स्वानुभवसे जो प्रेरणा मिलती है वह कहने-सुननेसे नहीं मिलती।
— अज्ञात

स्वानुभवसे बड़ा कोई गुरु नहीं है। — अज्ञात

चतुर मनुष्य दूसरेके अनुभवको अपना बना लेता है। जिस रास्ते चलकर दूसरेने धोखा खाया हो वह उस रास्ते हरगिज़ नहीं जाता।
— अज्ञात

अपना-पराया

हितकर्ताको अपना समझो, अहितकर्ताको पराया। — भागवत

निकट सम्पर्कसे पराया भी अपना लगता है; निरन्तर दूर रहनेसे अपना भी पराया लगता है। — योगवाशिष्ठ

अपराध

पहले अपराध तो उनके हैं जो उन्हें करते हैं; दूसरे अपराध उनके हैं जो उन्हें होने देते हैं। — थॉमस फ़ुलर

देव तुम्हारे धैर्यपर रुष्ट हो आता है, वह उसकी निगहबानी रखता है,
और तुम्हें भी रखनी चाहिए, कि अपराधी बचकर भागने न पायें :
ज्यों-ज्यों अपराध बढ़ते जायें, न्यायको उग्र होते जाना चाहिए।
— बैन जॉन्सन

अपयश

बदनामसे मौत अच्छी। — योगवाशिष्ठ

अभय

जो अभयदान देता है उसे किसीसे भय प्राप्त नहीं होता, क्योंकि जैसा दान दिया जाता है वैसा फल प्राप्त होता है। — योगशास्त्र

अभिमान

अभिमान मोह-मूल है और बड़ा शूलप्रद है। — रामायण

कोई अभिमान टूटे बगैर नहीं रहनेवाला। — अज्ञात

अमरता

यह सच है; यह निश्चित है, मनुष्य मरकर भी अंशतः जीवित रहता है; अमर मन बाक़ी रहता है। — होमर

मौतके ठण्डे गालोंपर गुलाबी मुसकानें आ रही हैं, और क़ब्रसे अमर सौन्दर्य जाग रहा है। — जेम्स बीटी

अमरत्वका ताज उसके लिए नहीं है जो दिव्य ध्वनियोंके अनुसरणसे डरता हो। — कीट्स

नेक आदमी कभी नहीं मरता। — कैलीमैकस

मैं ईश्वरके पाससे आया था, और ईश्वरके पास वापस जा रहा हूँ, और अपनी ज़िन्दगीके दरमियान मुझे मौतका कोई खड्डा नहीं चाहिए।

— जॉर्ज मैक्डोनल्ड

मैं अबतक मरता रहा, अबसे मैं जीना शुरू करता हूँ। — ड्रमण्ड बर्न्स

अमीर

किसी बहुत अमीर आदमीको देखकर भी मुझे दुःख होता है।

— विनोबा भावे

अमृत

सुधाके नौ कुण्ड – अत्यन्त दयालु चित्त, सुमधुर वचन, प्रसन्नता-

से उज्ज्वल दृष्टि, क्षमायुक्त शक्ति, नीतियुक्त मति, दानोंको दीनताको नाश करनेवाली लक्ष्मी, शीलयुक्त रूप, मदरहित युवावस्था और उद्धतता-रहित प्रभुता। – प्रबन्धकोश

अवसर

खेतीके सूख जानेपर वर्षासे क्या फ़ायदा? समय चूक जानेपर पछतानेसे क्या फ़ायदा? – तुलसी

बिना अवसर बोलना-करना निरर्थक है। – अज्ञात

अविद्या

वस्तु-तत्त्व-विचारकोंके लिए अविद्या है ही नहीं। वही, अविचारके कारण, मूढोंमें वज्रसे भी दृढ़ हो जाती है। – बृहदारण्यक वार्तिकसार

आधी अविद्या सज्जनोंके सम्पर्कसे विनष्ट हो जाती है; चतुर्थांश शास्त्रज्ञान-से चली जाती है, शेष चौथाई अपने प्रयत्नसे ख़त्म की जा सकती है। – योगवाशिष्ठ

असंग

आनन्दरूप आत्माको भूलकर विषयसुखकी इच्छा करना संग है जो कि बन्धनका कारण है। लेकिन सर्वात्मभाव असंग है और मोक्षका कारण है। – योगवाशिष्ठ

असम्भव

ग़ैरमुमकिनातकी उम्मीदें न रखो। – फ़ुलर

प्रयत्न बग़ैर सब असम्भव है, यत्न और युक्तिसे सब सम्भव है। – योगवाशिष्ठ

नीतिके बग़ैर राज्य कैसे रह सकता है? हरि-चरित्रके वर्णन करनेपर पाप कैसे रह सकता है? परमात्माको जाननेवाला संसारमें कैसे पड़ सकता है? परनिन्दक सुखी कैसे हो सकता है? – रामायण

असत्य

झूठकी उम्र लम्बी नहीं होती । — सोफ़ोकिल्स

पापके बहुत-से हथकण्डे हैं लेकिन झूठ वह हैण्डिल है जो उन सबमें फ़िट हो जाता है । — होम्स

झूठ बोलनेवालेको न मित्र मिलता है, न पुण्य, न यश । — कल्पतरु

दो काली चीज़ोंसे एक सफ़ेद चीज नहीं बनती, निन्दाका जवाब निन्दासे, गालीका जवाब गालीसे, या हिंसाका जवाब हिंसासे देनेसे जगत्‌में दोषको ही वृद्धि होती है । — अज्ञात

असत्यके समान पातक-पुंज नहीं है । तमाम सत्कर्मोंका आधार सत्य है । — रामायण

अहंकार

कोयल दिव्य आम्ररस पीकर भी गर्व नहीं करता, लेकिन मेंढक कीचड़का पानी पीकर टर्राने लगता है । — प्रसंग-रत्नावली

'लोग मेरे इस गुणको जानें और मेरी तारीफ़ करें'—यह इच्छा अहंकारियोंको होती है । — योगवाशिष्ठ

अहंकारसे बहुत-से दुश्मन खड़े हो जाते हैं । — अज्ञात

जबतक 'मैं' और 'मेरा' का बुखार चढ़ा हुआ है तबतक शान्ति नहीं मिल सकती । — सूत्रकृतांग सूत्र

तत्त्वज्ञ और शान्त मनुष्यके नज़दीक 'मैं' और 'मेरा' नहीं होता । — योगवाशिष्ठ

जरा रूपको, आशा धैर्यको, मृत्यु प्राणको, असूया धर्मचर्याको, क्रोध श्रीको, अनार्यसेवा शीलको, काम लज्जाको और अभिमान सबको हरता है । — विदुरनीति

अहंकाररूपी बादलके हट जानेपर चैतन्यरूपी सूर्यके दर्शन होते हैं । — योगवाशिष्ठ

अहंकार बन्ध है, निरहंकार मोक्ष है। — योगवाशिष्ठ

जिसने अहंकार छोड़ दिया वह भवसागर तर गया। — योगवाशिष्ठ

अहिंसा

कीटको और इन्द्रको जीनेकी समान आकांक्षा है, और दोनोंको मृत्युका भय भी समान है। — इतिहास-समुच्चय

जो अपने सुखके लिए जीव-हिंसा नहीं करता, सुख पा जायेगा। —धम्मपद

जो किसीको दुःख नहीं देता और सबका भला चाहता है, वह अत्यन्त सुखी रहता है। — मनुस्मृति

श्रुतियोंमें अहिंसाको परम धर्म बतलाया है। — रामायण

अहिंसा परम धर्म है। अहिंसा परम तप है। अहिंसा परम ज्ञान है। अहिंसा परम पद है। — भागवत

अज्ञान

काँटोंसे उलझते हुए चलना निपट अज्ञान है। — टैरेन्स

नादान दोस्तसे दाना दुश्मन अच्छा। — ला फ़ौण्टेन

अरे राक्षस, अज्ञान, तू कैसा कुरूप लगता है! — शेक्सपीयर

वह ज़िन्दा आदमी जो सीखता नहीं है, अंधेरी रातमें घूमते हुए काले भूतके मानिन्द है। — मिंग लुम

जहाँ अन्धा और नंगा अज्ञान बेहयाईसे, दिन-भर सब बातोंपर किटकिटाते हुए फ़ैसले दिया करता है। — टैनीसन

अज्ञान ही अन्धकार है; मिस्री अपने कुहरेमें इतना नहीं चकराते जितना तू इसमें चकराता है। — शेक्सपीयर

हो सकता है कि कोई आदमी लम्बी उम्र पाये, और आखिर बहुत-सी

सचाइयोंमें अनजान मर जाये, जिन्हें वह जान सकता था, और निश्चित रूपसे जान सकता था। — लौके

वह आदमी जो औरोंका खूब जाना-पहचाना पर खुदसे अनजान मरता है, कराल कालके हाथों घोर यन्त्रणा पाता है। — सैनेका

जीव और ब्रह्मका भेद उत्पन्न करनेवाले अज्ञानका आत्यन्तिक नाश हो जानेपर आत्मा और ब्रह्मका मिथ्या भेद कौन करेगा? — विष्णुपुराण

आ

आकर्षण

ईश्वर जैसेके पास तैसेको लाता है। — अरस्तू

आचरण

जो सबके लिए हितकर हो और अपने लिए भी सुखकर हो उसीका नित्य आचरण करना चाहिए, क्योंकि वही सर्वार्थसिद्धिका मूल है।

— महाभारत, उद्योगपर्व

सत्य बोले, प्रिय बोले; किन्तु असत्य प्रिय न बोले, किसीके साथ व्यर्थ वैर और शुष्क विवाद न करे। — मनुस्मृति

माता, पिता, गुरु, स्वामी, भ्राता, पुत्र और मित्रका कभी मनसे भी क्षण-भरके लिए भी विरोध या अपकार न करना चाहिए। — शुक्रनीति

स्वजनसे विरोध, बलवान्से स्पर्धा, और स्त्री, बालक, वृद्ध तथा मूर्खसे विवाद नहीं करना चाहिए। — शुक्रनीति

कुपंथपर क़दम रखने बुद्धि और तेज लवलेश बाक़ी नहीं रहते। — तुलसी

विषम दशामें पड़कर मूर्ख आदमी तक़दीरको दोष देने लगता है, लेकिन अपने कर्मदोषको नहीं जानता। — विष्णु शर्मा

देशकालको देखकर चले । — संस्कृत-सूक्ति

आदमीको अपने उन कार्योंसे धन्यता प्राप्त नहीं होती जो उसे भव्य तो बना दें मगर दिव्य न बना पायें । — जॉर्ज चैपमैन

क्रोधको प्रेमसे जीते; बुराईको भलाईसे जीते; लोभको उदारतासे जीते; झूठेको सत्यसे । — धम्मपद

सबसे छोटा जवाब है करके दिखाना । — हरबर्ट

कितना अधिक करना है, कितना कम किया है । — सैसिल

दयाके छोटे-छोटे कार्य, प्रेमके ज़रा-ज़रा-से शब्द, हमारी पृथ्वीको स्वर्गोपम बना देते हैं । — जूलिया कार्नी

आज

ज़ालिम आजके सामने भूत और भविष्य कुछ भी नहीं है ।

— ऐडेलेड प्रॉक्टर

कौन जानता है कि ईश्वर आजके साथ कल भी जोड़ेगा ? — हौरेस

वह आदमी सुखी है, और वही सुखी है, जो आजको अपना कह सके, जो इत्मीनानके साथ कह सके, 'ओ कल, तेरी ताक़त हो सो कर ले, आज मैं जो भरकर जी लिया ।' — ड्रायडन

आज़ादी

मैं अपनी इस अकसर व्यक्त की गयी इच्छामें कोई हेर-फेर नहीं करना चाहता कि सब मुल्कोंके सब लोग आज़ाद हो सकते हैं ।

— अब्राहम लिंकन

पुश्तैनी गुलामो ! क्या तुम नहीं जानते कि जिन्हें आज़ाद होना होता है उन्हें ख़ुद ही प्रहार करना पड़ता है । — बायरन

मेरा वतन वह है जहाँ आज़ादी रहती है । — बेंजामिन फ्रैंकलिन

मुझे आज़ाद रहकर रास्तेका कुत्ता होना मंज़ूर है, मगर गुलाम बनकर तीन लोकका मालिक होना मंज़ूर नहीं । — महाकवि रामचन्द्र

ईश्वरने जब हमें जिन्दगी दी थी, उसी वक़्त आज़ादी भी दी थी ।

— थॉमस जफ़रसन

आदमी स्वतन्त्र पैदा किया गया है, और चाहे जंजीरोंमें पैदा हो, फिर भी आज़ाद है । — शिलर

जब वे 'स्वतन्त्रता ! स्वतन्त्रता !' चिल्लाते हैं, उनका तात्पर्य स्वच्छन्दता-से होता है, क्योंकि स्वतन्त्रतासे प्रेम करनेसे पहले आदमीको ज्ञानवान् और नेक होना चाहिए । — मिल्टन

नेक आदमी ही आज़ादीको दिलसे प्यार कर सकते हैं; बाक़ी लोग स्वतन्त्रता नहीं, स्वच्छन्दता चाहते हैं । — जॉन मिल्टन

जब आज़ादीका नाम लिया जाये, तो हमें यह हमेशा ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि कहीं व्यक्तिगत स्वार्थोंकी बात तो नहीं कही जा रही है जैसा कि उसके द्वारा अकसर किया जाता है । — हीगल

आज़ाद वही है जिसे सत्यने आज़ाद किया है, बाक़ी सब ग़ुलाम हैं ।

— कूपर

सिर्फ़ ज्ञानी आदमी आज़ाद है, और हर बेवक़ूफ़ ग़ुलाम है ।

— स्टोइक सूत्र

जो इन्द्रियोंका ग़ुलाम है वह आज़ाद नहीं है । — सैनेका

जितना संयम होगा उतनी आज़ादी होगी । — डेनियल वैब्स्टर

मैं दूसरेके दाल-भातमें मूसरचन्द नहीं बनता । — सरवेन्टीज़

अन्तिम कड़ी टूट गयी जिसने मुझे तुझसे बाँध रखा था, और जो शब्द तू बोला है उन्होंने मुझे आज़ाद कर दिया । — फ़ैनी स्टीअर्म

आज़ादीके लिए धमकियाँ नाकारा हैं । — सिसरो

जो न किसी चीज़से प्रेम करते हैं न किसी चीज़से घृणा, सब बन्धनोंसे आज़ाद हैं । — धम्मपद

मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ कोई मेरा सम्मान न करे, ताकि कुछ आज़ादी पा सकूँ । — रवीन्द्रनाथ टैगोर

भौतिक बन्धनसे छूटनेका उपाय है पूर्ण विवेकसे काम लेना, निरन्तर ।
— पतंजलि

अरे ! सिर्फ़ स्वतन्त्र आत्मा ही कभी वृद्धावस्थाको प्राप्त नहीं होगी ।
— जॉन पाल रिचटर

पुण्यशीला आज़ादीका एक दिन, एक घण्टा, गुलामीके अनन्त कालसे बढ़कर है । — एडीसन

आज़ादीकी क़ीमत है मुसलसल निगहबानी । — जॉन फ़िलपॉट

आज़ादी आदमीको पूर्ण शान्ति दे देती है । जो आज़ादीसे जीता है, वह सुखसे जीता है । — जॉन बारबोर

ईश्वरकी गुलामी पूरी आज़ादी है । — बुक ऑफ़ कॉमन प्रेयर

आत्मदान

मैं तो हर रोज़ यह अनुभव करता हूँ कि मेरे भीतरी और बाहरी जीवनके निर्माणमें कितने अगणित व्यक्तियोंके श्रमका हाथ रहा है ! और इस अनुभूतिसे उद्दीप्त मेरा अन्तःकरण कितना छटपटाता है कि मैं कमसे कम इतना तो इस दुनियाको दे सकूँ जितना कि मैंने उससे अभीतक लिया है । — आइन्स्टीन

आत्मनिर्भरता

चाहे ग़लत सोचो, लेकिन हमेशा स्वयं सोचो । — लैसिंग

आत्म-प्रशंसा

आत्म-प्रशंसाकी भूख मनुष्यके स्वभावकी सबसे व्यापक प्रवृत्ति है ।
— विलियम जेम्स

आत्म-विजय

जो चीज़ आत्मविजय दिलाये बग़ैर चित्तको निरंकुश करे, वह महा हानिकर है । — गेटे

आत्म-श्लाघा

सारी दुनियाको तिनकेके समान जानना आसान है; तमाम शास्त्रोंका ज्ञान पाना आसान है; परन्तु आत्म-श्लाघाको निकाल बाहर करना बहुत दुश्वार है। — रमण महर्षि

आत्मशुद्धि

वातावरणको बदलनेके लिए और बाहरी बन्धनोंको ढीला करनेके लिए आत्मशुद्धि अमोघ उपाय है। — गान्धी

आत्म-समर्पण

ईश्वर पूर्ण आत्मसमर्पणके बिना सन्तुष्ट नहीं होता। वास्तविक स्वतन्त्रताका इतना मूल्य वह अवश्य चाहता है। और जिस क्षण मनुष्य इस प्रकार अपनेको भुला देता है, उसी क्षण वह अपनेको प्राणी मात्रकी सेवामें लीन पाता है। वह उसके लिए आनन्द और शुभ परिहारका विषय हो जाती है। तब वह एक बिलकुल नया मनुष्य हो जाता है और ईश्वरीय सृष्टिकी सेवामें अपनेको खपाते हुए कभी नहीं थकता। — गान्धी

आत्म-सम्मान

हम अपनी अवहेलना न करें, आज जो हमारी निन्दा करते हैं कल स्तुति करने लगेंगे। — भगवान् श्रीकृष्ण

आत्मसम्मान! सबसे पहले आत्मसम्मान! — पिथागोरस

जिसे निज गौरवका ध्यान रहता है वह किसी चीजको मुफ्त पा जानेकी बनिस्बत उसे अपने पौरुषसे प्राप्त करता है — स्वामी रामतीर्थ

आत्मसम्मानकी रक्षा हमारा सबसे पहला धर्म है। आत्माकी हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले तो वह नरक है। — प्रेमचन्द

आत्म-साक्षात्कार

जगत्का परित्याग करना और अहंभावका नाश करके द्वैत तथा अद्वैतसे परे जाकर आत्मसाक्षात्कार करना सबको मान्य है। – रमण महर्षि

कोई चीज़ कितनी भी प्यारी क्यों न हो, अगर वह आत्मसाक्षात्कारमें बाधक हो तो उसे फ़ौरन हटा देना चाहिए। – स्वामी रामतीर्थ

आत्म-ज्ञान

इस जीवन-समुद्रमें एक ही रत्न है – आत्मज्ञान। – सूफ़ी

न यहाँ कुछ है, न वहाँ कुछ है। जहाँ-जहाँ जाता हूँ न वहाँ कुछ है। विचार करके देखता हूँ तो न जगत् ही कुछ है। अपनी आत्माके ज्ञानसे परे कुछ भी नहीं है। – शंकराचार्य

आत्माका पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान स्वानुभूतिसे ही होता है। – अज्ञात

'मैं कौन हूँ' यह जाननेसे पहले 'मैं क्या नहीं हूँ' यह देखो, तब 'मैं कौन हूँ' इसका पता लग जायेगा। – श्री ब्रह्मचैतन्य

आत्मज्ञान सर्वोत्तम ज्ञान है – नारद० पूर्व०

आत्मा

क्या तुम नहीं जानते कि तुम ही ईश्वरके मन्दिर हो और ईश्वरकी आत्मा तुममें रहती है? – इंजील

आत्मस्वरूप प्राप्त करनेका सबसे सहज उपाय निष्काम कर्मयोग है। – ज्ञानेश्वरी

अगर मेरे पास दो ही चपातियाँ हों तो मैं एकके फ़ूल खरीदूँगा ताकि रूहको गिज़ा मिल सके। – मुहम्मद

अन्तरंगमें समस्त सुखोंके भाण्डार, मुझ आत्मारामके प्रत्यक्ष रहते हुए भी, मायासे मोहित पुरुषोंकी वासना विषयभोगोंकी ओर ही प्रवृत्त होती है। – भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

आत्माकी तुम्हें थाह नहीं मिल सकती, वह इतनी अगाध है।

— हेराक्लीटस

यह आत्मा अनादि, अविनाशी, विकारहीन, शाश्वत और सर्वव्यापी है।

— ज्ञानेश्वरी

जो आत्माएँ ऊर्ध्वगामी नहीं हैं वे ईश्वरकी निकम्मी पैदावार हैं।

— अरविन्द घोष

जीवात्मा वह खिड़की है जिसमें-से परमात्मा परमात्माको देखता है।

— कृष्णप्रेम

आत्मा सो परमात्मा। — भगवान् महावीर

स्वानुभव, शास्त्र और गुरु इन तीनोंकी एकवाक्यता जिसे हो जाती है वह सतत आत्माको देखता है। — योगवाशिष्ठ

जिससे सब कुछ जाना जाता है, उसको किसके द्वारा जानें? — उपनिषद्

जो-जो कर्म होते हैं वे सर्वथा प्रकृतिके ही क्रियमाण हैं, यह जो जानता है वह आत्माको अकर्ता भी जानता है। — गीता

जिसके मनमें अपना निर्मल आत्मा नहीं बसता उसको शास्त्र, पुराण और तपश्चरण मोक्ष नहीं देंगे। — योगीन्द्रदेव

सारा जगत् आत्मा ही है, दूसरा कहीं नहीं है, ऐसी दृष्टिका आश्रय लेकर सम्यक् रूपसे स्थिर हो। — योगवाशिष्ठ

आत्मा ज्ञानस्वरूप है, यह बात ज्ञानी ही जानता है। — योगीन्द्रदेव

तू अपनी निर्मल आत्माका ध्यान कर जिसके ध्यानमें एक अन्तर्मुहूर्त स्थिर रहनेसे मुक्ति प्राप्त हो जाती है। और बहुत-से साधनोंसे क्या?

— योगीन्द्रदेव

मैं ब्रह्म ही हूँ, संसारी नहीं हूँ; मैं ब्रह्मसे भिन्न नहीं हूँ; मैं देह नहीं हूँ, मेरे देह नहीं है; मैं नित्य केवल हूँ। — शंकराचार्य

आत्माराम, परम उदयवाले प्रबुद्ध महात्मा, बाहरसे तरल और भीतरसे अचल होते हैं। – योगवाशिष्ठ

मैं कर्ता हूँ न करानेवाला, भोक्ता हूँ न भुगानेवाला, द्रष्टा हूँ, न दिखानेवाला, जो कैसा भी नहीं है ऐसा स्वयं ज्योति आत्मा मैं हूँ।
– विवेकचूड़ामणि

आत्मा सर्वव्यापक और असंग कैसा है यह आकाशसे सीखो।
– भगवान् कृष्ण

जिनका चित्त आत्म-स्वरूप हो गया है, उनके लिए संसार भी आत्म-स्वरूप हो जाता है। – शंकराचार्य

आत्म-स्वरूपमें लगा हुआ चित्त बाह्य विषयोंकी इच्छा नहीं करता, जैसे कि दूधमे-से निकाला हुआ घी फिर दुग्धभावको प्राप्त नहीं होता।
– शंकराचार्य

जैसे सर्वथा प्रभा रूप सूर्यमें दिन है न रात, उसी तरह सर्वथा ज्ञान-स्वरूप आत्मामें बोध-अबोध नहीं है। – उपदेशसाहस्री

जब आत्मा क्रोधमें होता है तब अपना शत्रु होता है, जब क्षमामें तब अपना मित्र। – महावीर

जो आत्मामें सब प्राणियोंको और सब प्राणियोंमें आत्माको देखता है वह किसीसे नहीं उकताता। – ईशावास्योपनिषत्

सुख और दुःखोंका कर्ता तथा विकर्ता स्वयं आत्मा है, आत्मा ही मित्र है, आत्मा ही शत्रु है, आत्मा वैतरणी नदी है, आत्मा कूटशाल्मली वृक्ष है, आत्मा कामधेनु है, आत्मा नन्दनवन है। – उत्तराध्ययन

हे अर्जुन! सब जीव भिन्न-भिन्न मार्गोंसे मेरी तरफ ही आ रहे हैं।
– भगवान् कृष्ण

ज्ञान और ज्ञेयके मूल-स्वरूप आत्माको जब पहचान लिया जाता है तब ज्ञान और ज्ञेय अदृश्य हो जाते हैं। – रमण महर्षि

आत्मा एक नदी है, इसमें पुण्य ही घाट है, सत्यरूप परमात्मासे ही यह निकली है, धैर्य ही इसके किनारे है, इसमें दयाकी लहरें उठती है, पुण्य-कर्म करनेवाला इसमें स्नान करके पवित्र होता है, और लोभरहित ही सदा पवित्र है। — सन्त विदुर

हे जीव, शुद्ध आत्मासे अलग और कोई तीर्थ मत जान, कोई गुरु मत सेव, कोई देव मत मान, तू निर्मल आत्माको ही अनुभव कर। —योगीन्द्रदेव

समाधि किसकी लगाऊं? पूजूं किसे? अछूत कहकर किससे अलग रहूं? कलह किसके साथ करूं? जहाँ भी देखता हूं अपनी ही आत्मा दिखाई देती है। — मुनि रामसिंह

जब तुम बाहरी चीजोंको पकड़ना और अपनाना चाहते हो, वे तुम्हें छल-कर तुम्हारे हाथसे निकल भागती हैं, लेकिन जिस क्षण तुम उनकी तरफ पीठ फेर दोगे और प्रकाशोंके प्रकाश स्वरूप अपनी आत्माकी ओर मुख करोगे उसी क्षण परम कल्याण-कारक अवस्थाएं आपकी खोजमें लग जायेंगी, यही दैवी विधान है। — स्वामी रामतीर्थ

आनन्द ही आत्माका स्वरूप है। — रमण महर्षि

सचमुच केवल आत्मा ही जगत जीव और ईश्वर है। — रमण महर्षि

परात्पर तत्त्वको आत्मा [illegible] ब्रह्म, पर उस तत्त्वको अनुभवमें लाओ। — समर्थ गुरु रामदास

आत्मा एक है और आनन्दमयी है। — समर्थ गुरु रामदास

आत्मा माद्दा-परस्तीमें फंसकर प्रवृत्तिके रास्ते गिरती जा रही है, उसे निवृत्तिके रास्ते चढ़ना है और जिस ईश्वरसे गिरी थी उसीमें लीन हो जाना है। प्रवृत्ति इन्द्रिय-सुखका रास्ता है; निवृत्ति इन्द्रिय-संयमका रास्ता है। — डॉक्टर भगवानदास

आत्मा न कभी पैदा होती है, न मरती है, न कभी घटती-बढ़ती है। — भागवत

परम-आत्माने अपनेको सीमित करके अपने शुद्ध अद्वैत रूपके ऊपर मिथ्या इतरताका जामा पहन लिया। ब्रह्मने मायावी काम-संकल्पके जरिये जीव-आत्माकी शक्ल अख्तियार की। अब जीव-आत्माको फिरसे अपने विराट् आलमगीर रूपको जानना और पहचानना है। इसी एक सत्यको सब मज़हबोंने तरह-तरहसे बयान किया है। — डॉक्टर भगवानदास

केवल आत्माकी ही बात सुननी चाहिए; उसीपर सोचना चाहिए; उसीपर ग़ौर करना चाहिए; और कोई न जाननेकी चीज़ है और न जाननेवाला है। — उपनिषद्

आदत

जिस आदतसे आनन्द न मिले वह आदत न डालो। — ज़िमरमन

आदमी

दुनिया आश्चर्यजनक चीज़ोंसे भरी हुई है, पर आदमीसे बड़ा कोई आश्चर्य नहीं। — सोफ़ाकिल्स

आदर्श

तुम दुनियाके प्रकाश हो। प्रकाशको ढककर नहीं रखा जाता। तुम्हारा प्रकाश लोगोंके सामने इस तरह चमके कि वे तुम्हारे नेक कामोंको देखकर ईश्वरके ऐश्वर्यकी झलक पा सकें।

— सन्त मैथ्यू (सरमन ऑन दी माउण्ट)

आदर्श आदमी व्यवहार-कुशल होता है। — समर्थ गुरु रामदास

सबसे ऊँचा आदर्श यह है कि हम वीतराग बनें। — गान्धी

सबसे ऊँचा आदर्श राग-द्वेषसे मुक्त हो जाना है। — गान्धी

आदर्श पुरुष

आदर्श पुरुष सत्कार्यका सदा समर्थन करता है और दुष्कार्यमें कभी शरीक नहीं होता। कठिनाइयोंमें घिर जानेपर उसे बाहर निकलनेका रास्ता मालूम रहता है। वह किसीको कभी अप्रसन्न नहीं करता। वह सबको प्रसन्न करनेकी कोशिश करता है। —समर्थ गुरु रामदास

आधार

दूसरेके आधारपर रहने लगनेसे परमेश्वरका आधार छूट जाता है। — उपासनी

पर भौतिक वस्तुका आध्यात्मिक आधार ढूँढ़ना सीखो। — थॉमस वोग्न

आनन्द

संयम और त्यागके रास्तेसे ही शान्ति और आनन्द तक पहुँचा जा सकता है। — आइन्स्टीन

जबतक सांसारिक वस्तुओंकी कामना नहीं मिटाते, प्रभु-प्राप्तिका आनन्द नहीं पा सकते। — स्वामी रामदास

आनन्द दूसरोंको कष्ट देनेसे नहीं बल्कि स्वयं स्वेच्छासे कष्ट सहनेसे आता है। — गान्धी

आनन्द केवल आध्यात्मिक जीवनमें है। — मुहम्मद

शरीरका आनन्द स्वास्थ्यमें है, मनका आनन्द ज्ञानमें। — थेल्स

आधी दुनिया आनन्द-प्राप्तिके लिए गलत रास्तेपर दौड़ी जा रही है। लोग समझते हैं कि वह संग्रह करने और सेव्य बननेमें है; लेकिन है वह त्याग करने और सेवक बननेमें। — हेनरी ड्रमण्ड

आनन्दका मूल है सन्तोष। — मनु

आनन्दका पौधा बुद्धिकी अपेक्षा नीतिकी भूमिमें अधिक लहलहाता है। — मीटरलिंक

आनन्द बढ़ता है ज्ञानके साथ, सद्‌गुणोंके साथ। – रिच

आनन्द मिलता है क्रियाशीलतामें। क़ुदरतका निज़ाम ही ऐसा है; वह बहता हुआ चश्मा है, सड़ता हुआ तालाव नहीं। – गुडे

आनन्द विवेकपर निर्भर है – यंग

वास्तविक और ठोस आनन्द वहाँ है जहाँ अति नहीं है। – गेटे

भूतलपर शान्त आनन्द मिलता है परिश्रमसे। – स्वाट्‌ज़

झूठा आनन्द आदमीको कठोर और अहंकारी बना देता है और वह आनन्द दूसरोंको नहीं दिया जा सकता। सच्चा आनन्द आदमीको दयालु और समझदार बनाता है और उस आनन्दका और लोग भी सदा लाभ लेते हैं। – मौण्टेस्क

जिसे कोई भौतिक शक्ति दिला सकती है न मिटा सकती है, वह है आत्माका शान्त प्रकाश और हार्दिक आनन्द। – अज्ञात

सारी ज़िन्दगी आनन्द! कोई ज़िन्दा आदमी ऐसा नहीं है जो उसे बर्दाश्त कर सके, वह तो भूतलपर नरकके समान है। – शेक्सपीयर

यहाँका विषयानन्द और स्वर्गका दिव्यानन्द, तृष्णाक्षयके आनन्दका सोलहवाँ भाग भी नहीं हो सकते। – महाभारत (शान्ति पर्व)

खुशी आज, रंज कल। – जर्मन कहावत

आनन्द हर आदमीके अन्दर है और वह पूर्णता और सत्यकी तलाशसे मिलता है। – गान्धी

आनन्दका रहस्य त्याग है। – गान्धी

आनन्दके माने हैं मानवी गौरवका दिव्य साक्षात्कार और मानवी स्वतन्त्रताकी तड़प, जो कि महज़ खुदग़र्ज़ी और आरामतलबीसे अपनेको बढ़कर समझती है और अपनी रक्षाके लिए उन्हें क़ुरबान कर देनेके लिए हमेशा खुशीसे तैयार रहती है। – गान्धी

आनन्द ईश्वरमें है । — पास्कल

केवल आनन्द ही कल्याणकारी वस्तु है, आनन्दित होनेका स्थान यहीं है, आनन्दित होनेका समय अभी है, आनन्दित होनेका उपाय दूसरोंके आनन्दमें सहायक होना है । — इंगरसोल

आनन्द-वृद्धिमें दो चीजें सबसे अधिक सहायक होती हैं, परिश्रम और संयम । — अज्ञात

आनन्दकी तलाशमें तुम दुनिया-भरमें भ्रमण करते हो ! सन्तोषसे उसे हर कोई पा सकता है । — होरेस

कर्तव्यपालन स्वाभाविक रूपसे आनन्दमें पुष्पित होता है । — फ़िलिप ब्रुक्स

आदमी अपने आनन्दका निर्माता स्वयं है । — थोरो

मैंने जान लिया है कि सुख इच्छाओंको सीमित कर लेनेमें है, उन्हें तृप्त करनेकी कोशिशमें नहीं । — जॉन स्टुअर्टमिल

दुनिया जिसे आनन्द कहती है उससे सावधान रहना, शाश्वत खुशियोंके अलावा सब खुशियोंसे सावधान रहना । — यंग

मनुष्यकी शक्ति और आनन्द इसमें है कि वह यह मालूम करे कि ईश्वर किस तरफ़ जा रहा है, और खुद भी उसी तरफ़ चले ।

— एच० डब्ल्यू० बीचर

अखण्ड आनन्द केवल गुणातीतको प्राप्त है । — अज्ञात

पवित्रताका मार्ग ही आनन्दका मार्ग है । — ईवन्स

आनन्दके समान कोई सौन्दर्य प्रसाधन नहीं । —लेडी ब्लैसिंग्टन

दुनियावी चीज़ोंमें सुखकी तलाश फ़िज़ूल है, आनन्दका खजाना तुम्हारे अन्दर है । — स्वामी रामतीर्थ

आनन्द मिलता है अपनी शक्तियोंको काममें लगानेसे । — अरस्तू

आनन्दका सबसे महत्त्वपूर्ण भाग है सम्यग् ज्ञान । — सोफ़ोक्लिस

आनन्दमय जीवन बहुत शान्त होना चाहिए, क्योंकि शान्त वातावरणमें ही सच्चा आनन्द जी सकता है । — बरट्रैण्ड रसल

हे भाई भरत ! पर-स्त्रीको मातृवत् समझना, परधनका कभी लोभ न करना, मर्यादाका कभी भंग न करना, नीचोंकी संगति कभी न चाहना, शत्रुके प्रति शौर्य दिखलाना, विपत्तिमें धैर्य रखना, सम्पत्तिमें विनीत होना – इन सबको आनन्दके निश्चित कारण समझना।

– भगवान् राम

आनन्द बाहरी हालातपर नहीं, अन्दरूनी हालातपर निर्भर है।

– डेल कार्नेगी

जीवन है तो आनन्द है; और परिश्रम है तो जीवन है। – टॉलस्टाय

आनन्दका प्रथम स्रोत है स्वास्थ्य। – सी० डब्ल्यू० कर्टिस

कर्त्तव्य-पालन स्वभावत: आनन्दमें पुष्पित होता है। – फ़िलिप ब्रुक्स

आनन्द और सद्गुणशीलताकी एक-दूसरेपर प्रतिक्रिया होती है; न केवल सर्वोत्तम लोग सर्वाधिक सुखी हैं बल्कि सर्वाधिक सुखी लोग बहुधा सर्वोत्तम होते हैं। – लिटन

भलाई करनेसे ही मनुष्यको निश्चित रूपसे आनन्द मिलता है।

– सर फ़िलिप सिडनी

आनन्द-शून्य जीवनसे तो जीवनका न होना अच्छा। – ड्राइडन

आसमानमें एक नया ग्रह ढूँढ़ निकालनेकी अपेक्षा ज़मीनपर आनन्दका एक नया स्रोत खोज निकालना अधिक महत्त्वपूर्ण है। – अज्ञात

इस दुनियामें हमारा आनन्द इसपर निर्भर है कि औरोंके हृदयोंमें कितना प्रेम संचारित कर सकते हैं। – डचैस डि प्रैसलियर

आनन्दमय हो जाओ। यही तुम्हारा लक्ष्य है। – अरविन्द घोष

आत्माकी चरम अनुभूति ही परम आनन्द प्रदान करनेवाली है।

– अज्ञात

परम आनन्दके उदित होनेपर न 'मैं' रहता है, न 'तू', न जगत् ।

— अज्ञात

भगवान् परिपूर्ण हैं, उनमें प्रेम करनेकी आवश्यकता है, ज्ञानमें आनन्द नहीं, प्रेममें आनन्द है । — उड़िया बाबा

अहंकारका नाश करके जिन्होंने आत्मानन्द प्राप्त किया है उन्हें और क्या पाना बाकी रहता है ? वे आत्माके सिवाय कुछ नहीं जानते ।

— रमण महर्षि

आत्माके आनन्दको कालकी सीमाएँ नहीं होतीं, वह तो अनादि और अनन्त है । — श्री अरविन्द

जो हृदयस्थ परमेश्वरको निरन्तर देखते रहते हैं उन्हींको शाश्वत सुख प्राप्त होता है । — श्वेताश्वतर

आनन्द और शान्ति प्रभुमय जीवनका फल है, लेकिन जो भावनाकी शरण नहीं लेता उसे वह नहीं मिलता । — सन्त पिगल

ब्रह्मज्ञान प्राप्त होनेपर मनुष्य तत्काल परम आनन्दका अधिकारी बनता है । — भगवान् कृष्ण

सच्चा दीन मनुष्य अप[illegible] हृद[illegible] आर[illegible] लेता है और शान्त रहता है । दुःख, विघ्न और मृत्यु भी उसके आनन्दके [illegible]ान हैं । — सन्त पिगल

मूर्तिमन्त दुर्दशा और मूर्तिमन्त दुर्भाग्य अपने सामने और चौतरफ़ फैला हुआ देखकर भी उस तरफ़ दुर्लक्ष करके केवल परमेश्वरी आनन्दमें मग्न रहनेकी इच्छा इनसान क्यूँ करता है ? — नाथजी

संसारसे उद्विग्न, पराजित और भयभीत लोगोंने ईश्वर-विषयक काल्पनिक आनन्दमें रमते रहनेका रास्ता निकाला है । इसी आनन्दको हम सात्त्विक आनन्द समझते आये हैं लेकिन उससे न कर्ममार्ग शुद्ध हुआ है, न संसार सुधरा है । — नाथजी

जिसे आत्मानन्दका अनुभव है वह विषयानन्दमें नहीं फँसेगा। क्या कोई चक्रवर्ती सम्राट् दो गाँवकी सोरकी इच्छा कर सकता है?

— श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

आपत्ति

आदमी छह मुसीबतोंमें डूबा रहता है—परलोकसे लापरवाही, शरीरको शैतानके सुपुर्द कर देना, मौतसे बेखबरी, भगवान्‌को खुश करनेके बजाय इनसानको खुश करनेकी फ़िक्र, सात्त्विक कामोंको छोड़कर राजस-तामस कामोंमें लगे रहना, और अपने दोषोंके समर्थनमें पहलेके धार्मिक पुरुषोंके दोषोंका हवाला देना। — तपस्वी जुन्नुन मिसरी

आभार

अहंकारीके आभारतले कभी न आना। — नाथजी

आभूषण

खामोशी ही स्त्रीका सच्चा ज़ेवर है। — सोफ़ोकिल्स

आयु

जैसे नदी बह जाती है और लौटकर नहीं आती, उसी तरह रात और दिन मनुष्यकी आयु लेकर चले जाते हैं फिर नहीं आते। —महाभारत

आराम

आदमीके मन और शरीरकी रचना ऐसी है कि वह काम करनेके उपयुक्त है, सूअरकी तरह आराममें पड़े रहनेके लायक़ नहीं। — जेम्स ऐलन

आलस

आलस आया कि परमार्थ डूबा। — श्री ब्रह्मचैतन्य

आलसकी क़ब्रमें सब सद्गुण दफ़न हो जाते हैं। — श्रीमती रोलेण्ड

आलस्य

आलस्य जीवित मनुष्यकी क़ब्र है । — कूपर

आलस्य सबसे अधिक विघ्नकारक है । आलस्यसे शरीर और मन दोनों ही दुर्बल होते हैं । — उड़िया बाबा

आलस्य दरिद्रताका मूल है । — यजुर्वेद

यदि जगत्‌में आलस्यरूपी अनर्थ न होता तो कौन धनी और विद्वान् न होता । आलस्यके कारण ही यह समुद्र पर्यन्त पृथ्वी निर्धन और मूर्ख (मनुष्यके रूपमें पशु) लोगोंसे भरी हुई है । — अज्ञात

आलसी

अगर तुम आलसी हो तो अकेले मत रहो; अगर तुम अकेले हो तो आलसी मत रहो । — जॉन्सन

आलसी आदमी पापी है । — वेद

आलसीकी कोई सदिच्छा कभी पूरी नहीं हुई । — सर्वेण्टीज़

आलसीके सिवा और सब लोग अच्छे । — वालटेयर

आलसीको कोई दवा नहीं लगती । — सामवेद

आलोचना

लोगोंको बकने दो और कुत्तोंको भोंकने दो । — जर्मन कहावत

जबतक आपने स्वयं अपना कर्तव्य पूरा न कर दिया हो तबतक आपको दूसरोंकी कड़ी आलोचना नहीं करनी चाहिए । — डिमॉस्थनीज़

आवाज़

बेवक़ूफ़की आवाज़ बुलन्द होती है, वर्ना उसको कोई सुनता नहीं ।

— ग्लेडस्टन

आशा

बिरानी आस छोड़कर अपने भुजबलसे काम ले। जिसके आँगनमें नदी है वह प्यासा क्यूँ मरे ? — कबीर

प्रयत्नशील मनुष्यके लिए सदा आशा है। — गेटे

आशा सदा हमसे कहती रहती है, "बढ़े चलो, बढ़े चलो" और यूँ हमें क़ब्रमें ला पटकती है। — मेडैम डि मेण्टेनन

धन्य है वह जो कोई आशा नहीं रखता क्योंकि वह कभी निराश न होगा। — चैनिंग

आशा ऐसा सितारा है जो रातको भी दीखता है और दिनको भी।
— एस० जी० मिल्स

आशा परम दुःख है, नैराश्य परम सुख है। परवश दुःखी और स्ववश सुखी है। — मनु

जिसके पास कुछ नहीं है वह सौ रुपये चाहता है, सौ रुपयेवाला हज़ार, हज़ार रुपयेवाला लाख, लाखवाला राजा होना चाहता है, राजा चक्रवर्ती बनना चाहता है, चक्रवर्ती इन्द्र पद, इन्द्र ब्रह्म पद, ब्रह्म शिव पद और शिव विष्णु पद चाहा करते हैं। आशाकी सीमाको किसने पार किया है ?
— काव्यसंग्रह

आशा ही दुःखकी जननी है, और निराशा (विरक्ति) ही परम सुख-शान्ति देनेवाली है। — भगवान् श्रीकृष्ण

आश्चर्य

क्या यह कम आश्चर्यकी बात है कि लोगोंको दुनियासे लगातार जाते हुए देखकर भी यह मन संसारका संग नहीं छोड़ रहा ? — संस्कृत सूक्ति

इस दुनियामें आश्चर्यकी बात यही है कि लोग अवसर पाकर भी धर्मका आचरण नहीं करते, बल्कि जान-बूझकर पाप करते रहते हैं, गोया अमृत छोड़कर विष पीते रहते हैं। — संस्कृत सूक्ति

लोग दिन-दिन मरते हैं, मगर जीनेवाले यही समझते हैं कि हम यहाँ सदा रहेंगे। इससे बड़ा आश्चर्य क्या होगा ? — शान्तिपर्व

आसक्ति

असन्मार्गमें आसक्त चित्तको तीव्र भक्ति-योग और वैराग्यसे वश करना।
— भागवत

स्त्रीपर कौन आसक्त होगा जो अनुराग करनेवालेपर वैराग्य करती है। मैं तो उस मुक्तिको चाहता हूँ जो वैराग्य करनेवालेपर अनुराग करती है। — संस्कृत सूक्ति

आदमी जब कभी किसी दुनियावी चीज़से दिल लगाता है, तभी उसको धोखा होता है, आप सांसारिक पदार्थोंमें आसक्ति रखकर सुख नहीं पा सकते – यही दैवी विधान है — स्वामी रामतीर्थ

आस्तिक

आज जो आस्तिक कहलाते हैं वे झूठ बोलते हैं, दूसरोंको ठगते हैं, स्वयं मालिक बनते हैं, यानी वे खुद ईश्वरके दुश्मन बनते हैं।
— विनोबा (भूदानयज्ञ ६।५७)

आहार

जो मुँहको अच्छा लगता है वह हमेशा पेटके लिए अच्छा नहीं होता।
— डेनिश कहावत

इस कथनमें बड़ी सचाई है कि आदमी जैसा आहार लेता है वैसा हो जाता है, जैसा स्थूल आहार वैसा स्थूल शरीर। — गान्धी

पूर्ण पुरुष खाऊ नहीं होता। — पुर्तगाली कहावत

युक्त आहार। — गोरखनाथ

थोड़ा खाता है तो भूखके मारे कल्पना-जल्पना करता है; अधिक खाता है तो रोगी हो जाता है, कोई बिरला योगी ही युक्त आहार करता है।

— योगी जालन्धरनाथ

दुःख दूर करना हो तो पहले आहार बदलो, सात्त्विक आहार लेना शुरू करो, दुःख दूर होगा।

आज्ञापालन

इन दो क़िस्मके आदमियोंकी कोई ख़ास क़ीमत नहीं : वे जो आज्ञापालन न कर सकें, और वे जो सिवाय आज्ञापालनके और कुछ न कर सकें।

— कर्टिस

इ

इख़लाक़

ख़ुशइख़लाक़ वह टैकनीक है [illegible] जरिये औरोंके जज़्बातका लिहाज रखा जाता है। — ए० डी० मिलर

पड़ोसकी नायाबी ख़ुशइख़लाक़से है, कोई ज्ञानी ऐसी जगह नहीं बसेगा जहाँ उसकी कमी हो। — कन्फ़्यूशियस

इख़लाक़—नेकचलनीका आख़िरी मुकम्मिल फूल! —विलियम विण्टर

इच्छा

इच्छाका समुद्र सदा अतृप्त रहता है; उसकी माँगें ज्यों-ज्यों पूरी की जाती हैं त्यों-त्यों और गर्जन करता है। — विवेकानन्द

हमारी वास्तविक इच्छाएँ कितनी कम हैं, और काल्पनिक कितना ज़्यादा !
— लैवेटर

"क्या चाहते हो ?"

"यह चाहता हूँ कि कुछ न चाहूँ" — सादी

परस्पर विरोधी इच्छाएँ कठिनाइयाँ रंज और दुःख लाती हैं ।
— स्वामी रामतीर्थ

इच्छा ही नरक है, सारे दुःखोंका आगार ! इच्छाओंको छोड़ना स्वर्ग प्राप्त करना है, जहाँ सब प्रकारके सुख यात्रीकी प्रतीक्षा करते हैं ।
— जेम्स ऐलन

जो तमाम इच्छाओंसे ऊपर उठ गया है उसके द्वारा भलाई सदा इस तरह अनजाने, सहज और स्वाभाविक तौरसे होती रहती है, जैसे फूलसे खुशबू और सितारोंसे रोशनी निकलती रहती है । — स्वामी रामतीर्थ

चार चीज़ोंसे मनुष्यकी इच्छा पूर्ण हो जाती है—श्रेष्ठ जनोंके संग हिले-मिले रहनेसे; सज्जनोंसे सलाह लेनेसे; दुष्टोंसे दूर रहनेसे; और फ़क़ीरोंसे मित्रभाव रखनेसे ।

कोई इच्छा यहाँ अपूर्ण नहीं रहती । — ख़लील जिब्रान

हम भगवान्की इच्छाके अधीन नहीं रहते, इसी कारण हमें बहुत-से दुःख और विक्षेप घेरे रहते हैं । — सन्त पिंगल

अपनी मर्ज़ीमें नहीं उसकी मर्ज़ीमें सुख मानो । — सन्त एपिक्यूरस

इच्छापूर्ति

इच्छाओंसे ऊपर उठ जाओ, वे पूरी हो जायेंगी; माँगोगे तो उनकी पूर्ति तुमसे और दूर जा पड़ेगी । — स्वामी रामतीर्थ

इच्छा-शक्ति

जीवनका एक उद्देश्य इच्छा-शक्तिको दृढ़ बनाना है, दृढ़ मनुष्यके लिए सदा सुअवसर है। — एमर्सन

जहाँ चाह है वहाँ राह है। — इटालियन और स्पेनी कहावत

अगर तुम्हारा इरादा ईश्वरके इरादेसे भिन्न है तो अन्य लोग तुमपर शासन जमाने लगते हैं। — रब्बी

जब आदमी अपनी इच्छापर नहीं ईश्वरकी इच्छापर चलने लगता है, तो वह पापसे मुक्त हो जाता है। — जैकब बोहिम

इज़्ज़त

इज्ज़त है ईमानदारीसे मेहनत करनेमें। — ग्रोवर क्लीवलैण्ड

यह ज्यादा अच्छा है कि तुम इज्ज़तके लायक़ बनो और उसे न पाओ, बनिस्बत इसके कि तुम उसे पा जाओ मगर उसके लायक़ न बनो।

— पुर्तगाली कहावत

इतिहास

मानव इतिहास अन्ततः विचारोंका इतिहास है। — एच० जी० वेल्स

इतिहास दसवाँ रस है। — टागोर

इनकार

जो 'ना' नहीं कह सकता वह आदमी नहीं है।

— इटालियन कहावत

'नहीं' अच्छा जवाब है बशर्ते कि वक़्तपर दे दिया जाये।

— डेनिश कहावत

लम्बे वायदेसे फ़ौरी इनकार अच्छा। — डेनिश कहावत

बेदिलीसे रज़ामन्द होनेकी बनिस्बत दोस्ताना तौरसे इनकार कर देना अच्छा। — जर्मन कहावत

जीवनका यह अजीब करिश्मा है कि अगर आप सर्वोत्तमके सिवाय और किसी चीज़को स्वीकार करनेसे इनकार करते जायें तो अकसर उसे पा जाते हैं। — विलियम सोमरसैट

इन्द्रिय

जब एक ही इन्द्रियके स्वच्छन्द विचरणसे जीव सैकड़ों दुःख पाता है, तब जिसकी पाँचों इन्द्रियाँ स्वच्छन्द हैं, उसका तो फिर पूछना ही क्या ! — मुनि देवसेन

इन्द्रिय-दमन

काम और क्रोधका मूल स्थान इन्द्रियाँ हैं। इन्हीं इन्द्रियोंसे कर्मप्रवृत्ति पैदा होती है। इसलिए सबसे पहले इन इन्द्रियोंको ही वश करना चाहिए। — ज्ञानेश्वरी

इन्द्रिय-सुख

इन्द्रिय-सुखाभासके चक्करमें पड़ना दीनता मंज़ूर करना है। — ज्ञानेश्वर

इन्द्रिय-सुख पराधीन है, बाधासहित है, विनाशी है, बन्धका कारण है और विषम है। इसलिए इसे सुख नहीं दुःख ही कहना चाहिए। — कुन्दकुन्दाचार्य

इन्द्रियाँ

इन्द्रियाँ जब खुद अपना ही समाधान नहीं कर सकीं तो तेरा समाधान क्या करेंगी ? — ज्ञानेश्वर

अविवेकी और चंचल आदमीकी इन्द्रियाँ बेखबर सारथीके दुष्ट घोड़ोंकी तरह बेक़ाबू हो जाती हैं। — कठोपनिषद्

अपनी इन्द्रियाँ ही अपने शत्रु हैं। — योगवाशिष्ठ

इन्साफ़

इन्साफ़ हो, चाहे आसमान फट पड़े। लॉर्ड मैन्सफ़ील्ड

इरादा

अगर दुनिया हमारे सुकृत्योंके पीछे रहे हुए इरादोंको जान जाये तो हमें अपने उत्तम कार्योंके लिए भी शर्मिन्दा होना पड़े। – फ़्रांकोइस

इलाज

मनकी प्रसन्नतासे तमाम शारीरिक और मानसिक रोग दूर हो जाते हैं और दूर रहते हैं। – स्वामी रामदास

ई

ईमान

ईमानवालोंमें सबसे जहीन वह है जो मौतको अकसर याद करता है और उसके आनेसे पहले उसके लिए बहतरीन तैयारी किये रहता है।

– मुहम्मद

बेईमान ईमानदारको नुक़सान नहीं पहुँचा सकता। बेईमान अगर कभी ईमानदारको धोखा देनेकी कोशिश करेगा तो वह धोखा लौटकर बेईमान-को ही नुक़सान पहुँचायेगा। – जेम्स ऐलन

वही हिन्दू है, वही मुसलमान है, जिसका ईमान दुरुस्त है। – कबीर

ईमानदार

जिसमें ईमानदारी और शराफ़त नहीं उसके लिए तमाम ज्ञान कष्टकारी है।

– मौण्टेन

ईमानदार आदमी भी धूर्त लोगों-द्वारा ठगे जाते हैं। — डीन स्विफ्ट

ईशकृपा

प्रभु कहते हैं कि जो कोई जितना मेरा बनेगा उतना ही मैं उसका बनूँगा।
— तपस्वी वायजिद बस्तामी

शक्ति-भर करना हमारा काम है, उसकी कमीको पूरा करना उसका काम है। — सन्त जैरम

ईश्वर तभी सहायक होता है जब आदमी स्वयं सहायक होता है।
— शिलर

जब हवा चलने लगे तो पंखा छोड़ देना चाहिए। जब ईश्वरकी कृपावृष्टि होने लगे तो प्रार्थना और तपस्या छोड़ देनी चाहिए।
— रामकृष्ण परमहंस

ईश्वर जल्दी उठनेवालेकी मदद करता है। — स्पेनी कहावत

ईशकृपा बिना (मानवी) इच्छाशक्ति कुछ नहीं कर सकती, और न इच्छाशक्ति ईशकृपाके बिना कुछ कर सकती है। — सन्त जॉन क्रीसस्टम

ईशकृपा यत्नशीलपर ही होती है। — स्वा० रामदास

मानव-बन्धुओंका तिरस्कार करके तुम प्रभुकी आशा नहीं रख सकते।
— स्वामी रामदास

ईशकृपा माने भगवान्से एकरूप हो जाना। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अगर तुम ईश्वरकी दी हुई शक्तियोंका सदुपयोग न करोगे, तो वह अधिक न देगा। इसलिए प्रयत्न आवश्यक है। ईशकृपाके लायक बननेके लिए भी पुरुषार्थ चाहिए। — रामकृष्ण परमहंस

हम जो माँगें सो मिल जाये—यह कोई ईशकृपा नहीं है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

ईश्वर एक दरवाज़ा बन्द करनेसे पहले दूसरा खोल देता है। — सादी

तू तभी मददके लिए आता है जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है। — गान्धी

विषयभोग मिलनेपर जिसे आनन्द न हो उसपर भगवान्की सच्ची कृपा हो गयी समझो। — श्री ब्रह्मचैतन्य

ईश्वर जिसपर प्रसन्न होता है उसे तीन प्रकारका स्वभाव देता है — नदी जैसी दानशीलता, सूरज जैसी उदारता, पृथ्वी जैसी सहन-शीलता।
— तपस्वी बायजिद बस्तामी

ईश-प्राप्ति

उस परात्पर परमात्माको जान लेनेपर इस जीवात्माकी हृदय-ग्रन्थि खुल जाती है, सब संशय कट जाते हैं और समस्त कर्म नष्ट हो जाते हैं।
— मुण्डकोपनिषद्

ईश्वर-दर्शन होनेके बाद तो प्रेमसे ही सेवा करनी है। — विनोबा

जब आदमी हमेशा आत्माकी तरफ़ ध्यान लगाये रहता है, काम और क्रोधसे ऊपर उठकर अपने अन्दर देखनेकी कोशिश करता है तब उसे ब्रह्मके दर्शन होते हैं, और तब वह सारी दुनियाको ठीक-ठीक समझकर खुद ब्रह्म हो जाता है। — गीता

जिसने अविनाशी परमात्माको जान लिया है वह सर्वज्ञ है, और वह सर्व-स्वरूप उस परमात्मामें ही मिल जाता है। — महर्षि पिप्पलाद

तू खुदाका भी ख्वाहाँ है और इस दुनियाका भी! यह खामख्याली है; यह दीवानगी है! — सूफ़ी

यक़ीन रख कि वह तुझमें हमेशा मौजूद रहता है, मगर जब तू बीचमें-से हट जायेगा, तो सिर्फ़ वह रह जायेगा। — सनाई

जो परम पदमें स्थित है उसे गुरुतर दुःख भी विचलित नहीं कर सकते ।
— गीता

राजहंस दूध पी लेता है और पानी छोड़ देता है, दूसरे पक्षी ऐसा नहीं कर सकते, उसी प्रकार साधारण पुरुष मायाके जालमें फँसकर परमात्माको नहीं देख सकते, केवल परमहंस ही मायाको छोड़कर परमात्माके दर्शन पाकर दैवी सुखका अनुभव करते हैं । — रामकृष्ण परमहंस

ब्रह्मकी प्राप्तिके उपाय क्या हैं ? सत्संग, दान, विचार और सन्तोष ।
— शंकराचार्य

ईश्वर अक़्लकी तलाशसे नहीं मिलता, बल्कि दिलकी बेताबी और उसके उभड़नेसे मिलता है । — इंजील

प्रभु कहते हैं कि तू अहंता-ममता छोड़ दे तो मुझे पा जायेगा ।
— तपस्वी बायजिद बस्तामी

खुदी और अक़्लको तर्क करनेसे अल्लाह नहीं मिलता, अल्लाहकी महर सिवाय टूटे हुए दिलवाले यानी दीन और आजिज़के दूसरेको नहीं मिलती ।
— एक सूफ़ी

तुम खुदाको और दुनियाकी दौलत दोनोंको एक साथ पानेकी आशा नहीं रख सकते । — इंजील

मैं चार बातें सबको बतलाता हूँ — (१) सहन-शक्ति, (२) निरभिमानता, (३) निरन्तर नामस्मरण और (४) भगवान् अवश्य मिलेंगे, इस बातपर पूर्ण विश्वास । — श्री उड़िया बाबा

जो परमात्माके दर्शन करना चाहे, सदा सुख भोगना चाहे और भवबन्धसे छूटना चाहे, उसे कामिनी और कांचनमें आसक्ति नहीं रखनी चाहिए, जो इनमें मन लगाये रहते हैं उन्हें सिद्धि नहीं मिलती । भगवान् उनसे सदा दूर रहते हैं । — श्री उड़िया बाबा

जिसके दिलकी तमाम कामनाएँ नष्ट हो जाती हैं वह ब्रह्मका यहीं साक्षात्कार कर लेता है। – कठोपनिषद्

जैसे तमाम नदियाँ अपने नामरूपोंको छोड़कर समुद्रमें जा मिलती हैं उसी प्रकार ज्ञानी नामरूपसे विमुक्त होकर दिव्य परम पद पाता है।

– उपनिषद्

परदोष-दर्शन भगवत्प्राप्तिमें महान् विघ्न है।

– श्री उड़िया बाबा

स्वाँग भरनेसे भगवान् नहीं मिलते। – संत तुकाराम

सूक्ष्म बुद्धि होनेपर भी यदि मनुष्य दुश्चरित्र है तो वह परमात्माको प्राप्त नहीं कर सकता। – कठोपनिषद्

इसी आत्मामें छिपा हुआ परमात्मा सदा सत्यानुशीलन, सम्यक्ज्ञान, ब्रह्मचर्य और तपसे ही प्राप्त हो सकता है। – मुण्डकोपनिषद्

भगवान् शारीरिक क्रियासे नहीं मिलते। भगवान्को पानेके लिए भावना चाहिए और उस भावनाके अनुसार आचार होना चाहिए। – गान्धी

जो ईश्वरको पा लेता है वह ईश्वर ही बन जाता है; और ईश्वरके लिए किसी और ईश्वरकी जरूरत नहीं होती। – सूफ़ी

सब चीजें तलाशसे मिलती हैं, मगर उस महबूबके बारेमें यह अजीब बात है कि जबतक तू उसे पा न लेगा उसकी खोज ही न करेगा।

– सनाई

मैं एक ऐसा मार्ग जानता हूँ जिसपर चलनेसे ईश्वरके पास जल्दी पहुँचा जा सकता है। वह मार्ग यह है कि तुम कभी किसी आदमीके पाससे कोई चीज़ पानेकी इच्छा न करो; और तुम्हारे पाससे कोई किसी चीजके पानेकी इच्छा करे तो उस चीजको कभी अपने पास न रहने दो।

– तपस्वी मारुफ़ गोरखी

दुनियाको प्रभुका विलास समझना ही ईश-प्राप्ति है। – स्वामी रामदास

ईश-प्राप्तिका सबसे शानदार तरीक़ा निष्काम सेवा है।

– स्वामी रामदास

जिसे ईश्वर-दर्शनकी अभिलाषा हो, सत्संग करे, क्योंकि सत्संगके बिना ईश्वर-प्राप्ति नहीं होती। – समर्थ गुरु रामदास

जिसने गाया उसने नहीं पाया; जिसने नहीं गाया उससे और भी दूर रहा; जिसने विश्वासपूर्वक गाया वह रामसे भरपूर हो गया। – कबीर

चतुराईसे हरि नहीं मिलते। ईश-प्राप्ति केवल निस्पृहीको होती है।

– कबीर

ईश-प्राप्ति करनी है तो पहले उस मायाजालसे बाहर निकलो जो तुम्हारी झूठी इच्छाओं और झूठे विचारोंने खड़ा कर रखा है।

– ईव्लिन अण्डरहिल

जब मनुष्य जान जाय कि उसके सब पाप धुल गये; जब वह जान जाय कि उसके जन्म-मरणका अन्त आ गया; जब वह आत्मा और परमात्माको जान जाय; जब वह जान जाय कि विश्व किस तत्त्वका बना है; जब वह जान जाय कि इन सबका कर्ता कौन है; – तो समझ ले कि उसे ईश्वर मिल गया। – समर्थ गुरु रामदास

अहंकारको मिटा देनेसे हरि मिल जाते हैं। – कबीर

जो अपना-सा जी सबका जानता है, उसे अविनाशी मिलते हैं।

– कबीर

ईश्वर

जो तलवारपर भरोसा रखता है वह ईश्वरपर भरोसा नहीं रखता।

– गान्धी

ईश्वरके तरीके आदमीके अंकगणितसे बढ़कर हैं। — गान्धी

जबतक ईश्वरमें ज्वलन्त विश्वास नहीं तबतक अहिंसामें ज्वलन्त विश्वास नहीं हो सकता। — गान्धी

ईश्वर ही हमारा अचूक और दायमी रहबर है। — गान्धी

मैं जानता हूँ कि ईश्वर सत्य है। मेरे लिए ईश्वरको जाननेका एक मात्र सुनिश्चित साधन अहिंसा, प्रेम है। — गान्धी

ईश्वरके नियम शाश्वत और अपरिवर्तनीय हैं और वे स्वयं ईश्वरसे अलग नहीं हैं। — गान्धी

ईश्वरका समूचा क़ानून पवित्र जीवनमें है। — गान्धी

ईश्वरके मानी हैं जीवनका जीवित नियम, फिर चाहे उसे कोई नाम दे लो। गान्धी

ईश्वर अहिंसककी ढाल है। — गान्धी

ईश्वर आत्माके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। — रमण महर्षि

आदमीसे डरना ईश्वरमें विश्वासके अभावका द्योतक है। — गान्धी

जो अनन्तको चुन लेता है, अनन्त-द्वारा चुन लिया जाता है। — अरविन्द

ईश्वरका दरवाज़ा सच्चे दिलसे खटखटानेवालोंके लिए बन्द नहीं है, ख्वाह उनकी पिछली भूलें और गिरावटें कुछ भी हों। — अरविन्द

प्रकृतिके उस तरफ़ है ईश्वर, ईश्वरके इस तरफ़ है प्रकृति। — अरविन्द

ईश्वर दोनों हाथोंसे नहीं मारता। — स्पेनी कहावत

ईश्वर हमारी शरण है, शक्ति है और हर मुसीबतमें तत्काल मिलनेवाली सहायता है। — बाइबिल

आख़िर ईश्वर है क्या? एक शाश्वत बालक जो एक शाश्वत बाग़में शाश्वत खेल खेल रहा है। — अरविन्द

पिता और माता दयालु हैं, परन्तु ईश्वर अधिक दयालु है।

— डेनिश कहावत

अगर ईश्वर नहीं है, तो उसका आविष्कार कर लेना जरूरी है।

— वौल्टेर

ईश्वर सचमुच कैसा है इसका अभी किसीको पता नहीं लगा।

— नाथजी

हमारी ईश्वर-विषयक कल्पना जितनी हो सके विवेक-शुद्ध, सरल और उदात्त होनी चाहिए। उसमें गूढ़ता या गुप्तता न होनी चाहिए।

— नाथजी

ईश्वर-विषयक कल्पनासे आश्वासन या आधार पानेके लिए किसी तरहके क्रियाकाण्डकी खटपट न होनी चाहिए। बल्कि श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा बढ़ती रहे ऐसा स्वाधीन और सादा उपाय उसमें होना चाहिए, मध्यस्थ, मार्ग-दर्शक या गुरुकी ज़रूरत न होनी चाहिए। — नाथजी

मैं सिर्फ़ उस ईश्वरमें विश्वास करूँगा जो नाचना जानता हो। — नीट्शे

ईश्वरका सार है ज्ञान और प्रेम। — स्वैडेनवर्ग

ईश्वर मेरे अन्दर है, ईश्वर मेरे बाहर! अतुलनीय! एक ऐसी [illegible] जो समूची यहाँ है और समूची वहाँ! — ऐंजेलस सिलीसियस

जिसे ईश्वरका साक्षात्कार हो गया है वह अपनेको सर्वव्यापक और सबके साथ एकमेक मानता है। — स्वामी रामतीर्थ

इस विश्वको देखकर मैं हैरान हूँ, मैं सोच ही नहीं सकता कि यह घड़ी तो है मगर इसका कोई घड़ीसाज़ नहीं है। — वौल्टेर

ईश्वरानुभूतिकी दशामें, दुनियामें जो कुछ अच्छा-बुरा होता है, क़ुदरती नज़र आता है और इसलिए कुछ असर नहीं डालता।

— स्वामी रामतीर्थ

जो ईश्वरके जितना नज़दीक आता जायेगा, उतना ही अधिक जनसेवाके लायक़ बनता जायेगा और उतनी ही अधिक जनसेवा उसके द्वारा होती जायेगी। — बरबौर

समस्त वस्तुएँ प्रभुमें एक हैं : वे स्वयं ईश्वर हैं। — मिस्टर एकहार्ट

सब प्राणियोंके शरीरको मन्दिर मानकर, उसमें रहनेवाले मुझको दान दे, मान दे, मित्र समझे और समदृष्टिसे देखे। — श्रीमद्भागवत

ज्ञानी उसको सर्वात्माके रूपमें जानते हैं। — अग्निपुराण

आदमी तरह-तरहके पदार्थ इकट्ठ करके भले मुझे पूजे; लेकिन अगर वह प्राणियोंकी अवज्ञा करे तो मैं उससे तुष्ट नहीं होता। — श्रीमद्भागवत

दीवार शून्य है, चितेरा अशरीरी है, फिर भी अनन्त रूप-रंगके चित्र खींचे हैं! — तुलसीदास

अच्छाई और बुराई दोनों उसी अल्लाहतालासे आती हैं। — क़ुरान

ईश्वरके अस्तित्वके लिए बुद्धिसे प्रमाण नहीं मिल सकता, क्योंकि ईश्वर बुद्धिसे परे है। — गान्धी

ईश्वरका सम्पूर्ण विशेषण तो सत्य ही है, बाक़ी तमाम विशेषण अपूर्ण हैं। — गान्धी

ईश्वरका दर्शन आँखसे नहीं होता। ईश्वरके शरीर नहीं है इसलिए उसका दर्शन श्रद्धासे ही होता है। — गान्धी

हे प्रभो, तुझसे मित्रता रखनेवाला नष्ट नहीं होता। — ऋग्वेद

मायाजालमें फँसे रहनेके कारण यदि परमात्मा दिखाई न पड़े तो यह मत कहो कि परमेश्वर नहीं है। — रामकृष्ण परमहंस

परमात्माके अनेक नाम और अनेक रूप हैं, जिस नाम और जिस रूपसे हमारा जी चाहे, उसी नाम और उसी रूपसे हम उसे देख सकते हैं। — रामकृष्ण परमहंस

ईश्वर मेरे अन्दरकी आग है, मैं उसकी चमक हूँ। – ऍंजेलस सिलीसियस

वेदका ईश्वर कर्ता-अकर्ता दोनों है, जगत् सारा ईश्वरमय है, इसलिए ईश्वर कर्ता है, लेकिन वह कर्ता नहीं है क्योंकि अलिप्त है। उसे कर्मका फल नहीं भोगना पड़ता। – गान्धी

सिर्फ़ ईश्वर है, और कुछ नहीं है। – गान्धी

सब प्राणियोंमें रहनेवाले मुझको छोड़कर मूर्तिको पूजता है वह मूढात्मा भस्ममें ही होम करता है। – श्रीमद्भागवत

ईश्वर ही एक महान् मालिक है, विचारक है, योजक है, निरीक्षक है। – बीचर

मनुष्यको प्रेम करना चाहिए, लेकिन वह वास्तविक प्रेम उसीसे कर सकता है जिसमें कोई बुराई नहीं है। इसलिए ऐसी कोई चीज़ ज़रूर होनी चाहिए जो बिलकुल निर्दोष है, और सिर्फ़ एक ही चीज़ ऐसी है जिसमें कोई दोष नहीं है – ईश्वर। – महर्षि टालस्टाय

ईश्वरका टेलीफ़ोन नम्बर निरहंकारता है। – भक्त कोकिल साई

हम बाँसुरी हैं, हमारा सारा संगीत तेरा है। – रूमी

ईश्वरको माननेवाला तलवारको चलानेकी ताक़त रखते हुए भी उसे नहीं चलाता क्योंकि वह जानता है कि हर आदमी ईश्वरकी मूर्ति है। – लोमिस – गान्धी

जो आज हमें नामुमकिन नज़र आ रहा है, कल ईश्वर उसे मुमकिन बना देगा। – गान्धी

ईश्वर हरएकको अपने-अपने कामोंके लिए ज़िम्मेदार ठहरायेगा, पड़ोसीके कामोंके लिए नहीं। – गान्धी

ईश्वर ही मेरी आशा, मेरा मुक़ाम, मेरा मार्ग-दर्शक और मेरे क़दमोंकी लालटेन होगा। – शेक्सपीयर

ईश्वर समस्त वर्तमान वस्तुओंको प्यार करता है ।

— सन्त थामस ऐक्वीनस

तुम ही ईश्वर हो, शरीर, मन, बुद्धिसे परे । — स्वामी रामतीर्थ

किसीने एक सन्तको खंजर घुसेड़ दिया, सन्त बोला, "तू भी भगवान् है"

— रेनोल्ड नीबर

नरककी गहराइयोंमें भी ईश्वर है । — ब्लेक

मैं प्राणीमात्रमें आत्माके रूपमें सदा रहता हूँ । जो उसकी अवज्ञा करके पूजा करता है वह पूजा नहीं पूजाकी विडम्बना करता है ।

— श्रीमद्भागवत

सात्त्विक भावनाओंमें ईश्वरका निवास है । — सूक्ति-मुक्तावली

ईश्वर छोटे लोगोंको छोटी बरकतें देता है । — डेनिश कहावत

जैसे सब नदियाँ टेढ़े-सीधे रास्तोंसे समुद्रको ही जा रही हैं, उसी तरह सब जीव रुचि-वैचित्र्यके अनुसार भिन्न-भिन्न मार्गोंसे प्रभुकी ओर ही जा रहे हैं । — शिव-महिम्न-स्तोत्र

जैसे अनेक इन्द्रियाँ एक ही चीज़के विविध गुणोंको बतलाती हैं, उसी तरह नाना शास्त्र एक ही प्रभुके असंख्य गुणोंको दर्शाते हैं । — भागवत

दूस[illegible]रीरमें रहनेवाला जो 'मैं' उसका जो आदमी द्वेष करे, अहंकार रखे, या [illegible]व माने, प्राणियोंके साथ वैर बाँधे उसका चित्त शान्ति नहीं पाता । — श्रीमद्भागवत

ऐसा कभी नहीं हुआ कि मैंने ईश्वरपर विश्वास किया हो और उसने मुझे धोखा दिया हो । — औलीवर क्रौमवैल

ईश्वर हमारा रूप धारण करता है ताकि हम उसका रूप धारण कर सकें । — ब्लेक

ईश्वर हफ्तेवार नहीं देता, सारा भुगतान अखीरमें करता है ।

— डच कहावत

ईश्वर निर्भयता है। – गान्धी

हे ईश्वर, मैं तुझे किसी मूल्यपर भी न छोड़ूँ। – ऋग्वेद

तुम ईश्वरको भले ही न पहचानो, कमसे कम उसके लक्षणोंको तो पहचानो। – अल-हलाज

हम ज्यों-ज्यों व्यष्टिको समझते जाते हैं, त्यों-त्यों समष्टिको समझते जाते हैं। – स्पिनोज़ा

ईश्वर एक है लेकिन वह अपने एकत्वसे घिरा हुआ नहीं है। – अरविन्द

ईश्वर सर्वव्यापक है, सब तरफ़ देख रहा है और विश्वमें निरन्तर उत्थान-पतन पैदा कर रहा है। – स्वामी रामतीर्थ

ईश्वर सत्य है। यानी, ईश्वर = सत्य। – गान्धी

ईश्वर कलके लिए संग्रह नहीं करता। – गान्धी

तमाम चहरोंमें चहरोंका चहरा दीख रहा है, ज़ेरे-नक़ाब पहेली बना हुआ। – निकोलस

सर्वोच्च सौन्दर्यको पा जाना ईश्वरको पा जाना है। – अरविन्द

मैं केवल एक बिन्दु हूँ, यह क्यूंकर है कि ईश्वर, [illegible]चा सिन्धु, मेरे अन्दर हिलोरें मारता है? – ऐंजेलस [illegible]

ईश्वर तक पहुँचनेकी दो मंजिलें हैं – विश्वास और अनुभव [illegible]त्यमूर्ति

सुनना जैसे आँखका विषय नहीं है, उसी तरह ईश्वरको जानना [illegible]यों या बुद्धिका विषय नहीं है। उसके लिए अलग शक्ति चाहिए और वह अचल श्रद्धा है। – गान्धी

ईश्वरका राज्य बाहर ढूँढ़नेसे नहीं मिलेगा, न कोई यह कह सकेगा कि लो यहाँ ईश्वरका राज्य है। लो वहाँ ईश्वरका राज्य है। क्योंकि देखो ईश्वरका राज्य सचमुच तुम्हारे अन्दर है। – [illegible]ील

हम उसके अंश हैं और वह हमारा। – हफ़ीज़

ईश्वरकी तरफ़ चलो। रास्ता मिल जायेगा। – रूसी कहावत

ईश्वरका केन्द्र हर जगह है, परिधि कहीं नहीं। –सन्त बनवन्तुरा

ईश्वरका विशिष्ट लक्षण है दान। – एकहार्ट

ईश्वर बिना घण्टी बजाये हमें देखने आता है। – पुरानी कहावत

इतमीनान रखो : ईश्वर केवल शान्त और निःस्वार्थ आत्माओंमें ही रहता है। – सन्त जॉन ऑफ़ दी क्रॉस

अहुरमज़्दके सिवा कोई दूसरा नहीं। – पारसी गाथा

ईश्वर सदा सामंजस्य (Harmony) और आनन्दके लिए कर्मरत रहता है। – स्वामी रामदास

पहले और पीछे वही अहुरमज़्द है और कोई नहीं है। उसने ही हम सबको रूप दिया है। अहुरमज़्द ही शुरू है, वही आखिर है।
– पारसी किताब

उस एक ईश्वरके सिवा मैं किसी औरको जानता ही नहीं।
– पारसी गाथा

मैं ही शुरू हूँ, मैं ही आखिर हूँ, मेरे सिवा कोई नहीं। मैं ही 'अलिफ़' हूँ मैं ही 'ये'। मैं वह रोशनी हूँ जो हर आदमीको रोशन करती है। मैं न हूँ तो तुम [illegible] नहीं कर सकते। – इंजील

[illegible]भ्यन्तरमें विष्णु विराजमान हैं। उसे छोड़कर जो बाहरके [illegible]ढ़ने जाते हैं वे नराधम हैं। – योगवाशिष्ठ

स[illegible]न् प्रभु आश्चर्य-स्वरूप और आश्चर्य-कारक है। वह अपनी आनन्दमयी अतिशक्ति-द्वारा हम सबकी रक्षा करता हुआ हमारा सच्चा मित्र बना रहता है। – यजुर्वेद

सत्य और अहिंसाके सिवाय और किसीको मैं अपना ईश्वर नहीं बना सकता। – गान्धी

मैं ईश्वरका हूँ, ईश्वर मेरा रक्षक है, ईश्वर जो कुछ करता है मेरे भलेके लिए करता है। – सन्त वचन

ईश्वर अपने भक्तपर कृपा करता है　　— अथर्ववेद

उसका कोई रूप नहीं, फिर भी वह हर रूपको रूप देता है।
　　— ताओ धर्म

सब कुछ ईश्वर ही कर रहा है। और वह जो कुछ कर रहा है वह भलेके लिए ही कर रहा है।　　— स्वामी रामदास

सत्यके सिवाय कोई ईश्वर ही नहीं है, और उसे मैं बेज़बान लोगोंमें पाता हूँ। इसीलिए मैं उनकी सेवा करता हूँ।　　— महात्मा गान्धी

मैं और मेरा बाप एक हैं।　　— ईसा

भगवान् अपने भक्तोंका सदा रक्षण करते हैं।　　— स्वामी रामदास

पुरुषोत्तम शक्ति-स्वरूपसे दृश्य जगत् है, और शिव-स्वरूपसे निष्क्रिय अपरिवर्तनीय, सर्वव्यापक ब्रह्म है।　　— स्वामी रामदास

वही अव्वल है, वही आखिर है, वही ज़ाहिर है, वही बातिन है, और वही सब चीज़ोंका जाननेवाला है।　　— कुरान

मैं ही आत्मा हूँ, मैं ही सब जीवोंकी जान हूँ।　　— श्रीकृष्ण

अल्लाहका वजूद, उसका इल्म सब चीज़ोंको घेरे हुए है। सब चीजें और सब जानदार उसके अन्दर समाये हुए हैं। सबमें वही है। [illegible] जहाँ कहीं भी हो वह तुम्हारे साथ है।　　— [illegible]रान

चूँकि तू हक़ीक़तको समझनेवाला है इसलिए असल हक़ीक़त [illegible] ही हक़ यानी असलियत है।　　— [illegible]त्यमौक्[illegible]

मैं ही सबका आदि, मध्य और अन्त हूँ।　　— [illegible]कृष्ण

वह छोटेसे भी छोटा और बड़ेसे भी बड़ा है।　　— उपनिषद्

वह अकेला खड़ा है और उसमें कोई तबदीली नहीं होती। वह घट-घटमें घूमता है और फिर भी वह सदा एक हालतमें रहता है। उसे दुनियाकी माँ कहा जा सकता है।　　— 'ताओ' धर्म

ईश्वर सबके हृदयमें विराजमान है। वहीं उसका दर्शन लेना चाहिए।
　　— ज्ञानेश्वर

ईश्वरको नापना आसमानपर ग़िलाफ़ चढ़ानेके मानिन्द है । – ज्ञानेश्वर

वह चलता है, वह नहीं चलता । वह सबसे दूर है, वह सबसे नज़दीक है । वह सबके अन्दर है, वह सबके बाहर है । – उपनिषद्

ऐ लोगो, तुम जो हजको जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो, कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारा माशूक यहीं मौजूद है, वापस आ जाओ, वापस आ जाओ । तुम्हारा माशूक तुम्हारा पड़ोसी है । तुम्हारी दीवारसे उसकी दीवार मिली हुई है । तुम जंगलमें सर खपाते हुए क्यों फिर रहे हो, क्यों फिर रहे हो ? तुम जो ख़ुदाको ढूँढ़ रहे हो, ढूँढ़ते फिरते हो, ढूँढ़नेकी ज़रूरत नहीं है, तुम ख़ुद ही ख़ुदा हो, तुम ख़ुद ही ख़ुदा हो । जो चीज़ कभी गुम हुई हो नहीं उसे काहेके लिए ढूँढ़ते हो ? तुम्हारे सिवा कोई है ही नहीं, कहाँ जात्ते हो, कहाँ जाते हो ? – शम्स तबरेज़ी

योगी लोग शिवको अपनी आत्माके अन्दर देखते हैं, पत्थर या मिट्टीकी मूर्तियोंके अन्दर नहीं, और जो लोग उस ईश्वरको अपने अन्दर नहीं देख पाते वे उसे [illegible]में ढूँढ़ते फिरते हैं । – शिवपुराण

जो यह समझता है कि ब्रह्म है उसका ज्ञान परोक्ष है, और जो जानता है [illegible] हूँ उसका ज्ञान अपरोक्ष है । – उपनिषद्

मेरे [illegible] और कोई दूसरा नहीं है, सचाई अच्छी तरह समझ लेनी [illegible] – भागवत

अगरचे क़ुरानके पन्नेपर तेरी बाबत यह खुशख़बरी लिखी हुई थी कि तू इनसानकी गरदनकी रगसे भी उनके ज़्यादा पास है, फिर भी मुझे तेरा पता न था, मेरी ख़ुदीने मुझे अन्धा कर रखा था । – एक सूफ़ी

जब [illegible]नेको सर्वत्र देखने लगो तो समझ लो कि ईश्वर-दर्शन हो गया । – स्वामी रामदास

यह आत्मा, यह मेरा आत्मा ही सब कामोंका करनेवाला है। सब इच्छाएँ, सब खुशबूएँ, सब रस यानी ज़ायक़े, सब आना-जाना, सब प्रेम-लगाव इसीके अन्दर हैं। इसके सब तरफ़ मुँह हैं, सब तरफ़ हाथ, सब तरफ़ पैर, सब तरफ़ सर, सब तरफ़ गरदनें, सब तरफ़ आँखें और सब तरफ़ कान। यही सब जानता है, सब सुनता है, सब जानदारोंके अन्दर है, सबको बनाता है, सबमें रमा हुआ है, सबको क़ायम किये हुए, सबको खतम करनेवाला है। सबकी जान इसीकी जानसे है। यह जान ही जान है। यह बेअन्त है, यह सबको सँभाले है, सबकी मौत इसका सोना है। जो कोई जो कुछ भी जानता है वह यही जानता है। यानी जो कुछ जानता हूँ मैं ही जानता हूँ, एक ही तो आत्मा है सबके अन्दर, सबसे अलग, सबका ईश्वर, सबमें मिला, यही एक सब है, यही मैं हूँ।

— उपनिषद्

एक ही परमेश्वर आत्मरूपसे सजा है। जीव भी वही है और शिव भी वही है। — ज्ञानेश्वर

जिसने ईश्वरके दर्शन कर लिये उसे किस चीज़की कमी रह सकती है?

— समर्थ गुरु रामदास

ईश्वर एक है और एकता पसन्द करता है। — हज़रत [illegible]

राम और कृष्ण भगवान्के ये दोनों नाम अति सुन्दर हैं। एक सत्यमूर्ति, एक प्रेममूर्ति, दोनों मिलकर एक ही। — [illegible]

ईश्वरको बाह्य जगत्में तो ढूँढ़ना ही ग़लत है। अन्तःकरणकी तहमें उसका अधिष्ठान है। — ज्ञानेश्वर

ईश्वर तो पूर्णके भी उस पार केवल अपरम्पार है। बिना प्रेमके उसका आकलन नहीं हो सकता। ईश्वर है तो ज्ञानमय, लेकिन मिला करता है वह प्रेमसे। — ज्ञानेश्वर

ईर्ष्या

सिर्फ़ गूँगे ही बातूनोंसे ईर्ष्या करते हैं। — ख़लील जिब्रान

अगर यह जान लिया जाय कि परिग्रह-पापी अपनी प्रचुरताका कितना कम भोगोपभोग कर पाते हैं, तो दुनियासे बहुत-सी ईर्ष्या मिट जाय। — यंग

ईर्ष्यालु

ईर्ष्यालु लोग बड़े दुखी लोग हैं, क्योंकि जितनी यन्त्रणा उन्हें अपने रंजोंसे होती है उतनी ही दूसरोंकी खुशियोंसे भी। — एजिस

ईर्ष्यालुका मन मुर्दा होता है, जैसे मरणासन्नका मन। — अथर्ववेद

ईर्ष्यालु लोग औरोंके लिए कष्टकर हैं मगर स्वयं अपने लिए महादुःख-दायक। — विलियम पैन

ईसा

ईसा फ़िज़ूल जिया और फ़िज़ूल मरा, अगर उसने हमें अपनी तमाम ज़िन्दगी प्रेमके शाश्वत नियमसे नियमित रखना नहीं सिखलाया। — गान्धी

उ

उच्चता

ऐ बुलबुल! तू तो वसन्तकी खुशगोइयाँ सुना; मनहूस बातें उल्लुओंके लिए रहने दे। — अज्ञात

उच्च पुरुष अपनी आत्मासे प्रेम करता है, नीच आदमी अपनी सम्पत्तिसे प्रेम करता है। — कन्फ्यूशियस

उच्चात्मा जानता है कि सच्ची चीज़ क्या है, तुच्छात्मा जानता है कि विकेगी कौन-सी चीज़ ! — कन्फ्यूशियस

उत्थान

किन्हींका पापसे उत्थान होता है, किन्हींका पुण्यसे पतन। — शेक्सपीयर

उत्साह

बिना उत्साह विवेक मन्दगति है; बिना विवेक उत्साह सिरज़ोर है, इसलिए उत्साह हमारे विवेकको प्रेरणा दे, और विवेक हमारे उत्साहको अंकुशमें रखे। — सन्त बर्नार्ड

ज्ञानशून्य उत्साह, बेलगाम घोड़ा। — बेट

अन्धे उत्साहसे नुक़सान ही नुक़सान है। — मैगनस गौटफ़ीड

दुनिया उस उत्साहीकी है जो शान्त रहता है। — विलियम मैक फ़ी

उदारता

ईश्वर प्रसन्न दातासे प्यार करता है। — बाइबिल

उदारको बहुत मिलेगा। — कहावत

अगर किसी फ़क़ीरके पास एक रोटी होती है, तो वह आधी आप खाता है आधी किसी ग़रीबको दे देता है। लेकिन अगर किसी बादशाहके पास एक मुल्क होता है तो वह एक मुल्क और चाहता है।

कंजूस आदमी कितना ही विद्वान् हो, लोग उसके दोष ही गिनाते हैं, लेकिन उदार पुरुषमें दो सौ दोष भी हों तो भी वे उसकी उदारतासे ढके रहते हैं। — सादी

पवित्र उदारता प्रत्युपकारकी भावना रखे बग़ैर परोपकार करती है।
— स्वेण्डनबर्ग

जो भाग्यशाली है वह उदार होता है, और उदारतासे ही आदमी भाग्यशाली बनता है। — सादी

अगर मुझमें पूर्ण विश्वास हो, जिससे कि मैं पहाड़ोंको भी हटा सकूँ, मगर उदारता न हो, तो मैं कुछ नहीं हूँ। — कौरिंथियन्स

उदार दे-देकर अमीर बनता है, लोभी जोड़-जोड़कर ग़रीब बनता है।
— जर्मन कहावत

उदारताका हर कार्य स्वर्गकी ओर एक क़दम है। — हैनरी वार्ड बीचर

जो एक दम बहुत कुछ कर देनेके इन्तजारमें है वह कभी कुछ नहीं कर पायेगा। — सैम्युएल जौन्सन

धर्मकी पूर्णता और शोभा है, उदारतासे। — ऐडीसन

उदारता मनुष्यके सब दुःखोंका इलाज है। — सादी

उदारता पापोंको ऐसे बदल देती है जैसे पारस लोहेको बदल देता है।
— सादी

उदारता पाप-समूहको धो डालती है। — बाइबिल

सबसे बड़ी उदारता है अनुदारके प्रति उदार बनना। — बकमिनिस्टर

दुःखीपर दया दर्शाना मानवोचित है, उसके दुःखका निवारण करना देवोचित। — होरेस मैन

उदासीन

मैं [illegible] और घरकी तरफ़से उदासीन हूँ, इसलिए उनके प्रति मैं दीपककी ज्योतिकी तरह निष्क्रिय हूँ, स्त्री, सन्तति, वैभव इत्यादिकी मुझे लवलेश इच्छा नहीं है, पर आत्मप्रातिक सुखसे भरा रहता हूँ। —भगवान् श्रीकृष्ण

उद्देश्य

जीवनका एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम जैसे [illegible] दिखें और जैसे बन सकते हैं वैसे बनें। — स्टीवेंसन

उद्धार

पहले अपनेको बनाओ, फिर दूसरेकी चिन्ता करो ।
— श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

आत्माका आत्मासे उद्धार करो । आत्मा ही आत्माका बन्धु है, और आत्मा ही आत्माका शत्रु है । — गीता

अपना स्वयंका उद्धार, समाजका उद्धार और जगत्का उद्धार एक-दूसरेसे अलग नहीं है । — नाथजी

उधार

अगर तुम किसी बार-बार आनेवाले दुष्टसे पिण्ड छुड़ाना चाहते हो, तो उसे कुछ पैसा उधार दे दो । — बेंजामिन फ्रैंकलिन

उन्नति

चित्तको शुद्ध करते-करते और सद्गुणोंकी वृद्धि करते-करते अपने अहंकारके नष्ट हो जाने तक और उन सद्गुणोंके हमारा स्वभाव बन जाने तक हमें आगे जाना है । — नाथजी

पृथ्वीपर सबसे ऊँचा हो, आकाशमें सबसे ऊँचा हो । — अथर्ववेद

हृदयकी विशालता ही उन्नतिकी नींव है । — जवाहरलाल नेहरू

अपनी उन्नतिके लिए किसी धार्मिक आडम्बर या कर्मकाण्डकी जरूरत नहीं है, सिर्फ़ हार्दिक लगनकी जरूरत है । — न[illegible]

दूसरेके अवगुण देखना ही अवनतिका कारण है । हर व्यक्तिसे [illegible] ग्रहण करना ही उन्नतिका कारण है । — श्री उ[illegible]

इतना ऊँचा हो कि सूरजको छू ले । — अथर्ववेद

जब आदमी उत्तम काम करने लगता है तो उससे नीचे दर्जेके काम दूसरे सँभालते हैं । मनुष्य ज्यों-ज्यों अपने लक्ष्यकी तरफ़ बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उसके सांसारिक और शारीरिक काम कुदरतके नियमानुसार और अच्छी तरह होने लगते हैं । — स्वामी रामतीर्थ

त्रुटियोंके संशोधनका नाम ही उन्नति है। — लाला लाजपत राय

त्यागके बिना कोई उन्नति नहीं हो सकती। — जेम्स ऐलन

उपकार

जैसे सूर्य और चन्द्र उपकार कर रहे हैं वैसे ही हम भी उपकार करते रहें। — ऋग्वेद

उपकार बिना किसीकी किसीसे प्रीति नहीं होती। — पंचतन्त्र

अहंकारी और लोभीके उपकारतले न आना। — नाथजी

उपकार व्यर्थ नहीं जाता। — अज्ञात

उपदेश

लोगोंकी समझ-शक्तिके मुताबिक उपदेश दो। — हदीस

पेट भरेपर उपवासका उपदेश देना सहल है। — इटालियन कहावत

जो किसी स्वच्छन्द और बदमिज़ाज आदमीको नसीहत करता है, उसे खुद नसीहतकी ज़रूरत है। — शेख सादी

जो नसीहत नहीं सुनता, वह लानत-मलामत सुननेका शौक़ रखता है। — शेख़ सादी

जैसे फूटे हुए नगारेकी आवाज़ अच्छी नहीं लगती, उसी तरह अनीति-मानका बोध भी असर नहीं करता। — भक्तराज यादवजी

जो दुनियाबी दौलत और शोहरतके पीछे मतवाला हो रहा है उसे धर्मोपदेश देना बेवक़ूफ़ी है। — तपस्वी जुन्नुन मिसरी

उपदेशक

अच्छा उपदेशक वह है जो अच्छी तरह जीता है। — स्पेनिश कहावत

हृदय-स्थित भगवान् विष्णु ही सम्पूर्ण जगत्के उपदेशक हैं। — भक्त प्रह्लाद

बहुत-से उपदेशक ऐसे हैं जो अपनी ही बातको नहीं सुनते। — जर्मन कहावत

उपयोगितावाद

चुस्त उपयोगितावादी कभी आत्मभोग नहीं देगा, दे ही नहीं सकता, इसके बरखिलाफ़ सबके श्रेयपर नजर रखनेवाला अपनी जानको होमनेमें भी नहीं हिचकेगा। — महात्मा गान्धी

उपहार

वह उपहार हानिकर है जो आजादी छीन ले। — इटालियन कहावत

जो उपहार स्वीकार कर लेता है, अपनेको बेच डालता है।

— इटालियन कहावत

खरीदी हुई हर चीज उपहारसे सस्ती पड़ती है।

— इटालियन और पुर्तगाली कहावत

जो कुछ स्वीकार नहीं करता उसे कुछ लौटाना नहीं पड़ता।

— जर्मन कहावत

उपाधि

भले ही तू आजीविका जितना ही प्राप्त करता हो, परन्तु निरुपाधिमय हो तो उपाधिमय राज्यसुखकी इच्छा करके तू अपना आजका दिन अपवित्र न करना। — श्रीमद्राजचन्द्र

उपाय

इस सबका सहल उपाय आज बताये देता हूँ कि दोषोंको देखकर दोष दूर करना। — श्रीमद्राजचन्द्र (पुष्पमाला)

उपासना

काम-द्वारा उपासना सब धर्मोंने उपदेशी है। — विनोबा

विश्वशक्तिका विविध कारबार सतत चल रहा है। उस कारबारमें-से अपने हिस्से आये हुए कामको हम भी निरन्तर करते रहें इसीमें परमेश्वर-की सच्ची उपासना है। — नाथजी

स्तुति और निन्दा दोनों ही उपासना हैं, स्तुतिमें उपासककी दृष्टि उपास्यके गुणोंपर रहती है, इसलिए वह गुणोंको ग्रहण करता है, और निन्दामें अवगुणोंपर, इसलिए वह अवगुण ग्रहण करता है। — उड़ियाबाबा

सगुणोपासनाका पर्यवसान निर्गुणमें ही होता है, पर सगुणके सहारे ही निर्गुणकी तरफ़ जाना चाहिए। — श्री ब्रह्मचैतन्य

सच्ची उपासना यही है कि जिस ईश्वरके हम उपासक हैं, उसीके प्रतिरूप बन जायँ, भगवान्‌को जानकर उससे अनन्त सौन्दर्यका रस पान करें और बलपूर्वक उसके कार्योंको करें। — ब्रुक्स

जिसका रूप और शब्दमें थोड़ा-सा भी अनुराग है वह सगुणोपासनाका अधिकारी है। निर्गुणोपासनाका अधिकारी वही है जिसका रूप या शब्दमें बिलकुल प्रेम न हो। — श्री उड़ियाबाबा

उपेक्षा

रोग, सर्प, अग्नि और शत्रुको छोटे या तुच्छ समझकर उनकी कभी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। — पुराना सुभाषित

उम्र

वयस्क वह है जो वासना-पूर्तिकी अपेक्षा ईश्वर-प्रीत्यर्थ कर्म करनेमें लगा रहता है। — सादी

ऋ

ऋषि

ऋषि वह है जिसने आत्मानुभव किया है। — गान्धी

ए

एकता

एकता चापलूसीसे नहीं क़ायम की जा सकती । — गान्धी

एकत्व

ब्रह्मज्ञानीके लिए सब जीव अपने आत्माके समान हो जाते हैं । एक परमात्माको ही देखनेवालेके मोह-शोक नष्ट हो जाते हैं । — यजुर्वेद

क्यों दुःख दीजिए ! सबमें साईं है । एक आत्मा ही है, दूसरा कोई नहीं । — दादू

जैसे हाथ, पैर वग़ैरह शरीरके अवयव माने जाते हैं वैसे ही लोगोंको दुनियाके अवयव क्यों न माना जाय । — बोधिचर्यावतार

जैसे अपने शरीरमें आत्मबुद्धि होती है, वैसे दूसरोंके शरीरोंके प्रति आत्म-बुद्धि क्यों न हो ? — बोधिचर्यावतार

सब एकके लिए, एक सबके लिए । — ड्यूमस

चाहे समस्त भेदभाव समाप्त हो चुका हो, फिर भी हे नाथ ! मैं ही आपका हूँ, न कि आप मेरे ! लहर समुद्रकी होती है, समुद्र लहरका नहीं । — शंकराचार्य

जो सर्व भूतोंको आत्मामें देखता है, और सर्वभूतोंमें आत्माको देखता है, उसे जुगुप्सा नहीं उपजती, जब जाननेवाला और भूतमात्र आत्मा ही हो गये तब एकत्व अनुभवनेवालेको मोह क्या और शोक क्या ? — ईशोपनिषद्

तुम सब एक ही दरख़्तके फल हो और एक ही शाख़की पत्तियाँ हो । इसलिए पूर्ण उदारता, मेल, प्यार और रज़ामन्दीसे रहो । — बहा उल्ला

हम दुनियामें अकेले आये थे और अकेले जायेंगे। धन-दौलत और सगे-सम्बन्धियोंको न साथ लाये थे, न साथ ले जायेंगे। – स्वामी रामदास

एक ही नूरसे सब पैदा हुए हैं, कौन भला है कौन बुरा। – कबीर

एकाग्रता

एकाग्रताकी मुख्य बाधा वैषयिकता है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

एकाग्रता माने समग्रता। – विनोबा

एकान्त

मुझे एकान्तसे बढ़कर साथ करने लायक़ साथी कभी न मिला। – थोरो

मेरे एकान्तसे परे एक और एकान्त है, उसमें रहनेवालेके लिए मेरा एकान्त एक जनाकीर्ण बाज़ार है और मेरी ख़ामोशी एक शोरीला जमघट। – ख़लील जिब्रान

मैंने एकान्तसे बढ़कर कोई मिलनसार साथी नहीं पाया। – थोरो

एकान्त भगवान्से भरा हुआ है। – सर्बियन कहावत

जो एकान्तसेवन नहीं करता वह कभी सोसाइटीका मज़ा नहीं ले सकता। – फ़ेरबेर्न

एकान्तसेवी या तो पशु है या देवता! – इटालियन कहावत

दो भी हुए तो गपशपमें अमूल्य समय व्यर्थ चला जाता है इसलिए एकाकी रहो। – भागवत

ऐ

ऐश

ऐशकी ज़िन्दगीसे बच! प्रभुके सेवक कभी ऐशकी ज़िन्दगी बसर नहीं करते। – मुहम्मद

ऐश्वर्य

श्रद्धासे ऐश्वर्य मिलता है। — ऋग्वेद

क़दम पीछे न हटानेवाला ही ऐश्वर्योंको जीतता है। — ऋग्वेद

जो प्रचुर धनराशिका स्वामी होकर भी इन्द्रियोंपर अधिकार नहीं रखता, वह इन्द्रियोंको वशमें न रखनेके कारण ही ऐश्वर्यसे भ्रष्ट हो जाता है। — सन्त विदुर

हे ऐश्वर्य ! तू हमारे आगे-आगे दौड़ा चल। — अथर्ववेद

जो ईश्वरके नज़दीक आ गया उसे किस बातकी कमी ? सभी पदार्थ और सारी सम्पत्ति उसीकी है, क्योंकि उसका परम प्रिय सखा सर्वव्यापी और सारी सम्पत्तिका स्वामी है। — वायजीद बस्तामी

औ

औरत

स्त्रियोंकी दयाशीलता मेरे हृदयको जीतेगी उनकी बाँकी चितवन नहीं। — शेक्सपीयर

ख़ूबसूरत औरत या तो बेवक़ूफ़ होती है या मग़रूर। — स्पेनी कहावत

क

क़र्ज़

क़र्ज़ महाविष है। — संस्कृत सूक्ति

ऋण अतल समुद्र है। — कार्लाइल

किसीका क़तई क़र्ज़दार न हो। — रोमन्स
भूखे सो रहो, मगर क़र्ज़ न लो। — जर्मन कहावत
परमेश्वरसे ऋणानुबन्ध जोड़नेसे जन्म-जन्मके व्यवहारी ऋणोंसे मुक्ति मिल जाती है। — उपासनी
ऋण लेनेवाला ऋण देनेवालेका गुलाम होता है। — कहावत
क़र्ज़ आज़ाद आदमीको ग़ुलाम बना देता है। — मीनेण्डर
जल्दी उठे और देरसे सोये तो क़र्ज़दार फिर उबर आये।
— जर्मन कहावत

कंजूस

कंजूस आदमी अगर ख़ूब धनवान् भी हो जाये तब भी अपनी ज़िल्लतसे वह मुफ़लिसकी तरह मार खायेगा। — सादी
दान देनेवाले अपने दानसे मीठा फल खाते हैं, कंजूस अपने चाँदी-सोनेका ग़म खाते हैं। — सादी
कंजूस अगर जल और थलमें सबसे बढ़कर पूजा-पाठ करे, तब भी उसे स्वर्ग नहीं मिल सकता, यह रसूलका कहना है। — सादी
'संसारमें सबसे दयनीय कौन है?' 'धनवान् होकर भी जो कंजूस है।'
— विद्यापति
कंजूसका गड़ा हुआ धन ज़मीनसे तभी बाहर निकलता है जब वह ख़ुद ज़मीनमें गड़ जाता है। — फ़ारसी कहावत
अगर आसमान कंजूस आदमीकी इच्छा पूरी करनेमें लग जावे, और अगर क़िस्मत उसकी गुलाम हो जावे, अगर उसके हाथमें कारूँका ख़ज़ाना आ जावे, और सारी दुनिया उसके क़ब्ज़ेमें आ जावे, तब भी कंजूस आदमी इस क़ाबिल नहीं है कि तू उसका नाम ले। — सादी

कंजूसी

हमारे भीतर कंजूसी न हो। — ऋग्वेद

हे कंजूसी ! मैं तुझे जानता हूँ, तू विनाश करनेवाली और व्यथा देनेवाली है। अथर्ववेद

कठिनाई

प्रभातका मार्ग निशामें होकर है। — ख़लील जिब्रान

कर्त्तव्य

मेरी राय मानो, अपनी नाकसे आगे न देखा करो, तुम्हें हमेशा मालूम होता रहेगा कि उसके आगे भी कुछ है, और वह ज्ञान तुम्हें आशा और आनन्दसे मस्त रखेगा। — बर्नार्ड शा

कोई क्षण ऐसा नहीं है जो कर्तव्यसे ख़ाली हो। — सिसरो

इस बातसे कौन इनकार कर सकता है कि हर वक़्तका कोई-न-कोई कर्त्तव्य होता है ? — चिंग चाऊ

दु:ख और क्रूरता कम करनेके लिए आदमीको सतत प्रयत्न करना चाहिए : मानव जातिका यही प्रथम कर्त्तव्य है। — रोम्याँ रोलाँ

देह धारण करनेपर हमारा जिसके प्रति जो कर्त्तव्य है उसे ठीक तरह करना ही रामचरित्रका सार है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

मनमें राम हो, हाथमें काम हो। — श्री ब्रह्मचैतन्य

मुझे करना चाहिए, इसलिए मैं कर सकता हूँ। — [illegible]

जो आत्मरत, आत्मतृप्त और आत्म-सन्तुष्ट है उसे कोई कर्त्तव्य नहीं है। — गीता

दुनियामें सबसे निकृष्ट आदमी कौन है ? जो अपना कर्त्तव्य जानते हैं लेकिन पालन नहीं करते। — रैवरेण्ड हैनरी मार्टेन

ग़ुलामीको कर्तव्य समझ लेना कितना आसान है। — विवेकानन्द

हमारी भाषाका भव्यतम शब्द है कर्त्तव्य। हमेशा अपने कर्तव्यका पालन करो। ज़्यादा तुम कर नहीं सकते। कम करनेकी इच्छा न करो। — आर० ई० ली०

इज़्ज़तदार हैं सिर्फ़ वे लोग जिन्होंने फ़र्ज़के साँचेमें अपने अमलको ढाला।
– वुडरो विल्सन

अपनी शक्ति-बुद्धिका और मानसिक भावनाओंका उत्कर्ष करते-करते, चित्तकी शुद्धि साधते-साधते और सद्गुणोंकी वृद्धि करते-करते अपनी मानवताका विकास करना यही हमारा जीवन-कार्य है। – नाथजी

कर्त्तव्य-पालन

उत्तम शुद्ध बुद्धिसे हम कर्त्तव्यका पालन करें। – ऋग्वेद

कृपा

ईश्वर ऐसा कृपालु है कि अपने भक्तोंको बिना माँगे देता है।
– सन्त तुकाराम

हर प्रेरणा और परिवर्तन उसीका लाया हुआ है, वह जानता है कि हमारे लिए क्या अच्छा है, उसका प्रधान लक्ष्य हमें अपनी ओर खींचता है, तमाम घटनाएँ वह इसी उद्देश्यकी पूर्तिके लिए लाता है।
– स्वामी रामदास

[illegible] प्राप्तिके प्रयासोंमें असफल होनेपर जो खिन्न और विरक्त होकर मेरे भक्तोंसे मित्रता करने लगता है, मैं उसपर अनुग्रह करता हूँ।
– भगवान् श्रीकृष्ण

कर्ता

सब काम ईश्वर करता है। – समर्थ गुरु रामदास

वास्तवमें जो कुछ हो रहा है, सबका कर्ता ईश्वर है। – रमण महर्षि

जो कुछ आता है, ईश्वरका भेजा हुआ आता है। – स्वामी रामदास

कथन

'मैं परमात्मा हूँ' कहने मात्रसे कोई परमात्मा नहीं बन जाता; जैसे 'मैं करोड़पति हूँ' कहने मात्रसे कोई करोड़पति नहीं बन जाता।

— सन्त नन्दलाल

साधु कानोंसे बहुत बातें सुनता है, आँखोंसे बहुत बातें देखता है; परन्तु देखी-सुनी सारी बातें किसीसे कहना उसे उचित नहीं है।

— भगवान् महावीर

मैं जो कुछ कहता हूँ उसका आधा भाग बेमानी है; लेकिन मैं उसे इसलिए कहता हूँ कि शेषार्ध तुम तक पहुँच सके। — ख़लील जिब्रान

महात्मा 'देखी हुई' बोलते हैं, शेष लोग सुनी-सुनाई बोलते हैं।

— सन्त नन्दलाल

क़फ़न

हमारे क़फ़नमें जेबें नहीं लगायी जातीं। — इटालियन कहावत

कर्म

पहली बात यह है कि एक क्षणके लिए भी खाली मत रह।

— निवृत्तिनाथ

ईश्वर नहीं चाहता कि इस दुनियामें कोई आदमी निकम्मा रहे, लेकिन मुझे यह भी उतना ही स्पष्ट दीखता है कि वह चाहता है कि हर आदमी अपने काममें आनन्द माने। — रस्किन

अविवेकके रास्ते चलोगे तो बरबाद हो जाओगे। — रिचार्ड

सर वाल्टर रेलेसे किसीने पूछा : 'आप इतने कम समयमें इतना ज्यादा काम कैसे कर लेते हैं?' जवाब मिला कि 'जब मुझे कुछ करना होता है तो उसे मैं उसी वक़्त कर डालता हूँ। देर करनेसे विवेक-शक्ति विशेष भी हो तो भी निष्फल हो जाती है।' — अज्ञात

जो कुछ करता है, वही जीवित रहता है। — इतिहास

मेरे दाहिने हाथमें कर्म है, बायें हाथमें जय है। — अथर्ववेद

जो कर्म उचित और अवसरप्राप्त (युगानुसार) है, उसे तू हेतुरहित होकर कर। — ज्ञानदेव

मैं एक वक़्तमें दो काम नहीं कर सकता। — ग्लेडस्टन

काम प्रत्येक मनुष्यका प्राणरक्षक है। — एमर्सन

गीताका सन्देश अपने हर-एक कामको ईश्वरीय बना देना है।
— स्वामी रामदास

गीताका भक्त कर्मका अधिकारी है, फलका कभी नहीं, और जिसका अधिकार नहीं उसका विचार क्या करना ? — गान्धी

विश्व-दर्शन और विश्व-प्रेम-जनित विश्व-सेवा ही कर्मयोगका रहस्य है।
— स्वामी रामदास

यह शक्तिका नर्तन आनन्दमय है। — स्वामी रामदास

प्रकृति जो काम तुम्हारे लिए निर्धारित करे उसे उसका काम समझकर पूरा कर दो। जब वह खेल बदलना चाहे तो परिवर्तनमें अपना नया पार्ट अदा करना शुरू कर दो। — स्वामी रामदास

जो जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है, अवश्य ही उसका फल भोगता है—इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। — महाभारत

कोई कर्म पाप है न पुण्य, वह केवल प्रकृतिका नर्तन है।
— स्वामी रामदास

जो मुनि योगारूढ़ होना चाहता है उसके लिए कर्म साधन है शान्ति साध्य; और जो योगारूढ़ हो गया है उसके लिए शान्ति साधन है कर्म साध्य। — गीता

हर काम ईश्वरके इशारेसे करो। — स्वामी रामदास

जो वस्त्र पिऊँ, सम्यक् प्रकार पिऊँ। — अथर्ववेद

पहले निन्दनीय कर्मोंको छोड़, फिर घरमें पैर रखना। – अथर्ववेद

जो काम आ पड़ें, साधना, पूजा, समझकर करो। – स्वामी रामदास

मनुष्य इस संसारमें कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीनेकी इच्छा करे।

– यजुर्वेद

आत्मलक्षी अनासक्त साधक कर्मोंको जल्दी जला डालता है। – आचारांग

आत्मा ही अपने दुःखों और सुखोंका कर्ता और भोक्ता है। अच्छे मार्गपर चलनेवाला आत्मा अपना मित्र है, बुरे मार्गपर चलनेवाला आत्मा अपना शत्रु है। – उत्तराध्ययन

अपनेसे हो सके वह काम दूसरेसे न कराना। – गान्धी

कर्मके लिए भक्तिका आधार होना आवश्यक है। –रामकृष्ण परमहंस

प्राणी अकेला जन्मता है, अकेला मरता है और अपने पाप-पुण्योंका फल अकेला ही अनुभव करता है। – भगवान् श्रीकृष्ण

कर्मकी सार्थकता फलमें नहीं कर्मण्यतामें है; उस पुरुषार्थमें है जो एक-एक क़दमकी गति, एक-एक क़दमकी चढ़ाईका आनन्द लेता है, वास्तवमें, चढ़ाईके प्रयत्नका सुख अपने-आपमें इतना मीठा है कि उसकी तृप्तिकी कोई सीमा नहीं। – जवाहरलाल नेहरू

जैसी करनी वैसी भरनी। – कहावत

निष्काम कर्म करनेसे ऐहिक पारलौकिक अखण्ड सुख मिलता है।

– उपासनी

बिना विश्वासके कर्म अतल गड्ढेकी तली तक पहुँचनेकी कोशिशके समान है। – महात्मा गान्धी

काम्यकर्मके न्यासको संन्यास कहते हैं; सब कर्मोंके फलके त्यागको त्याग कहते हैं। – गीता

अच्छी करनीसे अच्छी, और बुरी करनीसे बुरी तक़दीर बनती है।

– उपासनी

कर्मका त्याग तुमसे कभी करते न बनेगा। प्रकृतिका धर्म है कि वह तुमसे कर्म करा ही लेगी, चाहे तुम्हारी इच्छा हो या न हो, जब ऐसा ही है तब कर्म पूरी तरहसे क्यों न किया जाय? कर्म अवश्य करो, पर उसमें आसक्त न रहो। अनासक्त भावसे किया गया कर्म ईश्वर-प्राप्तिका साधन है। — रामकृष्ण परमहंस

कामको हाथों-हाथ ही कर डालना चाहिए, वर्ना जो काम पीछे रह जाता है वह हो नहीं पाता। — समर्थ गुरु रामदास

जवानीमें वह काम करे जिससे बुढ़ापेमें सुखी रह सके; और ज़िन्दगी-भर वह काम करे जिससे मरनेके बाद भी सुखी रह सके।

— सन्त विदुर

कर्म करते हुए सौ वर्ष तक उत्साहपूर्वक जियो। — उपनिषद्

जो कर्म अशास्त्रीय होते हैं, प्रमाद-आलस्यसे होते हैं वे तामसिक हैं, जो आसक्तिसे होते हैं वे राजसिक हैं, जो बुद्धिसे विचारकर शास्त्रीय कर्म होते हैं वे सात्त्विक हैं और जो मेरे आश्रयसे होते हैं वे निर्गुण हैं।

— भगवान् श्रीकृष्ण

संसारमें कोई किसीको सुख या दुःख नहीं देता, सब अपने-अपने कर्मोंके अनुसार प्रकृतिके प्रवाहमें बहे चले जा रहे हैं। किसीको सुखका निमित्त मानकर उसके साथ सटो मत। — अज्ञात

गन्तव्य स्थानकी ओर एकनिष्ठ पथिकके पैर बिना संकल्प चलते हैं, उसी प्रकार कर्ममें प्रवृत्त हो। — योगवासिष्ठ

लोकसंग्रहके लिए, समाजको अच्छी स्थितिमें रखनेके लिए, किये गये कर्म कर्ताके लिए कभी बन्धक नहीं होते। — ज्ञानेश्वरी

आत्म-स्वरूपमें लीन रहते हुए सब विहित कर्म करो और उन्हें प्रभुको अर्पित कर दो, कर्म करनेका अभिमान कभी मनमें न आने दो।

— ज्ञानेश्वरी

हमारी मज़ेदार बदकारियाँ ही हमारी उत्पीडक चाबुक बन जाती हैं ।
— शेक्सपीयर

समाजको सब प्रकारसे शुद्ध और स्वच्छ रखना कर्तव्य है । शास्त्रोंमें बतलाये हुए मार्गसे चलना चाहिए; सब लोगोंको अच्छे रास्तेपर लगाना चाहिए; और किसी प्रकार उनपर यह प्रकट नहीं होने देना चाहिए कि हम समाजसे अलग हैं ।
— ज्ञानेश्वरी

जो आत्मानन्दमें मग्न रहता है वह देहधर्मके चलते रहनेपर भी कभी कर्मफलसे लिप्त नहीं होता; क्योंकि वह आत्मज्ञानसे सन्तुष्ट रहता है, उसके जीवनका कर्तव्य समाप्त हो जाता है और उसके लिए कर्मका संग स्वयं ही नहीं होता ।
— ज्ञानेश्वरी

हम विश्वाससे चलते हैं, आँखोंसे नहीं ।
— बाइबिल

जो जैसा बोता है वैसा काटता है ।
— पुर्तगाली कहावत

हर कुकर्म अपने प्रतिशोधक देवको साथ लिये होता है ।
— शिलर

कर्म-सिद्धान्त अटल है; कोई उससे बचकर नहीं निकल सकता ।
— महात्मा गान्धी

आदमीको हर काम इतनी साधनाके साथ करना चाहिए मानो उसकी सफलतापर सारी सृष्टिका कल्याण निर्भर हो ।
— अज्ञात

भगवान्‌ने अर्जुनको कुरुक्षेत्रमें गीता सुनायी । गीताका पहले पाठ पढ़ानेके बाद उसे कुरुक्षेत्रमें नहीं ढकेला ।
— विनोबा

जिन्होंने सर्वज्ञता प्राप्त कर ली हो, विशेषतः उन लोगोंको तो कर्मोंका कभी परित्याग नहीं करना चाहिए ।
— ज्ञानेश्वरी

सत्य स्पष्ट रहे, ख्वाह तुम उसपर चल सको या न चल सको, कोशिश करोगे तो उसपर दिन-ब-दिन अधिकाधिक चल सकोगे ।
— रस्किन

अगर कोई निष्कर्मताका साधन करना चाहे तो वह इस संसारमें सम्भव ही नहीं है, अब इस बातका विचार आप ही कर लें कि निषिद्ध कर्म करने चाहिए या विहित कर्म ।
— ज्ञानेश्वरी

जो शास्त्रोंके आज्ञानुसार और स्वधर्मके अनुरूप सब कर्म करता है, वह उन्हीं कर्मोंकी सहायतासे मोक्ष भी अवश्य प्राप्त करता है। – ज्ञानेश्वरी

अगर हम अपना कल्याण चाहते हैं तो हमें ऐसे कर्मोंका कभी आचरण नहीं करना चाहिए जो दूसरोंके लिए भले ही उचित हों, पर जो हमारे लिए अनुचित हैं। – ज्ञानेश्वरी

जो यह समझ लेता है कि 'कर्म' ही 'ब्रह्म' है, उसके लिए कर्म करना भी निष्कर्म होनेके समान होता है। – ज्ञानेश्वरी

जिसके सब समारम्भ काम-संकल्प-शून्य होते हैं, और जो ज्ञानाग्निमें अपने सब कर्मोंकी आहुति दिये होता है, उसे तुम साक्षात् परब्रह्म समझो।
– ज्ञानेश्वरी

कर्मके सिवा यहाँ और कोई देनेवाला नहीं। केवल कर्म ही फलदायक होते हैं। – ज्ञानेश्वरी

जो अपना मूलस्वरूप पहचान लेता है और जो यह समझ लेता है कि कर्मोंका आचरण आत्म-स्वरूपकी दृष्टिसे बिलकुल मिथ्या है, वही सच्चा निष्कर्मा है। – ज्ञानेश्वरी

मूर्ख भटकता है, ज्ञानी चलता है। – पुरानी कहावत

हमने वे काम बे-किये छोड़ दिये, जिन्हें हमें करना चाहिए था; और हमने वे काम कर डाले जिन्हें हमें नहीं करना चाहिए था।
– बुक ऑफ़ कॉमन प्रेअर

जो करना चाहिए वही करो, चाहे कुछ हो जाय।
– फ़्रान्सीसी और इटालियन कहावत

कर्मका मूल्य उसके बाहरी रूप और बाहरी फलमें इतना नहीं है जितना कि उसके द्वारा हमारे अन्दर दिव्यताकी वृद्धि होनेमें है।
– अरविन्द घोष

आत्मानन्दकी प्राप्ति होते ही सब कर्मोंका नाश हो जाता है। पर जबतक आत्मबोध नहीं होता तबतक स्वधर्मपालन आवश्यक होता है।

— ज्ञानेश्वरी गीता

हम ऐसे ही कर्म करें जिन्हें भगवान् देखे तो हम लज्जित न हों।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

अगर हम फलकी आशा छोड़कर कर्म करें तो कर्म करते हुए समाधान प्राप्त होता है। इसीलिए सन्तोंने कहा है कि परमार्थमें रोकड़ा व्यवहार है, उधारका नहीं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

कर्मके त्यागमात्रसे कर्मसे छुटकारा नहीं मिल जाता। — ज्ञानेश्वरी

जो शरीरधारी होनेपर भी कर्मोंका तिरस्कार करते हैं उन्हें अज्ञानी और मूर्ख समझना चाहिए। — ज्ञानेश्वरी

जबतक मायाका आधार बना हुआ है, तबतक कर्मोंका त्याग हो ही नहीं सकता। — ज्ञानेश्वरी

जब मनुष्यको अखण्ड सन्तोष प्राप्त होता है, तब सब कर्म अपने-आप छूट जाते हैं। — ज्ञानेश्वरी गीता

आरम्भमें ही सब फलोंकी आशा छोड़कर कर्मका आरम्भ करना चाहिए।

— ज्ञानेश्वरी

कर्मके बन्धक तत्त्व दो हैं — कर्तृत्वका अभिमान और कर्मफलका लोभ।

— ज्ञानेश्वरी

कर्म-जालसे वे ही छूट सकते हैं जो कर्म करते हुए भी उनके फलोंकी आशा नहीं रखते। — ज्ञानेश्वरी

कर्मकाण्डी

ऐ रस्मपरस्तो, तु पर अफ़सोस है! तुमने ज्ञानकी कुंजी ले ली है, पर ज्ञानका दरवाजा खोलकर तुम उसके अन्दर नहीं गये, और जो अन्दर जाना चाहते थे उन्हें भी तुमने रोक दिया। — ईसा

कर्मफल

कर्ता यदि कर्मफलकी आशा न रखे तो अकर्ता ही रहता है।

– ज्ञानेश्वरी

जो जैसा करता है वैसा फल पाता है। – सन्त तुलसीदास

आदमी जो बोयेगा सो काटेगा। – बाइबिल

जब किसी कष्टका कारण इस जन्ममें मालूम और दिखाई न दे तो समझ लेना चाहिए कि यह किसी पिछले जन्मका पापफल है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

कर्मयोग

कर्मसंन्यास व कर्मयोग ये दोनों मोक्षदायक हैं, पर इनमें भी कर्म-संन्यासकी अपेक्षा कर्मयोग श्रेष्ठ है। – गीता

कर्मयोगके मानी हैं कर्ममें मुक्ति। – स्वामी रामदास

मैं नहीं जानता कि मैं कर्मयोगी हूँ या और कोई योगी। पर यह जानता हूँ कि मैं कामके बग़ैर जी नहीं सकता। – महात्मा गान्धी

हम अकेले ही किसी श्रेष्ठ भूमिकापर आरूढ़ हैं, ऐसी कल्पनामें न रहकर, हम और हमारे आस-पासका मानव समाज सतत उन्नत होता रहे, इस प्रकारका कर्मयोग हमें सिद्ध करना चाहिए। यह कर्मयोग ही मानव-धर्म है। उस कर्मयोगका आचरण करते रहकर हम अपनी उन्नति करें, यही हमारा जीवन-कर्तव्य है। – नाथजी

कर्मशीलता

ज़िन्दगीमें रंग भरनेवाली कर्मशीलता है। – अमील

आत्माका आनन्द कर्मशीलतामें है। – शेली

कम्युनिज़्म

कम्युनिज़्मके सिद्धान्तका सार एक वाक्यमें बतलाया जा सकता है : तमाम वैयक्तिक सम्पत्तिका खात्मा कर दो। – कार्लमार्क्स

हिन्दुस्तानमें कम्युनिज़्म धीरे-धीरे सर्वोदयकी तरफ़ आयेगा। लेकिन उसके लिए सिर्फ़ एक बातकी ज़रूरत है कि हम आस्तिक कहलानेवाले अपनी मिलक़ियत मिटायें। — विनोबा

कमाई

पुण्यकी कमाई मेरे घरकी शोभा बढ़ाये, पापकी कमाईको मैंने नष्ट कर दिया है। — अथर्ववेद

जिसने कमाई की हो उसे चाहिए कि वह उसे छेदोंवाले झोलेमें रखे। — बाइबिल

कमाल

कमाल जितना गहरा होगा उतना ख़ामोश होगा। — हलीफ़ैक्स

कल

कल आजतक किसी आदमीपर उदित हुआ न अस्त। — विलियम मार्सडन

कलकी चिन्ता करना आज विकल होना है। — अज्ञात

हर कल अपनी रोटी साथ लाता है। — फ्रान्सीसी कहावत

'कल', 'कल', 'आज नहीं'; आलसी आदमियोंसे यही सुनते रहिए। — वीसे

कला

प्रकृति ईश्वरका प्रकट रूप है, कला मनुष्यका। — लौंगफ़ैलो

सच्ची कला कलाकारकी पवित्रता, शान्ति और आनन्दका प्रमाण होनी चाहिए। — महात्मा गान्धी

कलाको कला होनेके लिए शान्तिदायिनी होना चाहिए। — गान्धी

कला ईश्वरकी प्रपौत्री है। — दान्ते

कला कलाके लिए नहीं है, मानव जातिकी सेवाके लिए है। — मूसर्गस्की

जब कभी कोई आदमी सत्यमें सौन्दर्य देखने लगे, तभी सच्ची कलाका प्रादुर्भाव होता है। — महात्मा गान्धी

भगवान् अपनेसे जो करा ले उसे कला समझना। — श्री ब्रह्मचैतन्य

सच्ची कला यह है कि बाहरसे प्रपंची दिखे लेकिन अन्दरसे परमार्थी रहे।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

इसमें चातुरी है, मगर क्या इसमें कला भी है? — किपलिंग

जब कि मेरी जीवन-यात्रा समाप्त होनेवाली है, मैं कह सकता हूँ कि जीवनकी पवित्रता ही सबसे सच्ची और सबसे ऊँची कला है।
— महात्मा गान्धी

हर सच्ची कला आत्म-साक्षात्कारमें सहायक होनी ही चाहिए।
— महात्मा गान्धी

कलाकार

सबसे महान् कलाकार वह है जिसकी कृतियोंमें महानतम विचार अधिकतम संख्यामें हों। — रस्किन

कलाकार वस्तुओंको उनके रूपमें नहीं अपने रूपमें देखता है।
— अल्फ्रेड टोनेल

महान् कलाकार वह है जो सत्यको सरल कर दे। — ऐमील

भगवान्का होकर प्रपंच करनेवाला ही सच्चा कलाकार है।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

कलाकार अपने प्रयासमें थकना जानता ही नहीं। — महात्मा गान्धी

कल्याण

हम सदा कल्याणी वाणी ही सुनें, सदा कल्याणकारक दृश्य ही देखें।
— सामवेद

जो होता है भलेके लिए ही होता है। — स्वामी रामदास

अपने बाहर मदद मत खोजो; अत्यन्त कल्याण तो मौनमें, शान्त धैर्यपूर्वक दुःख सहन करनेमें है। — सन्त पिगल

शुभ वृत्तियोंकी भी अतिशयता और निवृत्तिपरायणताकी केवल निरुपाधिकताको टालकर अपना कल्याण मार्ग निकालना चाहिए। — नाथजी

जहाँ परमेश्वरकी ज्योति है, वहाँ सदा कल्याण है। — अथर्ववेद

कल्पना

चित्त जिस रूपकी कल्पना करता है वैसा हो जाता है। आज जैसा है वैसी उसने कल्पना की थी। प्रबलतर प्रयत्नसे अन्यथा हो सकता है, और फिर उससे भी प्रबलतर प्रयत्नसे और भी अन्यथा हो सकता है।

— योगवाशिष्ठ

कल्पनाका खरापन या खोटापन अनुभवसे मालूम हो जाता है, इसलिए अनुभवके बाद कल्पना रुक जानी चाहिए। — श्री ब्रह्मचैतन्य

विषयोंमें सुख है, यह कल्पना हमने की। उसका अनुभव हमने बहुत बार किया। फिर भी हमें यह नहीं मालूम हो रहा है कि हमारी वह कल्पना खरी थी या खोटी! — श्री ब्रह्मचैतन्य

कवि

मूर्ख कवि ही स्त्रियोंका रूप-वर्णन करते हैं। — संस्कृत सूक्ति

कविता

मामूली कविता कर लेना आसान है, अच्छी कविता समझ सकना मुश्किल।

— माइकेल मोन्टेन

कविताकी सबसे बड़ी देन शान्ति है। — जॉन कूपर

कविता जब संगीतसे बहुत दूर निकल जाती है तो दम तोड़ने लगती है।
— ऐज़रा पाउण्ड

कविता माने विश्वकी रस-प्रभा और परब्रह्मकी आनन्दकला।
— महाकवि नान्हालाल

कष्ट

ईश्वर किसीको उसकी शक्तिसे ज़्यादा नहीं तपाता। — गान्धी

ईश्वर जिसे प्यार करते हैं उसे रगड़कर साफ़ करते हैं। — इंजील

कषाय

जो अपनी कषायोंको क़ाबूमें नहीं रखता, वे उसे अपने क़ाबूमें रखेंगी।
— डेविड हार्टले

हमारी कषायें हिलहिलीके दौरोंके समान हैं, उस वक़्त तो तर्रार बना देती हैं, मगर शेष कालके लिए दुर्बल छोड़ जाती हैं। — पोप

ज्ञानी विवेकसे शासित रहता है, मूर्ख कषायसे। — अज्ञात

जिसपर कषाय सवार है, वह कालके गालमें जा रहा है।
— सर फ़िलिप सिडनी

अपनी कषायोंको शासनमें रखो, वर्ना वे तुम्हें शासनमें रखेंगी।
— हौरेस

कषायी आदमी उन लोगोंकी तरह हैं जो अपने सिरके बल खड़े हुए हों; वे सब चीज़ोंको उलटी तरह ही देखते हों। — अफ़लातून

क्रोधसे मनुष्य नीचे गिरता है; मानसे अधोगति पाता है; मायासे सद्गति-का रास्ता रुकता है; और लोभसे इहभव और परभव दोनों बिगड़ते हैं।
— भगवान् महावीर

कहावत

कहावतें दैनिक अनुभवकी पुत्रियाँ हैं। — डच कहावत

क्रान्ति

हृदयके आह्वानपर प्रेम, आत्माके आह्वानपर धर्म और पेटके आह्वानपर क्रान्ति प्रकट होती है। — सुभाषित

व्यक्तिके आन्तरिक जीवनकी क्रान्ति ही सामाजिक क्रान्तिकी आधारशिला है। — जे० कृष्णमूर्ति

समाजकी बाहरी हालतको बदलनेसे क्रान्ति नहीं हो सकती, बल्कि बाहरी तबदीलियोंपर ही निर्भर रहनेके कारण हम अपना जीवन खोखलातक बना डालते हैं। व्यक्ति-जीवनमें क्रान्ति किये बिना चाहे जितने क़ानून हम बना डालें, वे सामाजिक पतनको नहीं रोक सकते। — जे० कृष्णमूर्ति

क्रान्ति तन्त्रसे नहीं, मन्त्रसे होती है। — विनोबा

क़ानून

क़ानूनके बग़ैर भी ज्ञानी लोग ज्ञानियोंकी ही ज़िन्दगी बसर करेंगे।
— अरिस्टोफ़र्नाज़

हम ईश्वरकी सन्तानोंको क़ानूनसे क्या वास्ता ? — मिल्टन

तुम क़ानून अमीरोंके फ़ायदेके लिए बना रहे हो। — यूरिपिडीज़

क़ानून अच्छा है, अगर आदमी उसे क़ानूनी तौरपर इस्तेमाल करे।
— बाइबिल

अगर तमाम क़ानून रद्द कर दिये जायँ, तब भी हमारी जीवन-प्रणालीमें कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। — अरिस्टीपस

काम

कामसे शोक उत्पन्न होता है। — धम्मपद

अगर आपको कोई काम न हो तो चुप रहना बड़ा मुश्किल होता है।
— शोपेनहोर

आदमीके लिए यह नामुमकिन है कि वह बहुत-से काम शुरू कर दे और सबको अच्छी तरह कर सके। — जैनोफ़न

हर कामका वक़्त होता है और हर वक़्तके लिए काम होता है।

— बाइबिल

कामना

अर्थातुरोंको न कोई गुरु होता है न बन्धु, कामातुरोंको न भय होता है न लज्जा, विद्यातुरोंको न सुख होता है न नींद, क्षुधातुरोंको न स्वाद होता है न समय। — संस्कृत सूक्ति

इस शरीरके फेरमें न पड़ो, सब स्वार्थपूर्ण कामनाएँ छोड़ दो और फिर जिस समय जो भोग उपस्थित हों उन सबका निश्शंक होकर उपभोग करो। — ज्ञानेश्वरी

समस्तकी कामना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अंशमें पूर्णका समावेश है, दोयम, समस्तके हम अधिकारी भी नहीं हैं। — विनोबा

काम्य कर्म बन्धनकारी होते हैं, मोक्ष चाहनेवालोंको कभी विनोदमें भी उन कर्मोंका आचरण नहीं करना चाहिए। — ज्ञानेश्वरी

एक कामना पूरी होती है तो दूसरी पैदा होकर बाणकी तरह छेदने लगती है, भोगेच्छा भोगोंसे कभी शान्त नहीं होती, बल्कि यों भड़कती है जैसे घी डालनेसे आग, भोगोंकी अभिलाषा रखनेवाला मोही पुरुष सुख नहीं पाता। — महर्षि विश्वामित्र

जिस समय आदमी अपनी तमाम कामनाओंका परित्याग कर देता है उसी समय वह भगवत्स्वरूपको प्राप्त कर लेता है। — भक्त प्रह्लाद

कार्य

महान् कार्य तब होते हैं जब इनसान और पहाड़ मिलते हैं; वे सड़कपर धक्का-मुक्की करनेसे नहीं हो जाते। — विलियम ब्लैक

महान् कार्य सम्पन्न होते हैं पर्वतोंपर आसन जमानेसे, सड़कोंपर धक्का-मुक्की करनेसे नहीं। — विलियम ब्लैक

जो करना हो जल्दी करो। — जर्मन कहावत

आप काज महा काज। — हिन्दुस्तानी कहावत

जो ज्यादा शुरू करता है कम खत्म करता है। — जर्मन कहावत

तुम वही क्यों करते हो जिसे दूसरे करते हों? जिसके लिए तुम्हारा अन्तरंग प्रेरणा दे वही तुम्हारे लिए सर्वोत्तम कार्य है। — अरविन्द घोष

करेको अनकरा नहीं किया जा सकता। — इटालियन और डेनिश कहावत

दुनियाकी तमाम सुन्दर भावनाएँ एक सुन्दर कृतिसे हलकी हैं।
— जेम्स रसल लॉवैल

शोभन न हो, तो मत करो, सत्य न हो, तो मत कहो।
— मार्क्स औरेलियस

कार्य सदा कारणोंके अनुरूप होंगे। — ह्यूम

दौड़ना काफ़ी नहीं है; वक्तपर चल पड़ना चाहिए। — फ़ान्सीसी कहावत

गुलाबोंकी वर्षा कभी नहीं होगी, अगर हमें अधिक गुलाबोंकी इच्छा है तो हमें और पौधे लगाने चाहिए। — जार्ज ईलियट

जो कुछ करो, सोलहों सिंगार भरकर करो। — फ़ान्सीसी कहावत

जो हर झाड़ीकी जाँच करता है वह जंगलमें क्या घुस पायेगा।
— जर्मन कहावत

जिसने निश्चय कर लिया उसके लिए सिर्फ़ करना बाक़ी रहता है।
— इटालियन कहावत

सुन्दर कथनीपर हँसी होती है, सुन्दर करनीपर खामोशी छा जाती है।
— फ्रंसीसी कहावत

जब आपकी कृति ही बोल रही हो, तो बीचमें मत बोलो।
— हैनरी जे० क़ैसर

'नर करनी करे तो नरका नारायण हो जाय।' — पुरानी कहावत

अच्छे कामोंको सोचते ही न रहिए, उन्हें सारे दिन कीजिए, ताकि ज़िन्दगी एक भव्य मधुर गीत बन जाय। — चार्ल्स किंग्सले

पहले कहना और बादमें करना, इसकी अपेक्षा पहले करना और फिर कहना अधिक अच्छा है; लेकिन अबसे अच्छा तो काम करके चुप रहना ही है। — अरण्डेल

समयपर किया गया थोड़ा-सा काम भी बहुत फल दिलाता है।

— योगवाशिष्ठ

कार्यक्रम परिस्थितिके अनुसार ही प्रकट होता है और परिस्थितिके अनुसार ही उसे बदल सकते हैं। — विनोबा

कायर

दो कायरोंमें हमलावर दूसरेको जीत लेता है। — पुर्तगाली कहावत

बिल्ली चूहोंके पकड़नेमें तो ज़रूर शेर है, लेकिन चीतेकी झपटके सामने वह खुद चूहा बन जाती है। — शेख़ सादी

कायरता

कायरतासे कहीं ज्यादा अच्छा है लड़ते-लड़ते मर जाना। — गान्धी

कारण

हर कार्यका कारण होता है। — इटालियन कहावत

काल

मेरा भोजन, मेरे कपड़े, मेरी स्त्री, मेरे भाई, कह-कहकर 'मैं-मैं' करने वाले पुरुष बकरेको काल-भेड़िया खा डालता है। — संस्कृत सूक्ति

फिर सवेरा हुआ, फिर रात आयी, फिर चाँद निकला, फिर सूरज निकला, इसमें वक़्तका क्या बिगड़ता है, पर जवानी बीतती जाती है, फिर भी लोग होशमें नहीं आते? — संस्कृत सूक्ति

इस क्षणके बाद भी शरीरके रहनेका क्या भरोसा! फिर भी जीवनकी चिन्ता ऐसी है मानो कल्पान्त तक जीना हो! — संस्कृत सूक्ति

जब दुनियासे ऐसे लोग तक उठ गये जिनकी नज़रके इशारोंपर उदय और प्रलय होता था, तब हमारा शुमार क्या ? — संस्कृत सूक्ति

जबतक मछली बनता रहूँगा, धीवर मेरा काल बना रहेगा, जिस-जिस तालाबमें फिरूँगा, वहीं-वहीं जाल डालता रहेगा। — कबीर

पलकी खबर नहीं है, कलकी सज्जा सजा रहा है, काल अचानक झपट ले जायेगा, जैसे तीतरको बाज़। — कबीर

हज़ारों इन्द्रों और करोड़ों चक्रवर्तियोंको कालने यूं ख़त्म कर दिया जैसे हवाका झोंका दीपकको बुझा देता है। — संस्कृत सूक्ति

शत्रुओंको पराजित करके और सर्वतोमुखी लक्ष्मीको प्राप्त करके, जब सब सुखोंके भोगनेका समय आता है, तभी काल अचानक कहींसे आ पहुँचता है। — योगवाशिष्ठ

इस क़ाफ़िलेमें कोई पहले चला गया तो क्या ग़म ? — संस्कृत सूक्ति

मेंढक दौड़ रहा है, उसके पीछे साँप दौड़ रहा है, साँपके पीछे मोर, मोरके पीछे शेर और शेरके पीछे शिकारी दौड़ रहा है, अपने-अपने आहार-विहारके लिए सब व्याकुल हो रहे हैं, पर पीछे जो चोटी पकड़े काल खड़ा है उसे कोई नहीं देखता। — संस्कृत सूक्ति

काहिल

मशगूल आदमीको सिर्फ़ एक शैतान सताता है, काहिलको हज़ार।
— स्पेनी कहावत

काहिलके लिए कोई खुशी नहीं है, उसे तो सिर्फ़ शर्म और निराशा ही मिलती है। — हज़रत अली

काहिलके पास वक्त़ नहीं होता। — इटालियन कहावत

बहुत-से आलसी हैं जिन्हें माँगा हुआ पैसा कमाये हुए रुपयेसे मीठा लगता है। — डी० जैरोल्ड

काहिल आदमी साँस तो लेता है, मगर जीता नहीं है। — सिसरो

काहिली

काहिली दरिद्रताके दरवाज़ेकी कुंजी है। — जर्मन कहावत

शर्मकी चीज़ काहिली है, मेहनत नहीं। — हेसियोड

काहिली दरिद्रताकी माँ है। — यूरोपियन कहावत

काहिली पापकी शुरूआत है। — डच कहावत

तुम धनवान् हो तो भी काहिलीका त्याग कर दो। —थेल्स

काहिली सारी बुराईकी जड़ है। — जर्मन कहावत

काहिली और मनकी पवित्रता एक साथ नहीं रह सकती। — गान्धी

काहिली आदमीको चिथड़े पहना देती है। — बाइबिल

अगर कोई मुझसे पूछे कि ख़सलतें-इनसानीका पुश्तैनी गुनाह कौन-सा है, तो मैं कहूँगा काहिली। — लैवेटर

किताब

एक किताबके आदमीसे सावधान रहो। — आइज़क डिरज़ाइली

सबसे अच्छी किताबें पहले पढ़ डालो, वर्ना शायद तुम्हें उन्हें पढ़नेका वक़्त ही न मिल पाये। — थोरो

हर ज़मानेकी किताब होती है। — क़ुरान

किताब जेबमें रखा हुआ बाग़ है। —अरबी कहावत

अगर कोई किताब पढ़ने लायक़ है तो वह ख़रीदने भी लायक़ है। — रस्किन

क्रियाशीलता

क्रियाशीलता ही ज्ञानका एक मात्र मार्ग है। — बर्नार्ड शॉ

फुर्ती और तेज़ीसे चौतरफ़ भ्रमना इस बातका सबूत नहीं कि कोई बड़ा काम हो गया। — मेरी बेकर ऐडी

कुरूपता

बदशक्ल मनसे बदशक्ल चेहरा अच्छा। — जेम्स ऐलिस

मेरे दोस्त, किसी चीज़को कुरूप न कहो, सिवा उस भयके जिसकी मारी कोई आत्मा स्वयं अपनी स्मृतियोंसे डरने लगे । — ख़लील जिब्रान

कुलीन

कुलीन वह है जो नेकदिल है, खुशमिज़ाज है और आत्मत्यागी है ।
— चैस्टरफ़ील्ड

कुलीनता

कुलीनता वहीं सबसे ज़्यादा नुमायाँ होती है जहाँ वह मामूली आदमीको कमसे कम नज़र आती है । — एडीसन

कुसंग

दुर्जनके संगसे बढ़कर और कोई दुःख नहीं है । — स्वामी सुन्दरदास

कुसंगका सर्वथा परित्याग करना चाहिए । — श्री उड़िया बाबा

कृतज्ञता

कृतज्ञता साक्षात् वैकुण्ठ है । — ब्लेक

कृतज्ञ मनुष्यको उसकी याचनासे अधिक दो । — पूर्तगाली कहावत

कृतज्ञता समस्त गुणोंकी जननी है । — सिसरो

क्रूरता

आदमीकी आदमीके प्रति क्रूरता बेशुमार लोगोंको रुलाती है । — बर्न्स

कैवल्य

जो आत्म-स्वभावमें लीन रहता है उसे शीघ्र ही केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है । — योगीन्द्रदेव

क्रोध

क्रोधको शान्तिसे जीतना और मृदुतासे मानको जीतना । — जैन दर्शन

सज्जनका क्रोध क्षण-भर रहता है, साधारण आदमीका दो घण्टे, नीच आदमीका एक दिन व एक रात, महापापीका मरते दमतक।

— संस्कृत कहावत

हम विभिन्न डिगरियोंपर उबलते हैं। — एमर्सन

धैर्यवान् आदमीके गुस्सेसे बचो ! — ड्रायडन

जो क्रोध करता है वह हिंसाका अपराधी है। — महात्मा गान्धी

जब तुम गुस्सेमें हो उस वक़्त कभी किसी ख़तका जवाब न लिखो।

— चीनी कहावत

लोग अकसर अपनी समझदारीकी कमीकी पूर्ति गुस्सेसे करते हैं।

— डब्ल्यू० आर० अल्जर

क्रोध अहिंसाका शत्रु है और अहंकार तो ऐसा राक्षस है जो उसे समूचा निगल जाता है। — महात्मा गान्धी

शक्तिके बिना क्रोध मूर्खता है। — जर्मन कहावत

क्रोध तो मूर्खोंको होता है, ज्ञानियोंको नहीं। कोई किसीको नहीं मारता; सब अपने कियेका फल पाते हैं। — महर्षि पराशर

अपकार करनेवालेपर अगर क्रोध आता है तो धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके शत्रु क्रोधपर ही क्रोध क्यों नहीं आता ? — जीवन्मुक्तिविवेक

शरीरको भस्म कर देनेके लिए क्रोधसे बढ़कर कोई चीज़ नहीं। चिन्ता भी शरीरके लिए विष तुल्य है। ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा, घृणा सब शरीरको घुलानेवाली हैं। सवेरेसे शाम तक काम करके आदमी इतना नहीं थकता, जितना क्रोध या चिन्तासे एक घण्टेमें थक जाता है — जेम्स एलन

वैद्य सन्निपात ज्वरके रोगीकी बकवासका बुरा नहीं मानता। ज्ञानी मूर्खके उन्मत्त प्रलापको शान्तिसे सहकर उसके कर्मरोगकी चिकित्सा करता है।

— सेनेका

अक्रोधसे क्रोधको जीतना और साधुत्वसे असाधुको जीतना — बौद्ध दर्शन

कृतघ्न

एक कृतघ्न आदमी सब ज़रूरतमन्दोंको क्षति पहुँचाता है।
— पब्लियस साइरियस

क्रॉस

ईसाकी क्रॉस लेनेके ये मानी नहीं कि कोई बड़ा काम करके छुट्टी पा गये; बल्कि ये कि नाखुशगवार लगनेवाले छोटे-छोटे कर्तव्योंका सतत पालन करते रहें। — जे० एच० न्यूमैन

ख

ख्याति

सच्ची और स्थायी ख्याति तभी मिलती है जब कि मानव-जातिकी सुख-वृद्धिके लिए प्रयत्न किया जाय। — चार्ल्स सुमनेर

ख़ुदा

जितनी रूहें उतने (ख़ुदा तक पहुँचनेके) रास्ते। — हदीस

मैं तुम्हारी आत्मामें हूँ। — क़ुरान

उसका कोई विरोधी नहीं, उसका कोई शरीक नहीं। — अरब कहावत

ख़ुदा फ़रिश्तेके अन्दर फ़रिश्ता है। — जॉनडोन

मैं जितना अपने नज़दीक हूँ, ख़ुदा उससे मेरे ज़्यादा नज़दीक है।
— मिस्टर एक हार्ट

अगर आसमान न होता तो हम ख़ुदाका तसव्वुर कैसे कर सकते ?
— जार्ज मैक्डोनल्ड

खुदकी तलाश करो, खुदाको पा जाओगे। — कुर्दी कहावत

जिसका दिल खुदासे दूर है वह सिर्फ़ यही कह सकता है कि 'खुदा है'। लेकिन जिसने उस दिलवरको अपने अन्दर पा लिया है वह फिर खुदाको 'वह' या 'तू' से याद नहीं कर सकता। वह तो उसे 'मैं' से ही याद करेगा। — एक सूफ़ी

अगर खुदा मसजिदमें ही बसता है तो बाक़ी दुनिया किसकी है? तीर्थ-मूर्तिमें ही राम रहता है, तो बाहर कौन डेरा डाले हुए है? — कबीर

खुशगोई

मूर्ख खुशगोईकी अपेक्षा खुशगो मूर्खता अच्छी। — शेक्सपीयर

विना ज्ञानके खुशगोई ऐसी है जैसे बिना रोटीके नमक। — अज्ञात

खुशामद

खुशामदी आदमी इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है। लेकिन आप उसके मुँहसे अपनी 'प्रशंसा' सुनकर फूले नहीं समाते। — टालस्टाय

खुशी

वह खुशी सच्ची खुशी नहीं जिसका मज़ा लेकर पछताना पड़े या जिसका अन्त दुःखमें हो। — स्टर्लिंग

खुशीके पीछे लगो, खुशी भाग जायेगी; खुशीसे दूर भागो, खुशी तुम्हारे पीछे-पीछे आयेगी। — हेवुड

सबसे नाज़ुक, सबसे मुनासिब खुशी यह है कि हम औरोंकी खुशीको बढ़ायें। — ब्रूयर

खुशियोंके पीछे पड़कर हम महान सदगुणोंकी अवगणना करते रहते हैं।

अपनी वर्तमान ख़ुशियोंको इस तरह भोगो कि भावी ख़ुशियोंको क्षति न पहुँचे । — सैनेका

ख़ुशियोंको चाहनेवाला दरिद्री होता है । — कहावत

जो कर्तव्यके आगे ख़ुशीको क़ुर्बान कर सकता है, भव्यता प्राप्त करता है । — लैवेटर

ग

गति

हे बली मनुष्य ! वायुवेगसे चल । — अथर्ववेद

ग़रीब

ग़रीब रोटी ढूँढ़ता है और अमीर भूख । — डेनिश कहावत

ग़रीबी

ग़रीबी माने तमाम अनीश्वरीय वस्तुओंका अभाव । — जॉन टौलर

हमेशाके प्रवाससे ज़्यादा कष्ट दूसरेके घर रहनेमें होता है । दूसरेके घर रहनेके दुःखसे नीचकी नौकरीमें अधिक दुःख होता है और उससे भी अधिक दुःख ग़रीबीमें होता है । — अज्ञात

ग़रीबी सभ्य समाजके नीचे मुँह फाड़े खड़ा हुआ रौरव नरक है । — हैनरी जार्ज

ग़रीबी बज़ात ख़ुद बुरी नहीं है, बुरी वह सिर्फ़ तब है जब कि वह काहिली, असंयम, उलख़र्ची या बेवक़ूफ़ीका नतीजा हो । — प्लुटार्क

ग़रीबी जब स्वेच्छासे अपनायी जाती है, कदापि बुरी नहीं है, बल्कि वीरताका रूप अख़्तियार कर लेती है । — हैज़लिट

ग़रीबी अपनेको ग़रीब माननेमें है । – एमर्सन

जो अपने लिए माँगनेका दरवाज़ा खोलता है, ख़ुदा उसके लिए ग़रीबीकी दरवाज़ा खोल देगा । – मुहम्मद

ग़रूर

थोड़ा पढ़ा-लिखा ज़्यादा अहंकारी होता है । – अज्ञात

ग़लती

कोई बिरला ही होगा जो अपनी ग़लती मान जाय, ख़्वाह सारी दुनिया उसे मूढ़ातिमूढ़ कहती रहे । – स्विफ़्ट

सावधान शायद ही कभी ग़लती करते हों । – कन्फ़्यूशियस

सौम्यतापूर्वक स्वीकार की हुई ग़लती एक विजय है । – कैरोलिन

अगर हम पुरानी भूलको नयी तरहसे सिर्फ़ दुहराते रहें तो इसमें कोई वास्तविक लाभ नहीं । – अरविन्द

ग्रहण

ग्रन्थका अभ्यास कर बुद्धिमान् उसका सार ग्रहण कर ग्रन्थका अशेष त्याग कर दे, जिस प्रकार कि धान्यार्थी भूसेको छोड़ देता है । – पंचदशी

गाली

गालीका सामना हमें सहनशीलतासे करनी चाहिए । – गान्धी

गिरजाघर

गिरजाघरके पास ईश्वरसे दूर । – इटालियन कहावत

गीता

गीताका विषय है मोहनाश । – श्री ब्रह्मचैतन्य

'भगवान्‌की इच्छासे सब होता है' यह भावना रखकर अपना कर्तव्य करना—यह सारी गीताका सार है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रवृत्ति और निवृत्ति, कर्मयोग और कर्मसंन्यासका एकीकरण करनेके लिए गीता कही गयी है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

गीतामें भगवान् कहते हैं—'मैं पीछे हूँ, तू आगे चल !'

— श्री ब्रह्मचैतन्य

लड़ना अर्जुनका कर्तव्य था, इसलिए भगवान्‌ने उससे कहा—"तू मेरा स्मरण रखकर युद्ध कर" आज जो प्रपंच अपना कर्तव्य है उसे हम भगवान्‌का स्मरण रखकर करें। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अर्जुनने अपने रथकी रस्सियाँ भगवान्‌के हाथोंमें दे दीं, उसी तरह हम अपने जीवनकी डोरियाँ भगवान्‌के हाथोंमें दे दें। भगवान् जहाँ रथ खड़ा कर दें वहाँ अर्जुन यन्त्रवत् बाण चलाते। अर्जुनकी तरह हम भी भगवान्‌के यन्त्र बनें। श्री ब्रह्मचैतन्य

गुण

अपने अन्दर वो गुण पैदा करो जो ईश्वरमें हैं। — मुहम्मद

सात समुद्रकी स्याही करूँ, सारे जंगलकी लेखनी करूँ, सारी धरतीका काग़ज़ करूँ तो भी हरिगुण नहीं लिखे जा सकते। — कबीर

गुणी गुणको ग्रहण करता है, निर्गुणी गुणसे घृणा करता है। बैलको जायफल दीजिए तो वह उसे क्या समझे और क्या खाय ! — कबीर

गुणोंके लिए कोशिश करनी चाहिए। फ़िज़ूलके आडम्बरसे क्या फ़ायदा ? सिर्फ़ घण्टी पहना देनेसे ठाँठ गायें नहीं बिक जातीं। — क्षेमेन्द्र

निजी सद्‌गुणोंके सिवाय कुछ भी शाश्वत नहीं है। — वाल्ट व्हिटमैन

जिस उपासकको अपनेमें जिस गुणके विकासकी आवश्यकता अनुभव होती है, वह उस गुणवाले भगवान्‌की भक्ति करता है — विनोबा

सद्‌गुणका सर्वोत्तम पुरस्कार स्वयं सद्‌गुण है, और दुर्गुणका घोरतम दण्ड स्वयं दुर्गुण है। – बेकन

घोड़ा अपने साजसे नहीं गुणोंसे जाना जाता है; उसी तरह आदमीकी क़द्र दौलतसे नहीं सद्‌गुणशीलतासे होती है। – सुक़रात

हर कुप्पीसे उसकी शराबकी बदबू आती है।
– स्पेनी और पुर्तगाली कहावत

रूपकी रसाई आँखों तक है, गुण आत्माको जीतते हैं। – पोप

जो पढ़ता है उसमें मूर्खता नहीं रह सकती, जो जप करता है उसमें पाप नहीं रह सकते, जो जागरित है उसको कोई भय नहीं सता सकता, जो मौनी है उसका किसीसे कलह नहीं हो सकता। – संस्कृत सूक्ति

उत्तमता गुणोंसे आती है, ऊँचे आसनपर बैठ जानेसे नहीं, महलके शिखर-पर बैठ जानेसे कौआ क्या गरुड़ हो जाता है? – चाणक्यनीति

गुणीजनोंमें जिसकी गणना नहीं की जाती, उस पुत्रसे यदि माता पुत्रवती कही जाय तो फिर वन्ध्या स्त्री कैसी होगी? – हितोपदेश

जिनमें न विद्या है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है, न धर्म है, वे नर-पशु पृथ्वीके लिए भार हैं। – भर्तृहरि

शत्रुके भी गुण ले ले, गुरुके भी दोष छोड़ दे। – चाणक्यनीति

गुमान खोखली चीज़ है, स्वमान ठोस वस्तु है, हमारे सिवाय और कोई हमारी स्वमानहानि नहीं कर सकता, गुमानहानि हमेशा बाहरसे ही होती है। – गान्धी

गुरु

अगर शीश देकर गुरु मिल जाय तो भी सस्ता जान! – कबीर

गुरु और गोविन्द दोनों एक हैं। – स्वामी रामदास

जो ब्रह्मानन्द स्वरूप, परम सुखदाता, केवल ज्ञानमूर्ति, द्वन्द्वोंसे परे, गगन सदृश, 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्योंके लक्ष्यार्थभूत, एक, नित्य, विमल, अचल, समस्त बुद्धियोंके साक्षी और भावातीत हैं उन त्रिगुणरहित सद्-गुरुको मैं नमस्कार करता हूँ। — शुक रहस्य

तुम्हारा गुरु, रहबर और भगवान् सदा तुम्हारे अन्दर है।

— स्वामी रामदास

वही सच्चा गुरु है जो मुक्ति दिला दे। — समर्थ गुरु रामदास

वही सच्चा गुरु है जो जीवात्माको विश्वात्मासे मिला दे।

— समर्थ गुरु रामदास

गुरु तो लुहारके मानिन्द हो कि जन्म-जन्मका मोरचा क्षण-भरमें धो डाले।

— कबीर

गुरु ऐसे कुम्हार हैं कि शिष्य रूपी घड़ेको घड़ते-घड़ते उसके दोष निकालते हैं, अन्दर हाथका सहारा देकर बाहर चोट मारते हैं। — कबीर

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महेश्वर हैं, गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं। — गुरुगीता

अखण्डानन्दमय बोधस्वरूप, शिष्यसन्तापहारी, सच्चिदानन्द रूप गुरुदेवको नमस्कार है। — गुरुगीता

मैं हरिको छोड़ दूँगी, गुरुको नहीं छोड़ूँगी। हरिका गुरुसे क्या मुकाबला! हरिने जगमें जन्म दिया, गुरुने आवागमन मिटा दिया। हरिने कुटुम्ब-जालमें घेरी, गुरुने ममता-बेड़ी काटी। — सहजो

अज्ञान-तिमिरान्धोंकी आँखोंको जिन्होंने ज्ञानांजनशलाकासे खोल दिया, उन गुरुदेवको नमस्कार है। — गुरुगीता

समस्त चराचर ब्रह्माण्डमें व्यास परमेश्वरके चरणोंके जिन्होंने दर्शन कराये उन गुरुदेवको नमस्कार है। — गुरुगीता

गुरुसे बढ़कर कोई तत्त्व नहीं है। — नारद० पूर्व०

गुलाम

वे गुलाम हैं जो पतितों और दलितोंके लिए आवाज़ बुलन्द करनेसे डरते हैं। — लौवैल

गुलामसे भिखारी अच्छा। — महात्मा गान्धी

गुलामोंमें बदतरीन वो हैं जो कि सदा अपनी कषायोंकी गुलामी करते हैं। — डायोजनीज़

भ्रष्ट-स्वच्छन्द लोग निकृष्टतम गुलाम हैं। — डैविड गैरिक

वे गुलाम हैं जो पतित और दुर्बलोंके लिए नहीं बोल सकते; वे गुलाम हैं जो अति अल्पमतमें होनेके कारण सत्यका पक्ष नहीं ले सकते।
— लौवैल

कोई ईमानदार आदमी हड्डीकी खातिर अपनेको कुत्ता नहीं बना डालता।
— डेनिश कहावत

किसी अत्याचारीके शासनमें रहनेकी अपेक्षा अपनी ही कषायोंका गुलाम होना अधिक दुःखदायी है। — पिथागोरस

नौकर रखना बुरा है, लेकिन मालिक रखना और भी बुरा।
— पुर्तगाली कहावत

बन्दी न बनाओ; क्योंकि जो दूसरोंको बन्दीगृहमें डालता है वह स्वयं बन्दी है। — सन्त फ्रांसिस

इत्मीनान रखो मैं अपने दुःखको तुम्हारी गुलामीसे नहीं बदलूँगा।
— ऐशीलस

जब कभी मैं किसीको गुलामीके पक्षमें तर्क करते सुनता हूँ, तो मुझे तीव्र आवेग होता है कि उसे ही गुलाम बनाकर देखा जाय।
— अब्राहम लिंकन

लोहेकी जंजीरोंसे सोनेकी जंजीरें ज्यादा खराब हैं। — गान्धी

जब ग़ुलाम अपनी ज़ंजीरोंपर गर्व करने लगे और उन्हें क़ीमती गहने समझने लगे, तो समझ लो कि ग़ुलाम बनानेवालेकी विजय पूर्णताको पहुँच गयी। — गान्धी

हे नीच पेट ! एक ही रोटीमें सन्तोष कर ले, ताकि तुझे ग़ुलामीमें पीठ न झुकानी पड़े। — सादी

मरोंको क्या रोते हैं; वे तो अपने घर जाते हैं, उन ग़ुलामोंको रोइए जो बाज़ार-बाज़ार बिकते हैं। — कबीर

अगर ग़ुलामी पाप नहीं है, तो फिर और कोई चीज़ पाप नहीं है।
— अब्राहम लिंकन

जिस वक़्त कोई आदमी किसीकी दासता स्वीकार करता है, उसकी आधी योग्यता उसी वक़्त नष्ट हो जाती है। — ओडेसी

मैं बिना पैसे भी अपनी गुज़र कर सकता हूँ। मुझे कोई पैसेसे नहीं ख़रीद सकता। मैं पैसेके लिए किसीका ग़ुलाम नहीं हो सकता।
— एमर्सन

ग़ुलामीमें सबसे बड़ी बुराई यह है कि वह हमारे अन्दरकी ख़ुशी खो देती है। हमारे विचारोंका पतन करती है, हमें यह भुला देती है कि हमारा परमात्मा हमारे अन्दर है। इस तरह ग़ुलामी हमें आदमी नहीं रहने देती, पशुसे भी नीचे गिरा देती है। —महात्मा भगवानदीन

ग़ुस्सा

ग़ुस्सेमें की गयी सब बातें अख़ीरमें उलटी निकलती हैं। — मीनेण्डर

गृहस्थ

हर्गिज़ न समझो कि गृहस्थ-जीवन आत्मोन्नतिमें बाधक है।
— स्वामी रामदास

अपनी प्रिय पत्नीसे हास-परिहास करनेमें जो वक़्त गुज़ारा जाता है गृहस्थाश्रमी पुरुषके लिए वही श्रेष्ठ लाभ है। — भगवान् श्रीकृष्ण

घ

घर

व्यवस्था घरकी सुन्दरता है; सन्तोष घरकी बरकत है; आतिथ्य घरकी शान है; धर्मशीलता घरका कलश है। — अज्ञात

क्या लम्बी-लम्बी भीतोंके मकान बनवा रहा है! तेरा घर तो साढ़े तीन हाथका होगा, ज़्यादासे ज़्यादा पौने चारका। — कबीर

हमारे घरका वातावरण ऐसा शुद्ध, पवित्र और शान्त होना चाहिए कि हमारे यहाँ आनेवालोंको वापस जानेका मन ही न हो। — श्री ब्रह्मचैतन्य

घटना

जो कुछ होता है मालिकके हुक्मसे होता है। — सन्त नन्दलाल

जो कुछ हो रहा है दिव्य है। — ल्योन ब्लॉय

घमण्ड

घमण्ड करना बेवक़ूफ़ोंका काम है। — सादी

घमण्ड करना जाहिलोंका काम है। — सादी

घमण्ड नाशका पेशख़ेमा है। ग़रूर करनेवाला गिरता है। — इंजील

जिसे होश है वह कभी घमण्ड नहीं करता। — सादी

घमण्ड मत कर! घमण्ड एक दिन तुझे सिरके बल गिरा देगा। — सादी

घमण्डसे आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता। — रस्किन

जो बहुत घमण्ड करते थे वही अपने घमण्डके कारण गिरे, इसलिए किसीको बहुत घमण्ड नहीं करना चाहिए। घमण्ड ही हारका दरवाज़ा है। — वेद (शतपथब्राह्मण)

घृणा

लोगोंसे घृणा करना ऐसा है जैसे चूहेसे छुटकारा पानेके लिए घरको आग लगा देना। — अज्ञात

हिंसक घृणा हमें घृणा-पात्रोंसे भी नीचे गिरा देती है। — चिंग चाऊ

जो दूसरोंसे घृणा करता है वह स्वयं पतित हुए बिना नहीं रह सकता।
— विवेकानन्द

च

चतुर

जो किसीकी निन्दा-स्तुति नहीं करता उसे चतुर समझना।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

चतुर वह है जो राम-चरण-लवलीन है, परधन और परमन हरनेमें तो वेश्या सबसे ज़्यादा प्रवीण होती है। — सन्त तुलसीदास

चतुराई

चतुराई सद्ज्ञान नहीं है। — यूरिपिडीज़

चन्द्रमा

प्रेयसीके साथ जिनकी शीतल चाँदनी रातें क्षण-भरमें गुज़र जाती हैं, मगर विरहके आलममें वही चन्द्रमा उनके लिए लूक बन जाता है, लेकिन यहाँ न तो प्रिया है न उसका वियोग, इसलिए हमें तो चन्द्रमा दर्पणके समान है, न गरम न ठण्डा। — संस्कृत सूक्ति

चरित्र

आदमीके गुणों और अवगुणोंकी ठीक-ठीक जाँच सदा उसके मशहूर

कामोंसे ही नहीं होती, बल्कि एक छोटा-सा काम, एक छोटी-सी बात, या एक छोटे-से मज़ाक़से भी आदमीके असली चरित्रपर काफ़ी रोशनी पड़ती है। — प्लुटार्क

समुद्रसे भी अथाह क्या चीज़ है? दुर्जनोंका दुश्चरित। — विद्यापति

चापलूसी

क्या भगवान् अपने शरणागतोंकी रक्षा नहीं करते, तो फिर कवि-गण धन-दुर्मदान्धोंकी चापलूसी क्यों करते हैं? — श्रीमद्भागवत

अगर हम खुद ही अपनी चापलूसी न करें, तो दूसरोंकी चापलूसी हमें नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। — फ़्रेंकोज़

चापलूसी तीन घोर घृणित दुर्गुणोंसे बनी है – असत्य, दासत्व और विश्वासघात।

चारित्र

जैसे बर्तावकी तुम लोगोंसे अपने प्रति अपेक्षा रखते हो, वैसा ही बर्ताव तुम उनके प्रति करो। — बाइबिल

ज्ञान अनुभवसे अलग है। अनुभवके लिए चारित्र चाहिए।
— स्वामी रामदास

चारित्र हमारे जीवनका तीन चतुर्थांश और उसका सबसे अहम् तत्त्व है।
— मैथ्यू आर्नोल्ड

ईसा सौ बार पैदा हो इससे क्या होता है, जब-तक वह तुम्हारे अन्दर पैदा नहीं हुआ। — एंजेलस सिलेसियस

लोगोंके बहिरंगके साथ उनका अन्तरंग भी देखो। — चैस्टर फ़ील्ड

चारित्र वृक्ष है, प्रतिष्ठा छाया। — अब्राहम लिंकन

दुनियामें आदमीसे बड़ा कोई नहीं है, और आदमीमें चारित्रसे बढ़कर कुछ नहीं है। — इवार्टस

चारित्रकी कसौटी है आत्म-त्याग। — गिफ़र्ड

चालबाज़

सबसे बड़े चालबाज़ सबसे पहले पकड़े जाते हैं। — फ्रांसीसी कहावत

चालबाज़ी

सबसे बड़ी चालबाज़ी यह है कि कोई चालबाज़ी न की जाय। — फ्रांसीसी कहावत

चालाकी

चालाकी, दरबारियोंके लिए गुण है, साधुओंके लिए दोष। — सादी

चित्त

जैसे कुत्ता द्वार-द्वार भटकता है, वैसे यह चित्त भोगोंको पानेके लिए भटकता फिरता है। — योगवाशिष्ठ

यह चित्त कभी बड़ा गम्भीर होकर बैठता है, मगर भोगको देखते ही चीलकी तरह झपटता है। — योगवाशिष्ठ

चित्त ही संसार है; इसलिए उसे प्रयत्न करके शुद्ध करो। जैसा चित्त वैसा व्यक्ति। यही सनातन गुह्य सत्य है। — उपनिषद्

चित्तनाशके दो क्रम हैं: ज्ञान और योग। योग यानी वृत्ति-निरोध और ज्ञान माने सम्यग्दर्शन। — योगवाशिष्ठ

दिलको दु:खी न होने दो। — बाइबिल

चित्तशुद्धि

निग्रह-द्वारा चित्त-शुद्धि नहीं होती, बल्कि विवेक और विशुद्ध बुद्धिकी सहायतासे संयम-द्वारा होती है। — श्री अरविन्द

अपने हृदयके विकार धोये बिना, दूसरोंका भला करनेके लिए दौड़नेवाला, कीचड़से सने हाथोंसे दूसरेका मुँह पोंछने जानेवालेके मानिन्द है।
— अज्ञात

चिन्ता

चिन्ताका मूल है आसक्ति। — श्री ब्रह्मचैतन्य

चिन्ता करना माने भगवान्‌का भरोसा खोना। — श्री ब्रह्मचैतन्य

जो भगवान्‌का स्मरण करता रहेगा उसे कभी चिन्ता न होगी।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

कुटुम्बकी चिन्तासे परेशान आदमीकी कुलीनता, शील और गुण कच्चे घड़ेमें रखे हुए पानीकी तरह हैं। — संस्कृत सूक्ति

अगर हम उसकी मर्ज़ीपर चलने लगें तो हमें कभी चिन्ता न करनी पड़े।
— गान्धी

दूसरे लोगोंकी चिन्ता गधेको मार डालती है। — स्पेनी कहावत

अगर हम अपनेको सिर्फ़ उसकी इच्छाके यन्त्र बना दें, तो हमें किसी क्षण चिन्ता न करनी पड़े। — गान्धी

अगर इनसान सुख-दुःखकी चिन्तासे ऊपर उठ जाये तो आसमानकी ऊँचाई भी उसके पैरों-तले आ जाये। — शेख़ सादी

चेतन

एक शरीरमें जो चेतन है वह जीवात्मा है, और जो सर्वव्यापक है वह परमात्मा है। दोनों अच्युत हैं। — स्वामी विवेकानन्द

चेहरा

चेहरेपर हरदम प्रसन्नता बनाये रखना मुक्ताओंसे भरे थाल भेंट करनेके समान है। — अज्ञात

जिस चेहरेको देखकर हृदय प्रसन्न नहीं होता, वह देखने योग्य नहीं, जिस शब्दमें सुन्दर भावना न हो वह सुनने योग्य नहीं। — फ़ारसी

चैतन्य

एक-रूप चैतन्य ही इस विश्वकी आत्मा है। — ज्ञानेश्वरी

श्रेष्ठ योगियोंकी बुद्धि चैतन्यमें मिलते ही उसके साथ समरस हो जाती है। — ज्ञानेश्वरी

चोर

मनुष्यके पास उतना ही होना चाहिए जितनेसे उसका भरण-पोषण हो जाये। जो इससे अधिक एकत्र करता है वह चोर है। — श्रीमद्भागवत

ईश्वरने आदमीको मेहनत करके खानेके लिए बनाया, और कहा कि जो मेहनत किये बग़ैर खाते हैं वे चोर हैं। — गान्धी

ईश्वरने आदमीको अन्नके लिए श्रम करनेके लिए पैदा किया और कहा कि जो श्रम किये बग़ैर खाता है वह चोर है। — महात्मा गान्धी

जितनेसे आदमीका पेट भरे उतनेपर ही उसका निजी अधिकार है; उससे अधिक संचय करनेवाला चोर है और दण्डनीय है। — श्रीमद्भागवत

चंचलता

इन्द्रियोंके सहवाससे बुद्धिमें चंचलता पैदा होती है, आत्मस्वरूपका लाभ होनेपर वह शान्त हो जाती है। — ज्ञानेश्वरी

मनकी चंचलता ही दुःखोंका मूल कारण है। — ज्ञानेश्वरी

जो कभी रुष्ट है, कभी तुष्ट है; ऐसे क्षण-क्षणमें रुष्ट-तुष्ट होनेवाले चंचल-चित्त पुरुषकी प्रसन्नता भी भयंकर है। — संस्कृत सूक्ति

छ

छिद्रान्वेषण

दूसरोंकी टीका करना छोड़ दो। — स्वामी रामदास

ज

जगत्

जगत् हमसे भिन्न नहीं है, हम जगत्से भिन्न नहीं हैं, सब एक-दूसरेमें ओत-प्रोत पड़े हैं, और एक-दूसरेके कार्यका असर एक-दूसरेपर होता रहता है, यहाँ विचार भी कार्य है···यानी एक भी विचार मिथ्या नहीं जाता। इसलिए हमेशा अच्छे विचार ही करने चाहिए। – गान्धी

जैसे सूर्यको अन्धकार नहीं दिखता, वैसे ज्ञानीको जगत् नहीं नज़र आता।
– योगवाशिष्ठ

जैसे नींदमें सपना दिखता है, जागनेपर दूर हो जाता है; वैसे ही अज्ञानसे जगत् पैदा होता है और सम्यक्ज्ञानसे ग़ायब हो जाता है। – योगवाशिष्ठ

ब्रह्म सत्य है, जगत् उसकी स्फूर्ति है। – विनोबा

हम जगत्को वैसा समझते हैं जैसे हम स्वयं हैं, पर तैसा वह नहीं है।
– श्री ब्रह्मचैतन्य

विचारके सिवाय जगत् और कोई चीज़ नहीं। – रमण महर्षि

अन्तरंग जितना उज्ज्वल होगा, जगत् उतना ही मंगल होगा। आन्तरिक आत्मारामका दर्शन होगा तो बाहर भी राम-रूप भरा हुआ, बल्कि छलकता हुआ, दिखाई देगा। – ज्ञानेश्वर

इस जगत्में कोई सम्बन्ध नित्य नहीं है, अपनी देहका भी नहीं है; तब स्त्री-पुत्रादिका साथ सदा नहीं रहेगा, यह क्या कहनेकी ज़रूरत है?
– भगवान् श्रीकृष्ण

चराचर जगत् भगवान्से भिन्न नहीं है, यह जानकर जो भगवत्को स्मरण करता है, वह सुखी है। – उड़िया बाबा

ईश्वर ही यह सब बना है। – ज्ञानेश्वर

यह जगत् काँटोंकी बाड़ी है, देख-देखकर पैर रखना। – गुरु गोरखनाथ

जड़ता

जब जड़ता पूरी तरह नष्ट हो जायेगी तब शरीर, बुद्धि और मन-द्वारा हमारी सात्त्विकता और चेतनता ही प्रकट होती रहेगी। – नाथजी

जन्म

जब हम सत्संग करने जाते हैं तब हमारा पहला जन्म होता है; जब उनके वचनानुसार कर्म करते हैं तब हमारा दूसरा जन्म होता है; जब हमें वस्तु-स्वरूपका ज्ञान हुआ तब तीसरा जन्म हुआ; जब मिलाप हुआ तब चौथा जन्म हुआ। – सन्त नन्दलाल

आदमीके पैदा होते वक़्त माँ-बाप जो तकलीफ़ सहते हैं, उसका बदला सौ वर्षोंमें भी नहीं चुकाया जा सकता। – मनु

यहाँ सदा तो रहना नहीं है, बीसों बिसवे जाना है। ज़रा-से सुहागके लिए क्या शीस गुँथाऊँ! – सहजो

जन्म-मरण

जो जन्मा है उसकी मौत निश्चित है और जो मर गया है उसका जन्म निश्चित है। – गीता

जननी

माँका प्यार सदाबहार रहता है। – फ़्रान्सीसी कहावत

माँके बूढ़ी हो जानेपर उससे नफ़रत मत कर। – बाइबिल

जप

जप करनेवाला पाप नहीं करता। – अज्ञात

जप और भगवान् एक हैं। – रमण महर्षि

ज़बान

जो आदमी अपनी ज़बानको क़ाबूमें नहीं रख सकता उसके अन्दर सत्य नहीं है। – गान्धी

ज़मीर

ज्यूँ ही मैंने अपने ज़मीरका गला घोंटा कि मेरी उपयोगिता ख़त्म हुई। – गान्धी

कषायका दौरा ज़मीरको आवाज़को दबा देता है, न्यायाकी घोंघाहमें कानाफूसी सुनाई नहीं देती। – अलैक्ज़ैण्डर मैक्लैरिन

जब कर्तव्यका संघर्ष हो तब तुम्हारे अन्दर बोलनेवाली 'शान्त सूक्ष्म ध्वनि' ही हमेशा अन्तिम निर्णायक होनी चाहिए। – गान्धी

मेरे लिए ईश्वरकी, अन्तरात्माकी, सत्यकी, या ज़मीरकी आवाज़ या 'शान्त सूक्ष्म ध्वनि'के एक ही माने हैं। – गान्धी

जब कभी तुम्हें शक हो तो अपने दिलसे पूछो। – हज़रत मुहम्मद

ख़ुदाने हर दिलमें एक कसौटी रख दी है जो सच और झूठका फ़र्क़ बताती रहती है। – सूफ़ी

ख़ुदाने हर आदमीकी जानमें एक कसौटी रख दी है जिसपर कसकर वह पूरे यक़ीनके साथ सचाईको झूठसे अलग कर सकता है। – एक सूफ़ी

जय

उसकी जय कभी नहीं हो सकती जिसका दिल पवित्र नहीं है। – स्वामी रामतीर्थ

ज़रूरत

ज़रूरतमन्दोंकी ज़रूरतें पूरी कर, आख़िर तू भी ज़रूरतें रखता है। – सादी

जल्दबाज़ी

विश्व-नियन्ता जल्दबाज़ी नहीं करता, न उसने कभी जल्दी की, और न कभी जल्दी करेगा। — हॉलैण्ड

जल्दी काम शैतानका है। — क़ुरान

मधुर पुष्प धीमे-धीमे उगते हैं, घास जल्दी-जल्दी। — शेक्सपीयर

जवानी

जवानीका फूल एक बार खिलता है, फिर कभी नहीं। — शिलर

जवानीकी दीवानगी बुढ़ापेको ग़मख़ाना बना देती है। —फ्रैंकलिन

जागरण

पहले पहरमें सब जागते हैं, दूसरेमें भोगी, तीसरेमें चोर, चौथेमें योगी। — चरनदासजी

प्रसन्न, वृद्ध, ज्ञानी और शुद्धाचारी उषःकालके समय जागता है। — वेदवाणी

सारी दुनिया सो रही है, कोई नहीं जाग रहा, जागा उसे कहिए जो जागकर फिर जागे। — दरिया साहब

पूरी तरह जागे हुए मनका यही मतलब है कि सिवा ईश्वरके कुछ न देखे। — तपस्विनी रबिया

अज्ञानी सदा सुप्त है, ज्ञानी सतत जाग्रत। — आचारांग

जाति

मनुष्योंकी एक ही जाति है। — आचार्य जिनसेन (आदिपुराण)

साधुकी जाति न पूछो, ज्ञान पूछो। तलवारका मोल करो, म्यान पड़ा रहने दो। — कबीर

ज़िन्दगी

ईश्वर इनसानके अन्दर अपनेको भूला हुआ है; इनसानको चाहिए कि ईश्वरके अन्दर अपने-आपको पहचाने। — डॉक्टर भगवानदास

ज़िन्दगी छोटी है, और जंजाल बड़ा है, इसलिए जंजालको छोटा कर कि सुखी ज़िन्दगी बड़ी हो जाये । – श्रीमद्‌राजचन्द्र

परमात्माकी पहचानके साथ जिन्दगीकी सच्ची शुरूआत होती है ।

– श्री ब्रह्मचैतन्य

ज़िन्दगी हमारी खामोशियोंमें गाती है, और हमारी नींदमें सपने सजाती हैं । हम जब पिटकर गिर भी गये हों, ज़िन्दगी बुलन्द और तख्तनशीन रहती है, और जब हम रोते हैं, तब भी ज़िन्दगी उस दिनपर मुसकराती है, और जब हम अपनी ज़ंजीरें घसीट रहे हों, तब भी वह आज़ाद रहती है । – ख़लील जिब्रान

अपने मार्गपर गाते हुए चलो, लेकिन हर गीत संक्षिप्त हो, क्योंकि मानवी हृदयोंमें वही गीत ज़िन्दा रहेंगे जो तुम्हारे होठोंपर युवान-अवसान पायेंगे । – ख़लील जिब्रान

ज़िन्दगीको मैं छोटी-सी टिमटिमाती हुई मोमबत्ती नहीं मानता । मेरी निगाहमें वह एक बड़ी मशाल है, जिसे मैं एक निश्चित कालके लिए हाथोंमें लिये हुए हूँ । आनेवाली पीढ़ीको यह मशाल सौंपनेसे पहले, मैं चाहता हूँ कि वह अच्छी तरह जले और ख़ूब तेज़ प्रकाश फैलाये ।

– जॉर्ज बर्नार्ड शा

मैं तुम्हें देना नहीं, लेना सिखाता हूँ; त्याग नहीं, तृप्ति सिखाता हूँ; झुकना नहीं मुसकराते हुए समझना सिखाता हूँ; मैं तुम्हें मौन नहीं, बल्कि एक मृदुल गीत सिखाता हूँ, मैं तुम्हें तुम्हारे बृहत्तर स्वरूपका ज्ञान कराता हूँ जिसमें समस्त मानवोंका समावेश है । – ख़लील जिब्रान

ज़िन्दगीके बड़ेसे बड़े काम अकसर साधारण समझ और सतत प्रयत्नसे होते हैं । – फ़ैल्थम

ज़िन्दगी वह है जो सत्यकी शोधमें गुज़रे । – विनोबा

ज़िन्दगीमें सबका मन्त्रसूत्र होना चाहिए – 'शंका नहीं, भय नहीं', चिन्ता नहीं । – स्वामी रामदास

सारी ज़िन्दगी उसके प्रति एक अंजलिकी तरह गुज़रे ! – स्वामी रामदास

ज़िन्दगी है अपनी मर्ज़ीके मुताबिक़ नहीं, ईश्वरकी मर्ज़ीके मुताबिक़ चलनेमें । – टॉलस्टॉय

ज़िन्दगी दानिश्मन्द आदमीकी शानके शायाँ तभी होगी जब कि वह प्रगतिशील होगी । – जॉन्सन

ज़िन्दगी एक मिशन है । ज़िन्दगीकी और हर परिभाषा झूठी और ग़लत रास्ते ले जानेवाली है । – मैज़िनी

फ़ी ज़माना तकल्लुफ़ आसान है, ज़िन्दगी मुश्किल । – डिसराइली

मनमौजी चलनेवाले जहाज़की तरह, मनमानी ज़िन्दगी बसर करनेवालेका विनाश निश्चित है; इसके लिए किसी और दुर्गुणकी ज़रूरत नहीं ।

– प्रोफ़ेसर ब्लैकी

जो झूठी ज़िन्दगी जी रहा है वह झूठे सिद्धान्तका प्रचार कर रहा है, ख्वाह वह अपनी ज़बानसे कुछ बोले या न बोले । – ऐस० जी० मिल्स

मैं ही आग हूँ, मैं ही कूड़ा-कर्कट । मेरी आग मेरे कूड़ेको जलाकर भस्म कर दे, तो मैं पा जाऊँगा अच्छी ज़िन्दगी । – ख़लील जिब्रान

कहानीकी तरह, ज़िन्दगीमें यह देखा जाये कि वह कितनी अच्छी है, न कि वह कितनी लम्बी है । – सैनेका

हमारी सारी ज़िन्दगी एक खेलके मानिन्द है । – बैन जॉन्सन

सारी ज़िन्दगी क्षण-भरकी है । इस लिए हमारा फ़र्ज़ है कि उसका सदुपयोग करें, दुरुपयोग न करें । – प्लुटार्क

सिर्फ़ वह ज़िन्दगी कामकी है जिसे औरोंके लिए जिया जाये ।

– अलबर्ट आइन्स्टाइन

ज़िन्दगीमें लगातार ताज़गी और अटूट दिलचस्पी तभी मिल सकती है जब कि अन्दरूनी विकास निरन्तर होता रहे । – अर[illegible]द

मूर्तिकी तरह, आदमीकी ज़िन्दगी सब तरफ़से सुन्दर होनी चाहिए।

– सुक़रात

ज़िन्दगीका काम है आगे जाना। – सैमुएल जॉनसन

ज़िन्दगी थियेटरकी तरह है; क्योंकि अकसर इसमें निकृष्टतम लोग उत्कृष्टतम जगहोंपर बैठे होते हैं। – अरिस्टोनीमस

नीतिके लिहाज़से ज़िन्दगी दो हिस्सोंमें बँटी हुई मालूम देती है; पहलेमें हम विषयभोगोंमें पड़े रहते हैं, दूसरेमें हम उपदेश दिया करते हैं।

– विल ड्यूरेण्ट

आरामकी ज़िन्दगी मुश्किल मंज़िलत है। – विलियम कूपर

ज़िन्दगी काफ़ी लम्बी है अगर वह भरी हुई है। – सेनेका

ज़िन्दगी नहीं बनी है धनसे, दोस्तीसे, हुनरमन्दीसे, कृपापात्रतासे, पारिवारिक प्रभावोंसे, अच्छे अवसरोंसे, अच्छी जगहोंसे, अच्छी तन्दुरुस्तीसे, या अच्छे स्वभावसे; वह बनी है विश्वाससे, सद्गुणशीलता-से, ज्ञानसे, संयमसे, धैर्यसे, भक्तिसे, बिरादराना प्रेम और सेवासे।

– इनिगर

रागासक्तियोंसे पाक और आनन्द तथा प्रसन्नतासे सदा लबरेज़ ज़िन्दगी ही वेदान्ती ज़िन्दगी है। – स्वामी रामतीर्थ

जिह्वा

खाने और बोलनेके सम्बन्धमें जिसने ज़बानकी चंचलता रोक ली उसने मानो सबको अपने वश कर लिया। – महात्मा गान्धी

जीव

पानी और उसका बुलबुला एक ही चीज़ है, उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा एक ही चीज़ हैं; फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि एक परिमित है, दूसरा अनन्त; एक परतन्त्र है दूसरा स्वतन्त्र। – रामकृष्ण परमहंस

जीव शरीरसे अलग होकर भी वासना तृप्तिके लिए शरीर धारण करता है । — उपासनी

अति गम्भीर, अपार और विस्तृत सच्चिदानन्द समुद्रमें कर्म-वायुसे प्रेरित हुई जीवात्मारूपी तरंगें उठती हैं । — शंकराचार्य

जीवन

शाश्वत जीवनके मानी हैं व्यक्तित्वका पूर्ण विकास, ज्ञानपूर्वक प्रभुमें निवास । — डीन इंगे

तुम्हारा जीवन सिर्फ़ तुम्हारे ही लिए नहीं है, बल्कि सम्पर्कमें आनेवालोंके लिए भी है, दूसरोंको शान्ति और आनन्द देनेमें ही जीवनकी कृतार्थता है और यह तुम हर हालतमें कर सकते हो, जीवनका अर्थ ही है सेवा । — स्वामी रामदास

बाहर अखण्ड प्रवृत्ति, भीतर अखण्ड निवृत्ति ऐसा होता है ज्ञानीका जीवन । — ज्ञानेश्वर

हमारी हस्ती पानीके बुदबुदोंकी-सी है । किसी दिन यूँ छिप जायेंगे जैसे सुबहके तारे ! — कबीर

कै हंसा मोती चुगै, कै लंघन मर जाय" — एक हिन्दी कवि

अपूर्णताओंके कारण तो सब वस्तुएँ बहतर, सुन्दरतर और प्रियतर हैं । अपूर्णताओंको प्रभुने इसलिए रखा है कि मानव-जीवनका नियम प्रयत्न हो, और मानव-न्यायका नियम दया । — रस्किन

जीवन-पुष्प प्रभुके चरणोंमें अर्पण करनेके लिए है । — स्वामी रामदास

जीवनमें तन्मयता होनी चाहिए, वर्ना वह रसहीन नाटक बन जाता है । — स्वामी रामदास

कहीं ऐसा न हो कि जीवनकी अच्छी चीजें जीवनकी सबसे अच्छी चीज़ोंको नष्ट कर दें । — वाल्टेयर

सत्यको जानना काफ़ी नहीं है, सत्यके हाथों ख़ुशीसे नाचते रहना चाहिए।
— स्वामी रामदास

सादा खाना खाओ; शुद्ध जल पीओ; ऐश्वर्यशाली होओ; विश्वदानी बनो।
— अथर्ववेद

गान्धीके शिक्षणका निचोड़ मैंने तीन शब्दोंमें पाया है : (१) 'सत्य' — जीवनका लक्ष्य, (२) 'संयम' — जीवनकी पद्धति, (३) 'सेवा' — जीवनका कार्य। — विनोबा

देने ही में वह निहित है जो हमें प्राप्त होता है। क्षमा करनेसे ही हम क्षमाके पात्र बनते हैं और आत्मोत्सर्गमें ही चिरन्तन जीवनका मार्ग है।
— सन्त फ्रांसिस

हम इस तरह जीयें कि हमारे मरनेपर हमें दफ़नानेवाला भी दो आँसू बहा दे। — पेट्रार्क

दुनियाकी यह आवाज़ आनेसे पेश्तर कि 'फ़लाँ मर गया' ज़िन्दगीको क़ीमती समझकर नेक काम करता चल। — शेख़ सादी

प्रभु-स्मरण ही जीवन है, विस्मरण मृत्यु। — ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन गंजशकर

अपूर्णताएँ, जिनके कारण समस्त वस्तुएँ बहतर, सुन्दरतर और प्रियतर हैं, देव-निर्मित हैं, ताकि मानवीयका जीवन नियम उद्योग और मानवीय न्यायका नियम दया हो सके। — रस्किन

हम देनेसे पाते हैं; क्षमा देनेसे क्षमा पाते हैं; जान देनेसे अमर जीवन पाते हैं। — सन्त फ्रांसिस ऑफ़ असीसी

दुनियामें इस तरह जीओ मानो यहाँ बस ईश्वर और तुम ही हो।
— सन्त जॉन ऑफ़ दी क्रॉस

प्रसन्नता और शान्ति नेक और पवित्र जीवनके स्वाभाविक फल हैं।
— टिलटसन

जहाँ वास्तविक आत्मत्याग नहीं वहाँ वास्तविक जीवन नहीं।
— एस० जी० मिल्स

जीनेका वह तरीक़ा सबसे अच्छा है जो सबसे ज़्यादा सेहतबख़्श है; क्योंकि तन्दुरुस्तीके बग़ैर बाक़ी तमाम नियामतें फ़िज़ूल हैं। — जॉर्ज मौगरिज

चित्तकी शुद्धि और सद्‌गुणोंकी वृद्धि ही जीवनमें प्राप्त करनेकी मुख्य वस्तुएँ हैं। — नाथजी

जीवन न तफ़रीहगाह है न आँसुओंकी खान। जीवन एक सेवासदन है।
— टॉल्स्टॉय

जिस प्रकार बिना तेलके दीपक नहीं जल सकता, उसी प्रकार बिना ईश्वरके मनुष्य अच्छी तरह नहीं जी सकता। — रामकृष्ण परमहंस

जहाँ आदर्श ज्वलन्त रहे और दिल अडिग रहे, वहाँ असफलता नहीं हो सकती। सच्ची असफलता तो सिद्धान्तके त्यागमें, अपने हक़को जाने देनेमें, और अन्यायके वशीभूत होनेमें है, विरोधियोंके किये हुए घावोंकी बनिस्बत अपने किये हुए घाव भरनेमें हमेशा देर लगती है।
— जवाहरलाल नेहरू

जिसमें ज़रा भी स्वात्माभिमान है वह अपने तरीक़ेके सिवाय और किसी तरह जीनेको तैयार नहीं होता। जिसमें ज़रा भी समझ है वह जीनेके लिए अति उत्सुक नहीं होता। — अज्ञात

चित्तकी निर्मलता और दृढ़ता तथा सद्‌गुणोंका विकास साधकर कर्तव्य-कर्म करते-करते उत्साह क़ायम रखकर निर्लिप्त स्थिति प्राप्त करना ही मानव जीवनका उद्देश्य है। — नाथजी

जो धार्मिक जीवन बिताता है वह कर्मोंके फलसे नहीं डरता। — सादी

आत्मोत्सर्गमें ही अमर जीवनका मार्ग निहित है। — सन्त फ्रांसिस

हम जैसे हैं वैसे हों, और जैसे हो सकते हैं वैसे हो जायँ — जीवनका बस यही एकमात्र ध्येय है। — स्टीवेन्सन

मुझे यह साबित करनेके प्रयोगमें अमिट आनन्द मिलता है कि प्रेम ही जीवनका सुप्रीम और एकमात्र नियम है। — गान्धी

आठ महीने खूब मेहनत करो जिससे बरसातमें सुखसे खा सको। दिन-भर मेहनत करो कि रातको सुखकी नींद सो सको, जवानीमें बुढ़ापेके लिए संग्रह करो और इस जन्ममें परलोकके लिए कमाई करो। — अज्ञात

जहाँ प्रेम है वहाँ जीवन है; जहाँ घृणा है वहाँ विनाश है। — गान्धी

यह दिन हमारा है : गुज़रे हुए कलके लिए हम मर गये और आनेवाले कलके लिए अभी पैदा नहीं हुए। आज ऐसे जियो जैसे यह आख़िरी दिन है। — बिशप कैर

सच्चा सन्त जीवनका पूर्ण सदुपयोग करता है। — चैपिन

अच्छी चीज़ोंमें सबसे अच्छी चीज़ है शान्त जीवन। — जॉन रे

जीवनमें तुच्छताके लिए अवकाश नहीं है। — डिसराइली

अगर तुम्हारे पास दो पैसे हों तो एकसे रोटी ख़रीदो, दूसरेसे फूल। रोटी तुम्हें ज़िन्दगी देगी और फूल तुम्हें जीनेकी कला सिखायेगा। — चीनी कहावत

सच कहा जाय तो, बहुत कम लोग वर्तमानमें जीते हैं; वे और कभी जीनेकी तैयारीमें लगे रहते हैं। — स्वीफ़्ट

हम जीनेकी हमेशा तैयारी ही करते हैं, जीते कभी नहीं। — एमर्सन

ज्ञानियोंको तभीतक जीवित रहना चाहिए जबतक उन्हें अपयशका कलंक न लगे। — ज्ञानेश्वरी

नेक आदमी अपने जीवन-कालको दूना कर लेता है; इस तरह जीना कि हम अपनी गुज़िश्ता ज़िन्दगीको देखकर ख़ुश हो सकें, दो बार जीनेके मानिन्द है। — मार्शल

मेरा जीवन धर्मसे शासित है। — गान्धी

हम चाहे अपने मौजूदा क़ुदरती रूपमें जीयें, चाहे अपने महत्तर आध्यात्मिक रूपमें जीयें। — अरविन्द

चूँकि अहिंसाकी प्रभावना करना मेरे जीवनका मिशन है, मुझे हर धूप-छाँवमें वही करते रहना चाहिए। — गान्धी

जीवनका एक क्षण करोड़ स्वर्णमुद्रा देनेपर भी नहीं मिल सकता। — चाणक्य नीति

हम जीयें और सीखें; लेकिन हमारे सीखने ही सीखनेमें जीनेका वक़्त निकल जाता है। — ऑर्सन वैल्स

कोई अशोभन भावना न रखनेमें ही जीवनका रहस्य है। — ऑस्कर वाइल्ड

जो अच्छी तरह जीता है वह दो बार जीता है। — लैटिन कहावत

लाइफ़की गाइड कॉमन सैन्स है। — लैटिन कहावत

जीवनमें उत्सुकता है, कलामें आनन्द। — शिलर

अपने प्रकाशसे जी। — मैथ्यू आर्नोल्ड

जीवन प्रेम है। — गेटे

शान्त जीवनके लिए सर्वस्व। — इटालियन कहावत

आदमी अपने ज़मानेकी दीवानगी और सरगर्मीमें हिस्सा ले ताकि यह कहा न जाय कि वह तो जिया ही नहीं। — जस्टिस ऑलिवर वैण्डल होम्स

हम लापरवाहीसे जीते रहते हैं, यह सोचकर कि मौत कभी नहीं आयेगी। — मीनेण्डर

सुन्दरसे प्रेम करना, भलेको चाहना, और जी भरकर जीना। — मोज़ेज़ मैण्डलसनका सूत्र

जीनेका हक़ सबको है। — फ़्रांसीसी कहावत

जीवनका रहस्य है निःस्वार्थ सेवा। — महात्मा गान्धी

जियो और जीने दो। — स्काच कहावत

आज जीओ, कल तक ठहरे तो रह जाओगे। — मार्शल

हम आज हैं, कल नहीं रहेंगे। — अज्ञात

जीवन एक है। — गान्धी

सबसे ज़्यादा क़ुदरती चीज़ है एक दूसरेके साथ शान्तिसे रहना।
— गान्धी

प्रेमके बग़ैर ज़िन्दगी मौत है। — गान्धी

निर्दोष चारित्र ही सच्चा जीवन है। — सुभाषित रत्नसन्दोह

हम सौ वर्ष तक दीनता रहित होकर जीयें। — यजुर्वेद

कहीं ऐसा न हो कि जीवनकी अच्छी चीजें जीवनकी सबसे अच्छी चीज़ोंको नष्ट कर दें। — वोल्टेयर

सत्पुरुष विदुरके कहे अनुसार आज ऐसा काम करना कि रातको सुखसे सो सको। — श्रीमद्‌राजचन्द्र

हम हमेशा जीनेकी तैयारी करते रहते हैं, जीते कभी नहीं। — एमर्सन

कुशाकी नोंकपर स्थित ओसकी बूँदकी तरह मानवजीवन क्षण-स्थायी है। इसलिए हे गौतम, क्षणमात्र भी प्रमाद न कर। — भगवान् महावीर

जीवनमें खलबली न हो तो वह बड़ी नीरस चीज़ हो जाय। इसलिए जीवनकी विषमताएँ सह लेनेमें ही होशियारी है। — गान्धी

सारा दिन सितारमें तार लगाते-लगाते ही बीत गया; लेकिन अभीतक तार नहीं लग पाये और न संगीत ही शुरू हुआ। — टैगोर

जीवनको इस दुनियाकी आशाओं और भोगोंसे मत नापो, बल्कि उस तैयारीसे जो कि वह दूसरी दुनियाके लिए करती है। — टाइक

जीवनका रहस्य निष्काम सेवा है। — गान्धी

सत्पात्रको दान दे और सत्पुरुषोंकी संगति करे; इसीमें मनुष्यजन्मकी सफलता है। — सूक्ति रत्नावली

जैसा जीवन बितानेकी इच्छा हो वैसा जीवन बितानेकी संसारमें गुंजाइश है। — केदारनाथ

जीवनका ध्येय निस्सन्देह अपनी जातिको — आत्माको — पहचानना है। जबतक हम जीवमात्रके साथ अपना अभेद अनुभव करना न सीखें तबतक

आत्माको पहचाना नहीं जा सकता। ऐसे जीवनका कुल जोड़ ही ईश्वर है। इसीलिए हममें-से हर एकमें रहनेवाले ईश्वरको पहचानना जरूरी है। ऐसा ज्ञान निस्सीम; निःस्वार्थ सेवा-द्वारा प्राप्त हो सकता है।

— महात्मा गान्धी

जीवन-कला

अगर तुम्हारे पास दो पैसे हों तो एकसे रोटी खरीदो, दूसरेसे फूल। रोटीसे तुम्हें जीवन मिलेगा और फूलसे तुम जीवन-कार्य समझोगे।

— चीनी कहावत

दुनियामें इस तरह रहे — आँखोंसे देखे, कानोंसे सुने, मगर मुँहसे कुछ न कहे। — गोरखनाथ

यथाप्राप्त व्यवहारको लोगोंकी तरह आचरता हुआ भी वह चर-अचर भूतमात्रके ऊपर-ही-ऊपर रहता है। — योगवाशिष्ठ

रसिक होते हुए भी अत्यन्त विरस, कठोर होते हुए भी बन्धुवत्सल, निर्दय होते हुए भी अत्यन्त दयालु, वितृष्ण फिर भी सतृष्ण, बाहरसे सबके समान आचारवाला परन्तु अन्तरमें सर्वथा शीतल, वह अनाविष्ट फिर भी आविष्ट होकर रहता है। — योगवाशिष्ठ

मरनेके बाद तो कुत्ते भी शान्त हो जाते हैं। इस जीवनमें ही, अन्तिम तत्त्व, अन्तिम पदकी प्राप्ति करनी है। जीवन्मुक्त होनेका निरन्तर अभ्यास करते रहना चाहिए। — उड़िया बाबा

जोश

जोश तो उद्गम-स्थानपर होता है। लेकिन जहाँ नदी समुद्रमें मिलती है वहाँ जोश नहीं होता। — विनोबा

ज्योति

जीवनवाले लोगोंसे ज्योति प्राप्त कर। — अथर्ववेद

झ

झगड़ा

जब दो झगड़ें, दोनों ग़लतीपर होते हैं। — डच कहावत

झूठ

एक झूठपर दूसरे झूठका छप्पर रखना चाहिए, क्योंकि वह बड़ी जल्दी चूने लगता है। — ओवैन

झूठेकी सज़ा यह नहीं है कि उसका विश्वास नहीं किया जाता, बल्कि यह कि वह किसीका विश्वास नहीं कर सकता। — ज़ॉर्ज बर्नार्ड शॉ

झूठ शब्दोंमें निहित नहीं है, छल करनेमें है। चुप्पी साधकर भी झूठ बोला जा सकता है। ज़ूमानी लफ़्ज़ कहकर, किसी शब्दपर ज़ोर देकर, आँखके इशारेसे और किसी वाक्यको विशेष महत्त्व देकर भी झूठका प्रयोग होता है। सचमुच इस तरहका झूठ साफ़ लफ़्ज़ोंमें बोले गये झूठसे कई गुना बुरा है। — रस्किन

समझदार आदमी झूठेसे दूर रहता है। — सादी

ट

ट्रस्टी

मुझे सचमुच बड़ी खुशी हो अगर लोग अपनी मिलकियतके ट्रस्टी बन जायें, लेकिन अगर वे नहीं बनते, तो मेरी मान्यता है कि हमें न्यूनतम हिंसासे क़ानूनन उन्हें उनकी सम्पत्तिसे वंचित कर देना होगा। — गान्धी

टालमटूल

कल किसीके लिए आया न गया। — विलियम मार्स्डन

जो आदमी आजका काम कलपर टालता रहता है वह सदा बरबादीसे लड़ता रहता है। — हैसियोद

'आज नहीं, कल' — कहते हैं सभी काहिल। — वीसे

टालमटूल करनेवाला सदा दुर्भाग्यसे भिड़ा रहता है — हीसियड

खुदा कहता है आज, शैतान कहता है कल। — जर्मन कहावत

यद्यपि मूर्ख ठहरा रहता है, दिन नहीं ठहरता। — फ्रांसीसी कहावत

कलका उपाय आजकी बला दूर नहीं कर देगा। — स्पेनी कहावत

अधिकांश लोग उस कामको कल तक उठा रखते हैं जिसे उन्हें कल कर डालना चाहिए था। — ऐडगर वाटसन होव

ठ

ठग

ठग जब अपने मुनाफ़ेका हिसाब करने बैठता है तो उसे खातेमें यही नज़र आता है कि उसने दुनियाको ठगनेके बजाय आख़िर अपनेको ही ठगा है। — वेमना

त

तजुर्बा

अगर कोई तजुर्बोंसे ही अक़लमन्द हो जाता, तो लन्दनके अजायबघरके पत्थर इतने वर्षों बाद दुनियाके बड़ेसे बड़े बुद्धिमानोंसे भी ज्यादा बुद्धिमान् होते। — बर्नार्ड शॉ

तत्त्व

जो मूलभूत वस्तु है, वह अविनश्वर है। – ज्ञानेश्वरी गीता

इस मायामय विश्वमें एक सर्वान्तर्यामी तत्त्व है जो चैतन्य है। वह चैतन्य सद्वस्तु है। – ज्ञानेश्वरी

कर्मसे केवल मनकी ही शुद्धि होती है, तत्त्व वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती; उसका मुख्य उपाय ध्यान है। – शंकराचार्य

तत्त्वज्ञान

बाह्य प्रवृत्तियोंसे सर्वथा निवृत्त होकर एकाग्र-मन होनेपर ही तत्त्वज्ञान हो सकता है। – अज्ञात

सच्चा तत्त्वज्ञान वही है जिससे शाश्वत सुख मिले। – श्री ब्रह्मचैतन्य

'मैं नहीं, तू ही है' या 'मैं वही हूँ' यह जानना ही तत्त्वज्ञान है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

सिर्फ़ विचारसे तत्त्वज्ञान नहीं मिलता, उसके लिए साधन करना चाहिए। – श्री ब्रह्मचैतन्य

तत्त्वज्ञानी

तत्त्ववेत्ता पुरुष आधे पलके लिए भी ब्रह्माकार वृत्तिको छोड़कर नहीं रहते। – अज्ञात

परम शुद्ध तत्त्वके विषयमें विश्रान्ति पाया हुआ धीर बाहर व्यवहार करता हुआ भी अन्तरमें उसीका आस्वादन करता रहता है। – पंचदशी

तन्दुरुस्ती

शारीरिक श्रमसे मानसिक पीड़ाएँ दूर हो जाती हैं। – रोशे

तन्दुरुस्तीको क़ायम रखना फ़र्ज़ है। कम ही लोगोंको इस बातका भान है कि शरीर-नीति नामकी भी कोई चीज़ है। – हरबर्ट स्पेन्सर

काम करनेवालोंको आराम मिले और आराम करनेवालोंको काम मिले, तो इसीसे बहुत-सी शिकायतें दूर हो जायँ। – पिओज़ी

हर रोज़ काफ़ी टहलनेसे ज़िन्दगी बढ़ती है, और जीवनको ख़ुशियोंमें श्री-वृद्धि होती है। – बोडलर

शरीरसे विजातीय पदार्थोंको बाहर निकाल फेंकनेके लिए क्रियाशीलता ज़रूरी है। – डॉक्टर टैनर

शरीरकी दुर्बलता मनको दुर्बल बना देती है। – रूसो

डॉक्टर लोग शायद ही कभी दवा खाते हों। – क्रॉमवैल

अगर तन्दुरुस्त रहना चाहते हो तो समय रहते होशमें आ जाओ।
– पुर्तगाली कहावत

इस ज़मानेमें हमारी आधी बीमारियोंका कारण है: दिमाग़ी कामकी ज़्यादती और शरीरकी लापरवाही। – लिटन

हमें नहीं भूलना चाहिए कि स्वास्थ्य किसी साध्यका साधनमात्र है।
– स्वामी विवेकानन्द

अगर तुझे तन्दुरुस्ती चाहिए तो उपवास और टहलनेको अपना; अगर आत्माका स्वास्थ्य चाहिए, तो उपवास और प्रार्थनाको – टहलनेसे शरीर-को व्यायाम मिलता है; प्रार्थनासे आत्माको; उपवाससे दोनोंकी शुद्धि होती है। पाँच बजे उठो, नौ बजे भोजन करो; पाँच बजे ब्यालू करो; नौ बजे सो जाओ। तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिए यह आर्ष समय-सारिणी है। – अज्ञात

सदा स्वस्थ रहनेका रहस्य यह है कि ख़ूब भूख लगनेपर ही खाया जाय और ख़ासी भूख रहे तभी भोजनसे हाथ खींच लिया जाय। – सादी

तन्मयता

ईश्वरके साथ तन्मय होनेसे अगर ईश्वरीय सामर्थ्य, पुरुषार्थ और कर्तृत्व हममें न आयें, ईश्वरके साथ तद्रूप होनेसे भी अगर हममें दया, न्याय, उदारता, सत्य वग़ैरह ईश्वरीय गुण प्रकट न हों तो उस तन्मयता या तद्रूपताका क्या मतलब है? – नाथजी

तप

जो दुस्तर और दुष्कर है, वह सब तपसे साध्य हो सकता है, क्योंकि तपका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। – मनु

तपस्या लक्ष्य-प्राप्तिकी ओर एक क़दम है। – गान्धी

स्वाध्यायके बराबर दूसरा तप नहीं है। – अज्ञात

आदर्शको अमलमें लानेके क़दमका नाम तप है। – गान्धी

जिसने तप किया वह परमेश्वर हो गया। – उपासनी

अपनी जानके चिराग़को तू तपस्यासे रोशन कर, ताकि ख़ुशक़िस्मत आदमियोंकी तरह तू भी ख़ुशक़िस्मत हो। – सादी

तर्क

तर्कको व्यवस्थित सहज बुद्धि बना दे; अपनेको प्रकाश-पुंज बना डाल। यही तेरा लक्ष्य है। – अरविन्द घोष

जो तर्ककी सुने ही नहीं वह कट्टर है; जो तर्क कर ही न सके, वह मूर्ख है; और जो तर्क करनेका साहस ही न कर सके, वह ग़ुलाम है। – ड्रमण्ड

तर्कको पार कर डालना चाहिए या वह स्वयं ही अपनी सीमा पार कर डाले और दिव्यताका मार्ग बन जाये। – अरविन्द घोष

तर्क केवल बुद्धिका विषय है। हृदयकी सिद्धि तक बुद्धि नहीं पहुँच सकती। जिसे बुद्धि माने मगर हृदय न माने वह त्याज्य है। – गान्धी

न्याय बुद्धिका विषय है, निष्काम कर्मयोग हृदयका है। बुद्धिसे हम निष्कामता तक नहीं पहुँच सकते। – गान्धी

तलाश

मन खोजता है, दिल पा जाता है। – जॉर्ज सैण्ड

ताक़त

धीरज और शराफ़तमें ताक़त है। – ली हंट

ताज

ताज पहन लेना सर दर्दका इलाज नहीं है ।

— जर्मन, इटालियन और डच कहावत

तारीफ़

न सिर्फ़ बुलबुल ही उसके बनाये फूलके लिए चहचहाती है, बल्कि उसकी तारीफ़के लिए हर काँटा ज़बान रखता है । — सादी

बेवक़ूफ़को, उसकी तारीफ़ करनेके लिए, एक और बड़ा बेवक़ूफ़ हमेशा मिल ही जाता है । — बोइलो

जिस वक़्त सब लोग तुम्हारी तारीफ़ करेंगे, वह वक़्त तुम्हारे रोनेका होगा; क्योंकि इसी तरह झूठे पैग़म्बरोंके पिताओंने उनकी तारीफ़ की थी ।

— स्वामी रामतीर्थ

तितिक्षा

तितिक्षामें ही परम आत्महित समाया हुआ है । — आचारांग

तीर्थ

तीर्थोंमें सबसे बड़ा तीर्थ है अन्तःकरणकी आत्यन्तिक शुद्धि ।

— महर्षि अगस्त्य

तुच्छ

मनुष्यको कभी तुच्छ विषयोंपर विचार नहीं करना चाहिए, अगर वह उन्हींमें उलझा रहेगा तो महान् कार्य यों ही रह जायेंगे । — कन्फ़्यूशियस

तुच्छ आदमियोंको ईश्वर तुच्छ चीजें भेजता है । — कालीमैकस

तृप्ति

इन्द्रियोंसे कभी तृप्ति नहीं मिलनेवाली, अन्तरात्मासे ही तृप्ति लाभ कर ।

— ज्ञानसार

दुनियावी आदमीकी आँखें या तो सन्तोषसे भर सकती हैं या क़ब्रकी मिट्टीसे । — शेख़ सादी

तृष्णा

तृष्णामें पड़कर मैंने मूर्खतावश यहाँ अपना पछतावा बढ़ानेके लिए क्या-क्या नहीं किया । — संस्कृत-सूक्ति

दुनियादारोंकी ललचीली आँखें या तो सन्तोषसे भरती हैं या क़ब्रकी मिट्टीसे । — सादी

तृष्णाका प्याला पीकर आदमी अविचारी और पागल हो जाता है । — सादी

तृष्णारूपी उन्मत्त घोड़ी पाससे दूर-दूर जाती है, फिर दौड़ती पीछे आती है, इस प्रकार दिगन्तों तक तेज़ीसे भ्रमती रहती है । — योगवाशिष्ठ

जैसे लकड़ी अपने ही भीतरसे प्रकट हुई आग-द्वारा जलकर नष्ट हो जाती है, उसी प्रकार आदमी अपने ही अन्दर रहनेवाली तृष्णासे नाशको प्राप्त होता है । — महर्षि वैशम्पायन

सर्पके द्वारा आधा निगल लिये जानेपर भी मेंढक मक्खियोंको खाता रहता है; उसी प्रकार तृष्णान्ध पुरुष अवस्थाके ढल जानेपर भी विषय-सेवन करता रहता है । — शंकराचार्य

जैसे पशुओंके लिए फन्दे हैं वैसे नर-पशुओंके लिए भी फन्दे हैं, तृष्णा उन्हें विनाशकी ओर बहला ले जाती है । — स्विफ़्ट

तृष्णा केवल मलिन अन्तःकरणमें होती है । — योगवाशिष्ठ

तृष्णारूपी सुईसे संसाररूपी धागा हमारे अन्दर घुसता है । जैसे शरीरके साथ सींग बढ़ते हैं वैसे ही धनके साथ तृष्णा, तृष्णाका कहीं ओर-छोर नहीं है, तृष्णाका पेट भरना मुश्किल है, वह सैकड़ों दोषों और हज़ारों पापोंको ढोये फिरती है, इसलिए तृष्णा छोड़ दे । — महर्षि भरद्वाज

तृष्णाकी आग सन्तोषके रसको जला डालती है । — योगवाशिष्ठ

जैसे कुत्ते मुर्देको खाते हैं वैसे तृष्णा अज्ञानीको खाती रहती है ।

— योगवाशिष्ठ

आदमीमें शुभ गुण तभी तक हैं जबतक वह तृष्णासे दूर है, तृष्णाका स्पर्श होते ही सब गुण ग़ायब हो जाते हैं । — योगवाशिष्ठ

त्याग

हम नित्य सन्यासी हैं, समाजमें रहते हुए भी एकान्तमें रहते हैं, छोड़नेकी चीज़ें भीतर ही थीं; वे सब छोड़ दीं, चित्तकी संगत छोड़ीं; अज्ञानका सम्पर्क छोड़ा; सोऽहंताका भी अभिमान छोड़ा, अब बाहर-भीतर केवल ईश्वर ही शेष रहा, इसलिए छोड़नेकी कल्पना भी छूट गयी । — ज्ञानेश्वर

अपनी रोटी समुद्रमें डाल दे : एक रोज़ वह तेरे लिए तैर आयेगी ।

— बाइबिल

आभ्यन्तरिक अभिलाषाएँ त्याग दो और आत्मानन्दमें मस्त रहो, फिर चाहे महलोंमें रहो या झोपड़ीमें । — स्वामी रामदास

त्यागके बराबर सुख नहीं है । — महाभारत

त्यागका परिणाम अनन्त शान्ति है । — गीता

जिसे आधा विवेक प्राप्त हुआ है, अमल पद प्राप्त नहीं हुआ, उसे भोगका त्याग करते वक़्त बड़ा दुःख होता है । — योगवाशिष्ठ

सब कामनाओंको पानेवाले और उनको त्यागनेवाला ही श्रेष्ठ है ।

— शुकदेव मुनि

देहधारीसे अशेष कर्म-त्याग सम्भव नहीं, जो कर्मफल त्यागी है वही त्यागी है । — गीता

रामसे रचना है तो संसार छोड़िए, पतझार किये बिना वृक्षमें फल नहीं लगते । — रज्जबजी

पर-स्त्री, पर-धन, पर-निन्दा, परिहास और बड़ोंके सामने चंचलता इनका त्याग करना चाहिए । — संस्कृत-सूक्ति

साँप केंचुलीको त्याग देता है, पर विषको नहीं त्यागता, ऐसे ही मनुष्य मुनिवेश तो धारण कर लेता है, लेकिन भोग-भावनाको नहीं छोड़ता।

— मुनि रामसिंह

त्यागका सही तरीक़ा यह नहीं है कि हम व्यक्तियों और वस्तुओंको छोड़ दें, बल्कि यह कि हम उनसे अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध इस प्रकार बदल डालें कि हर-एकमें दिव्यता या देवके दर्शन करने लगें।

— स्वामी रामतीर्थ

ब्रह्मज्ञानीके लिए स्वर्ग तिनकेके बराबर है; वीरके लिए जीवन तिनकेके बराबर है; विरक्तके लिए नारी तिनकेके बराबर है; और निर्लोभके लिए दुनिया तिनकेके बराबर है। — संस्कृत-सूक्ति

भोगसे आत्माका शोषण होता है; त्यागसे आत्माको पोषण मिलता है।

— विनोबा

त्यागी

दानी बहुत हैं, त्यागी कम। — मिल्स

केवल उसीको त्यागी समझना चाहिए जो कर्मके फलोंका त्याग करके स्वयं उन कर्मोंको नाशवाली दशा तक पहुँचा देता है। — ज्ञानेश्वरी

द

दक्षता

द्रव्य प्राप्ति करानेवाले तमाम साधनोंमें उत्तम साधन कौन-सा है ? दक्षता।

— महाभारत

दया

दयाबल ही आत्मबल है। — महात्मा गान्धी

जिनमें दया नहीं होती उनमें प्रेम भी नहीं होता। — थामस मूर

मेरी यह प्रबल कामना है कि मैं हर आँखका हर आँसू पोंछ दूँ।
— महात्मा गान्धी

जिसमें दया नहीं है उसमें कोई सद्‌गुण नहीं है। — मुहम्मद

शान्त आनन्दका रहस्य है दया। — अर्नोल्ड बेनेट

जो निर्बलोंपर दया नहीं करता उसे बलवानोंके अत्याचार सहने पड़ेंगे।
— सादी

क्षमाशील और दयालुको ईश्वर अपना मित्र बना लेता है। — सादी

दयासे दिव्यतर कुछ नहीं; सत्यसे भव्यतर कुछ नहीं। — एलिम वैरी

दयासे दया पैदा होती है। — सोफोकिल्स

दया दिखाना कुछ नहीं : तेरी आत्मा दयासे सरशार होनी चाहिए।
— रस्किन

विना दयाके आनन्द कहाँ। — कालहिल

दयासे महान् कुछ नहीं, दया इस जीवनका सार है। — सादी

महान् मनीषी अपने शाश्वत उत्कर्षको दयाके दृढ़ आधारपर खड़ा करते हैं। — शेक्सपीयर

मानव अस्तित्वका प्रधान नियम है – दया — दोस्तोवस्की

दया ऐसी दासी है कि वह अपने मालिकको भिखारीकी हालतमें मरते नहीं देख सकती। — सैकर

जो सुविधानुसार भी दया दर्शाता है, उसे उस वक्त दया मिलेगी जब कि उसे उसकी सख़्त ज़रूरत होगी। — सैकर

आत्माके आनन्दरूपी सामंजस्यका वाहरी रूप दया है।
— विलियम हैज़लिट

जैसे चन्द्रमा चाण्डालके घरको भी रोशनी देता है, वैसे ही सज्जन पुरुष गुणहीन प्राणियोंपर भी दया करते हैं। — चाणक्य-नीति

मैं नामसे इनसान हूँ, दयासे भगवान् हूँ। — सन्त साइमन

मानवताका पहला गुण है दया। किसी प्रकारका पूर्व सम्बन्ध न होनेपर भी दूसरेके दुःखके प्रसंगपर जो कोमल भाव मनुष्यके मनमें पैदा होता है और जो उसे विह्वल कर डालता है, उसीका नाम दया है। यह दया ही मानव धर्मका मूल है। — नाथजी

बिना दयाके धर्म नहीं है। — मुनि रामसिंह

दयासे बढ़कर कुछ नहीं, दया इस जिन्दगीका सार है। — सादी

जो केवल दयासे प्रेरित होकर सेवा करते हैं, उन्हें निःसंशय सुखकी प्राप्ति होती है। — भगवान् श्रीकृष्ण

शक्तिहीन लोग दयाहीन होते हैं। — काव्य रवि-मण्डल

मांस खानेवालेको दया कहाँ ? — अज्ञात

जिसके हृदयमें दया नहीं है, उसकी सब क्रियाएँ फ़िज़ूल हैं।
— महाभारत शान्ति पर्व

दया सब मनोकामनाओंको पूर्ण करनेवाली है। — तत्त्वामृत

दया सर्वोत्तम तीर्थ है। — महाभारत

दया स्वर्गमें ले जाती है। — पद्मपुराण

जब दयाका देवदूत दिलसे दुत्कार दिया जाता है और जब आँसुओंका फ़व्वारा सूख जाता है, तब आदमी रेगिस्तानकी रेतमें रेंगते हुए साँपके मानिन्द हो जाता है। — इंगर सोल

दया धर्मका मूल है। — प्रशमरति

दानसे दयाकी महिमा अधिक है। — वाशिष्ठ स्मृति

दया दूसरोंके दुःखोंको दूर करनेवाली है। — धर्म बिन्दु

दया भवसागरको पार कर देती है। — माधव दया

वे धर्मग्रन्थ धर्मग्रन्थ नहीं हैं जिनमें दयाकी महिमा न गायी गयी हो।
— पद्मपुराण

दयाके बिना पुण्य नहीं है। — सुभाषित रत्नसन्दोह

दयालु

दयालु चेहरा सदा सुन्दर है। — बेली

दयालु बननेमें कुछ खर्च नहीं पड़ता। — गान्धी

दयालुता

धन्य हैं दयालु लोग, क्योंकि वे ईश-कृपाके भाजन होंगे। — सेण्ट मैथ्यू

दयालु पुरुष दूसरेके दुःखसे पीड़ित हो जाते हैं। यह भावना ईश्वरके प्रति सर्वोत्कृष्ट पूजाके समान है, जिसे मनुष्य भगवदर्चनाके रूपमें मनमें धारण किये रह सकता है। — भागवत पुराण

दयालु पुरुष धन्य हैं; क्योंकि वे ही भगवान्‌की दयाको प्राप्त कर सकेंगे। — ईसा

मनुष्य अब दयालुतासे दूर रहना सीख ले; क्योंकि पॉलिसी ज़मीरकी छातीपर बैठी हुई है। — शेक्सपीयर

हे अर्जुन, जिनमें ऐश्वर्य और दयालुताके गुण दिखाई पड़ें, उन्हें मेरी विभूति समझना। — भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

दयालुता चरित्रको सुन्दर बनाती है। बढ़ती हुई उम्रके साथ वह चेहरेको भी सुन्दर बनाती जाती है। — जेम्स ऐलन

दर्शन

उसके भी दर्शनकी लालसा रखनेसे वह दूर हो जाता है। विषयोंकी आसक्तिसे ईश्वर-दर्शनका प्रश्न ही नहीं, ईश्वर-दर्शनकी आसक्तिसे भी वह दुराता है। आसक्ति छोड़कर साधन करते जानेसे वह शीघ्र मिलता है। — ज्ञानेश्वर

आकाशगंगाकी खिड़कियोंसे देखनेवालेके लिए पृथ्वी और सूर्यके बीचकी दूरी दूरी नहीं। — खलील जिब्रान

बाहरी दर्शन तुम्हारी प्यास नहीं बुझा सकता। — स्वामी रामदास

विशाल हृदय समता देखता है, क्षुद्र-बुद्धि विषमता। — अज्ञात

सूरजके मानिन्द न हो जाये तो आँख सूरजको नहीं देख सकती, और स्वयं सुन्दर न हो तो आत्मा 'हुस्ने-अव्वल'के दर्शन नहीं कर सकती।

– प्लोटिनस

नफ़्से-हैवानी तफ़रक़ा देखता है, रूहे-इन्सानी वहदानियत। – सूफ़ी

हज़ारों सालकी रियाज़त (तपस्या) और इबादत (पूजा) की बनिस्बत अगर तू आधे लमहे (क्षण) मेरे मुँहकी तरफ़ देखे तो मुझे ज़्यादा पसन्द है। – शब्सतरी

वस्तुके मूलस्वरूपको देखना ही सचमुच देखना है।

– तपस्वी जुन्नेद बग़दादी

जो चीज़ें दिखती हैं वे क्षणिक हैं, लेकिन जो नहीं दिखतीं वे शाश्वत हैं।

– बाइबिल

धीमे चलो और दूर तक देखो। – डच कहावत

आँखें सबने पायी हैं, नज़र किसी-किसीने। – मैकिया वैली

मैंने फूलोंमें आवाज़ें सुनीं, और गीतोंमें जगमगाहट देखी। – सन्त मार्टिन

जैसी आँख वैसा नज़ारा। – ब्लेक

मूर्ख एक ही तरफ़ देखता है, ज्ञानी हर तरफ़। – समर्थ गुरु रामदास

जब मेरा माशूक़ आता है, मैं उसे किस नज़रसे देखता हूँ? उसीकी नज़रसे, अपनीसे नहीं, क्योंकि सिवाय उसके उसे कोई नहीं देख सकता।

– इब्न-अल-अरबी

जीवात्मा जितना निर्मल हो जाता है उतना ही सूक्ष्म, इन्द्रियोंसे अगोचर वस्तुएँ उसे दिखाई देने लगती हैं। – भागवत

दर्शनशास्त्र

क्या सारे आकर्षण दर्शनशास्त्रके शीतल स्पर्श मात्रसे उड़ नहीं जाते।

– कीट्स

सारा दर्शनशास्त्र दो शब्दोंमें – संयम और सेवा। – ऐपिक्टेटस

दर्शनशास्त्र दिव्यज्ञान प्राप्त करनेका प्रयास है। — अफ़लातून

दर्शनशास्त्रका कम ज्ञान, नास्तिकताकी ओर झुकाता है; लेकिन गहन अवगाहन धर्मकी ओर ले जाता है। — वोल्टेर

मनकी सच्ची दवा दर्शनशास्त्र है। — सिसरो

दर्शनशास्त्र वह विचारधारा है जो हमें स्वयं अपने व्यक्तित्वसे परिचित करा देती है, उससे हम अपनेको जान जाते हैं। — सुक़रात

दर्शनशास्त्रसे मुझे यह मिला कि अब मैं हर सोसाइटीमें निराकुल रह सकता हूँ। — अरिस्टीपस

दर्शनशास्त्र विचार है, धर्म जीवन है। — जेम्स फ्रीमैन क्लार्क

दर्शनशास्त्रके दो सबसे ज्यादा अहम् लक्ष्य हैं – सचाईको खोजना और भलाईपर चलना। — वोल्टेर

ओ दर्शनशास्त्र; जीवन-पथ-प्रदर्शक और सद्गुणोंके आविष्कारक! — सिसरो

दण्ड

एक महात्माको किसीने गाली दी, लेकिन उसने कुछ जवाब न दिया। लोगोंने पूछा कि 'आपने सहन क्यों कर लिया; उसे दण्ड क्यों न दिया?' महात्मा बोला कि 'उसके लिए यही दण्ड बहुत है कि गाली देता है।' — अज्ञात

अपराधको दण्डसे नहीं रोका जा सकता; वह हमेशा कोई अदण्डनीय या खुला रूप और रास्ता निकाल ही लेगा। — रस्किन

दशहरा

जिस दिन हम भगवान्के स्मरणमें लग जायें वही सच्चा दशहरा है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

दाढ़ी

अगर दाढ़ी ही सब कुछ होती तो बकरा भी पुरोहित बन जाता। — डेनिश कहावत

दाढ़ीवालोंको लोग दिलवाले और दिमाग़वाले समझते हैं; पर दाढ़ीने ऐसा दावा कभी नहीं किया, उसकी दोस्ती बकरा और शेर दोनोंसे है।

– महात्मा भगवानदीन

दान

सबसे बड़ा दान आदमीको इस लायक़ बना देता है कि उसे दान न लेना पड़े। – तालमुद

जो हाथ दुआके वक़्त ख़ुदाकी तरफ़ उठाये जाते हैं और मददके वक़्त बग़लोंमें दबा लिये जाते हैं, उनसे क्या फ़ायदा? – सादी

जो कुछ हम दूसरोंको देते हैं, वास्तवमें वह सब हम अपने-आपको दे रहे हैं। अगर इस तथ्यको पहचान लिया तो फिर ऐसा कौन होगा जो दूसरोंको न दे? – रमण महर्षि

जो किसीको न देकर आप ही खाता है, वह नष्ट हो जाता है। – सामवेद

शान्ति ही महादान है। – महाभारत

दानीका धन घटता नहीं। – ऋग्वेद

वह दान क्या जो माँगनेसे मिले! वही दान अलौकिक है जो परमात्माके प्रसन्न होनेसे मिलता है। – आसा दी वार

भगवान्से जो कुछ मिलता है, औरोंको देनेके लिए ही मिलता है।

– बुक्स

दानसे धन घटता नहीं, बढ़ता है। – महात्मा ज़रथुस्त्र

भक्तोंका प्रेमसे दिया हुआ थोड़ा भी मुझे बहुत होता है। पर अभक्तोंके बहुत देनेपर भी मुझे सन्तोष नहीं होता। – भगवान् श्रीकृष्ण

ईश्वरने हम लोगोंको जो कुछ भी दिया है, वह बटोरकर रखनेके लिए नहीं, बल्कि योग्य पात्रोंको देनेके लिए है। – महात्मा ज़रथुस्त्र

सूर्य जैसे जलको खींचता और बरसाता है, उसी तरह हमें द्रव्य लेना और देना चाहिए। – भागवत

दानीके चरित्रका पता दानकी अपेक्षा दान देनेके तरीक़ेसे अधिक लगता है। — लैवेटर

वह दूना देता है जो जल्दी देता है। — पालियस मिमस

बड़ा दान छोटा हो जाता है जब दाता नामहरबान होता है। — शेक्सपीयर

उसे दिल खोलकर दे जो सत्पात्र है, मगर माँगता नहीं है। और यही तरीक़ा है खुदको देनेका। — फ़ुलर

जब तुम अपनी मिल्कियतमें-से देते हो, तो कुछ नहीं देते। देते तो तुम सचमुच तब हो जब कि तुम आत्मदान करते हो। — ख़लील जिब्रान

अगर तेरे पास बहुत है, तो उसके अनुसार दे; अगर कम है, तो भी उस कमके अनुसार देनेसे न डर। — ऐपोक्रीफ़ा

ज्ञानी संचय नहीं करता। वह ज्यों-ज्यों देता जाता है, त्यों-त्यों पाता जाता है। — लाओत्ज़े

इस दुनियाका अंकगणित कहता है : 'देगा तो दिवाला निकल जायेगा।' उस दुनियाका अंकगणित कहता है : 'देगा तो भण्डार भर जायेंगे।' — अज्ञात

दे, तो तुझे भी दिया जायेगा; अच्छा नाप होगा, हिला-हिलाकर, दबा-दबाकर भरा हुआ, और उभरा हुआ। — बाइबिल

परोपकारी मनुष्योंको ही धन दान करो। — अथर्ववेद

कंजूस पीछे रह जाता है, दानी आगे बढ़ जाता है। — ऋग्वेद

भव-कूपसे निकलनेके लिए दानसे बड़ा सहारा नहीं है। — धर्म कल्पद्रुम

सौ हाथोंसे जोड़ो और हजार हाथोंसे बाँटो। — अथर्ववेद

खुदा कहता है कि तुम खैरात करो, मैं तुमको और दूँगा। — हज़रत मुहम्मद

खैरातसे खुदाका गुस्सा ठण्डा हो जाता है। — हज़रत मुहम्मद

अन्न-दान शीघ्र ही प्रेम बढ़ानेवाला और श्रेष्ठ होता है, इसलिए बुद्धिमानों-को चाहिए कि ऐसा दान प्रयत्न करके भी दें। – अनंगरंग

कुपात्रको दान देनेवाला निर्धन होता है। –गरुड़ पुराण

तुम्हें अपने रास्तेमें खुरवाले आदमी मिलेंगे; उन्हें अपनी परवाज देना। और सींगवाले आदमी मिलेंगे; उन्हें जयमालाएँ देना। और पंजोंवाले आदमी मिलेंगे; उन्हें अँगुलियोंके लिए पंखड़ियाँ देना। और बर्छीली जबानोंवाले आदमी मिलेंगे; उन्हें शब्दोंके लिए शहद देना।

– खलील जिब्रान

सब प्राणियोंमें भगवान् हैं, ऐसा समझकर सबकी इच्छानुसार वस्तुएँ देकर भलीभाँति सम्मानित करना चाहिए। – श्रीमद्भागवत

दान देकर तुम्हें खुश होना चाहिए; क्योंकि मुसीबत दानकी दीवारको कभी नहीं फाँदती। – हज़रत मुहम्मद

इस पृथ्वीपर दान ही सर्वोत्तम कार्य है। – उपदेश तरंगिणी

दानसे धनकी श्रीवृद्धि होती है। – बृहस्पति स्मृति

दान वशीकरण है। – उपदेश तरंगिणी

भयभीत प्राणीको अभय दान देना कभी निष्फल नहीं जाता।

– मार्कण्डेय पुराण

अभय दान देनेसे प्राणी दीर्घजीवी और निरोग होता है।

– महाभारत शान्ति पर्व

दानसे दरिद्रता नष्ट हो जाती है। – चाणक्य नीति

अन्नका दान देनेवाले सदा सुखी रहते हैं। – बृहस्पति स्मृति

निर्धन ही दान ग्रहण करना चाहते हैं। – अज्ञात

ज्यादा नहीं दे सकते तो अपने निवालेमें-से ही आधा निवाला क्यों नहीं दे देते? – जैन पंचतंत्र

इस लोकमें और उस लोकमें दानसे बढ़कर कोई मित्र नहीं है।

– अत्रिसंहिता

दानसे दुश्मनीका भी नाश हो जाता है। — मनुस्मृति

दानशीलता

जो खुशक़िस्मत है वह दानशीलता अख्तियार करता है; और दानशीलता-से ही आदमी खुशक़िस्मत होता है। — सादी

मैं नरों और देवोंकी तरह बोलता होऊँ, लेकिन अगर मुझमें दानशीलता न हो तो मैं बजते हुए घण्टे और मजीरेकी तरह हूँ। — बाइबिल

दानशीलता आदमीकी बुराइयोंको इस तरह बदल देती है जैसे कीमिया ताँबेको सोना कर देती है। — सादी

दानशीलता आदमीके सब दर्दोंकी दवा है। — सादी

दार्शनिक

दार्शनिक होनेके माने सिर्फ़ सूक्ष्म विचारक होना नहीं है, या सिर्फ़ किसी दर्शन-प्रणालीको चला देना नहीं है, बल्कि यह कि हम ज्ञानके ऐसे प्रेमी बन जायें कि उसके इशारोंपर चलते हुए विश्वास, सादगी, आज़ादी और उदारताकी ज़िन्दगी बशर करने लग जायें। — थोरो

जो सत्यकी झलकके प्रेमी हैं, वही सच्चे दार्शनिक हैं। — सुक़रात

जब ज़िन्दगीको अपने दिलके गीत सुनानेके लिए गायक नहीं मिलता, तो वह अपने मनके विचार सुनानेके लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।

— ख़लील जिब्रान

दिखावा

न्यूनतम योग्यतावाले ही सर्वाधिक प्रदर्शनप्रिय होते हैं। खोखली तारीफ़से वे फ़िलफ़ौर फूल उठते हैं। — मैगून

क्या तुम्हें मालूम है कि सत्पुरुष कोई काम दिखावेके लिए नहीं करता, बल्कि हर काम आत्मसन्तोषके लिए करता है? —एपिक्टेटस

आदमीमें ठीक उतना ही दिखावटीपन होता है, जितनी उसमें समझकी कमी होती है। — पोप

दिमाग़

अच्छा दिमाग़ सौ हाथोंके बराबर है। — कहावत

दिल

आदमीके दिलसे बड़ा कुछ नहीं। आदमीका दिल ही तमाम तीर्थोंका स्थान है। यही मन्दिर, मसजिद, गिरजा, काबा, काशी और जेरुसलम है। ईसा और मूसाने यहीं बैठकर सत्यका साक्षात्कार किया था।

— नजरुल इस्लाम

ज़बान ज़ररेज़ी करे, उससे पेश्तर दिलको दमकना चाहिए।

— डब्ल्यू० आर० अलजर

ईमानवाले आदमीका दिल अल्लाहका तख्त है। — ख़लीफ़ा अली

दिलेरी

दिलेर बनो, लजोले नहीं; विस्तीर्ण बनो, संकीर्ण नहीं; और निश्चय ही अपने महत्तर रूपमें आओ। — खलील जिब्रान

दीनता

निर्धनतासे नहीं, वल्कि याचनासे आदमीको दीनता प्रकट होती है। शिवजी कौपीनधारी — परम निर्धन — होनेपर भी परमेश्वर ही माने जाते हैं। — भोज प्रबन्ध

दीर्घजीवन

अहमियत इस बातकी नहीं कि हम कितने जिये, बल्कि इसकी है कि कैसे जिये। — बेली

वे ही अधिक जिये हैं जिन्होंने नेक-जिन्दगी बसर की है।—शैरीडन

दीवाली

आनन्दी वृत्ति ही दीवालीकी निशानी है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

दीर्घायु

लक्ष्य दीर्घजीवन नहीं, अमरत्व है। — स्वामी रामदास

लम्बी ज़िन्दगी चाहनेवालोंको धीरे-धीरे जीनेकी ज़रूरत है। — सिसरो

मैं अच्छे-अच्छे कर्म करता हुआ हज़ार वर्षकी आयु पाऊँ। — अथर्ववेद

दुनिया

दुनिया एक रंगशाला है, और तमाम पुरुष और स्त्री केवल पात्र हैं।
— शेक्सपीयर

हक़ीक़त जान ली तो फिर दुनिया क्या है ? — काव्यानन्द

करतारने जड़-चेतन-गुण-दोषमय दुनिया बनायी है। सन्त-हंस गुण-दुग्ध ले लेते हैं और विकार-वारि छोड़ देते हैं। — सन्त तुलसीदास

दुनिया एक बड़ी किताब है, मगर जो घरसे कभी नहीं निकलते, उसका सिर्फ़ एक वर्क़ पढ़ते हैं। — ऑगस्टाइन

दुनिया एक सुन्दर पुस्तक है, लेकिन जो पढ़ नहीं सकता उसके लिए किसी कामकी नहीं। — गोल्डोनी

यह दुनिया एक बुलबुला है। — बेकन

हमारी यह दुनिया एक शहर है। — ऐपिक्टेट्स

दुनियाकी खुशीके खातिर मैं ईश्वरसे ग़द्दारी नहीं कर सकता। — गान्धी

हम दुनियाको नहीं बदल सकते, मगर दुनियाके प्रति अपना दृष्टिकोण बदल सकते हैं। — स्वामी रामदास

रोज़ी, चाँदी, बेटा या बीबी दुनिया नहीं है। खुदासे ग़ाफ़िल होना दुनिया है। जिस किसीने दुनियासे अपना मुँह मोड़ा वह फिर मिट नहीं सकता, क्योंकि वह अपनी भूली हुई असलियतको फिरसे जान जाता है।
— एक सूफ़ी

दुर्गुण

दुर्गुणपर हमला करना हमेशा जायज़ रहा है और रहेगा, बशर्ते कि आप साथ ही दुर्गुणीको बख्श दें । – बर्टन

कीड़ेको रौंदनेसे और शाहंशाहके आगे गिड़गिड़ानेसे नफ़रत कर । – सादी

बारम्बार की जानेवाली बुराई, घूमती हुई हवाकी तरह आँखोंमें धूल उड़ाती है । – शेक्सपीयर

अपकीर्तिके समान कोई मृत्यु नहीं है; क्रोधके समान कोई शत्रु नहीं है; निन्दाके समान कोई पाप नहीं है; मोहके समान कोई नशा नहीं है; असूयाके समान कोई अपकीर्ति नहीं है; कामके समान कोई आग नहीं है; रागके समान कोई बन्धन नहीं है; और आसक्तिके समान कोई विष नहीं है । – नारद० पूर्व प्रथम

हमारे मधुर दुर्गुण ही हमें सज़ा देनेके लिए कोड़े बना दिये जाते हैं । – शेक्सपीयर

दुर्जन

पेट भरनेके लिए तू नीच आदमियोंके पीछे लगता है और उनकी चापलूसी और तारीफ़ करता है । – समर्थ गुरु रामदास

दुर्जन लोग सज्जनोंको नहीं देख सकते । बाज़ारू कुत्ते शिकारी कुत्तेको देखकर भौंकते है, मगर उसके पास जानेकी हिम्मत नहीं करते । – सादी

साँप क्रूर होता है, दुष्ट भी क्रूर होता है; फिर भी दुष्ट आदमी साँपसे ज्यादा क्रूर होता है । साँप तो मन्त्रौपधिसे वशमें आ जाता है, पर दुष्टका कैसे निवारण किया जाये ? – चाणक्यनीति

दुर्जन विद्याभूपित हो तो भी त्याज्य है; मणि-भूषित सर्प क्या भयंकर नहीं होता ? – चाणक्यनीति

दुर्जन मीठा बोले तो भी उसपर विश्वास न करो, क्योंकि उसकी ज़बानपर शहद रहता है, दिलमें ज़हर। — चाणक्यनीति

दुर्जनकी विद्या विवादके लिए, धन मदके लिए और शक्ति दूसरोंको कष्ट देनेके लिए होती है। इसके विपरीत सज्जनकी विद्या ज्ञानके लिए, धन दानके लिए और शक्ति रक्षाके लिए होती है। — भवभूति

दुर्जनको सब दुर्जन लगते हैं, सज्जनको सज्जन। — उपासनी

सत्कर्म न करनेवाले, वृथा भाषी, हिंसावादी, सूद लेनेवाले, श्रद्धाहीन, यज्ञ न करनेवाले डाकुओंको दूर करो। — वेदवाणी

शस्त्रोंसे गुण्डोंको नम्र करना योग्य है। — ऋग्वेद

दुर्जनोंके अपशब्दोंसे त्रस्त हुए मनको शान्त करनेवाले साधु इस दुनियामें बहुत ही बिरले हैं। — भागवत

दुर्बलता

अपनेको भेड़ बना दोगे तो भेड़िये आकर तुम्हें खा जायेंगे।
— फ्रांसीसी, इटालियन और जर्मन कहावत

अगर कोई आदमी अपनेको कीड़ा बना ले, तो रौंदे जानेपर उसे शिकायत नहीं करनी चाहिए। — काण्ट

अपनेको गधा बना दोगे तो हर-एक अपना बोझा तुमपर लादता जायेगा।
— जर्मन कहावत

दुश्मन

हमें अपने सद्गुणोंका पता दोस्तोंसे लगता है; अपने दुर्गुणोंका पता दुश्मनोंसे। — रिचटर

सच्चा धर्मात्मा अपने दुश्मनका भी दिल नहीं दुखाता। तू जो कि अपने दोस्तोंसे भी तकरार किया करता है, उस पदको कैसे पा सकता है।
— सादी

अगर तू दुश्मनसे सुलह करना चाहता है, तो जब-जब वह तेरी बुराई करे, तू उसकी भलाई कर। – सादी

दुश्मनकी मौत मेरे लिए शादमानीकी बात नहीं है, क्योंकि मेरी भी ज़िन्दगी जाविदानी नहीं है। – सादी

अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उसे खिला; प्यासा हो तो पिला; इस तरह तू उसके सिरपर जलते हुए कोयले रख देगा। – बाइबिल

वही आदमी अपने दुश्मनसे प्रेम कर सकता है, जो जानता है कि दुश्मन साक्षात् भगवान् है। – विवेकानन्द

एक दुश्मन बहुत है, सौ दोस्त कम हैं। – यूरोपियन कहावत

किसीके हज़ार दोस्त हों, फिर भी कोई फ़ाजिल नहीं होता, और जिसका एक दुश्मन होता है उसे वह हर जगह दिखाई देता है। – एमर्सन

दुश्मनी

वैरी वैर करता है और फिर दूसरोंके वैरका भागी होता है। इस तरह वैरसे वैर आगे बढ़ता जाता है। – भगवान् महावीर

दुष्कर्म

ताजा दुहा हुआ दूध जैसे जल्दी नहीं बिगड़ता, उसी प्रकार बुरे कर्मोंका फल भी जल्दी नहीं मालूम होता, लेकिन वह राखमें दबी हुई आगकी तरह मौजूद है। – बुद्ध

दुष्ट

जब कभी मैं दुष्टोंको दुर्दशामें पड़ते देखता हूँ, तभी देवोंके अस्तित्वको घोषणा करने लगता हूँ। – यूरिपिडीज

अगर दुष्ट लोग फलीभूत हो रहे हैं, और तू कष्ट भोग रहा है तो, निराश न हो; उन्हें विनाशके लिए चर्बीला बनाया जा रहा है, तुझे स्वास्थ्यके लिए पथ्यपर रखा जा रहा है। – फ़ुलर

दुष्टके सामने अपनी ज़रूरत कहनेसे तुम्हें सिवाय दुःखके कुछ नहीं मिलेगा। — सादी

बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ विधाता ॥
— रामायण

दुष्टोंको देखनेसे, छूनेसे, उनके साथ बातचीत करनेसे, और उनके साथ एक आसनपर बैठनेसे धार्मिक आचार नष्ट हो जाते हैं और किसी काममें सफलता नहीं मिलती। — महाभारत

नेक लोग स्वर्ग जानेके लिए जितना कष्ट उठाते हैं उससे अधिक कष्ट बद लोग नरक जानेके लिए उठाते हैं। — विलिग्ज़

दुष्ट पीछा न किये जानेपर भी भाग खड़े होते हैं, लेकिन सज्जन शेरकी तरह दिलेर होते हैं। — कहावत

कोई दुष्ट हानि और दण्डसे मुक्त नहीं है। — ऐपिक्टेटस

जो अन्याय और दुष्टता बोते हैं, वे काटते भी इन्हींकी फ़सल हैं। — जौब

दुष्टोंका तेज नष्ट करना मेरा कर्त्तव्य है। — भगवान् श्रीकृष्ण

दुष्टता दुर्बलता है। — मिल्टन

इस संसारमें दुष्टकी रक्षा नहीं। — ऋग्वेद

जो अपने स्वार्थके लिए दूसरेको क्षति पहुँचावे वह दुष्ट है।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

सब बुरे आदमी गुलाम हैं। — प्लुटार्क

दुःख

शुद्ध और बलवान् बननेसे दुःखका हरण होता है। — वेदवाणी

अनात्म पदार्थोंका चिन्तन दुःखका कारण है। आनन्दस्वरूप आत्माका चिन्तन मोक्षका कारण है। — शंकराचार्य

ईश्वर आदमियोंको गहरे पानीमें, डुबानेके लिए नहीं, नहलानेके लिए लाता है। — ओथे

स्वर्ग-सुखसे भगवान्का दिया हुआ दुःख ज्यादा अच्छा है।

– सन्त पिंगल

"भगवन्! प्रारब्धसे आये हुए दुःखोंका दोष तुझे नहीं है। लेकिन अगर दुःखोंसे ही तेरा अनुसन्धान टिकता हो तो मुझे जन्म-भर दुःखोंमें ही रख।"

– कुन्ती

दुःख इसलिए है कि तुमने कभी-न-कभी न करने लायक काम किया होगा। पर उस दुःखसे बचना है तो देहबुद्धि छोड़ दो। – श्री ब्रह्मचैतन्य

अगर अहंकार न रहे तो दुःख न रहे। – श्री ब्रह्मचैतन्य

अपने और दूसरोंके दोषोंकी वजहसे और हममें और सबमें मानवताका विकास न होनेसे जो दुःख हम सबको भोगने पड़ते हैं उनका कर्ता कौन है? ईश्वर या हम?

– नाथजी

सदा दुःखी कौन है? विषयानुरागी। – शंकराचार्य

सात सागरोंके जलकी अपेक्षा मानवके नेत्रोंसे कहीं अधिक आँसू बह चुके हैं।

– भगवान् बुद्ध

अगर विपत्ति दूर करनेके लिए किसीकी चाकरी करनी पड़े तो विपत्ति ही इससे बढ़कर क्या कष्ट दे सकती थी? – संस्कृत-सूक्ति

जैसे दलदलमें फँसा हुआ हाथी दुःखी होता है, उसी तरह पुत्र, मित्र, कलत्रमें आसक्त होकर यह जीव दुःख पाता है। – संस्कृत-सूक्ति

ईश्वर ही शत्रु-मित्रको निमित्त बनाकर दुःख-सुख देता है। अगर्चे तीर कमानसे छूटता है, मगर अक़्लमन्द लोग तीरन्दाज़को ही देखते हैं।

– सादी

कौन दुःख देता है कौन सुख! कर्म ही झकझोर कर देते हैं। जैसे पताका पवनके ज़ोरसे ख़ुद ही उलझती और सुलझती है। – एक हिन्दू कवि

अजीब बात है, कि सुखकी अभिलाषा मेरे दुःखका एक अंश है ।
— खलील जिब्रान

क्यों दुःख करते हो ? सब कुछ आनन्द-ही-आनन्द है । — स्वामी रामदास

ईश्वर दुःखके तमाचे लगाकर हमें झूठसे हटाकर सचाईकी तरफ़ ले जाता है । — स्वामी रामदास

जब रंज और दुःख अत्यन्त बढ़ जायें तो निश्चित मानो कि सुख और शान्तिका जमाना शुरू होनेवाला है । — स्वामी रामदास

जबतक राग है तबतक दुःख है । — आचार्य गणेशप्रसाद वर्णी

ईश्वर तुम्हें सत्योन्मुख करनेके लिए ही दुःख देता है । — स्वामी रामदास

दुःखकी उपेक्षा करनेसे वह कम हो जाता है । — सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

असल दुःखसे ही असल सुख मिलता है । — उपासनी

दुःख किसीके भेजनेसे आपके पास नहीं आता, आप उसे स्वयं बुलाते हैं ।
— स्वामी विवेकानन्द

दुःखका कारण क्या है ? ममता । — शंकराचार्य

जख्मोंसे भरे भिखारीको देखो; ज्ञानी कहते हैं कि इसने पहले औरोंको दुःख देकर हिंसा की ही होगी । — अज्ञात

जैसे रात सितारे दिखाती है, रंज हमें सचाइयाँ दिखाता है । — बेली

चिन्ताएँ, परेशानियाँ, दुःख और तकलीफ़ें परिस्थितियोंसे लड़नेसे नहीं दूर हो सकतीं; वे दूर होंगी अपनी अन्दरूनी कमज़ोरी दूर करनेसे जिसके कारण ही वे सचमुच पैदा हुई हैं । — स्वामी रामतीर्थ

हम अपने दुःखोंको ख़ुद बुलाते हैं, वे ख़ुदाके भेजे हुए नहीं आते ।
— मेरी कौरैली

विधाता जिसे दारुण दुःख देना चाहते हैं उसकी मतिको पहले हर लेते हैं । — सन्त तुलसीदास

भवदुःखकी चक्कीमें सब जीव पीसे जा रहे हैं, केवल सदानन्द स्वरूप भगवान्के भक्त ही बचे हुए हैं। – संस्कृत-सूक्ति

पराधीन सब कुछ दुःखरूप है; स्वाधीन सब सुखरूप है – यह संक्षेपमें दुःख-सुखका लक्षण है। – मनु

ईश्वर जो कठिनाई भेजे उससे बच निकलनेकी कोशिश न करो, वर्ना उससे भी बड़ी कठिनाई अपने सामने खड़ी देखोगे। ऐस० फ़िलिप नेरी

मूढ़ोंके सामने रोज़-बरोज़ भयके सैकड़ों और शोकके हज़ारों अवसर आया करते हैं, ज्ञानियोंके सामने नहीं। – महर्षि शौनक

ज्ञानी और भक्तोंको त्रिकालमें भी दुःख नहीं होता, और संसारी जनोंका दुःख त्रिकालमें भी नहीं छूटता। – उड़िया बाबा

दुःखोंसे बचना हो तो पहले अपने दोष दूर करना ज़रूरी है – यह सीधी-सादी बात भी हम भूल जाते हैं। – केदारनाथ

मुझे सदैव विपत्ति दें। – कुन्ती

मुझे दर्द-दिल दे मेरे देनेवाले ! – एक उर्दू शायर

अपने दुःखका कारण अपने दोष हैं। – केदारनाथ

यह आश्चर्य देखो, मेरे दुःखका प्रधान भाग मेरे सुख पानेकी इच्छामें है ! मुझे यह अजीब लगा कि सुख पानेकी इच्छाका नाम ही दुःख है ! – ख़लील जिब्रान

हमारे तमाम दुःखोंका प्रधान कारण यह है कि हम स्वयं अपने प्रति सच्चे न रहकर दूसरोंको खुश करते रहते हैं। – स्वामी रामतीर्थ

हर-एकको अपना भार स्वयं सहना होगा। – बाइबिल

द्वैतमें दुःख है, अद्वैतमें सुख व आनन्द है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

दूरदर्शिता

हर बातमें हमें अन्त तकका विचार करना चाहिए। – ला फ़ौण्टेन

दृढ़ता

किसी विशाल वाहिनीके नायकको छीना जा सकता है, परन्तु किसी ग़रीब आदमीसे उसकी दृढ़ताको नहीं छीना जा सकता। – कन्फ़्यूशियस

दृष्टि

दुःखी हृदयके लिए आत्मीयताकी एक नज़र कुबेरके खज़ानेसे भी ज़्यादा क़ीमती है। – गेटे

अपने दिलकी आँखसे सिवाय दोस्तके और कुछ मत देख। जो भी तुझे दिखाई देता है उसे उसी प्यारेका रूप समझ। – मामुक़ीमा

जो चीज़ पहले आदि, मध्य और अन्तमें मनोरम लगती थी, वही अपवित्र, नाशवान् और घृणित लगी। – संस्कृत-सूक्ति

हाड़-मांसकी चीज़ोंको आत्माकी आँखोंसे देखो, यह न करो कि उलटा आत्माकी चीज़ोंको हाड़-मांसकी आँखोंसे देखो। – इंजील

जो अपना हित देख सकता है वही आँखोंवाला है। – कपिलदेव

देर

एक मिनिट देरसे पहुँचनेकी अपेक्षा तीन घण्टे पहले पहुँचना अच्छा। – शेक्सपीयर

देव

द्विजातिका देव अग्नि है, मुनियोंका देव हृदयमें है, अल्पबुद्धिवालेका देव प्रतिमामें है, और समदर्शीका देव सर्वत्र है। – उत्तरगीता

ब्रह्मा, विष्णु और महेश वस्तुतः हैं ही नहीं, केवल ईश्वरका अस्तित्व है और केवल वही वास्तविक, शाश्वत सर्वव्यापक है। – समर्थ गुरु रामदास

लोग समझते हैं कि देव सुनारों, लुहारों, और संगतराशों-द्वारा बनाये जा सकते हैं। – समर्थ गुरु रामदास

देवता

देवता पुरुषार्थीसे प्रेम करते हैं, आलसीसे नहीं – ऋग्वेद

देवालय

हिन्दू मन्दिरकी वन्दना करते हैं, मुसलमान मसजिदको। योगी परमपदकी आराधना करते हैं जहाँ मन्दिर है न मसजिद। – गोरखनाथ

देश-प्रेम

मेरा देश-प्रेम मेरे धर्मके अधीन है। – गान्धी

देश-भक्ति

जबतक तुम मानवजातिमें-से देशभक्ति नहीं निकाल फेंकोगे तबतक दुनियामें कभी शान्ति क़ायम नहीं कर पाओगे। – जॉर्ज बर्नार्ड शा

देह

देह धरेका दण्ड सबको मिलता है, ज्ञानी उसे ज्ञानपूर्वक सहते हैं, मूर्ख रोकर। – कबीर

जिसने देहका अभिमान छोड़ दिया है, वह परमानन्दरूप है; और जिसको देहका अभिनान है, वह परम दुःखी है। – योगवाशिष्ठ

इस दुर्लभ नर-देहको पाकर धीर पुरुषको उचित है कि मौतके चंगुलमें फँसनेसे पहले मोक्ष-प्राप्तिके लिए प्रयत्न कर ले, क्योंकि विषय तो सभी योनियोंमें प्राप्त होते हैं। – श्रीमद्भागवत

देह-बुद्धि

सारे दुःख-दर्द तभीतक हैं जबतक देहासक्ति है। – स्वामी रामतीर्थ

देहबुद्धिके नष्ट होते ही तमाम कर्म नष्ट हो जाते हैं।
– सद्गुरु श्रीब्रह्मचैतन्य

तू पानी है, मगर तूने अपनेको पानीका घड़ा समझ रखा है ! – सनाई

दैव

हे राम ! यह जो दैव शब्द है सो मूर्खोंका बनाया हुआ है। पूर्वकृत कर्म ही दैव है, और कोई दैव नहीं। – गुरु वशिष्ठ

दोष

आदमी मुसीबतोंको सह सकता है, क्योंकि वे बाहरसे आती हैं; लेकिन अपने दोषोंको सहना – आह ! वही तो जीवन-दंश है। – आस्कर वाइल्ड

जिन दोषोंको हम दूसरोंमें देखते हैं उन्हें अपनेमें न रहने दें। – मीनेण्डर

अगर हममें दोष न होते तो हम दूसरोंके दोषोंको देखनेमें कम रस लेते।
– फ्रेंकोज़

दोष-दर्शन

जिस तरह सुनिपुण लोग परदोषदर्शनमें तत्पर रहते हैं उस तरह निज दोषदर्शनमें रहें तो बन्धनसे कौन मुक्त न हो जाये ? – स्मृति

तू दूसरेकी आँखकी किरकिरी क्यों देखता है, अपनी आँखका शहतीर तो निकाल ? – बाइबिल

साधक दुनियाके दोष न देखे, क्योंकि उन दोषोंके बीज अपने ही अन्दर हैं। – श्री ब्रह्मचैतन्य

परदोषदर्शन भगवत्प्राप्तिमें महान् विघ्न है। – उड़िया बाबा

दोषारोपण

साधारण असंस्कृत लोग अपनी हर बुराईका दोषी दूसरेको ठहराते हैं; अल्पज्ञानी स्वयंको; विशेषज्ञानी किसीको नहीं। – ऐपिक्टेटस

दोस्त

दोस्त वे हैं जो क़ैदख़ानेमें काम आयें। दस्तरख़्वानपर तो दुश्मन भी दोस्त दिखाई देता है। — शेख़ सादी

पैसा नहीं है, तो कोई दोस्त नहीं है। — जर्मन कहावत

जो तुम्हारे समान नहीं हैं उनसे कभी दोस्ती न करो। — कन्फ़्यूशियस

सच्चा दोस्त वह है जो आज़ादीसे दिल खोलकर बात करे। नेक सलाह दे, फ़िलफ़ौर मदद करे, बहादुराना हिम्मत करे, सब कुछ धैर्यपूर्वक सहन करे, साहसपूर्वक रक्षा करे, और बग़ैर बदले हमेशा दोस्त बना रहे। — विलियम पैन

रिश्तेदार हमें इत्तिफ़ाक़से मिलते हैं, लेकिन दोस्त हम अपनी ख़ुशीसे चुनते हैं। — डैलिल

दोस्त वह है जो वक़्तपर काम आये। — रिचार्ड ग्रेब्ज़

जो तेरा है सो मेरा है, जो मेरा है सो तेरा है। — प्लॉटस

नेक आदमी सबसे अच्छा दोस्त होता है। — जैरेमी टेलर

दोस्त वह शख़्स है जिसके साथ मैं सिदक़दिलीसे पेश आ सकूँ। — एमर्सन

नासाफ़ दोस्तीसे साफ़ दुश्मनी अच्छी। — डेनिश कहावत

ग़रीबका कोई दोस्त नहीं। — स्पेनी कहावत

जो ज़रा-सी बातपर अमित्र हो गया वह कभी मित्र था ही नहीं। — पुर्तगाली कहावत

ज़िन्दगीमें एक दोस्त मिल गया तो बहुत है; दो बहुत ज़्यादा हैं; तीन तो मुमकिन ही नहीं हैं। — हैनरी आदम्स

जो दुश्मन बनानेसे ख़ौफ़ खाता है, उसे कभी सच्चे दोस्त नहीं मिलेंगे। — हैज़लिट

उस दोस्तसे बचो जो तुम्हें अपने डैनोंसे ढँकता है और अपनी चोंचसे डसता है। — स्पेनी कहावत

जो दोस्तकी भलाई करता है वह अपनी भलाई करता है। — इरसमस

दोस्त बनानेसे पहले, उसके साथ पाँच सेर नमक खाओ। — जॉर्ज हरबर्ट

मेरे दोस्त! दोस्त हैं ही नहीं। — अरस्तू

दोस्ती

बनावटी दोस्ती अमरबेलके समान है, जिस दरख़्तपर होगी उसे सुखा डालेगी। — बरटन

या तो हाथीवालेसे दोस्ती न करो, नहीं तो ऐसा मकान बनवाओ जहाँ उसका हाथी आकर खड़ा हो सके। — शेख़ सादी

एक ज्ञानीकी मित्रता दुनिया-भरके तमाम बेवक़ूफ़ोंकी दोस्तीसे बढ़कर है। — डैमोक्रिटस

टूटी दोस्ती टाँकी जा सकती है, मज़बूत नहीं बनायी जा सकती। — पुर्तगाली कहावत

दौलत

इस शरीरसे दौलत तो मिल सकती है, लेकिन दौलतसे यह शरीर नहीं मिल सकता। — संस्कृत-सूक्ति

दौलतसे अमरत्वकी आशा नहीं है। — बृहदारण्यकोपनिषद्

दौलतमन्दोंके लम्बे हाथ हैं, मगर वे स्वर्ग तक नहीं पहुँचते। — डेनिश कहावत

बड़ी दौलत बड़ी गुलामी है। — सैनेका

दौलत जोड़नेमें अपनी ज़िन्दगी बरबाद न करो। दौलत कूड़ा है, जीवन मोती। — सादी

कोई सन्त लखपती नहीं था। — अफ़लातून

दौलत अकसर उनको दुःखदायक होती है जिनके पास वह होती है ।

– प्लुटार्क

जो राष्ट्र जितना पतित होता जायेगा उतना ही दौलतको ज़्यादा इज़्ज़तकी चीज़ समझता जायेगा लेकिन ग़रीब ग़रीब क्यों हैं ? और अमीर अमीर क्यों हैं ? इन सवालोंके सच्चे जवाबसे ग़रीब अपनी ग़रीबीपर गर्व करने लगेगा और अमीर अपनी अमीरीपर शर्मिन्दा होने लगेगा । – कोल्टन

सम्पत्ति और भक्ति परस्पर विरोधी हैं । पूर्ण ईश-निर्भरतामें धन-संचयकी गुंजाइश नहीं; इसीलिए निर्धनता सन्तों और महात्माओंकी निशानी रही है । – स्वामी रामदास

दौलतमन्द

दौलतमन्दोंके अहमक़ाना प्रलाप भी तत्त्वज्ञानके सूत्र समझ जाते हैं ।

– सर्वेण्टीज

वह दौलतका अम्बार लगाता जाता है, मगर नहीं जानता कि उसका उपभोग कौन करेगा । – सान्स

द्रोह

जो किसीसे भी द्रोह करेगा उसे भयभीत होना पड़ेगा ।

– महाराज वसुदेव

द्विविधा

द्विविधा हो तो यह सोचो कि किस रास्ते जानेसे ग़रीबोंका ज़्यादा भला होगा । – महात्मा गान्धी

द्वेष

जो हमसे द्वेष रखे उसकी आत्मा ही उससे ग्लानि करने लगे । – अथर्ववेद

हमसे कोई भी द्वेष करनेवाला न हो । – अथर्ववेद

जब यह सारा संसार तापत्रयसे जल रहा है तब इन शोचनीय जीवोंसे कौन बुद्धिमान् द्वेष करेगा ? — भक्त प्रह्लाद

हमें लोग चाहे कितने ही बुरे मालूम हों, फिर भी उनसे द्वेष नहीं करना चाहिए। — रमण महर्षि

ध

धन

भाई, स्त्री, माता, पिता और स्नेहियोंके बीच द्रव्यके कारण ही फूट पड़ती है। अभिन्न लोग भी एक दमड़ीपर दुश्मन हो जाते हैं। — भागवत

अच्छा कर्म करनेवालेको धन दो। — वेदवाणी

भाग्यवान् वह है जिसका धन ग़ुलाम है, और अभागा वह है जो धनका ग़ुलाम है। — हसन बसरी

केवल धनके कारण मान देना घोर नैतिक पतनकी निशानी है।
— गाइनेण्ड

मैं सोनेकी दीवार नहीं खड़ी करना चाहता; न राकफ़ैलर या कारनेगी बननेकी मेरी इच्छा है, मैं सिर्फ़ इतना धन चाहता हूँ कि जरूरतकी मामूली चीज़ोंके लिए तरसना न पड़े। — प्रेमचन्द

शर्मकी अमीरीसे इज्ज़तकी ग़रीबी अच्छी। — डच कहावत

अमीर ग़रीबोंको निगलते हैं, और शैतान अमीरोंको निगलता है, इस तरह दोनों हज़म हो जाते हैं। — डच कहावत

अगर धन तुम्हारा है, तो तुम उसे परलोकमें अपने साथ क्यों नहीं ले जाते। — बेंजामिन फ्रेंकलिन

जो श्रद्धा-पूजाको छोड़कर केवल धनके पीछे पड़े हैं वे मानो चिन्ताग्निका स्वागत कर रहे हैं। — अथर्ववेद

उसके पास पर्याप्त धन है जिसके पास दान देनेके लिए क़ाफ़ी है।
— सर थॉमस ब्राउन

दौलतमन्द बननेके लिए सिर्फ़ ईश्वरकी तरफ़ पीठ फेरनेकी ज़रूरत है।
— फ्रांसीसी कहावत

अत्यधिक धनको बिना पापके न तो कोई कमा सकता है न रख सकता है। — हरैस्मस

सब शुद्धियोंमें धनकी पवित्रता ही श्रेष्ठ कही गयी है, क्योंकि जो धनमें शुद्ध है वही शुद्ध है। — मनु

धन सिर्फ़ काम चलानेके लिए इस्तेमालकी चीज़ है, उसे नागरिक प्रतिष्ठा और नैतिक उत्कृष्टताका प्रतिनिधि नहीं बना देना चाहिए। — पोर्टर

धन खादकी तरह है, जबतक फैलाया न जाये बहुत कम उपयोगी है।
— बेकन

सोना मूर्खका परदा है जो कि उसके तमाम दोषोंको दुनियासे छिपाता है।
— फ़ैल्थम

ज्ञानियोंको बहुत धन दो। — वेदवाणी

पैसेसे प्यार करना ईश्वरसे घृणा करना है। — एस० जी० मिल्स

धन जमा करनेमें अपनी उम्रको मत खो। धन ठीकरी है और उम्र मोती।
— सादी

जो धर्मके लिए धन पाना चाहता है, उसे धनकी ओरसे निरीह हो जाना ही अच्छा; क्योंकि कीचड़ लगाकर धोनेकी अपेक्षा उसका स्पर्श ही न करना श्रेयस्कर है। — महर्षि वैशम्पायन

जो धनकी दृष्टिसे पवित्र है वही पवित्र है। — मनु

अगर दूसरोंको आपके रुपयेकी ग़रज़ न हो तो आपका रुपया बेकार है। जहाँ ग़रीबी है वहीं अमीरी चल सकती है। — रस्किन

उस धनिकका रंज जिससे कोई नहीं लेता उस भिखारीके दु:खसे ज़्यादा है जिसे कोई नहीं देता। — ख़लील जिब्रान

दूसरोंके धनकी वासना मत रखो और अपने भी धनकी वासना नहीं रखनी चाहिए। — शंकराचार्य

मनुष्य अपने हृदयके शुद्ध संकल्पसे श्रद्धाको और श्रद्धासे धनको प्राप्त होता है। — ऋग्वेद

ऐ सन्तोष ! मुझे धनी बना दे, क्योंकि तेरे बिना कोई धनी नहीं है। — सादी

धनवान्

जो जल्दी धनवान् बन रहा है, निर्दोष नहीं हो सकता। — बाइबिल

ग़रीब उदार होता है, धनवान् लोभी। — स्पेनी कहावत

वहाँ चलो जहाँ विचार-शून्य, मूढमति, धनके लोभसे कुढंगी बातें करनेवाले नीच धनवानोंका नाम तक सुनाई न पड़े। — संस्कृत-सूक्ति

ऊँट सुईके नकुएमें-से भले ही निकल जाये, मगर धनवान् आदमी ईश्वरके राज्यमें दाख़िल नहीं हो सकता। — बाइबिल

सबसे बड़ा अमीर वह है जो ग़रीबोंका दु:ख दूर करता है, और सबसे अच्छा फ़क़ीर वह है जो अपने गुज़ारेके लिए अमीरोंका मुँह नहीं देखता। — सादी

धनिक

जो सज्जनता रूपी जलके लिए मरुभूमि हैं, सदाचार रूपी चित्रके लिए आकाश हैं, सद्गुण रूपी चाँदनीके लिए अमावास्या हैं, सरलताके लिए कुत्तेकी दुम हैं, ऐसे दुष्ट धनिकों तककी जिसने कलियुगमें नौकरी कर ली है उसके लिए भक्तिमात्रसे प्रसन्न हो जानेवाले भगवान्‌की सेवा करना क्या मुश्किल है ! — संस्कृत-सूक्ति

धनी

अमीर और ग़रीबका फ़र्क़ कितना नगण्य है। एक ही दिनकी भूख और एक ही घण्टेकी प्यास दोनोंको समान बना देती है। – ख़लील जिब्रान

धन्यवाद

अगर तू ईश्वरके शुक्रसे अपनी ज़बान बन्द न करे तो शाश्वत सम्पत्ति पा जाय। – सादी

ख़ुदाका शुक्र करना इसलामका ज़ेवर है। – सादी

धर्म

सात्त्विक लोगोंको एकान्त छोड़ना चाहिए और बाज़ारमें आना चाहिए। जबतक धर्म बाज़ारमें नहीं आयेगा और मन्दिर, मठ, मसजिदमें ही क़ैद रहेगा तबतक उसकी शक्ति नहीं बनेगी। इधर तो दान-धर्म चलता है, पर बाज़ारमें धोखाधड़ी चलती है! धर्म डरपोक बनकर मन्दिरमें बैठा रहता है। अब उसको आक्रमण करना चाहिए; यानी बाज़ारमें, व्यवहारमें, राजनीतिमें धर्म चलना चाहिए। – विनोबा

मैं भुजा उठाकर घोषणा करता हूँ; पर मेरी बात कोई नहीं सुनता कि जब धर्मसे ही अर्थ और कामकी भी प्राप्ति होती है तो फिर लोग धर्मका ही सेवन क्यों नहीं करते? – महर्षि व्यास

धर्म माने व्यवस्थितपना। – श्री ब्रह्मचैतन्य

धर्म वह है जिससे शान्ति और समाधान मिले। – श्री ब्रह्मचैतन्य

नीति और अध्यात्मका संयोग धर्म है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जो धर्मको द्वितीय वस्तु समझता है वह उसे अवस्तु समझता है। जो ईश्वरको दूसरा स्थान देता है वह उसे कोई स्थान नहीं देता। – रस्किन

धर्मका लक्ष्य है अन्तिम सत्यका अनुभव। – राधाकृष्णन्

धार्मिक जीवन धारण करो, ताकि मरते समय तुम्हें शान्ति मिल सके।
— सर वाल्टर स्कॉटका अन्तिम उपदेश

लोगोंको दिखानेके लिए धर्मका आचरण न करो, वर्ना कुछ फल नहीं पाओगे !
— ईसा मसीह

हमें ऐसे धर्मकी ज़रूरत है जो बिना भेदभावके मनुष्योंको एक जाति बना दे।
— स्वामी रामदास

सचमुच, सब धर्म एक ही प्रभुकी तरफ़ ले जानेवाले मार्ग हैं।
— स्वामी रामदास

धर्म है प्रेमभावनामें। — विलियम लॉ

बिना दयाके धर्म हो नहीं सकता। — मुनि रामसिंह

औरोंके साथ वैसा व्यवहार मत करो जैसा कि अगर और लोग तुम्हारे साथ करने लगें तो तुम्हें बुरा लगे। दूसरोंके लिए वही चाहो जो तुम अपने लिए चाहते हो।
— महाभारत

धर्मको छोड़ दोगे तो वह तुम्हें मार डालेगा; धर्मका पालन करोगे तो वह तुम्हारी रक्षा करेगा।
— महाभारत

धर्म-कर्म चित्त-शुद्धिके लिए होते हैं न कि इन्द्रिय-भोगोंको पानेके लिए।
— विवेक-चूड़ामणि

धर्मका लक्षण है अहिंसा। — महाभारत

धर्मका लक्षण क्षमा है। — महाभारत

मैं कहता हूँ सारी ज़मीन और आसमानके तमाम सितारे धर्मके लिए हैं।
— वाल्ट ह्विटमैन

जिन्होंने धर्मके उद्देश्यको प्राप्त कर लिया है उन्हें अब धर्मकी ज़रूरत क्या ?
— अज्ञात

अगर लोग धर्मको पाकर भी इतने दुष्ट हैं तो उसके बग़ैर उनका क्या हाल हो। – बेंजामिन फ्रैंकलिन

जिससे यहाँ और वहाँ आनन्द मिले वह धर्म है। – वैशेषिक सूत्र

धर्मका स्वरूप अहिंसा, संयम और तप है। धर्म स्वयं मंगल है। भौतिक सम्पत्तियोंके स्वामी धर्मात्माको नमन करते हैं। – – दशवैकालिक

मनुष्यका बन्धु एक मात्र धर्म है, जो मरनेके बाद भो आदमीके साथ जाता है। बाक़ी हर चीज़ शरीरके साथ मिट जाती है। – मनु

तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए। – क़ुरान

धर्मका मूल है सम्यक्त्व; धर्मका आधार है सच्चा विश्वास।

– हिंगुल प्रकरण

धर्म इन्द्रियोंपर नियन्त्रण करता है इसलिए इन्द्रियोंके गुलाम धर्मको हौआ समझते हैं। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

धर्म वह है जो संसारके दुःखी जीवोंको उत्तम सुखमें पहुँचा दे – जैनाचार्य

अर्थ और काम यानी धन और सुख सब धर्म ही से मिलते हैं, इसलिए आदमी धर्मका पालन क्यों न करे। – महाभारत

धर्मका घात किया तो वह हमारा घात करता है। धर्मका रक्षण किया तो वह हमारा रक्षण करता है। – अज्ञात

भले धन, मान, कुटुम्ब और प्राणका त्याग करना पड़े; परन्तु सत्य और अहिंसाका त्याग कभी न होना चाहिए; यही सब धर्मोंका सार है। – गान्धी

हममें घृणा करने लायक़ धर्म तो है, लेकिन एक-दूसरेसे प्रेम करनेके लिए पर्याप्त धर्म अभी नहीं है। – स्विफ़्ट

धर्मपर दृढ़ रहनेके कारण जिन्हें कष्ट मिलता है, वे धन्य हैं; क्योंकि भगवान्का साम्राज्य उन्हींको प्राप्त होता है। – ईसा

जिस आचरणसे भक्ति उत्पन्न हो सो धर्म। – भागवत

सबसे बड़ी बात बता रहा हूँ – कामनासे, भयसे, लोभसे, बल्कि जान बचानेके लिए भी धर्मको कभी न छोड़ें। – सन्त विदुर

धर्मका स्वरूप बस इतना ही है कि मनुष्य किसी भी प्राणीके दुःखमें दुःखका अनुभव करे और सुखमें सुखका। – महर्षि दधीचि

धर्म मनुष्यके हृदयमें अनन्तका संगीत है। – फ़ाल्डिग

अगर कोई धर्मसे न डिगे और जो कुछ मिले उससे सन्तुष्ट रहे, तो उसका धर्म उसकी सब इच्छाएँ पूर्ण कर देता है। – भगवान् श्रीकृष्ण

जैसे मैं किसीकी कलापर नहीं झगड़ती उसी तरह उसके धर्मपर भी नहीं झगड़ूँगी। – मेरी बेकर ऐडी

धर्म एक ही है, भले ही रूप उसके सौ हों। – बर्नार्ड शॉ

धर्म सबके लिए प्राथमिक वस्तु है। – येसु ख़्रीस्त

धर्म एक ही है – नेक ज़िन्दगी। – थॉमस फुलर

वह हर धर्म अच्छा है जो आदमीको भला बनना सिखाता है। – थॉमस पेन

धर्मकी भाषा प्रेमकी भाषा है। – सेबेटियर

धर्म ज्ञानमें नहीं है बल्कि पवित्र जीवनमें है। – बिशप टेलर

सारी धार्मिकताका सार है प्रेम। – सन्त फ्रांसिस डि सेल्स

धर्मका स्थान हृदय है। – गान्धी

धर्मके माने हैं भाई-चारा। – ब्लेक

धर्म विभिन्न रास्ते हैं जो एक ही जगह जाकर मिलते हैं। – गान्धी

नेक ज़िन्दगी ही धर्म है। – थॉमस फुलर

धर्म संसारकी सर्वोत्तम वस्तु है। अगर उसमें पाखण्ड न हो तो अकेले ही दुर्जनको सज्जन बनानेमें समर्थ है। – कॉलेरिज

भगवान् और इनसानके प्रति प्रेमके अलावा धर्म और कुछ नहीं है। – विलियम पैन

बिला शक हमारा हर कार्य धर्ममय होना चाहिए। – गान्धी

मैं देखता हूँ कि सारी दुनियाके समझदार और विवेकी मनुष्य एक ही धर्मवाले थे, साहस और भलाईके धर्मवाले। – एमर्सन

धर्मके सर्वोच्च पालनके लिए बिलकुल निष्परिग्रह हो जाना जरूरी है। – गान्धी

प्रिय सत्य बोले, अप्रिय सत्य न बोले, प्रिय असत्य भी न कहे – यही सनातन धर्म है। – मनु

सब धर्मोंका सामान्य तत्त्व अहिंसा है। – गान्धी

नम्रताके सामने झुक जाना धर्म है। जब्रके सामने झुकना अधर्म है। – गान्धी

मैं चाहता हूँ कि आपमें-से हर-एक ईश्वर और धर्ममें विश्वास पैदा करे। – गान्धी

सर्वोत्तम धर्म है – सहनशीलता। – विक्टर ह्यूगो

उपकार ही परम धर्म है, सेवामें ही चातुर्य है, सत्पात्रको दान देना ही परम काम है और तृष्णाहीनता ही परम मोक्ष है। – संस्कृत सूक्ति

सर्वोत्तम धर्म सर्वाधिक सहिष्णु होता है। – श्रीमती गिरार्डिन

जिओ और जीने दो। – स्कॉटिश कहावत

शान्तिके समान कोई तप नहीं है, सन्तोषसे बढ़कर कोई सुख नहीं है, तृष्णासे बढ़कर कोई व्याधि नहीं है, दयाके समान कोई धर्म नहीं है। – चाणक्यनीति

धर्म-प्रचारक

हम चीनमें धर्मप्रचारकोंको भेजते हैं ताकि चीनी लोग स्वर्ग पहुँच सकें। लेकिन हम उन्हें अपने देशमें नहीं आने देते।
– पर्लबक [नोबल पुरस्कार विजेत्री अमेरिकन महिला]

सबसे बड़ी बात बता रहा हूँ – कामनासे, भयसे, लोभसे, बल्कि जान बचानेके लिए भी धर्मको कभी न छोड़ें। – सन्त विदुर

धर्मका स्वरूप बस इतना ही है कि मनुष्य किसी भी प्राणीके दुःखमें दुःखका अनुभव करे और सुखमें सुखका। – महर्षि दधीचि

धर्म मनुष्यके हृदयमें अनन्तका संगीत है। – फ़ाल्डिग

अगर कोई धर्मसे न डिगे और जो कुछ मिले उससे सन्तुष्ट रहे, तो उसका धर्म उसकी सब इच्छाएँ पूर्ण कर देता है। – भगवान् श्रीकृष्ण

जैसे मैं किसीकी कलापर नहीं झगड़ती उसी तरह उसके धर्मपर भी नहीं झगड़ूँगी। – मेरी बेकर ऐडी

धर्म एक ही है, भले ही रूप उसके सौ हों। – बर्नार्ड शॉ

धर्म सबके लिए प्राथमिक वस्तु है। – येसु ख्रीस्त

धर्म एक ही है – नेक ज़िन्दगी। – थॉमस फुलर

वह हर धर्म अच्छा है जो आदमीको भला बनना सिखाता है। – थॉमस पेन

धर्मकी भाषा प्रेमकी भाषा है। – सेबेटियर

धर्म ज्ञानमें नहीं है बल्कि पवित्र जीवनमें है। – विशप टेलर

सारी धार्मिकताका सार है प्रेम। – सन्त फ्रांसिस डि सेल्स

धर्मका स्थान हृदय है। – गान्धी

धर्मके माने हैं भाई-चारा। – ब्लेक

धर्म विभिन्न रास्ते हैं जो एक ही जगह जाकर मिलते हैं। – गान्धी

नेक ज़िन्दगी ही धर्म है। – थॉमस फुलर

धर्म संसारकी सर्वोत्तम वस्तु है। अगर उसमें पाखण्ड न हो तो अकेले ही दुर्जनको सज्जन बनानेमें समर्थ है। – कॉलेरिज

भगवान् और इनसानके प्रति प्रेमके अलावा धर्म और कुछ नहीं है।
– विलियम पैन

बिला शक हमारा हर कार्य धर्ममय होना चाहिए। – गान्धी

मैं देखता हूँ कि सारी दुनियाके समझदार और विवेकी मनुष्य एक ही धर्मवाले थे, साहस और भलाईके धर्मवाले। – एमर्सन

धर्मके सर्वोच्च पालनके लिए बिलकुल निष्परिग्रह हो जाना ज़रूरी है।
– गान्धी

प्रिय सत्य बोले, अप्रिय सत्य न बोले, प्रिय असत्य भी न कहे – यही सनातन धर्म है। – मनु

सब धर्मोंका सामान्य तत्त्व अहिंसा है। – गान्धी

नम्रताके सामने झुक जाना धर्म है। जब्रके सामने झुकना अधर्म है।
– गान्धी

मैं चाहता हूँ कि आपमें-से हर-एक ईश्वर और धर्ममें विश्वास पैदा करे।
– गान्धी

सर्वोत्तम धर्म है – सहनशीलता। – विक्टर ह्यूगो

उपकार ही परम धर्म है, सेवामें ही चातुर्य है, सत्पात्रको दान देना ही परम काम है और तृष्णाहीनता ही परम मोक्ष है। – संस्कृत सूक्ति

सर्वोत्तम धर्म सर्वाधिक सहिष्णु होता है। – श्रीमती गिरार्डिन

जिओ और जीने दो। – स्कॉटिश कहावत

शान्तिके समान कोई तप नहीं है, सन्तोषसे बढ़कर कोई सुख नहीं है, तृष्णासे बढ़कर कोई व्याधि नहीं है, दयाके समान कोई धर्म नहीं है।
– चाणक्यनीति

धर्म-प्रचारक

हम चीनमें धर्मप्रचारकोंको भेजते हैं ताकि चीनी लोग स्वर्ग पहुँच सकें। लेकिन हम उन्हें अपने देशमें नहीं आने देते।
– पर्लबक [नोबल पुरस्कार विजेत्री अमेरिकन महिला]

धूर्त

चालाक और धूर्त आदमी, सीधे और सरल आदमीके सामने नितान्त भौंचक्का होकर रह जाता है। — कोल्टन

धूर्तता

दो चेहरेवाले आदमीसे सावधान रहो। — डच कहावत

सबसे भयंकर झूठ वह नहीं है जो बोला जाता है बल्कि वह जो किया जाता है। — डब्ल्यू० जी० क्लार्क

ठगो मत, चाहे ठगा जाओ। — श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

बुरा आदमी उस वक़्त बदतर होता है, जब कि वह साधु होनेका ढोंग करता है। — बेकन

बहतर है कि दुनिया तुम्हें पापी समझे बनिस्बत इसके कि ईश्वर तुम्हें धूर्त समझे। — डेनिस कहावत

धैर्य

जितनी जल्दी करोगे, उतनी देर लगेगी। — चर्चिल

पहली डुबकीमें रत्न न मिलें तो रत्नाकरको रत्नहीन मत समझो। धैर्यपूर्वक साधन करते रहो; समयपर भगवत्कृपा अवश्य होगी।
— रामकृष्ण परमहंस

धीरज तमाम आनन्दों और शक्तियोंका मूल है। — रस्किन

जिसका ईमान और सब्र क़ायम है उसका अल्लाह मालिक है। — उपासनी

धैर्य स्वर्गकी कुंजी है। — तुर्की कहावत

धैर्यहीन कितने दरिद्री हैं ! हर ज़ख़्म धीरे-धीरे ही तो भरता है।
— शेक्सपीयर

धैर्य कड़वा है, लेकिन उसका फल मीठा है। — रूसो

क्षण-भरका धीरज, दस बरसकी राहत । – यूनानी कहावत

सब्र करना पैग़म्बरोंका काम है । – सादी

सब्र ज़िन्दगीके मक़सदका दरवाज़ा खोलता है, क्योंकि सिवाय सब्रके उस दरवाज़ेकी और कोई कुंजी नहीं है । – सादी

सब्रसे बहुत काम निकल आते हैं, मगर जल्दबाज़ मुँहकी खाते हैं । मैंने जंगलमें अपनी आँखों देखा है कि धीरे-धीरे चलनेवाला तो मंज़िलपर पहुँच गया, मगर तेज़ दौड़नेवाला बाज़ी खो बैठा । तेज़ चलनेवाला घोड़ा तो चलते-चलते थक गया, मगर धीरे-धीरे चलनेवाला ऊँट बराबर चलता रहा । – शेख़ शादी

धोखा

सूक्ष्मतराश आदमीसे धोखा हो सकता है; ईमानदारसे कभी नहीं ।
– ऑलिवर क्रॉमबैल

मुझे जितनी जहन्नुमके फाटकोंसे घृणा है, उतनी ही उस शख़्ससे है जो दिलमें एक बात छिपाकर दूसरी कहता है । – होमर

मधुमयी वाणीके पीछे धोखाज़नी छिपी रहती है । – डेनिश कहावत

तुम आदमीको भले ही धोखा दे लो, मगर चाहे जैसी मक्कारीसे काम लो, ईश्वरको धोखा नहीं दे सकते । – ल्यूशियन

चीता अपने शिकारको झुक-झुककर ही मारता है । – कहावत

अत्यधिक नम्रता अत्यधिक वक्रता । – अँगरेज़ी कहावत

न ख़ुद फँसो; न किसीको फँसाओ; फँसना-फँसाना दोनों पाप हैं ।
– श्री ब्रह्मचैतन्य

मधुरी बानी दग़ाबाज़ोंकी निशानी । – हिन्दुस्तानी कहावत

हम किसीसे धोखा नहीं खाते; हम ही ख़ुदको धोखा देते हैं । – गेटे

ध्यान

चाँद कुत्तोंके भौंकनेकी परवा नहीं करता। —जर्मन कहावत

मन्त्रध्यान स्थूल है, चिन्तामय ध्यान सूक्ष्म है और चिन्तारहित ध्यान परा-भक्ति है। — श्री उड़िया बाबा

ध्येय

ध्येयके विषयमें हमें यह साफ़ समझ लेना चाहिए कि जो भव्य लगे सो आदरणीय या अनुकरणीय नहीं है। आकर्षक लगे सो ध्येय नहीं है; केवल आनन्दप्रद या सुखद लगे, केवल शान्ति और प्रसन्नता देनेवाला हो, वह भी अपना ध्येय नहीं है; दिव्य लगे, रम्य लगे, वह भी ध्येय नहीं है; पर जो मानवताके अनुरूप हो, सद्‌गुणोंका पोषक, संयमके लिए सहायक, धर्म और कर्तव्यके लिए प्रेरक हो, जिसे प्राप्त करनेके लिए प्रामाणिक मानवी व्यवहार और परिश्रम वगैरहका त्याग न करना पड़ता हो, जिसकी प्राप्ति-की इच्छा सब करते हों और सबको उसकी प्राप्ति हो तो मानवी व्यवहार अधिक सरल, पवित्र और व्यवस्थित हो, उसे सिद्ध करना अपना ध्येय है। — नाथजी

पशुता सुखकी तरफ़ खींचती है, मानवता आज़ादीकी तरफ़। मानवका ध्येय सुख नहीं, समता है। — विनोबा

विवेक, संयम, चित्तशुद्धि और पुरुषार्थ इन मुख्य साधनों-द्वारा अपना और समाजका कल्याण साधकर मानवताकी परम सिद्धि प्राप्त करना ही मानव-जीवनका ध्येय है। — नाथजी

मानवता प्राप्त करना ही हमारा ध्येय है। — नाथजी

धन्धा

अपने धन्धेको हाँकता रह वर्ना वह तुझे हाँकने लग जायगा।
— बेंजामिन फ्रैंकलिन

न

नक़ल

दूसरोंकी नक़ल न करना सबसे बड़ा धर्म है। — महावीर स्वामी

किसीको अपना व्यक्तित्व छोड़कर दूसरेका व्यक्तित्व नहीं अपनाना चाहिए। — चैनिंग

नफ़रत

नफ़रत दिलका दीवानापन है। — अज्ञात

नम्रता

सब प्राणियोंके प्रति नम्र रहे। — श्री ब्रह्मचैतन्य

"जा, खाककी तरह सहनशील बन और जो तूने पढ़ा है उसे ख़ाकमें दबा दे।" — एक फ़क़ीरका उपदेश

हर सच्ची महत्ताका जोत है नम्रता। — फ़ैनेलन

बड़ेको छोटा बनकर रहना चाहिए क्योंकि जो अपने-आपको बड़ा मानता है वह छोटा बनाया जाता है, और जो छोटा बनता है वह बड़ा पद पाता है। — ईसा

सेवाकी ज़िन्दगी नम्रताकी ज़िन्दगी होनी चाहिए। — महात्मा गान्धी

जितने नम्र बनोगे उतनी महिमा बढ़ती जायेगी। — उपासनी

तमाम वास्तविक महत्ताका स्रोत है नम्रता। — फ़ैनेलन

नम्रता सरदारोंकी पहचान है। — सादी

नम्रता ही में सच्ची मानवता है। — सादी

नम्रता आदमीका सिर ऊँचा करती है। — सादी

किसीसे तलवारकी तरह गरदन अकड़ी मत रख! — सादी

नम्रता और खौफ़े-खुदासे दौलत, इज्जत और जिन्दगी मिलती है ।
— सुलेमान

अहंकारीको शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है; लेकिन नम्रको सम्यक्-ज्ञानकी प्राप्ति होती है । — बाइबिल

नम्रताके बग़ैर सद्गुणोपार्जन व्यर्थ है; क्योंकि परमात्मा नम्र हृदयोंमें ही निवास करता है । — इरेसमस

मेरी सद्गुणशीलताकी पर्याप्ति यह जाननेमें है कि मेरी सद्गुणशीलता पर्याप्त नहीं है । — सन्त ऑगस्ताइन

आदमीका अहंकार ज्यों-ज्यों कम होता है । त्यों-त्यों उसमें ईश्वरत्व बढ़ता है । — जी० बी० चीअरर

नम्रता वह नीची मीठी जड़ है जिसमें-से तमाम दैवी सद्गुणोंकी शाखाएँ निकलती हैं । — मूर

नम्रता मित्रताकी कुंजी है । — सादी

अगर ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो नम्र बन, और जब ज्ञान प्राप्त कर ले तब और भी नम्र बन । — दी वॉइस ऑफ़ साइलेन्स

अत्यधिक नम्रता अहंकार है । — जर्मन कहावत

आदमी जितना महान् होगा उतना ही नम्र होगा । — टैनीसन

नम्रता स्वर्गके दरवाज़ेकी कुंजी है । — सादी

उद्धत शब्दोंका बचाव नहीं हो सकता, क्योंकि नम्रताका अभाव समझदारीके अभावका द्योतक है । — पोप

गहरी विद्वत्ताकी अपेक्षा नम्र आत्मज्ञान प्रभुप्राप्तिका अधिक निश्चित मार्ग है । — थॉमस ए कैम्पिस

विद्वत्ताके साथ नम्रता होना सोनेपर हीरा होनेके समान है ।
— सूक्ति रत्नावली

विनय समस्त गुणोंका शृंगार है । — अज्ञात

नरक

खुद-पसन्दी और संसार-प्रेमसे ही नरक बना है। – स्वेण्डनबर्ग

अति क्रोध, कटु वाणी, दरिद्रता, स्वजनोंसे वैर, नीचोंका संग, और अकुलीनकी सेवा – ये नरकमें रहनेवालोंके लक्षण हैं।
– चाणक्यनीति

नरक क्या है ? परवशता। – शंकराचार्य

नशा

नशेकी हालत तात्कालिक आत्महत्या है; जो सुख वह देती है केवल नकारात्मक है, दुःखकी क्षणिक विस्मृति। – बर्ट्रेण्ड रसेल

नागरिक

मैं अथेन्स या ग्रीसका नागरिक नहीं हूँ, सारी दुनियाका हूँ। – सुक़रात

नाम

बिना ईश्वरका नाम लिये कोई भी बात विचारने या करनेसे बड़ी विपदाका सामना करना पड़ता है। – अज्ञात

नाम-जप करो। सब कुछ मिलेगा। – भक्त श्रीरामदयाल

विट्ठलका नाम लेते ही मुझे सुख मिला और मेरा मुँह मीठा हो गया।
– सन्त तुकाराम

नाम-जपसे सब पापोंका क्षय और समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं।
– श्री उड़िया बाबा

मन नहीं लगता, कोई बात नहीं। बिना मनके नाम रटो, रटते जाओ। अभ्याससे तीक्ष्ण मिर्च भी प्रिय लगने लगती है, भगवन्नाम तो बहुत मधुर है। – सन्त श्री पयोहारी बाबा

भाव कुभाव अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ। – रामायण

जो भगवन्नाम लेगा वह शुभ काम अवश्य करेगा। यदि उसके कोई पूर्व पाप हों तो वे सब भी भगवत्कृपासे छूट जायँगे। — उड़िया बाबा

नामस्मरण

नारायण-स्मरण-हीन मनुष्य जघन्य है। — व्यास महर्षि

नास्तिक

नास्तिक वह है जो अपनी देहको ही सर्वस्व मानता है, और उसे सुखी करनेके लिए जिसके मनमें दुष्टता, क्रूरता, अन्याय या कोई भी नीच काम करते हुए कुछ भी नहीं खटकता। जिसे जीवसे जड़की क़ीमत ज़्यादा लगती है वह नास्तिक है। फिर वह किसी भी धर्मग्रन्थका या ईश्वर, आत्मा, परमात्मा वग़ैरह किसीका माननेवाला हो या न हो; वह ईश्वर-पूजन करनेवाला हो या न हो। — नाथजी

जो दूसरेका दुःख जानता नहीं; विवेक, नम्रता, दया, सेवावृत्ति जिसके हृदयमें नहीं; दूसरेका सुख देखकर जिसे सन्तोष नहीं होता; बल्कि मत्सरसे जिसका दिल जलता रहता है वही सचमुच नास्तिक है। — नाथजी

अपनी आत्माकी शानमें विश्वास न करनेवाला वेदान्तकी नज़रमें नास्तिक है। — विवेकानन्द

निद्रा

निद्रा जीवनका काल है! — गोरखनाथ

निन्दा

निन्दक एक भी न मिले; पापी हज़ार मिलें, एक निन्दकके सिरपर करोड़ पापका भार होता है। — कबीर

किसीके छिपे ऐब ज़ाहिर मत करो, क्योंकि उसकी बदनामी करनेसे तुम्हारी भी बे-एतबारी हो जायगी। — सादी

जो तेरे सामने औरोंकी बुराई करता है वह औरोंके सामने तेरी बुराई करेगा। — सादी

अगर कोई मेरी आत्माकी निन्दा करते हैं तो स्वयं अपनी ही आत्माको निन्दा करते हैं; और अगर इस निन्दनीय शरीरकी निन्दा करते हैं तब तो मेरे सहायक ही हैं। — संस्कृत सूक्ति

जो औरोंको काला करता है खुदको सफ़ेद नहीं करता। — जर्मन कहावत

कोई तेरी निन्दा करे तो तू उसकी स्तुति कर। — बाबा धरनीदास

ऐसी कोई बात किसी आदमीके बारेमें मत कहो जिसे तुम उसके मुँहपर नहीं कह सकते। — अरण्डेल

अगर कोई तुम्हारी निन्दा करे तो भीतर ही भीतर प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि निन्दा करके वह तुम्हारा पाप अपने ऊपर ले रहा है। इसीलिए कबीर कहते थे, 'निन्दक नेरे राखिये आँगन कुटी छवाय'

— श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

भगवान्‌के रास्ते जानेवालेको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि दूसरेमें दिखनेवाले दोषोंका बीज अपने ही अन्दर है! वह किसीकी निन्दा न करे! — श्री ब्रह्मचैतन्य

लोगोंके छिपे हुए ऐब ज़ाहिर मत कर। इससे उसकी इज़्ज़त तो ज़रूर घट जायगी, मगर तेरा तो एतबार ही उठ जायगा। — शेख़ सादी

नियम

यह नियम लो कि 'मैं किसीका दिल नहीं दुखानेवाला'।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

नियम-निष्ठामें सदा तत्पर रहना चाहिए। — श्री उड़िया बाबा

हमने सुनहरो नियमको याद तो कर लिया है; आओ अब उसे जीवनमें भी उतारें। — ऐडविन

पवित्रता, यज्ञ, तप, दान, स्वाध्याय, जननेन्द्रियका निग्रह, व्रत, मौन, उपवास और स्नान – ये दस नियम हैं। – महर्षि अत्रि

गृहस्थीके काम यथासमय नियमानुकूल करनेसे भजनमें सहायता मिलती है। – श्री उड़िया बाबा

नीरोगता

निरोगी या दीर्घायु शरीर विषयरहितताका छोटे-से छोटा परिणाम है। – गान्धी

निर्गुण

निर्गुण माने अनन्त गुणवान्। – विनोबा

निर्णय

निर्णय किया कि झंझट खत्म। – इटालियन कहावत

निर्णय जल्दी कीजिए मगर देर तक सोचनेके बाद। – बर्नार्ड शॉ

निर्दोष

सुखी हैं निर्दोष लोग, जिनकी समदर्शितामें न मिथ्यात्वका प्रवेश है न दुःखका! – वालर

जो बुराईको जानते तक नहीं, वे किसीपर सन्देह नहीं करते। – बैन जॉन्सन

निर्दोष सबको निर्दोष समझता है। – बैन जॉन्सन

निर्दोष हृदय किसी धोखेकी आशंका नहीं रखता। – पुर्तगाली कहावत

निर्धन

फ़क़ीरको अपनी ग़रीबीसे अन्दरका आराम मिलता है। – सादी

निर्भय

ब्रह्मको प्राप्त करनेवाला निर्भय रहता है। उसे अपने-परायेकी भावना नहीं रहती। वह सबके कल्याणकी भावनासे कर्म करता है।

— साने गुरुजी

निर्भयता

साधुका पहला गुण है अत्यन्त निर्भयता। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अध्यात्मके लिए पहली ज़रूरी चीज़ है निर्भयता। कायर कभी नैतिक नहीं हो सकते। — गान्धी

निर्भरता

प्रभुपर निर्भर रहनेवालेके तीन लक्षण हैं — (१) दूसरोंसे कुछ न माँगना, (२) मिलनेपर भी न लेना, और (३) लेना भी पड़े तो उसे बाँट देना। — तपस्वी सहल तस्तरी

चिन्ताओं और दुःखोंका रुक जाना ही ईश्वरपर पूर्ण निर्भर रहनेका सच्चा स्वरूप है। — रामकृष्ण परमहंस

निमन्त्रण

अपने अमीर दोस्तके यहाँ बुलानेपर जा; ग़रीब दोस्तके यहाँ बिना बुलाये।

— पुर्तगाली कहावत

निर्वाण

दृश्य है ही नहीं ऐसे बोधसे जब मनमें-से दृश्य ही उड़ा दिया तो निर्वाणकी परम निर्वृत्ति प्राप्त हो गयी। — पंचदशी

निर्वाण माने अनन्त-कालीन अनन्त आनन्द। — फ्रैंकलिन

निष्कामता

निष्कामता तभी सम्भव है जब तुम आत्मानन्दका अनुभव करने लगो।

— अज्ञात

निष्ठा

निष्ठा आदमीको चेतना देनेवाली शक्ति है। — नाथजी

निःस्पृह

निःस्पृही आदमी ही सुखी है। — अज्ञात

निःस्पृहीके लिए दुनिया तिनकेके मानिन्द है। — ज्ञानसार

नीचता

दूसरेकी निन्दा करनेसे, अपनी तारीफ़ करनेसे, दूसरेके गुणोंको ढकने और अवगुणोंको ज़ाहिर करनेसे नीच गोत्रका बन्ध होता है। — जैनधर्म

जो खुशहालीमें उद्धत और उन्मत्त हो जाय और खस्ताहालीमें अवनत और पस्त, वह अकसर कमीना और नीच होता है। — ऐपीक्यूरस

नीति

जहाँ स्वार्थ है वहाँ अनीति है; जहाँ निःस्वार्थता है वहाँ नीति।

— अज्ञात

नीतिशास्त्रका सार यह है कि किसीका विश्वास न करे। — महाभारत

जो कर्म भगवान्के नज़दीक ले जानेमें मदद करे उसे नीति कहते हैं।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

देवको मानना और जो उसे पसन्द हो वही करनेको नीति कहते हैं।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

नीयत

जिसकी नीयत अच्छी नहीं होती उससे कभी कोई महत्कार्य सिद्ध नहीं होता । — टालस्टॉय

नुक़सान

कबूतरोंकी तरह मासूम बनो; किसीका बुरा न करो; लेकिन साँपकी तरह अक़्लमन्द बनो कि कोई तुम्हें नुक़सान न पहुँचा सके । — होंग

यह कह सकना मुश्किल है कि कौन तुम्हें ज्यादा नुक़सान पहुँचाते हैं । महा दुर्भाग्यग्रस्त शत्रु या अति सद्भावयुक्त मित्र । — बलवर

नृत्य

नृत्य सबसे ऊँची, सबसे गतिशील, सबसे सुन्दर कला है, क्योंकि यह जीवनका रूप या भाव ही नहीं, स्वयं जीवन है ।

— हैवलॉक ऐलिस

नेकी

नेकीका सुफल, चाहे देरसे मिले, मगर ज़रूर मिलता है । — कांग्रीव

तुम ज़मीनके नमक हो : अगर नमक ही अपना नमकीनपना छोड़ देगा, तो फिर वह किस चीज़से नमकीन बनाया जायगा ?

— सन्त मैथ्यू (सरमन ऑन दी माउण्ट)

नेकीका इरादा, बदीकी इच्छाको दबा देता है । — हज़रत अली

नौकर

उन्नत बननेके लिए झुकता है, जीनेके लिए जान देता है, सुखके लिए दुःखी होता है, नौकरके अलावा और कौन ऐसा मूढ होगा ? — हित

किसीका नौकर बन जा, तुझे मालूम हो जायगा कि रंज क्या चीज़ है ।
— स्पेनी और पुर्तगाली कहावत

न्याय

उदार बननेसे पहले न्यायी बनो । — शैरीडन

जीवनके न्यायपर-से मैं अपना विश्वास कैसे खो दूँ, जब कि मख़मलोंपर सोनेवालोंके स्वप्न ज़मीनपर सोनेवालोंके स्वप्नोंसे सुन्दरतर नहीं होते ?
— ख़लील जिब्रान

अगर न्यायसे काम लोगे तो ईश्वर तुम्हारा साथी बन जायगा ।
— मीनेण्डर

हर-एकको उसके हक़की चीज़ हवाले कर देनेकी दृढ़ और सतत इच्छाको न्याय कहते हैं । — जस्टीनियन

कोई सद्‌गुण वास्तवमें इतना महान् और दिव्य नहीं है जैसा न्याय ।
— जोसफ़ ऐडीसन

ईश्वरकी चक्की धीमे चलती है, मगर बारीक़ पीसती है ।
— जर्मन कहावत

न्यायका मोती दयाके हृदयमें मिलता है । — सन्त कैथरीन

न्याय सत्यका सक्रिय रूप है । — बेंजामिन डिसराइली

जहाँ न्यायका राज्य है, वहाँ आज्ञापालन स्वतन्त्रता है ।
— जेम्स मोण्टगोमरी

केवल न्याय ही वास्तविक आनन्द है । केवल अन्यायी ही दुःखी हैं ।
— सुक़रात

न्यायकी बात कहनेके लिए हर समय ठीक है । — सोफ़ोकिल्स

न्याय करना केवल ईश्वरका काम है; आदमीका काम तो केवल दया करना है । — फ्रांसिस

जबसे मैंने यह जाना है कि गुदगुदे गद्देपर सोनेवालोंके सपने नंगी ज़मीन-पर सोनेवालोंके सपनोंसे मधुर नहीं होते, तबसे मुझे न्याय-प्रभुके न्यायमें अचल श्रद्धा हो गयी है। – खलील जिब्रान

प

पठन

कैसे जाना जाय कि वेदाध्ययन उत्तम हुआ ? हृदयमें निरन्तर नारायणका स्मरण रहने लगे तब ! – ज्ञानेश्वर

पड़ोसी

अच्छा पड़ोसी आशीर्वाद है, बुरा पड़ोसी अभिशाप। – हैसियड

सच्चा पड़ोसी वह नहीं जो तुम्हारे साथ उसी मकानमें रहता है, बल्कि वह जो कि तुम्हारे साथ उसी विचार-स्तरपर रहता है।

– स्वामी रामतीर्थ

पतन

प्रभु-भजन और ज्ञान-यज्ञ करते रहनेवालेका पतन नहीं होता।

– मनुस्मृति

हम कितने भी नीचे गिर जायें, ईश्वरकी भुजाओंसे नीचे नहीं गिर सकते।

– विलियम पैन

अगर कोई दृढ़ रहे तो पतनका ग़म नहीं, उठकर वह फिर आगे चल देगा। – अरविन्द

अगर हम गिरते हैं, तो अधिक अच्छी तरह चलनेका रहस्य सीख जाते हैं। – अरविन्द

पद

तुम कहाँ हो इसका कोई महत्त्व नहीं, महत्त्व सिर्फ़ इस बातका है कि तुम वहाँ क्या कर रहे हो। पदसे तुम्हारी शोभा नहीं है, बल्कि तुमसे पदकी शोभा है और वह तभी जब कि तुम्हारे-द्वारा महान् और श्रेष्ठ कार्य हो।

— पैट्रार्क

परदा

औरत अपने चेहरेपर मुसकानका बुर्क़ा डाल सकती है। — खलील जिब्रान

परम-ज्योति

ज्योति क्या है? दिनमें सूर्य, रातको चन्द्र, दीप आदि; इन सबको प्रकाशित करनेवाला कौन है? चक्षु, आँख बन्द हो तब किसका प्रकाश होता है? बुद्धिका। बुद्धिको प्रकाशित करनेवाला कौन है? मैं हूँ। इस प्रकार मैं ही परम ज्योति हूँ!

परम-पद

अहंभावका नाश करना और आत्मामें अवस्थित होना ही परमपद है।

— रमण महर्षि

परमात्मा

परमात्माकी शरण जाना माने परमात्मा अपना है, उसके सिवा अपना कोई नहीं है। हम कुछ नहीं करते, सब-कुछ वही हमारे हितके लिए करता है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

परमात्मा आनन्दरूप है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

निरपेक्ष आनन्द ही परमात्माका व्यक्त स्वरूप है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

यह सारा विश्व अपनी आत्मामें है, और अपनी आत्मा परमात्मामें है।

— भगवान् श्रीकृष्ण

उठो ! जागो ! और सम्यक्-ज्ञानियोंके पास जाकर उस परब्रह्म परमेश्वर-को जान लो ! क्योंकि जाननेवाले उस तत्त्वज्ञानके मार्गको छुरीकी धारकी तरह दुस्तर बतलाते हैं। — कठोपनिषद्

परामात्मा बलहीन मनुष्य-द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। न उसे प्रमाद या बेतुकी तपस्यासे प्राप्त किया जा सकता है। — मुण्डकोपनिषद्

परमात्मा समस्त प्राणियोंमें रहता हुआ भी प्रत्यक्ष नहीं होता। सूक्ष्म बुद्धिवाले ही उसे देख सकते हैं। — कठोपनिषद्

परमात्माको आँखोंसे नहीं देखा जा सकता। वह तो निर्मल अन्तःकरणमें ही झलकता है। — मुण्डकोपनिषद्

मैं सन्तोंका आश्रयस्थान हूँ। — भगवान् श्रीकृष्ण

परमात्मामें यूँ विलीन हो जाओ जैसे निशानेमें भरपूर बिधा हुआ तीर। — उपनिषद्

विश्वकी आत्मा ही परमात्मा है। — कबीर

परमात्माका पता दिलको है, दिमाग़को नहीं। — पसकल

परमात्मा हमारी बुद्धिको प्रकाश देकर स्वयं हमारी बुद्धिके अन्दर गुप्त-रूपसे प्रकाशित है। इसलिए बहिरंग बुद्धिको अन्तरंगमें निमग्न करना ही परात्मदर्शन है। — रमण महर्षि

मैं धुँधले तौरपर ज़रूर यह अनुभव करता हूँ कि जब मेरे चारों ओर सब कुछ बदल रहा है, मर रहा है, तब भी इन सब परिवर्तनोंके नीचे एक जीवित शक्ति है जो कभी नहीं बदलती, जो सबको एकमें ग्रथित करके रखती है, जो नयी सृष्टि करती है, उसका संहार करती है और फिर नये सिरेसे पैदा करती है। यही शक्ति ईश्वर है, परमात्मा है। मैं मानता हूँ कि ईश्वर जीवन है, सत्य है, प्रकाश है। वह प्रेम है। वह परम मंगल है। — महात्मा गान्धी

मैं (परमात्मा) ही सबके हृदयोंमें रहता हूँ, यह विश्व मैं ही हूँ और मुझीसे यह विश्व उत्पन्न हुआ है। — भगवान् श्रीकृष्ण

परमात्मा व्यापक है। तुम्हारे अन्दर भी है। पासकी चीज़को दूर देखोगे तो ढूँढ़नेमें देर लगेगी। — श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

जैसे जल पृथ्वीके खोदनेसे निकलता है, वैसे ही आत्मपदकी प्राप्ति अभ्यास-से होती है। — योगवाशिष्ठ

जिसे अपने हृदयमें परमात्मा दिखेगा उसे ही वह जगत्में भरा दिखेगा। पहले 'मैं ब्रह्म हूँ' का अनुभव लो, तब सब जग अपने-आप ब्रह्ममय नज़र आने लगेगा। — श्री ब्रह्मचैतन्य

इस सृष्टिमें जो कुछ है सब ईश्वरसे व्याप्त है। जो ईश्वर दे उसे ही भोग। किसीके धनकी इच्छा मत कर। — यजुर्वेद

परमात्मा साक्षात् कल्पवृक्ष है। हम चिन्तामें रहें तो वह चिन्ता देता है, आनन्दमें रहें तो आनन्द। — श्री ब्रह्मचैतन्य

ज्ञानीजन परमात्मामें मुक्ति-सुखको अनुभव करते हुए इच्छानुसार सर्वत्र विचरते हैं। — यजुर्वेद

परमात्मा सर्वव्यापक, सदा पूजनीय, सब सुखोंका दाता, और सब ब्रह्माण्डों-का कर्ता, धर्ता और हर्ता है। हमें ऐसे प्रभुकी उपासना, प्रार्थना और स्तुति करनी चाहिए। — ऋग्वेद

परमात्माकी कृपासे ही वर्धमान, पोषक और यशदायक धन मिलता है। — ऋग्वेद

परमात्मा जिस हिंसारहित यज्ञकी रक्षा करते हैं वही सर्वत्र सुख फैलाता है। — ऋग्वेद

परमेश्वर दाता, सर्वज्ञ, कर्ता, अविनाशी और हितकारी है। वह उत्तम गुणोंका प्रकाश करनेवाला है। वह सत्संगसे प्राप्त होता है। — ऋग्वेद

परमात्मा ही सबका सच्चा मित्र है। वह दानियोंकी सदा रक्षा करता है। — ऋग्वेद

परमात्मा कहता है कि मैं दानशील मनुष्यके लिए धनकी वर्षा करता हूँ। — ऋग्वेद

हे नृपते ! आप ही भजनीय-सेवनीय हैं। सब इन्द्रियोंका दमन कर जो आपकी भक्ति प्रार्थना-उपासना करता है, आप उसकी रक्षा करते हैं।

— ऋग्वेद

परमात्मा सत्यधर्मी है, सर्वग्राही है, पवित्र करनेवाला है, चेतानेवाला है, सुभग है, ऐश्वर्यशाली है, पोषण करनेवाला है, सबसे बड़ा है, सबसे उत्तम है, अनन्तकर्मी है, पूर्ण है और पूर्ण करनेवाला है, विश्वकर्मा है, विश्वदेव है, महान् है, कामना-पूरक है, लेनेवाला है, देनेवाला है, यज्ञको सुधारनेवाला है। — सामवेद

परमात्मा सदा एकरस एकरूप है। — अथर्ववेद

परमात्मा सनातन है और नित्यनूतन भी, जैसे दिन और रात।

— अथर्ववेद

परमात्मा ज्ञानस्वरूप है, सर्वज्ञ है, शक्ति स्वरूप है, सर्वव्यापक है।

— सामवेद

परमात्मा प्रकाशस्वरूप है और वह प्रकाश सब प्रकाशोंसे श्रेष्ठ है।

— सामवेद

हे प्रभो ! आप अनन्त शक्ति और सामर्थ्ययुक्त हैं। अपने समान आप ही हैं। आपकी भक्ति करके हम मोक्षको प्राप्त हों। — सामवेद

परमात्मा ही हमारा पिता-माता है। — सामवेद

परमात्मा कर्मानुसार फल देता है। — सामवेद

हम परमात्माके सखा हैं। — सामवेद

परमात्मा अजन्मा है, अमर है, अकाम है, आनन्दतृप्त है। उसे जाननेवाला मृत्युसे नहीं डरता। — अथर्ववेद

परमात्मा ज्ञानस्वरूप, अमर, शुद्ध और पावन करनेवाला है। — अथर्ववेद

पूर्ण परमात्मासे यह पूर्ण जगत् पैदा होता है और सींचा जाता है। उस परमात्माको हम आज ही जान लें। — अथर्ववेद

परमात्मा ऐश्वर्यवान् है। वह अपने ज्ञान और श्रमसे सब जगह रम रहा है। — अथर्ववेद

वह आलमगीर आत्मा, विश्व आत्मा, रूहेकुल या परम आत्मा सचमुच अद्वितीय यानी लासानी है। उस जैसा कोई नहीं। बल्कि उसके सिवा, मासिवा अल्लाह, ग़ैर अज़ खुदा, आत्मनः इतर, ब्रह्मणः अन्यत् कुछ है ही नहीं, सब एक-दूसरेके विरुद्ध दिखाई देनेवाली चीज़ें उसीमें हैं। वह मजमूअ-ए-ज़िद्दैन है, वह 'सर्व-विरुद्ध धर्माश्रय' है।

— डा० भगवानदास उर्फ़ अबदुल क़ादिर

परमार्थ

पहाड़ोंकी गुफ़ाओंमें जाकर कहीं परमार्थ सधता है! ऐसा होता तो बन्दरोंने भी साध लिया होता। — श्री ब्रह्मचैतन्य

आदमी कितना परमार्थी है यह उसकी दृष्टि और वाणीसे पहचाना जा सकता है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

ईश्वरका नाम लेना, नीति धर्मानुसार चलना, सबसे प्रेम करना, लोगोंको मदद करना — इसे ही परमार्थ कहते हैं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

आनन्दके लिए प्रयत्न करना ही परमार्थ है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

सत्य वस्तुकी पहचान परमार्थ है, और असत्यको सत्य मानकर चलना प्रपंच है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

परमार्थ माने अपनी सहजावस्था। — श्री ब्रह्मचैतन्य

स्वार्थभावसे करना प्रपंच है; निःस्वार्थभावसे करना परमार्थ है।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

अपना कर्तव्य अन्त-पर्यन्त करते रहना ही परमार्थ है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

नौ हिस्सा स्वार्थपर एक हिस्सा परमार्थका मुलम्मा।

— श्रीमती सूसन स्पौर्डलिंग

'दुनिया क्या कहेगी' इस ख़याल से चलनेका नाम व्यवहार है; 'भगवान् क्या कहेंगे' इस ख़यालसे चलनेका नाम परमार्थ है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

परमेश्वर

अनन्त विश्वमें व्याप्त शक्तिको ही अगर सचमुच परमेश्वर कहा जा सकता हो तो वह सम्पूर्ण शक्ति किसी आदमीके पेटसे जन्म ले या कोई आदमी उसके पेटमें पुत्र रूपसे आवे यह मुमकिन नहीं। उसके दरबारमें-से कोई देवदूत ज़मीनपर मनुष्य जातिके उद्धारके लिए भेजा जाता है यह मान्यता भी विवेकवाली नहीं है। – नाथजी

सत्य और अहिंसाको मैंने परमेश्वरका पर्यायवाची क्यों मान रखा है! इसलिए कि किसी और हस्तीको अपना परमेश्वर बनाना मुझे मंज़ूर नहीं है। – महात्मा गान्धी

परम उन्नत मनुष्य ही परमेश्वर है। – उपासनी

परम्परा

'बाबा वाक्यं प्रमाणं' छोड़कर अपने मार्गसे प्रभुको प्राप्त करो।

– एमर्सन

परलोक

जो उस-लोकमें है सो इस-लोकमें भी है। – प्लोटिनस

पराधीन

पराधीन जीवन व्यर्थ है। – अज्ञात

पराधीनता

जीवनका साफल्य इसमें है कि किसीका ग़ुलाम बने बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारे। पराधीनको ज़िन्दा कहें तो फिर मुरदा कौन है। – हित०

परिग्रह

संग्रह करनेवाला सुखी नहीं हो सकता। – पद्म० सृष्टि०

जो सब प्रकारके लौकिक संग्रहोंका परित्याग कर देता है, उसके सारे उपद्रव शान्त हो जाते हैं। — पद्म० सृष्टि०

ज़मीन उसपर हँसती है जो किसी जगहको अपनी बताता है।
— हिन्दुस्तानी कहावत

सच्चे सुधारका, सच्ची सभ्यताका लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि विचार और इच्छापूर्वक उसको घटाना है। — गान्धी

परिवर्तन

हर चीज़ बदलती है, नष्ट कोई चीज़ नहीं होती। — अरविन्द घोष

घर बदल लेनेसे जीनेका ढंग थोड़े ही बदल जाता है। — ईस चाइन्स

अपनेको बदल दो, तक़दीर बदल जायेगी। — पुर्तगाली कहावत

परिश्रम

मनुष्यको अपने और समाजके हितके लिए परिश्रम करना चाहिए। अगर परावलम्बनमें आज़ादी हो तो उसे निकृष्ट दर्जेकी ग़ुलामी समझनी चाहिए। जो दूसरोंके सहारे रहेगा उसका कभी-न-कभी सरेआम अपमान होगा। — जेम्स एलन

जिसे इस दुनियामें परिश्रम करना मंज़ूर नहीं है उसे यहाँ आना ही नहीं चाहिए था। — इटालियन कहावत

जो श्रम नहीं करता, देव उससे दोस्ती नहीं करते। — अज्ञात

परिहास

किसीकी हँसी उड़ाना उसे शत्रु बनाना है। — अज्ञात

परीषह

देहकी परवाह न करके आत्म-संयमपूर्वक जीवन पर्यन्त परीषह सहन करनी चाहिए। — आचारांग

परीक्षा

ईश्वर अपने भक्तोंकी कड़ीसे कड़ी परीक्षा लेता है, लेकिन सहनशक्तिसे बाहर नहीं। जिन यन्त्रणाओंमें-से वह उन्हें गुज़ारना चाहता है उनको सहन करने लायक़ शक्ति भी देता है। – गान्धी

ईश्वर जिनपर कृपा करना चाहता है उनकी कभी-कभी इन्तहाई परीक्षा लेता है। – गान्धी

स्वर्गमें ऐसे कोई ताजधारी नहीं हैं जो यहाँ क्रूसधारी न रह चुके हों। – स्पर्जियन

अपने जीवनके हर क्षण मैं यह अनुभव करता हूँ कि ईश्वर मेरा इम्तहान ले रहा है। – गान्धी

ईश्वर आदमीके विश्वासको कड़ाईसे परखता है।
– शीकिंग (कन्फ़्यूशियस धर्मकी किताब)

ऐ मज़दा, ईश्वर, मुझे आज़मा और परख। तू मुझपर जो मुसीबतें डालेगा मैं उन सबको तेरा अनुग्रह और तेरी बरकतें समझूँगा।
– पारसी धर्मकी किताब गाथा

हे भिक्षुओ! मेरे वचनोंकी अच्छी तरह जाँच करना और अगर तुम्हें ठीक लगें तभी ग्रहण करना। – भगवान् महावीर

परोपकार

परोपकारी अपने कष्टको नहीं देखता, क्योंकि वह पर-दुःख-जनित करुणासे ओत-प्रोत होता है। – सन्त तुकाराम

वृक्ष, तालाब, साधु और बादल – ये चारों परमार्थके लिए शरीर धारण करते हैं। – कबीर

वृक्ष अपना फल ख़ुद नहीं खाते; नदी अपना पानी ख़ुद नहीं पीती। परमार्थके लिए साधुओंने शरीर रखा है। – कबीर

अगर आदमी परोपकारी नहीं है तो उसमें और दीवारपर खिंचे हुए चित्रमें क्या फ़र्क़ है। – सादी

पहले उपकार करनेवाला बादमें प्रत्युपकार करनेवालेसे बढ़कर है ।
— श्राद्ध विधि

जिसका दुःख हो वही दूर करे, तो फिर पैरका दुःख हाथ क्यों दूर करता है ?
— बोधिचर्यावतार

परोपकार एक नित्यकर्म है ।
— विनोबा

नदियाँ स्वयं जल नहीं पीतीं, वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते, बादल अपने लिए नहीं बरसते । सज्जनोंकी सम्पत्ति तो परोपकारके लिए ही होती है ।
— संस्कृत सूक्ति

जिनके हृदयमें सदा परोपकार करनेकी भावना रहती है, उनकी विपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और पग-पगपर सम्पत्ति प्राप्त होती है ।
— चाणक्य नीति

बादल अपनी जान देकर दूसरेके प्राणोंको बचाता है ।
— ज्ञान शतक

छोटे बच्चोंको दी गयी खाने वग़ैरहकी चीज़ें जैसे घरके यजमानको पहुँचती है । उसी तरह जन-सेवा परमात्माको पहुँचती है ।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

अपने हितके लिए दूसरेका हित करना ज़रूरी है ।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

ऐ मन, निश्चय कर कि मैं दूसरोंके लिए हूँ । परोपकारके सिवाय अभी तुझे कुछ नहीं सोचना ।
— बोधिचर्यावतार

परोपकारी

परोपकारियोंके लिए क्या अदेय होता है ?
— अज्ञात

पवित्रता

धन्य हैं वे जिनके हृदय पवित्र हैं, क्योंकि उन्हें प्रभुके दर्शन होंगे ।
— सेण्ट मैथ्यू

खुदा पाक है, इसलिए पाकीज़गी और सफ़ाईको पसन्द करता है।
– हज़रत मुहम्मद

पोशाककी तरफ़से भले ही लापरवाह हो जाओ, पर अपनी आत्माको निर्मल रखो। – मार्क ट्वेन

अगर तेरा दिल सम्यक् हो तो सृष्टिकी हर चीज़ तेरे लिए जीवनकी आरसी और धर्मको पुस्तक बन जाय। कोई प्राणी इतना छोटा या क्षुद्र नहीं है कि जिसमें भगवान्को भलाईके दर्शन न होते हों। शुद्ध हृदय स्वर्ग और नरकका पारद्रष्टा होता है। – थॉमस ए कैम्पिस

आत्मशुद्धिका आध्यात्मिक शस्त्र परम शक्तिशाली है वह सूक्ष्म और अदृष्ट रूपसे काम करता है। उससे हमारे वातावरणमें क्रान्ति हो जाती है और बाहरी बन्धन ढीले पड़ जाते हैं। – गान्धी

ईश्वरत्व तेरे अन्दर निवास करता है; तू परमेश्वरका मन्दिर है; इसलिए तू अपवित्र न हो। – अज्ञात

मैं परमात्मासे यह प्रार्थना नहीं करता कि तू मेरा हो जा; मेरी उससे प्रार्थना होगी कि तू मुझे पवित्र बना। जब मैं पवित्र हो जाऊँगा तो परमात्मा स्वभावतः मेरा हो ही जायगा। – एक हार्ट

सत्यसे पवित्र हुई वाणी बोले; मनसे जो पवित्र जान पड़े, उसीका आचरण करे (सत्यपूतां वदेद् वाणीं मनःपूतं समाचरेत्)। – पद्मपुराण

शरीर जलसे पवित्र होता है; मन सत्यसे; बुद्धि ज्ञानसे और आत्मा धर्मसे पवित्र होती है। – मनु

पश्चात्ताप

मुझे कोई पछतावा नहीं है; क्योंकि मैंने कभी किसीका कोई बुरा नहीं किया। – महात्मा गान्धी

पश्चात्ताप हृदयके शोकका और स्वच्छ जीवनके उदयका द्योतक है।
– शेक्सपीयर

सच्चा पश्चात्ताप यह है कि पाप करना छोड़ दे । – ऐम्ब्रोज़

सुधारके विना पश्चात्ताप ऐसा है जैसे छेद बन्द किये बग़ैर जहाज़से पानी उलीचना । – पामर

पश्चात्ताप हृदयकी वेदना है और निर्मल जीवनका उदय । – शेक्सपीयर

ऐसा काम न करो जिसके लिए पछताना पड़ जाय । – डच कहावत

पशुबल

सत्यकार्यके लिए भी पशुबलका प्रयोग भयंकर है । – शिलर

पसन्द

हर आदमीकी अपनी पसन्द होती है । – डेनिश कहावत

पण्डित

पण्डित वह नहीं है जो पढ़-गुनकर कथनी करे । सराहनीय पण्डित वह है जो पढ़ा-लिखा सब भुला दे । – बाबा धरनीदास

"ढाई अक्षर प्रेमके पढ़े सो पण्डित होय" – कबीर

पण्डित लोग सार ग्रहण करते हैं । – अज्ञात

पण्डित कौन है ! विवेकी । – शंकराचार्य

उन पण्डितोंको जिनमें विवेक, वैराग्य और ईश्वर-प्रेम नहीं है, मैं घास-फूसकी तरह देखता हूँ । – रामकृष्ण परमहंस

पाप

पापमें लिप्त होनेकी बनिस्बत मुसीबतमें गिरफ़्तार रहना अच्छा है ।
– सादी

पापीसे घृणा न करो; उसके पापसे घृणा करो शायद पूर्ण निष्पाप तो तुम भी न होगे । – भगवान् महावीर

अगर तेरा दिल पापसे नहीं फिरता तो फिर नरकमें ही तेरा ठिकाना होगा। — सादी

बुरा सोचना बुरा करनेके बहुत कुछ बराबर है। — अरिस्टोफ़ेन्स

बुराई करेगा तो तुझे बुराई झेलनी भी पड़ेगी। — सोफ़ोकिल्स

पापकी कमाई मृत्यु है। — रोमन्स

पाप-प्रवृत्तिका निकृष्टतम दुष्परिणाम क्या है? यह कि आदमी भूल जाता है कि वह अमृत-पुत्र है। — रब्बी शैलम

जो पापको दण्ड नहीं देता वह उसे निमन्त्रण देता है। — जर्मन कहावत

शरीरके पापोंसे मनके पापोंकी कम बदनामी होती है, लेकिन वे कम गलीज़ नहीं हैं। — विचकोट

इत्मीनान रख, तेरा पाप तुझे ढूँढ़ निकालेगा। — मोज़ेज़

पाप न होता तो पुण्य न होता। दोनों घुले-मिले हैं, ताकि सब ठीक चलता रहे। — यूरिपिडीज़

हर सन्तका भूतकाल है और हर पापीका भविष्य। — आस्कर वाइल्ड

कैसे मालूम हो कि हमारा पाप माफ़ कर दिया गया? इस बातसे कि हम उस पापको फिर कभी न करें। — रब्बी

पाप तभी तक होता है जबतक ईश्वरकी सर्व-व्यापकताका अनुभव नहीं हो जाता। — स्वामी रामतीर्थ

दुष्ट जीवनसे मृत्यु अच्छी। — ऐशीलस

वह अपने-आपको धोखा देता है जो समझता है कि उसके कुकर्म ईश्वरकी नज़रसे छिपे हुए हैं। — पिण्डर

पाप सबको मीठा लगता है; पश्चात्ताप कड़ुवा। — डेनिश कहावत

गुलाब गिर जाते हैं, काँटे लगे रहते हैं। — डच कहावत

मैं पापके फलसे नहीं स्वयं पापसे, बल्कि पापके विचार तकसे मुक्ति चाहता हूँ। — गान्धी

पापियोंकी शीघ्र ही बुरी गति होती है। — मनु

मर्यादा उल्लंघन करनेवालोंका मार्ग बड़ा कठिन है। — बाइबिल

पाप हो जल्दी जाता है, लेकिन उसके द्वारा की गयी क्षतिकी पूर्ति धीरे-धीरे होती है। — डेनिश कहावत

दुनियाके हर पापके लिए हर एक ज़िम्मेदार है। — विवेकानन्द

पाप पुण्यमें ही रह सकता है; कोरा पाप असम्भव है।
— सन्त थॉमस ऐक्वीनस

जिस वस्तुसे पाप बना है उसीसे पुण्य बना है। — बुज़ंकट

मैंने पापकी प्रकृतिकी शोध की पर उसमें कोई सार न पाया।
— सन्त आगस्ताइन

पापके आरम्भोंका निरोध करो। — हिप्पोक्रेट्स

जब हम मौतका ख़याल करते हैं तो हज़ार पाप, जिन्हें हमने यूँ कर डाला था, जैसे पैरोंके नीचे तिनके कुचल दिये, हमारे सामने फुफकारते हुए साँपोंकी तरह आकर खड़े हो जाते हैं। — थॉमस स्कॉट

पापका उदय होनेपर सम्पत्ति भी विपत्ति बन जाती है। — धर्मकल्पद्रुम

पापीको दुःख ही मिलता है। — अथर्ववेद

अगर तू पाप और बुराइयोंसे दूर रहेगा तो स्वर्गके बाग़से नज़दीक रहेगा।
— सादी

समझदार आदमी गुनाहसे बचता है। — सादी

ऐहिक सुख भोगना ही मुख्य पाप है। — उपासनी

मरते वक़्त तक क्या चुभता है? गुप्त पाप। — शंकराचार्य

खुशक़िस्मत आदमी गुनाहसे बचता है, क्योंकि सूरजकी रोशनी भी बादलसे छिप जाती है। — सादी

पापके साथ ही सज़ाके बीज बो दिये जाते हैं। — हेसियोड

दहकती आग जैसे साँपको भस्म करके रख देती है, उसी प्रकार मेरी उज्ज्वल भक्ति सब पापोंका नाश कर देती है। — भगवान् श्रीकृष्ण

पापपूर्ण आरम्भ अन्तमें दुःखदायक होते हैं। — भगवान् महावीर

पाप-प्रवृत्ति

पाप-प्रवृत्तियोंसे लड़नेसे डरना बुज़दिली है। — डब्ल्यू० ऐस० रायस्टन

पापी

पापी आदमी रंज और उदासीसे खुश होता है। — सन्त फ्रांसिस डि सेल्स

पापियोंको दण्ड देकर रुलानेवाला ईश्वर हमें पाप कर्मसे बचाये।

— ऋग्वेद

पापियोंके ऐश्वर्यको देखकर धर्म-फलमें सन्देह मत करो। फाँसीकी सज़ाके मुलजिमको फाँसीके पहले इच्छानुसार भोग-सामग्री दी जाती है।

— श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

पापीको पुण्यकी बात अच्छी नहीं लगती। — उपासनी

पालिसी

मैं सत्य और अहिंसाकी नीतिके अलावा और कोई नीति नहीं जानता।

— गान्धी

पुण्य

बाह्य ऐहिक सुखका व परमेश्वरी गुप्त सुखका बीज पुण्य है। — उपासनी

पुण्य-कार्योंका सदा शुभ फल मिलता है, चाहे देरसे मिले मगर ज़रूर मिलता है। — कौंग्रीव

सुकृत-मार्गपर चलनेसे संसारके विघ्नोंसे बचा जा सकता है। विचार-पूर्वक चलनेसे सब दुःख-क्लेश छूट जाते हैं। — स्वामी ग़रीबदास

पुण्य और पाप दोनों पाप हैं। यह लोहेकी जंजीर है वह सोनेकी।
— शंकराचार्य

सकल कलाकारोंकी सकल कलाएँ बिना पुण्य-कलाके विकलांग हैं।
— अज्ञात

मैं ईश्वरमें और प्रकृतिमें, और पापपर पुण्यकी विजयमें विश्वास करता हूँ।
— गेटे

पुण्य, पापसे परहेज़ करनेमें नहीं है; बल्कि उसे न चाहनेमें है।
— जार्ज बर्नार्ड शॉ

केवल पुण्यात्मा ही हर हालतमें भलेकी आशा रख सकता है। — अज्ञात

पुण्य-पाप

पुण्यका परिणाम सम्पत्ति नहीं, सुबुद्धि। पापका परिणाम ग़रीबी नहीं कुबुद्धि है।
— विनोबा

पुनर्जन्म

मैं पिछले जन्मों और पुनर्जन्मोंमें विश्वास करता हूं। — महात्मा गान्धी

पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार वह है जो अधिकारियोंको विना माँगे मिले। — अज्ञात

पुरुष

पुरुष वह जो अपने देहका राजा बनता है। — गान्धी

पुरुषार्थ

परमेश्वर हर-एकको खाना देता है, लेकिन उसके मुँहमें नहीं डालता।
— जे० जी० हालेण्ड

दीयेसे दीया जलाकर सारी दुनियाको रोशन कर। – ज्ञानेश्वर

स्वयं आत्मोद्धारका प्रयत्न नहीं करता और लोगोंसे पूछता फिरता हूँ कि मेरी गति क्या होगी! – ज्ञानेश्वर

मन रूपी परम-बन्धन-पाशको जिसने मनसे ही छेदकर अपनी आत्माको मुक्त न किया उसे और कोई मुक्त नहीं कर सकता। – योगवाशिष्ठ

'मुझे कोई इस प्रकार प्रेरणा करता है' ऐसी अनर्थपूर्ण कल्पना लेकर जो अदृष्टके सहारे पड़ा है उस अधमसे दूर रहना, 'ईश्वर स्वर्ग नरक जहाँ भेजेगा जाऊँगा' ऐसा माननेवाला निस्सन्देह सदा पराधीन पशु है।

– योगवाशिष्ठ

पुरुषार्थसे काम लेना, और जितना युक्ति-युक्त हो उतने शास्त्रको मानना। शेष सबका चाहे वह कितना ही आर्ष हो, त्याग करना, और न्याय-परायण रहना। – योगवाशिष्ठ

बुद्धिमान् नियतिका सहारा लेकर पुरुषार्थका त्याग न करें; क्योंकि नियति भी पुरुषार्थ रूपसे ही नियामक होती है। – योगवाशिष्ठ

जैसे दो बकरोंकी टक्करमें जो बलवान् होता है सो जीतता है, उसी तरह भाग्य और पुरुषार्थकी भिड़न्तमें जिसकी शक्ति अधिक होती है उसकी विजय होती है। – योगवाशिष्ठ

हे रघुनन्दन! इस संसारमें सब चीजें हमेशा सम्यक् पुरुषार्थसे प्राप्त होती हैं। – योगवाशिष्ठ

अपने सामर्थ्यसे सब दुरवस्थाओंको दूर कर। – ऋग्वेद

आलसी होकर राह न देखते रहना! क्योंकि भाग्यदेवी भी ऐसी आलसी है कि अपने-आप कभी नहीं आयेगी। – अज्ञात

यदि ईश्वर मुझसे पूछे कि तेरी क्या-क्या बातें मिटा दूँ तो मैं कहूँगा मेरी सब बातें मिटा दे, लेकिन मेरे प्रयत्न मत मिटा, मेरे दुःख मत मिटा।

– अनातोले

दोनों पुरुषार्थ (पूर्वकृत जिसका नाम दैव है और वर्तमान कालका पुरुषार्थ) दो मेढ़ोंके समान एक-दूसरेसे लड़ते हैं और उनमें जो अधिक बलवाला होता है वही विजय पाता है। — योगवाशिष्ठ

दैव (भाग्य) कभी कुछ नहीं करता, यह केवल कल्पना मात्र है कि दैव ही सब कुछ करता है, दैव मूर्ख लोगोंकी कल्पना है; इस कल्पनाके भरोसे रहकर वे नाशको प्राप्त होते हैं। — अज्ञात

यहाँपर सब दुःखोंका क्षय करनेके लिए पुरुषार्थके अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं है। — योगवाशिष्ठ

जो जिस पदार्थके पानेकी इच्छा करता है और उसको प्राप्त करनेके लिए क्रमशः यत्न करता है, वह उसे अवश्य ही प्राप्त कर लेता है, यदि बीचमें प्रयत्नको न छोड़ दे। — योगवाशिष्ठ

यहाँपर चुपचाप बैठे रहनेसे कुछ प्राप्त नहीं होता, जो-जो जैसा-जैसा यत्न करता है वैसा-वैसा ही फल पाता है। — योगवाशिष्ठ

जो उद्योगको छोड़कर भाग्य (तक़दीर) के ऊपर भरोसा करते हैं वे अपने ही दुश्मन हैं और धर्म, अर्थ और काम सबको नष्ट कर देते हैं। — योगवाशिष्ठ

जो आदमी अपनी मौजूदा हालतपर ठीक तौरसे विचार नहीं करता, बल्कि केवल इस ख़यालसे कि अन्तमें मुक्ति हो ही जायगी, पुरुषार्थकी ओर कोई ध्यान नहीं देता, वह मौतके चक्करसे हरगिज़ नहीं बच सकता। — बुद्ध

ज्ञान-प्राप्तिके बाद हममें पुरुषार्थ आना ही चाहिए। — नाथजी

तू कबतक बनता-सँवरता रहेगा ! बढ़नेकी हिम्मत कर और मर्दोंकी तरह क़दम उठा। — सनाई

अपना काम करो; दिलसे करो; आसमान साफ़ हो जायगा। — डीन फ़रार

पुस्तक

मेरी स्वाध्यायशालामें तो मुझे निश्चित रूपसे मात्र बुद्धिमानोंका ही सम्भाषण मिलता है और बाहर ! बाहर तो मूर्खोंके संसर्गसे छूटना मुश्किल हो जाता है । – वालर

मेरे बहुत-से मित्र हैं, और मैं उन्हें चाहता हूँ; मगर अच्छी किताबोंके पढ़नेको मैं उनसे भी ज़्यादा चाहता हूँ । – पोप

पूजा

तुम गौड और मैमन दोनोंकी परिस्तिश एक साथ नहीं कर सकते ।
– बाइबिल

लानत है उनपर जो अपने पैग़म्बरोंके मक़बरोंको पूजते हैं ।
– हज़रत मुहम्मद

पूर्णता

पूर्णका आवाहन क्या ? सर्वाधारका आसन क्या ? स्वच्छको पाद्य या अर्घ्य क्या ? शुद्धको आचमन क्या ? – परापूजा

जिसके नियमानुसार सारे विश्वका संचालन होता है, उस शाश्वत नियममें अचल विश्वास रखे बिना पूर्णतम जीवन सम्भव नहीं है । इस विश्वाससे विहीन व्यक्ति तो समुद्रसे अलग आ पड़नेवाली उस बूँदके समान है जो नष्ट होकर ही रहती है । – गान्धी

वह पूर्ण है, यह पूर्ण है, पूर्णसे पूर्ण ही पैदा होता है । पूर्णमें-से पूर्ण निकाल लिया तो भी पूर्ण ही बाक़ी रहता है । – ईशावास्योपनिषद्

हमारा जीवन, मानो सहज ही परमात्माके साथ समरस हो गया हो, हमेशा शुद्ध, चैतन्यवान् और व्यापक रहे – यही भक्ति है, यही समर्पण है और यही मानवताकी पूर्णता है । – नाथजी

मन पूर्ण हुआ कि सारी दुनिया अमृतरससे सम्पूर्ण हो गयी । पैरमें जूते पहननेवालेके लिए मानो सारी दुनिया चमड़ेसे ढक गयी । – योगवाशिष्ठ

पूँजी

हिंसासे मुक्ति पानेके लिए पूँजीसे मुक्ति पाना अनिवार्य है।

— धीरेन्द्र मजूमदार

पूँजी माने भूतकालका श्रम। — विनोबा

पूँजीवाद

पूँजीवादको छोड़कर, क्रान्तिसे ज़्यादा घृणित और कोई चीज़ नहीं।

— जार्ज बर्नार्ड शॉ

पेट

जो लोग अपना पेट भरनेकी चिन्तामें ही मग्न रहते हैं वे नरकगामी होते हैं। — गरुड़ पुराण

पेटूपन

अधिक भोजन करना आरोग्य, आयु, पुण्य और स्वर्गका नाशक तथा लोकनिन्दित है। — मनु

पैग़म्बर

पैग़म्बर इज़्ज़तसे वंचित नहीं रहता, लेकिन उसे वह अपने ही देश और अपने ही घरमें नहीं मिलती। — मैथ्यू

सब पैग़म्बर भाई-भाई हैं। — पैग़म्बर मुहम्मद

पैसा

पैसा बिला शक दुनियामें सबसे अहम् चीज़ है, और यह हक़ीक़त तमाम ठोस और सफल वैयक्तिक और राष्ट्रीय नैतिकताका आधार होनी चाहिए। — जार्ज बर्नार्ड शा

पैसेवाले अपने पैसेको और उससे मिलनेवाली सत्ताको खुदबखुद खुशीसे छोड़कर सबके कल्याणके लिए सबके साथ मिलकर इस्तेमाल करनेके लिए तैयार नहीं हुए तो यहाँ हिंसक और खूँख़ार क्रान्ति हुए बग़ैर नहीं रहेगी यह निश्चित समझना। — महात्मा गान्धी

पैसा आदमीको सुखी नहीं बना सकता। आदमी सुखी बनता है अपने सद्‌गुणोंसे। — फ्रैंकलिन

पैसेको बड़ा मानकर अगर जिन्दगी बरबाद कर दी जाय, तो फिर बरबाद जिन्दगीको पैसेकी क़दर नहीं रहती। — जापानी कहावत

पैसेका मोह सब बुराइयोंकी जड़ है। — बाइबिल

पैसा उधार दिया, और दुश्मन बनाया। — पुर्तगाली कहावत

जब पैसेका सवाल आता है तब सब एक मज़हबके हो जाते हैं।
— वौल्टेर

उस तुच्छ आदमीका दिल कभी खुश नहीं हो सकता जिसने पैसेको खातिर अपना ईमान बेच दिया।

पैसा कमानेमें मैं अपना वक़्त बरबाद नहीं कर सकता। — लुई अगासीज़

जहाँ पैसा है वहाँ शैतान है; लेकिन जहाँ पैसा नहीं है, वहाँ और भी बड़ा शैतान है। — जर्मन कहावत

दुनियापर राज है पैसेका। — जर्मन कहावत

पैसेके बिना आदमी ऐसा है जैसे बिना मस्तूलका जहाज़।
— डच कहावत

पैसा लिया, आज़ादी खोयी। — जर्मन कहावत

पोशाक

अयोग्य कन्धोंपर पड़े हुए मूल्यवान् वस्त्र रुदन मचाते रहते हैं।
— फ्रांसीसी कहावत

जब कभी मैं किसी कम-अक़्ल आदमीको भड़कीली पोशाकमें देखता हूँ, तो मैं हमेशा अफ़सोस करने लगता हूँ कपड़ोंकी क़िस्मतपर।
— बिलिंग्ज़

प्रकाश

अरे, तेरे हृदयाकाशमें चैतन्यकी असंख्य किरणें हैं। पर तू उन्हें देखे तब न ! — अज्ञात

सदुपयोगीको और मिलेगा; दुरुपयोगीसे छीन लिया जायगा।
— बाइबिल

जहाँ सूरज चमकता है क्या वहाँ रात हो सकती है ? — सूफ़ी

प्रकृति

ईश्वरकी झिलमिली जो ज्ञानीको तो उसके दर्शन कराती है, पर मूर्खसे उसे छिपाती है। — कार्लाइल

जो प्रकृतिके प्रतिकूल है, वह ईश्वरके प्रतिकूल है। — हैबल

क़ुदरत कमज़ोरीसे नफ़रत करती है। — महात्मा गान्धी

क़ुदरत कोई काम फ़िज़ूल नहीं करती। — सर थामस ब्राउन

मेरा खयाल है कि मैं वृक्ष-सरीखी सुन्दर कविता कभी न देख पाऊँगा।
जौइस किलमर

सारी प्रकृतिको खुश देखकर ग़मगोनसे ग़मगीन दिल भी खुश हो सकता है।
— सर वाल्टर स्काट

प्रकृति ईश्वरकी कला है। — दान्ते

रोशन सितारे ! काश कि तेरी तरह मैं भी निश्चल होता।
— जान कीट्स

सुन्दर होना और शान्त रहना प्रकृतिका आदर्श है। — रिचार्ड जैफ़रीज

प्रकृति ईश्वरका सजीव दृश्यमान आच्छादन है। — गेटे

प्रकृति कर्ता है, पुरुष अकर्ता, प्रकृति और पुरुष एक हैं।
— स्वामी रामदास

पुरुष (शिव) निष्क्रिय है, प्रकृति (शक्ति) सक्रिय है।
— स्वामी रामदास

प्रगति

तमाम सच्ची प्रगति, विचारोंके एक अनन्त सिलसिलेके सहारे, ज़्यादा आज़ादीकी तरफ़ ले जाती है। — बोवी

जीवनमें वही प्रगति कर रहा है जिसका हृदय कोमल होता जा रहा है, जिसका खून गरम होता जा रहा है, जिसका दिमाग़ तेज़ होता जा रहा है, जिसकी आत्मा सजीव शान्तिमें प्रविष्ट होती जा रही है। — रस्किन

ग़लत रास्ते चलते जानेसे लौट पड़ना अच्छा। — जर्मन कहावत

जो ग़लत सड़कपर चलेगा उसे यात्रा फिरसे शुरू करनी पड़ेगी।

— स्पेनी कहावत

प्रजनन

बर्थ-कण्ट्रोल (प्रजनन-नियन्त्रण) की आवश्यकताके विषयमें दो मत नहीं हो सकते। पर युग-युगान्तरसे चलता आया उसका एक ही उपाय है— संयम या ब्रह्मचर्य। — महात्मा गान्धी

प्रजातन्त्र

मेरी भावनाका प्रजातन्त्र वह है, जिसमें छोटेसे छोटे व्यक्तिकी आवाज़को भी उतना ही महत्त्व मिले जितना एक समूहकी आवाज़को।

— महात्मा गान्धी

प्रजातन्त्र अत्याचारका कठोरतम रूप है। — अरस्तू

प्रतिभा

कौशल आदमीके वशमें रहता है; आदमी प्रतिभाके वशमें रहता है।

— लॉवैल

जो दूसरोंको मुश्किल लगे, उसे आसानीसे करनेमें कौशल है; कौशलके लिए जो असम्भव है उसे कर दिखानेमें प्रतिभा है। — ऐमील

प्रथम और अन्तिम वस्तु जिसकी हम प्रतिभासे अपेक्षा रखते हैं, सत्यप्रेम है। — गेटे

जब कोई प्रतिभाशाली हस्ती दुनियामें अवतरित होती है तो उसे इस लक्षणसे पहचाना जा सकता है कि तमाम अहमक़ लोग उसके खिलाफ़ भिड़ जाते हैं। — स्विफ़्ट

धर्मके बिना प्रतिभा ऐसी है जैसे महलके बाहरी फाटकपर लैम्प; वह बाहरवालोंपर प्रकाश छिटकाता है जब कि भीतरवाले अन्धकारमें रहते हैं। — हन्नामोर

प्रतिरोध

बुरेका प्रतिरोध न करो। अगर कोई तुम्हारे एक गालपर तमाचा मारे तो उसकी ओर दूसरा गाल भी कर दो। — ईसा

'बुराईका प्रतिरोध न करो' का पौज़िटिव रूप है 'अपने शत्रुओंसे प्रेम करो'। — महात्मा गान्धी

प्रतिशोध

प्रतिशोध नया अपराध है। — जर्मन कहावत

बदलेका भी बदला लिया जायगा। — जर्मन कहावत

कुत्तेने मुझे काटा, इसलिए मैंने कुत्तेको काटा, बदलेका रूप अकसर यह होता है। — ऑस्टिन ओमेली

बदला सौ बरसका हो जाय फिर भी उसके दाँत दूधके ही रहते हैं।

प्रतिष्ठा

दुनियाकी बड़ाइयोंमें आग लगा दे। इन्हीं आग लगी बड़ाइयोंने ही तो उसका नाम बिसार दिया है। इनमें-से एक भी तेरे साथ चलनेकी नहीं। — आसा दीवार

सौर-परिवारको अपनी वाहवाहीकी फ़िक्र नहीं है। — एमर्सन

प्रतिहिंसा

अगर कोई गधा तुमपर रेंके, तुम उसपर मत रेंको। — जॉर्ज हरबर्ट

प्रतिज्ञा

प्रलोभनसे शर्तिया बचानेवाली ढाल है प्रतिज्ञा। — महात्मा गान्धी

मदहोशीके आलममें की हुई प्रतिज्ञाओंको होशमें आनेपर तोड़ा जा सकता है। — शेक्सपीयर

प्रत्युपकार

अपने शुभचिन्तककी रसोई तैयार करनेके लिए अपने घरकी आरायशका सामान तक जला देना उचित है। — सादी

प्रदर्शन

अधिकांश लोग प्रदर्शन-प्रिय होते हैं क्योंकि सद्‌गुणशीलताकी दिव्यताका न तो उन्हें ज्ञान है न अनुभव। — प्लुटार्क

आदमीमें ठीक उतनी ही प्रदर्शन-प्रियता होती है जितनी कि उसमें समझकी कमी होती है। — पोप

प्रपंच

प्रपंच परमार्थके लिए है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रपंचरूपी नदी भयानक दीखती है, लेकिन विशेष गहरी नहीं है। संकेत-द्वारा वह यही बता रही है कि उसमें कमर तक ही पानी है। — ज्ञानेश्वर

प्रपंच है अन्दर, दीखता है बाहर। — ज्ञानेश्वर

ज्ञानीकी दृष्टिमें परमार्थ वस्तुके साथ मायाका कोई सम्बन्ध नहीं है और भक्तकी दृष्टिमें प्रपंचसहित भगवान् परमार्थ हैं। सुवर्णमें जो कुण्डलादिका अत्यन्ताभाव देखना है वह ज्ञानीकी दृष्टि है तथा सुवर्णको कुण्डलादि सहित देखना भक्ति सिद्धान्त है। — उड़िया बाबा

जो आदमी प्रपंचके अनुभवसे नहीं सीखता वह किसीसे कुछ नहीं सीख पाता। — श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रपंची लोगोंका स्वभाव बड़ा विचित्र होता है। उन्हें सच्ची बात अच्छी नहीं लगती। — श्री ब्रह्मचैतन्य

जो दूसरेपर अवलम्बित है वह आदमी प्रपंची है, दूसरोंसे सुख पानेकी कोशिश करनेवाला आदमी प्रपंची है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

वस्तुतः तो भाव और अभाव दोनों ही आत्मासे भिन्न नहीं हैं; क्योंकि आत्मा प्रपंचका अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है। – उड़िया बाबा

यह प्रपंच ब्रह्मकी लीला है। – सन्त नामदेव

मनुष्यको प्रपंचमें भले ही रहना पड़े, फिर भी, वाणीमें वह प्रपंच न भरे। – ज्ञानेश्वर

मनसे स्वस्थ बैठना परमार्थ है, और बिना कारण घडपड करना प्रपंच है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

अपना प्रपंच अपनी ही कल्पनाका खेल है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

परमात्माको प्रपंच बनानेके बजाय हम प्रपंचको परमात्मा बना दें। – श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रपंच प्रिय न हो, पर प्रपंचमें कर्तव्य प्रिय हो। – श्री ब्रह्मचैतन्य

यह सब तमाशा सपनेकी तरह है, इसमें कुछ भी सार नहीं है। – बुद्ध

प्रभाव

सारी दुनियाको हिला देना चाहते हो तो पहले अपने-आपको हिलाओ। – रामतीर्थ

प्रभु

प्रभु रस तृप्त है; कहींसे भी कम नहीं है। – अथर्ववेद

अन्तर्यामी प्रभु मुझे पवित्र करें। – यजुर्वेद

हर आदमी प्रभुका अंशावतार है। – मैनिलियस

गुलाब जिसे तुम चर्म-चक्षुओंसे देखते हो, अनादिकालसे प्रभुमें खिला हुआ है। – ऐंजेलस सिलीसियस

प्रभुसे बड़ा कोई सहायक नहीं; सन्तोंसे बड़ा कोई मार्गदर्शक नहीं। – तपस्वी महल तस्तरी

हम जानते हैं कि समस्त वस्तुएँ मिलकर प्रभुके भक्तोंका भला करती हैं।
– बाइबिल

निष्क्रिय प्रभु शान्ति-स्वरूप हैं, सक्रिय प्रभु आनन्द-स्वरूप।
– स्वामी रामदास

प्रमाण

ईश्वरके अस्तित्वके दो प्रमाण हैं – बाहर सन्तवाणी, अन्दर हमारा अन्तः-करण। – अरब सूत्र

अपनी प्रत्यक्ष अनुभूतिको ही अन्तिम प्रमाण मानो। – स्वामी रामतीर्थ

प्रमाद

मोक्षध्येयी पुरुष कभी प्रमाद न करे। आत्मगुप्त धीर बनकर देहको मोक्षका साधन मानकर निर्वाह करे। – आचारांग

जो सोता है (ईश-विमुख रहता है) वह जीर्ण हो जाता है। – अथर्ववेद

अधूरा काम और अपराजित शत्रु – ये दोनों बिना बुझी आगकी चिन-गारियाँ हैं। मौक़ा पाते ही ये दानवीय बन जायेंगे और उस लापरवाह आदमीको दबा देंगे। – तिरुवल्लुवर

अगर तुम प्रमादी हो तो विनाशके मार्गपर हो। – बीचर

प्रमादी आदमी जीवित पाषाण है। – ज़िमरमन

तू विशाल संसार-सागर तैर चुका। अब किनारे आकर क्यों अटक रहा है? उस पार पहुँचनेके लिए पूरी शक्तिसे शीघ्रता कर। गौतम, क्षणमात्र भी प्रमाद न कर। – भगवान् महावीर

प्रमाद कर्म है, अप्रमाद अकर्म। – भगवान् महावीर

जैसे पेड़के पत्ते पीले पड़कर झड़ जाते हैं, उसी तरह ज़िन्दगी उम्र पूरी होनेपर ख़त्म हो जाती है। इसलिए क्षण-भर भी प्रमाद न करो।
– भगवान् महावीर

प्रयत्न

जबतक शरीर स्वस्थ है, बुढ़ापा नहीं आया है, इन्द्रियोंकी शक्ति क्षीण नहीं हुई है और आयु भी ढली नहीं है, तभीतक समझदारको अपना हित साध लेना चाहिए, वर्ना घरमें आग लग जानेपर कुआँ खोदनेसे क्या होगा ? — भर्तृहरि

प्रयत्नमें परमेश्वर रहता है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रलोभन

जीवनके प्राथमिक अभ्यासकी क्षीण सफलतामें ही संसारके सारे पदार्थ तुम्हारी ओर आकर्षित होने लगेंगे । निरन्तर छह मासकी निर्बल साधनामें भी संसारके प्रलोभन आने लगते हैं । इस अवस्थामें खूब सावधान रहना चाहिए । — श्री उड़ियाबाबा

बहुत कम लोगोंमें वह ताक़त होती है जो कि सबसे बड़ी बोली बोलने-वालेका मुक़ाबला कर सके । — वाशिंगटन

जैसे इस दुनियाके प्रलोभनोंको जीतना पड़ता है, वैसे ही उस दुनियाके प्रलोभनोंको भी । — अरविन्द

प्रशंसा

अपनी प्रशंसा न करे; दूसरेकी निन्दा न करे । — पद्मपुराण

किसीको अपनी सराहना करनेके लिए विवश कर देनेका सिर्फ़ एक ही उपाय है कि आप शुभ कर्म करें । — वाल्तेयर

अपनी तारीफ़ कभी न सुने । — निवृत्तिनाथ

मूर्खोंसे तारीफ़के राग सुननेकी निस्बत बुद्धिमान् आदमीकी फटकार सुनना ज्यादा अच्छा है । — इंजील

जिस आदमीकी जुआरी लोग, भाट और बदचलन औरतें तारीफ़ करती हैं वह आदमी जीते हुए भी मुरदा है । — वाल्मीकि रामायण

सृष्टिकी सराहना क्यों करता है। सिरजनहारकी सराहना कर।

— आसा दीवार

मैं प्रशंसा ज़ोरसे करती हूँ; दोष धीमेसे बताती हूँ।

— रूसकी कैथरीन द्वितीय

सर्वाधिक प्रशंसनीय व्यक्तियों-द्वारा प्रशंसित किये जानेमें बड़ा आनन्द है।

— सर फ़िलिप सिडनी

अयोग्य प्रशंसाको प्रच्छन्न व्यंग्य समझो! — ब्रैडहर्स्ट

और कोई भले तेरी तारीफ़ करे; अपने मुँह मियाँ मिट्ठू न बन।

— बाइबिल

एक बेवक़ूफ़ दूसरे बेवक़ूफ़की तारीफ़ करता है। — जर्मन कहावत

अगर किसी हीरेकी तारीफ़ न की जाय तो क्या इससे उसकी शानमें कमी आ जाती है? — मारकस औरेलियस

बहुत-से लोग सचाईकी तारीफ़ करते हैं और झूठपर चलते हैं।

— डेनिश कहावत

मामूली आदमियोंकी तारीफ़ अकसर झूठी होती है और ऐसी तारीफ़ सज्जनोंकी अपेक्षा धूर्तोंकी ही ज्यादा की जाती है। — बेकन

उन्हें वफ़ादार न समझ जो तेरी हर कथनी और करनीकी तारीफ़ करें, बल्कि उन्हें जो तेरे दोषोंकी मृदुल आलोचना करें। — सुकरात

प्रशंसा विभिन्न लोगोंपर विभिन्न असर डालती है। ज्ञानीको नम्र बनाती है, लेकिन मूर्खको और भी उद्धत बनाकर उसके दुर्बल दिमाग़को फिराने लगती है। — फ़ाल्थम

जो मूर्खोंकी प्रशंसा करते हैं वे उन्हें क्षति पहुँचाते हैं। — डैमोक्रिटस

बिना तारीफ़ किये किसीको खुश नहीं किया जा सकता और बिना झूठ बोले किसीको तारीफ़ नहीं की जा सकती। — डॉक्टर जॉन्सन

प्रसन्नता

चित्तकी प्रसन्नता ओषधिका-सा लाभ करती है। — बाइबिल

जो सबको ख़ुश करना चाहता है उसने भारी काम ले रखा है।
— स्पेनी कहावत

वही अच्छी तरह जीता है जो हँसते-हँसते जीता है।
— श्रीमती ए० ऐल० बरबोल्ड

हँसमुख आदमी अपनी कोशिशमें कभी नाकामयाब नहीं होता। — सादी

ख़ुश करनेकी कला ख़ुश होनेमें समायी हुई है। — हैजलिट

अगर दुनियामें कोई ऐसा सद्‌गुण है जिसकी प्राप्ति सदा हमारा लक्ष्य होना चाहिए, तो वह है चित्तकी प्रसन्नता। — लॉर्ड लिटन

चित्तकी प्रसन्नता-प्रफुल्लता एक वस्तु है, आमोद-प्रमोद दूसरी। पहलीके लिए भीतरसे सामग्री मिलती है, दूसरीके लिए बाहरसे।
— हरिभाऊ उपाध्याय

तू दूसरोंकी गुलामी करने और उनको ख़ुश रखनेके क्लेशमें क्यों पड़ा हुआ है? अगर तू स्वयं प्रसन्न हो जाये तो तुझमें चिन्तामणिका गुण आ जाये! फिर तेरे संकल्पोंको फलीभूत होनेमें क्या देर लगे?
— संस्कृत-सूक्ति

ख़ुशनूदिये-मिज़ाजसे बढ़कर और क्या पोशाक पहनकर आप सोसाइटीमें जायेंगे? — थैकरे

मनको सदा प्रसन्न रखनेके लिए प्रयत्न करना चाहिए। — श्री उड़ियाबाबा

वह सद्‌गुण जो सदा हमारे लक्ष्यमें रहना चाहिए, प्रसन्नता है। — बलवर

ख़ुशमिज़ाजीका मुश्किल जुज़ है बदमिज़ाजीको बरदाश्त करना और उसे निबाह लेना। — ऐम्पसुन

प्रसाद

मैं भले ही भूखों मरता होऊँ, भले ही मेरा दिल प्याससे खुश्क हो गया हो, भले ही मैं मर जाऊँ और मिट जाऊँ, मगर यह न हो कि मैं उस प्यालेकी तरफ़ हाथ बढ़ाऊँ जिसे तूने न भरा हो, या उस कटोरेको लूँ जिसमें तेरा प्रसाद नहीं है। — खलील जिब्रान

प्रसिद्धि

ओफ़! दुनियावी वाहवाही कितनी जल्दी ग़ायब हो जाती है!

— थॉमस ए कैम्पिस

वाहवाहीके तमाम रास्ते क़ब्रिस्तानको जाते हैं। — ग्रे

प्राणी

सब प्राणियोंमें भगवान्‌ने ही अपने अंशभूत जीवके रूपमें प्रवेश किया है—ऐसा मानकर सबको मन-ही-मन सादर प्रणाम करना चाहिए। — श्रीमद्भागवत

प्राप्ति

भाव बिना भगवान्, गुरु बिना साक्षात्कार, तप बिना देवताकी कृपा और प्रेम बिना कल्याण कहाँसे मिले? — ज्ञानेश्वर

जो जीवनमें केवल एक चीज़ चाहता है वह उसे पानेकी आशा कर सकता है, लेकिन हर चीज़को चाहनेवाला सिर्फ़ निराशाकी फ़सल काटता है।

— बलवर

हंसको जब मानसरोवर मिल गया तो फिर वह ताल-तलैयोंमें क्यों डोलेगा? — कबीर

जबतक आदमी किसी चीज़के लिए मेहनत नहीं करेगा, तबतक वह उसके सामने नहीं आयगी। — गारफ़ील्ड

तुझे जो कुछ प्राप्त करना हो उसे तलवारसे नहीं, मुसकराहटसे प्राप्त कर।

— शेक्सपीयर

भगवान् कल्पतरु हैं। उनसे जो माँगोगे मिलेगा। लेकिन कल्पतरुके पास आकर माँगो। — रामकृष्ण परमहंस

अगर तुम खुदाको पा जाओ और उसके नेकीके राजको हासिल कर लो तो बाक़ी सब चीज़ें तुम्हें अपने-आप मिल जायँगी। – इंजील

धर्म यानी नेकीपर चलो तो बाक़ी सब चीज़ें तुम्हें अपने-आप मिल जायँगी। – इंजील

हक़ यानी सचाईको जानकर आदमी जो चाहेगा उसे हासिल कर लेगा।
– उपनिषद्

कभी जल निकट होता है, तो अरण्य दूर होता है। सब चीज़ें एक जगह कहाँ मिलती हैं? – अज्ञात

कोई भी न्यायानुमोदित उद्देश्य ऐसा नहीं जो अपनी आध्यात्मिक शक्तिके विवेकपूर्ण प्रयोगसे तुरन्त प्राप्त न किया जा सके। – जेम्स एलन

अगर तुमने सत्यको पा लिया है तो फिर जो चाहोगे मिल जायगा।
– उपनिषद्

जो भगवान्को पानेके लिए बहुत खोता है उसको सदाके लिए बहुत मिलता है। – सन्त पिगल

प्रायश्चित्त

प्रायश्चित्तकी तीन सीढ़ियाँ हैं – (१) आत्म-ग्लानि, (२) फिर पाप न करनेका निश्चय, (३) आत्म-शुद्धि। – तपस्वी जुन्नेद बग़दादी

सच्चा प्रायश्चित्त पापजन्य बाहरी यन्त्रणा और शर्मकी अपेक्षा स्वयं पापसे अधिक घृणा करना है। – शेक्सपीयर

जो मनुष्य अधिकारी व्यक्तिके सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदयसे कह देता है और फिर कभी न करनेकी प्रतिज्ञा लेता है उसीका प्रायश्चित्त शुद्धतम है। – गान्धी

प्रारब्ध

भक्तोंके लिए प्रारब्ध कर्म रहता ही नहीं, वह तो ज्ञानियोंके लिए है; जिनका भगवान्से सम्बन्ध हो गया, उनके लिए प्रारब्ध नहीं रहता।
– उड़िया बाबा

प्रारब्धकी गति देह-पर्यन्त है। मनसे भगवान्‌को भजनेमें वह बाधक नहीं है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अपना प्रारब्ध भोगते वक़्त हमें ऐसी खुशी होनी चाहिए जैसी क़र्ज़ा चुकाते वक़्त होती है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

पहले प्रारब्धवश दो आदमी मिलते हैं, और फिर प्रारब्धवश ही दोनों बिछुड़ जाते हैं। जो इसे समझ लेता है उसे फिर कोई दुःख नहीं सता सकता। — बुद्ध

अहंकारका नाश और प्रारब्धका नाश एक साथ होता है। —श्री ब्रह्मचैतन्य

छोटा बच्चा प्रारब्धका भोग भोगते हुए अपनी नाकपर बैठी हुई मक्खी उड़ाता है, उसी तरह देहको प्रारब्धपर डालकर भी प्रयत्न जरूर करते रहना चाहिए। — श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रार्थना

हे प्रभो, आप हमारी बुद्धिको शुद्ध करें, हमारी वाणीको मधुर करें। — यजुर्वेद

प्रार्थना यह हो कि प्रारब्धके सुख-दुःख भोगते हुए हर्ष-विषादसे समाधान न टूटे। — सद्‌गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रार्थना सुबहकी चाभी हो और शामकी चटख़नी। — मैथ्यू हैनरी

अत्याचार-पीड़ितकी प्रार्थनासे बचो, क्योंकि उसमें और भगवान्‌में कोई परदा नहीं है। — मुहम्मद

साईं इतना दीजिए जिसमें कुटुम्ब समाये, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु भूखा न जाय। — कबीर

उनकी प्रार्थना कभी रायगाँ नहीं गयी जिन्होंने प्रभुसे ठीक तरह माँगा। — बर्न्स

हम जिसकी पूजा करते हैं उसके समान हो जाते हैं। प्रार्थनाका इससे ज्यादा कुछ मतलब नहीं। — गान्धी

प्रार्थनाकी खूबी यह है कि वह तमाम प्रलोभनोंपर विजय दिलाती है।
— बर्नार्ड

प्रार्थनामें भावशून्य शब्दोंकी अपेक्षा शब्दशून्य भाव अच्छा। — बनियन

प्रार्थना विश्वात्मामें जीनेकी कोशिश है। — कॉलेरिज

मेरा सबसे बड़ा शस्त्र है मूक प्रार्थना — गान्धी

प्रार्थनाके बिना अन्दरूनी शान्ति नहीं मिलती। — गान्धी

प्रार्थनासे दिलको चैन और ज्ञानतन्तुओंको आराम मिलता है। — स्टीवर्ट

जो चीज़ें चाहोगे मिल जायेंगी, अगर प्रार्थना करते समय विश्वास करो कि वे तुम्हें मिल रही हैं। — बाइबिल

प्रार्थना उस हाथको चलाती है जो विश्वका संचालन करता है।
— जॉन एकमन वालेस

पवित्र हृदयसे निकली हुई प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती। — गान्धी

मेरा धर्म सिखाता है कि जब कभी ऐसी विपत्ति आ जाये जिसका निवारण न किया जा सके तो उपवास और प्रार्थना करनी चाहिए। — गान्धी

दीर्घकाल तक प्रार्थनापूर्ण शिस्तमें रहकर मैंने घृणा करना छोड़ दिया है।
— गान्धी

माँगो, तुम्हें दिया जायेगा; खोजो, तुम पाओगे; खटखटाओ, तुम्हारे लिए दरवाज़ा खुलेगा। — बाइबिल

शैतान काँपने लगता है जब कि वह कमसे कम कमज़ोर साधुको भी प्रार्थनामें झुका हुआ देखता है। — अज्ञात

प्रार्थना वह पंख है जिससे आत्मा स्वर्गकी ओर उड़ती है, और आराधना वह आँख है जिससे हम प्रभुको देखते हैं। — ऐम्ब्रोज

सबसे अच्छी प्रार्थना उसकी है जो अच्छी तरह जीता है। — कहावत

प्रार्थना विश्वासकी आवाज़ है। — होर्न

एक ही प्रार्थनासे प्रभुका आसन डोल उठता है। — जापानी कहावत

हक़को अपनी नमाज़ बना, ईमानको अपना जानमाज़। — अरजान

इस तरह प्रार्थना कर मानो कोई पुरुषार्थ काम न आयेगा, और इस तरह पुरुषार्थ कर मानो कोई प्रार्थना काम न आयेगी। — जर्मन कहावत

सच्चे प्रार्थीको माँगी हुई चीज़ मिलती है, या उससे बहतर कोई चीज़। —ट्रायन ऐडवर्ड्स

ईश्वर कभी बहरा नहीं होता, सिवाय जब कि आदमीका दिल ही गूँगा हो। — क्वार्ल्स

प्रार्थना हमें परमात्मासे मिला देती है। — विलियम लॉ

भावशून्य प्रार्थना प्रार्थना नहीं है। — मोज़ेज़ मैमोमाइड्स

प्रार्थनामें जो माँगोगे, मिलेगा, अगर विश्वास हो। — बाइबिल

नेकचलनी सबसे अच्छी प्रार्थना है। — सर्बियन कहावत

जो रातको प्रार्थना करता है उसकी शक़्ल दिनमें नूरानी रहती है। — मुसलमानी कहावत

ईश्वरको जो पत्र लिखा जाता है उसका उत्तर न मिले, यह सम्भव ही नहीं। उस पत्रका नाम पत्र नहीं, प्रार्थना है। उत्तर प्रार्थनामें ही सदा रहा है, भगवान्‌की ऐसी प्रतिज्ञा है। — गान्धी

हम जिसकी आराधना करते हैं वैसे हो जाते हैं। प्रार्थनाका अर्थ इससे ज्यादा नहीं है। — गान्धी

यदि हमें प्रार्थनाका उत्तर न मिले तो समझ लो कि भगवान्‌से माँगनेके तरीक़ेमें कहीं-न-कहीं भूल हो रही है। असफलता भगवान्‌में नहीं हममें है। — सन्त चार्ल्स फ़िलमोर

प्रार्थना यही शोभा दे सकती है : "ईश्वरको जो ठीक लगे सो करे।" — गान्धी

प्रार्थना या स्तवन बोलते समय उसके अर्थ और भावके साथ हमारा चित्त धीरे-धीरे समरस होना चाहिए। — नाथजी

प्रिय

हे प्रभो, मुझे सबका प्रिय बनाओ। — अथर्ववेद

प्रीतम

मैं अपने प्रीतमके रूपकी एक झलक दूसरोंको दिखा देता। लेकिन डर यह है कि एक झलक ही से दोनों जहान दरहम-बरहम हो जायेंगे और वह शोरोशर उठेगा जिसका कोई अन्त न होगा। — फ़ारसी

ऐ मेरे प्रीतम (परमात्मा), आजकी रात आ ताकि चमनमें चलकर हम प्रेमके पैमानेको लबालब भर सकें; तू शमा और गुलको जला डाल और मैं बुलबुल और परवानेको शर्मा दूँ। — फ़ारसी

प्रीति

अविवेकीको जैसी विषयोंमें अटल प्रीति होती है वैसी ही प्रीति आपके स्मरणकी मेरे हृदयमें बनी रहे। — पंचदशी

कच्ची प्रीति न कर, उससे दिन-दिन व्याधि बढ़ती है। — कबीर

प्रेम

प्रेम, प्रेमी और प्रेमपात्र तीन होकर भी एक हैं। — संस्कृत-सूक्ति

दैवी सौन्दर्यके लिए आदमीकी भूखको प्रेम कहते हैं। — सुक़रात

प्रेम और सत्य एक ही सिक्केके दो पहलू हैं। — गान्धी

आत्माका लाभ अधिक विचारमें नहीं, अधिक प्रेममें है। — सन्त तेरेसा

सच्चा प्रेम वह है जो आनन्दरूप कर दे। — श्री ब्रह्मचैतन्य

पढ़-पढ़के पत्थर हो गये, लिख-लिखके ईंट हो गये। अन्तर-प्रेमकी एक छींट भी न लगी! — कबीर

रोगी आदमीको प्रेमका एक शब्द सौ डॉक्टरोंसे बढ़कर है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

क्या घरमें और क्या बाहर, प्रेमकी धाक होनी चाहिए न कि भयकी ।
– श्री ब्रह्मचैतन्य

प्रेम मानवताका दूसरा नाम है । – भगवान् बुद्ध

एक ही सबक़ सीखनेकी ज़रूरत है; वह है प्रेमका सबक़ ।
– स्वामी रामतीर्थ

हे प्रभो, मैं दुनियाकी सब चीज़ोंको प्रेमकी दृष्टिसे देखूँ । – वेद

प्रेम स्वर्गका रास्ता है । – टालस्टाय

प्रेमकी ज़बान आँखोंमें है । – फ़्लैचर

ज्ञानके ठण्डे प्रकाशमें प्रेमकी बूटी कभी नहीं उग सकती । – काण्ट

दूसरोंसे प्रेम करना अपने-आपसे प्रेम करना है । – एमर्सन

दण्ड देनेका अधिकार सिर्फ़ उसे है जो प्रेम करता है । – रवीन्द्रनाथ टैगोर

परीक्षाके लिए समाज चाहिए । अकेले रहते हो तो प्रेमका क्या करना है ! प्रेम धर्म तब प्राप्त होगा जब हम समाजमें रहेंगे । मानवके जितने धर्म हैं सब समुदायमें ही हैं । – विनोबा

प्रेम दुनियाकी रोशनी है । – ईसा मसीह

परमेश्वर प्रेम है । – ब्राउनिंग

प्रेम महलोंमें नहीं, झोपड़ियोंमें बसता है । – गेटे

प्रेम पापियोंको भी तार देता है । – कबीर

"प्रेमगली अति साँकरी तामें दो न समायँ" – अज्ञात

मेरा देश मुझे अपने परिवारसे ज्यादा प्यारा है; लेकिन मानव जाति मुझे अपने देशसे भी ज्यादा प्यारी है । – फ़ेनेलन

प्रेमकी शक्ति दण्डकी शक्तिसे हज़ार गुनी प्रभावशाली और स्थायी होती है । – गान्धी

घृणा राक्षसोंकी सम्पत्ति है; क्षमा मनुष्योंका लक्षण है; प्रेम देवताओंका गुण है । – भर्तृहरि

प्रेम देनेपर ही प्रेम मिलता है। – अप्पा साहब पटवर्धन

आदमी जैसे अपनी गृहस्थीका काम मोहपूर्ण आस्थासे करता है वैसे समस्त समाजका काम उसे प्रेमपूर्ण आस्थासे करना चाहिए। – विनोबा

वह सच्चा प्रेम नहीं है जिसमें त्याग और सेवा नहीं है।

– स्वामी रामदास

जब मनुष्य प्रेममय हो जाता है तो ईश्वरकी प्रतिकृति बन जाता है।

– स्वामी रामदास

जब मैंने प्रेमको अपनाया तो मेरा जीवन शुद्ध और पवित्र बन गया।

– स्वामी रामदास

प्रेम ही मार्ग है और प्रेम ही अन्तिम मंज़िल। – स्वामी रामदास

"जिसपर मैं प्रेम करता हूँ उसका सर्वस्व हरण कर लेता हूँ।"

– भगवान् श्रीकृष्ण

प्रेमके सिवाय सब बकवास है। – अब्बास अफ़न्दी

प्रेम सर्वविजयी है। – जैन सूत्र

ख़ूब किया मैंने दुनियासे प्रेम, और दुनियाने मुझसे, तभी तो मेरी तमाम मुसकानें उसके होठोंपर थीं, और उसके तमाम आँसू मेरी आँखोंमें थे।

– ख़लील जिब्रान

प्रेमका एक ही काम है – बुराईको भलाईसे जीतना। – विलियम लॉ

हर बुराईका इलाज प्रेम ही है, और प्रेम ही हो सकता है।

– विलियम लॉ

परमात्मामें वही है जो प्रेममें है। – विलियम लॉ

ईश्वरसे प्रेम करनेवालोंके लिए हर चीज़में अच्छाई आ जाती है।

– फ़ेनेलन

प्रेम है अद्‌भुत आनन्द और इत्मीनानसे लबरेज़ ईश्वर-प्राप्तिकी ज्वलन्त लगन। – रिचार्ड रोल

तमाम सद्‌गुणोंकी शोभा है प्रेमसे । – रिचार्ड रोल

प्रेमका सार है पूर्ण आत्मविसर्जन । पूर्ण पारस्परिकता भी प्रेमका सार है । – एडमण्ड होम्स

जहाँ सच्ची एकताकी भावना है वहाँ प्रेमके बाहरी प्रदर्शनकी जरूरत नहीं । – स्वामी रामतीर्थ

घृणा केवल प्रेमसे ही जीती जा सकती है । – गान्धी

सच्चा प्रेमी स्वयंको मिटाता जाता है, प्रतिफल कभी नहीं चाहता । – गान्धी

जब कभी विरोधीसे तुम्हारा सामना हो, उसे प्रेमसे जीतो । – गान्धी

प्रेमके सामने नीरो भी मेमना बन जाता है । – गान्धी

प्रेमी डरकर कोई काम नहीं करता । – गान्धी

प्रेम वासना हो जाती है ज्यों ही कि तुम उसे अपनी पाशविक पूर्तिका साधन बना लेते हो । – गान्धी

प्रेमीका गुस्सा क्षणिक होता है । – इटालियन कहावत

प्रेम तमाम असमानताओंको हमवार कर देता है । – इटालियन कहावत

मनुष्यकी दुर्बलताएँ ही उसे प्रियंकर बनाती हैं । – गेटे

प्रेम हमेशा समान-शीलोंमें ही स्थायी रहता है । – लैसिंग

प्रेम ऐसा मज़ा है जो कि व्याकुल कर डालता है, मगर वह व्याकुलता मज़ेदार है । – स्क्राइब

बिना प्रेमकी ज़िन्दगी मौत है । – महात्मा गान्धी

दर्शन, स्पर्शन, श्रवण, अथवा भाषणसे हृदयका द्रवित हो जाना ही प्रेम कहलाता है । – संस्कृत-सूक्ति

प्रेम कभी दावा नहीं करता, हमेशा देता है । प्रेम हमेशा सहन करता है, कभी बुरा नहीं मानता, कभी प्रतिफल नहीं लेता । – गान्धी

शरीरका निकृष्ट प्रेम जवानीके विकासके बाद उड़ जाता है । परन्तु आत्माका उत्कृष्ट प्रेम शाश्वत है । – पॉसेनियस

प्रेम शरीर चाहता है, मित्रता आत्मा। — स्पेनी कहावत

स्वाभाविक प्रेम दूर होनेपर भी सुशोभित होता है। चन्द्रमा कितनी दूरसे चकोरके नेत्रोंको आह्लादित करता है! — संस्कृत-सूक्ति

कहाँ चन्द्रमा है कहाँ समुद्र! कहाँ सूर्य है कहाँ कमल! कहाँ बादल है कहाँ मोर! कहाँ भौंरे हैं कहाँ मालती! कहाँ हंस हैं कहाँ मानसरोवर! जो जिसको चाहता है, वह उसके पास रहे या दूर, प्रियतम ही है। — संस्कृत-सूक्ति

जी भरकर प्रेम करना जी भरकर जीना है, और हमेशा प्रेम करना हमेशा ज़िन्दा रहना है। — अज्ञात

प्रेममें दानकी अनन्त अभिलाषा रहती है, और वह सदा उपहारकी भाषामें बोलता है। — डॉक्टर अ० मैक्लीन

प्रेम स्वर्ग है, और स्वर्ग प्रेम। — वाल्टर स्कॉट

सुन्दरतम कार्य, जो कि आदमी कर सकता है, यह है कि वह प्रेम करे और मौन रहे। — अज्ञात

मेरा लक्ष्य है विश्वप्रेम, मगर मेरे आत्यन्तिक प्रेमके साथ मिथ्यात्वका आत्यन्तिक विरोध रह सकता है। — गान्धी

प्रेमके स्पर्शसे हर शख्स कवि बन जाता है। — अफ़लातून

प्रेम करो और फिर जो चाहो सो करो। — सन्त आगस्ताइन

बहुत-से दोस्त धोखेबाज़ होते हैं, बहुत-से प्रेमी बेवक़ूफ़। — शेक्सपीयर

नैतिकताके लिए प्रेम वही है जो ज़मीनके लिए सूरज। — बालज़क

प्रेम संसारकी सूक्ष्मतम शक्ति है। — महात्मा गान्धी

प्रेम ही प्रेमका पुरस्कार है। — शिलर

प्रेमियोंके झगड़े प्रेमको दिन-दूना करते हैं। — पुर्तगाली कहावत

प्रेममें भय नहीं; प्रेम भयको निकाल देता है। — बाइबिल

मैं प्रेमके सहारे जीता हूँ। — स्वामी रामतीर्थ

जहाँ अधिक प्रेम है, वहाँ अधिक दुःख है। — इटालियन कहावत

तू जिससे प्रेम करेगा वैसा ही लाज़िमी तौरपर हो जायेगा; अगर ईश्वरसे प्रेम करेगा तो ईश्वर; अगर धूलसे प्रेम करेगा तो धूल। — फ़िलिप ब्रुक्स

स्नेहको हदसे ज़्यादा तेज़ नज़र नहीं होना चाहिए, प्रेमका निर्माण ख़ुर्द-बीनोंसे नहीं होता। — सर थॉमस ब्राउन

सूरज नेक और बद दोनोंको रोशनी देता है, बारिश न्यायी और अन्यायी दोनोंपर बरसती है। — बाइबिल

प्रेम ईश्वरका सार है। — रिचार्ड गार्नेट

आदमी अपना या दुनियाका ग़ुलाम नहीं, प्रेमी है। — टागोर

प्रेम साधारण कुटियाको सोनेका महल बना देता है। — होल्टी

द्वेष अन्याय है, परन्तु राग और भी अधिक अन्याय है। — गेटे

प्रेम और धुआँ छिपाये नहीं छिपते। — फ़्रान्सीसी कहावत

सर्वोच्च प्रेममें तक़ल्लुफ़ नहीं होता। — जॉर्ज ईलियट

प्रेममें नेम नहीं होता। — पुर्तगाली कहावत

हर चीज़का आरम्भ, मध्य और अन्त प्रेम है। — लैकौरडेर

जहाँ समानता नहीं है वहाँ पूर्ण प्रेम नहीं होता। — इटालियन कहावत

दाम्पत्य प्रेम मानव-जातिका सृजन करता है, मित्रतापूर्ण प्रेम उसे पूर्ण बनाता है। — फ़्रान्सिस बेकन

प्रेम जीवनकी मधुरतम वस्तु है। — यूनानी कहावत

आदमी सिर्फ़ एक बार प्रेम करता है। — जर्मन कहावत

प्रेम कभी हक़ नहीं माँगता, वह तो हमेशा देता है। — महात्मा गान्धी

ईश्वर प्रेम है; जो प्रेममें रहता है वह प्रभुमें रहता है, और प्रभु उसमें। — बाइबिल

प्रेमका क्रोध प्रेमाग्निमें ईंधनका काम करता है। — जर्मन कहावत

केवल प्रेमको ही नियम भंग करनेका अधिकार है। — स्वामी रामतीर्थ

प्रभुके प्रेम-पात्र बनो; संसारके प्रेम-पात्र बनना तो अधोगतिमें जा गिरना है। — तपस्वी हारेस महासवी

प्रेम ही एकमात्र दैवी विधान है। और सब विधान केवल सुव्यवस्थित लूटमार है। — स्वामी रामतीर्थ

जो हमें प्रिय हो उसे धर्म-मार्गपर लगा देना चाहिए। — अज्ञात

प्रेम ईश्वरीय सौन्दर्यकी भूख है। — सुक़रात

मैं तुम्हें एक नया आदेश देता हूँ कि तुम एक-दूसरेसे प्रेम करो। — ईसा

ईश्वरमें प्रेम होनेसे विषय-प्रेम दूर हो जाता है। — श्री उड़िया बाबा

शरीरके चमड़ेसे प्यार हमें मोची बना देता है। — स्वामी रामतीर्थ

इष्टदेवके अनन्त नाम और अनन्त रूप हैं, लेकिन हमको एक नाममें, एक रूपमें अनन्त प्रेम होना चाहिए। — श्री उड़िया बाबा

भगवन्! लोग मुझे प्यार करें, इससे पहले मैं ही उन्हें प्यार करूँ।
— सन्त फ़ान्सिस

प्रेम वह सुनहरी कुंजी है, जो दिलोंको खोल देती है। — ईसा

अगर तेरे होठ उस साग़रे-ग़मसे एक चुस्की ले लें, तो तू ख़ुशियोंके जामे-जमशेदको भी तोड़कर फेंक दे। — सूफ़ी

प्रेम एक ऐसी जड़ी है जो कट्टर दुश्मनको भी दोस्त बना देती है। यह बूटी अहिंसासे प्रकट होती है। — गान्धी

अल्लाह जिस रूहको प्यार करता है उसे अपनी तरफ़ खींचता है।
— क़ुरान

जीवका स्वभाव प्रेम करना है। ज्ञानीका प्रेम वैराग्यमें होता है, कामीका प्रेम संसारमें होता है, और भक्तका प्रेम भगवान्में होता है।
— श्री उड़िया बाबा

प्रेम परमार्थ है, काम स्वार्थ है। जहाँ स्वार्थ है वहाँ काम है। जब स्वार्थ नहीं रहता तभी प्रेम होता है। – श्री उड़ियाबाबा

सदा सबसे प्रेम करो तो तुम्हें सब ओरसे प्रेम-ही-प्रेम मिलेगा; और अगर घृणा करो तो हर तरफ़से घृणा-ही-घृणा मिलेगी।

– श्री राल्फ़ वाल्डो ट्राइन

लोगोंका प्रेम तुम अपने सद्गुणों-द्वारा ही पा सकते हो।

– अरण्डेल

जहाँ प्रेम है वहाँ नियम नहीं, जहाँ नियम है वहाँ प्रेम नहीं।

– सन्त श्री शाहंशाह

प्रेमगलीमें पैर रखा है और सिरका बचाव करता है! आधे चित्तका प्रेम तुझे अधबीच डुबायेगा। – सन्त श्री शाहंशाह

प्रेमसे द्वेष नष्ट हो जाता है। – गान्धी

विशुद्ध प्रेम हृदयमें वासना नहीं उत्पन्न करता, हृदयको वासनाशून्य करता है। – अज्ञात

प्रेम सर्वशक्तिमान् है। – विवेकानन्द

सुन्दरता प्रेमको पैदा करती है, मगर वह क़ायम रहता है स्वच्छतासे।

– ऐडीसन

प्रेम दयाके कार्योंमें दिखाई देता है और मृदुल ध्वनियोंमें सुनाई देता है।

– अज्ञात

पूर्ण प्रेम आदर्श आनन्द है। – नैपोलियन

प्रेमी

प्रेमी होना और ज्ञानी होना दो अलग-अलग वस्तुएँ हैं।

– फ़ान्सीसी, स्पेनी और पुर्तगाली कहावत

फ

फ़क़ीर

जो पेट भरने लायक़ अन्न ले, तन ढकने-भरको कपड़ा; और अधिकका संग्रह न करे, उसे फ़क़ीर कहते हैं। — कबीर

फ़क़ीर वह है जिसे आज या कल किसी दिनकी परवा नहीं। जो अपने और प्रभुके सम्बन्धके आगे लोक और परलोक दोनोंको तुच्छ समझता है। — अज्ञात

फ़क़ीरी

"बाबा ! मौज फ़क़ीरां दी" — स्वामी रामतीर्थ

अकसर तेरा फ़र्ज़ वह करना भी होता है जिसे तू करना नहीं चाहता; और यह भी तेरा फ़र्ज होता है कि उसे बे-किया छोड़ दे जिसे तू करना चाहता है। — थॉमस ए कैम्पिस

फ़र्ज़-अदायगीमें देर करना क़र्ज़-अदायगीमें देर करनेके समान कष्टकर है। — ऐच० मोर

फल

अति तीव्र पुण्य-पापका फल यहीं मिल जाता है। — अज्ञात

लक्ष्मी सत्यानुसारिणी है; कीर्ति त्याग-अनुसारिणी है; विद्या अभ्यास-अनुसारिणी है; बुद्धि कर्मानुसारिणी है। — संस्कृत सूक्ति

जैसा फल चाहिए वैसा कर्म करो। — अज्ञात

जिसको फल खानेकी इच्छा हो, उसको अवतारी भगवान्का ही भजन करना चाहिए। — श्री उड़िया बाबा

जो फलके हेतुसे कर्म करें वे कृपण हैं। — गीता

फलाशा

जो अपने अच्छे कर्मोंके बदलेमें धन्यवाद, वाहवाही या किसी फलकी चाह रखता है वह बहुत ही अभागा है, क्योंकि वह बहुमूल्य सत्कर्मोंको थोड़ी क़ीमतपर बेच डालता है। — सन्त वाणी

फ़ैशन

आदमी इतने कपड़े नहीं फाड़ता जितने फ़ैशन फाड़ती है। – शेक्सपीयर

फ़ैसला

इकतरफ़ा बात गुड़से ज्यादा मीठी लगती है। – हिन्दुस्तानी कहावत

शक्ल देखकर फ़ैसला न दो। – बाइबिल

ब

बड़प्पन

बड़ा आदमी वही है जो गुस्सेकी हालतमें भी औल-फ़ौल नहीं बकता।
– सादी

बड़ा

भगवान्के दरबारमें बड़ा न जाने पायगा। दरवाज़ेसे ही मोटी मार पड़नी शुरू हो जायगी। – सहजो बाई

बदला

बदलेकी सीमाका उल्लंघन न कर जाओ वर्ना स्वयं पापके भागी हो जाओगे। – सादी

बदला जीवनसे भी मधुरतर है, ऐसा मूर्ख समझते हैं। – जुवेनल

बदलेकी रकाबी ठण्डी करके खानी चाहिए। – अँगरेज़ी कहावत

बदला एक अमानुषी शब्द है। – सेनेका

सबसे अच्छा बदला यह है कि क्षति पहुँचानेवालेके समान न बना जाय।
– ऐण्टोनियस

जो बदलेका ध्यान करता है वह अपने ही ज़ख्मोंको हरा रखता है।
– बेकन

ईश्वरके प्रतिशोधक प्रहारसे कोई नहीं बच सकता। — सोफ़ोकिल्स

सबसे उत्तम प्रतिशोध क्षमा है। — अज्ञात

अगर कोई कुत्ता तुम्हें काटे तो तुम कुत्तेको काटोगे क्या ?
— हिन्दुस्तानी कहावत

पाप करनेवालेके प्रति बदलेमें स्वयं पाप न करे। सदा साधु स्वभावसे ही रहे। जो किसीके प्रति पाप करना चाहता है वह स्वयं ही नष्ट हो जाता है। — महाभारत

बन्धन

कर्मोंका बन्धन काटनेके लिए शास्त्रोंका बन्धन अपनाना चाहिए।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

अगर जीते जी तुम्हारे बन्धन न टूटे, तो मरनेपर मुक्तिकी क्या आशा की जा सकती है ? — कबीर

बहुत-से हार ऐसे होते हैं कि गलेके फन्दे बन जाते हैं। — ऐल्ड्रिज

मनके बन्धनोंमें फँसे प्राणी चिरकाल तक दुःख पाते हैं। — धम्मपद

जबतक कोई अपनेको बन्धनमें माने तभीतक बन्धन और मुक्तिके विचार टिकते हैं, आत्मविचार करनेपर बन्धन नहीं ठहरते, क्योंकि वह नित्यमुक्त, नित्यसिद्ध बन जाता है। — रमण महर्षि

देख ! तुझे कोई बन्धनमें न डाल सके। — अथर्ववेद

बर्ताव

जिसे तुम अपने लिए नापसन्द करते हो मेरे लिए पसन्द न करो।
— स्पेनिश कहावत

बल

दुष्टोंका बल है हिंसा, राजाओंका बल है दण्ड, स्त्रियोंका बल है सेवा और गुणवानोंका बल है क्षमा। — सन्त विदुर

दुर्बल आदमी अपने आधारोंको बढ़ानेसे सबल नहीं हो जाता। – नाथजी

बहादुरी

जिस्मानी बहादुरी एक पाशविक वृत्ति है; नैतिक बहादुरी एक अधिक ऊँची और सच्ची हिम्मत है। – वैण्डैल फ़िलिप्स

बहुमत

यह मानना कि अल्पमत बहुमतका पाबन्द है एक वहम और शैतानी चीज़ है। – गान्धी

वेदका मर्म जाननेवाला एक द्विजश्रेष्ठ जिसका निर्णय कर दे वह परम धर्म है; परन्तु दस हज़ार भी मूर्ख जिसका निर्णय करें वह धर्म नहीं है। – मनु

सिर्फ़ बहुमतसे कोई चीज़ सत्य नहीं हो जाती। – शिलर

बातचीत

मनुष्यके चारित्रका पता उसकी बातचीतसे चल जाता है। – मीनेण्डर

आदमी जितना कम सोचते हैं, उतना ही ज्यादा बोलते हैं। – मौण्टेस्क

बहस करना बहुतोंको आता है, बातचीत करना थोड़ोंको। – आलकॉट

बालक

बच्चेको ज़रा प्यार दो, तो बहुत-सा लौटकर आता है। – रस्किन

बुज़ुर्ग

बुज़ुर्गोंका अपराध करके कौन-सा प्राणी सुखी होगा? – भगवान् श्रीकृष्ण

बुढ़ापा

जीनेके लिए कोई इतने लालायित नहीं होते जितने कि बुढ़ापेकी तरफ़ जाते हुए लोग। — सोफ़ोक्लिस

सफ़ेद बाल उम्रके परिचायक हैं, सद्ज्ञानके नहीं। — ग्रीक कहावत

बुद्धि

पुराण सुननेके बाद, श्मशानसे लौटनेके बाद और मैथुनके बाद जो बुद्धि होती है वह यदि सदा बनी रहे तो कौन मुक्त न हो जाय! — संस्कृत-सूक्ति

एक-मंज़िली बुद्धिवाले घटनाओंका संग्रहालय होते हैं। दो-मंज़िली बुद्धिवाले तुलना करते हैं, तर्क करते हैं, सामान्य सिद्धान्तोंकी शोध करते हैं। तीन-मंज़िलीवाले आदर्शवादी होते हैं, कल्पनाशील होते हैं, भविष्यद्रष्टा होते हैं; उन्हें दिव्य प्रकाश प्राप्त होता रहता है। — ऑलिवर वैण्डल होम्स

बुद्धि ज्ञानसे शुद्ध होती है। — वशिष्ठ-स्मृति

सुबुद्धिका सिवाय एक ईश्वरके और कोई साध्य विषय नहीं है। — ज्ञानेश्वरी

अपनी बुद्धिको सद्बुद्धि बनाये रहो। यह शुद्ध बुद्धि ही तुम्हारी कामधेनु है। — अज्ञात

उत्तम व्रतका आचरण करनेवाले पुरुषको पाप नहीं करना चाहिए; क्योंकि बार-बारका किया हुआ पाप बुद्धिको नष्ट कर देता है। — सन्त विदुर

बुद्धि उसे कहते हैं जो इशारेसे ही बातको समझ जाये। — अज्ञात

बुद्धिमान्

वह शख़्स सचमुच बुद्धिमान् है जो ग़ुस्सेकी हालतमें भी बेजा बात मुँहसे नहीं निकालता। — सादी

बुराई

दो बुराइयोंमें-से छोटी बुराई पसन्द करो। – युरोपियन कहावत

बुराई ख़ुदको ही बरबाद करती है। – डेनिश कहावत

बड़ी बुराईमें-से बड़ी भलाई निकलती है। – इटालियन कहावत

बुरा करनेवालेका बुरा होता है। – पुर्तगाली कहावत

बुरी आँख अच्छा नहीं देख सकती। – डेनिश कहावत

बुराई अकसर हावी आ जाती है, लेकिन विजय नहीं प्राप्त करती।
– जोसैफ़ रौस

कीचड़ न फेंको, हो सकता है कि तुम निशान चूक जाओ; मगर हाथ तो सन हो जायेंगे। – जोसफ़ पार्कर

अपनेमें और समस्त प्राणियोंमें भगवान्‌को वर्तमान समझकर मैं न तो किसीका बुरा चाहता हूँ, न बुरा कहता हूँ, न बुरा करता हूँ। इस प्रकार सर्वत्र शुभचित्त होनेसे मुझको शारीरिक, मानसिक, दैविक या भौतिक दुःख कैसे मिल सकते हैं? – महर्षि पराशर

अपनी बुराई दूर कर दी, तो फिर अच्छाई-ही-अच्छाई पास आती है।
– उपासनी

उलटी मार खाये बग़ैर किसीकी बुराई नहीं की जा सकती। जब कभी हम दूसरेको क्षति पहुँचाते हैं तो स्वयंको क्षति पहुँचाते हैं। – मरसियर

तू किसीके साथ बुराई न कर, नहीं तो तू अपने नेक दोस्तसे भी बुराई पावेगा। – सादी

जो मनुष्य मन, वचन या कर्मसे दूसरोंको कष्ट देता है उसके उस परपीड़ा रूप बीजसे ही उसके लिए बुराई पैदा होती है। – महर्षि पराशर

अगर तुमसे किसीको क्षति पहुँची हो तो इससे कममें सन्तोष न मानो कि उसकी क्षतिपूर्ति अविलम्ब कर दी जाय। – रिच

जो आदमी अपनी तरह दूसरेका भी बुरा नहीं सोचता, तो फिर कोई कारण न रहनेसे उसका भी बुरा नहीं होता। – महर्षि पराशर

बेवक़ूफ़

कीमियागर मुसीबत और दुःखमें मरा और बेवक़ूफ़ खण्डहरमें खज़ाना पा लिया। – सादी

बोध

जो आत्मसत्तासे भिन्न किसीकी भी सत्ता देखता है तो वस्तुतः वह बोधवान् ही नहीं है। – श्री उड़ियाबाबा

यद्यपि ज्ञानीके लिए शास्त्रका कोई शासन नहीं है, तथापि यह तो नियम ही है कि बोधकी प्राप्ति अन्तःकरणकी शुद्धि होनेपर ही होती है।
– श्री उड़ियाबाबा

ब्रह्म

वह ब्रह्म समग्र ब्रह्माण्डको चला रहा है, स्वयं चलायमान नहीं होता। वह मूर्ख दुराचारियोंसे दूर है, ज्ञानी सदाचारियोंके पास है। – यजुर्वेद

वह तीनों लोकोंकी उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयका खेल खेलता रहता है। वह पूर्ण है, श्रेष्ठ है, मंगलमय है, अवकाश-रहित है, निर्विकार है, प्रकाश-रूप है, अनादि है, त्रिगुणातीत है, प्रकृतिसे परे है, वह रागद्वेष रूपी विष तथा दुःख और मोहसे शून्य है, वह प्राणियोंपर निरन्तर कृपा करता रहता है, वह सब गुणोंसे अलंकृत है, वह प्रेमसे स्मरण करने मात्रसे हृदयको आनन्दित करता है, वह शान्त, शुद्ध, पुरातन एवं त्रिलोकका आश्रय है।
– संस्कृत-सूक्ति

सब एक-ही-एक ब्रह्म-तत्त्व है। वही हम सबकी निज वस्तु है।– ज्ञानेश्वर

ब्रह्म भरपूर भरा हुआ है, कहीं कम-ज्यादा नहीं है। जो जानते हैं उनके पास है, जो नहीं जानते उनसे दूर। – कबीर

ब्रह्म-दर्शन दिव्यदृष्टिसे होता है, चर्मचक्षुओंसे नहीं। – समर्थ गुरु रामदास

जो शाश्वत है सो ब्रह्म है, जो क्षणिक है सो माया। – अज्ञात

ज्ञानका अभिमान रखनेवालोंको ब्रह्म-ज्ञान नहीं होता। – केनोपनिषद्

पर ब्रह्म सत्य, सर्वश्रेष्ठ, अविनाशी और असीम है। – ज्ञानेश्वरी

यह जो जगत् है सो ब्रह्म ही है! – मुण्डकोपनिषद्

शुद्ध सच्चिदानन्द परब्रह्म ही चराचर वस्तु रूप बन गया है। – उपासनी

कोई सगुणकी उपासना करते हैं, कोई निर्गुणकी : लेकिन ज्ञानी जानता है कि ब्रह्म दोनोंसे परे हैं। – सन्त कबीर

जो हृदयस्थ ब्रह्मको जानता है वह ब्रह्मज्ञानके साथ समस्त लोगोंका भी अनुभव करता है। – तैत्तिरीयोपनिषद्

मेरे श्रेष्ठ, सूक्ष्म, सत्, चिन्मय, अनन्त, ब्रह्मस्वरूपको प्रसन्न करना अतिशय कठिन है, इसलिए लोग मुझे छोड़कर अन्य देवताओंका भजन करने लगते हैं। – भगवान् श्रीकृष्ण

कोटि ग्रन्थोंमें जो कहा गया है उसे आधे श्लोकमें कहता हूँ : ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या है; जीव ब्रह्म ही है अन्य नहीं। – प्रास्ताविक

सर्व जगत् आत्मा ही है, देहादिकी कल्पना कहाँसे हो? ब्रह्म ही आनन्द रूप है। जो कुछ दिखलाई देता है वह चित् है। – योगवाशिष्ठ

यह सब अमर ब्रह्म है; पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन, सब ब्रह्म है; ऊपर नीचे सब जगह ब्रह्म है; यह विशाल विश्व ब्रह्म है। – मुण्डकोपनिषद्

यह सब ब्रह्म है, यह आत्मा ब्रह्म है। – माण्डूक्योपनिषद्

जिसके आनन्दलेशसे विश्व समानन्दी है, जिसके सत्त्वाभासमें सबका भास है, जिसके आलोचनके बाद अन्य समस्त होता है, वही नित्य परब्रह्म मैं हूँ। — विज्ञान-नौका

अत्यन्त कामीको वृत्ति भी माँके आगे कुण्ठित हो जाती है। उसी प्रकार बुद्धिमानोंकी बुद्धि भी ज्ञान और पूर्णानन्द स्वरूप ब्रह्मके आगे रुक जाती है। — विवेक-चूड़ामणि

शब्द ब्रह्मनिष्णात पण्डितने अगर ब्रह्म-साक्षात्कार नहीं कर डाला तो उसका सब श्रम ठल्लर गायको पालनेकी तरह व्यर्थ है। — भागवत

निर्गुण ब्रह्म भेदका निषेध करता है, और सगुण ब्रह्म भेदका अभेद करता है। — अज्ञात

ब्रह्म सदा एक-सा रहता है। वह किसी भी नियममें बँधा हुआ नहीं है। वह ज्योतिस्वरूप है, वह चिन्मय है, वह कृत-कृत्य है। वह सत्यस्वरूप और ज्ञानस्वरूप है, वह सब रूपोंमें अपनेको ढाल सकता है, वह अकेला इस संसारका स्वामी है, वह संसारकी समस्त क्षणिक वस्तुओंका अमर तत्त्व है। वह सब वस्तुओंमें चेतना और स्फूर्ति भरता है, वह सच्चे आनन्दका एकमात्र कारण है, वह परम शुद्ध है, वह इस सारे चराचर जगत्को बनाता और बढ़ाता है, वह तीनों लोकोंको विकसित करता है, उसके अगणित रूप हैं, वह अनुभवसे ही जाना जा सकता है।

— संस्कृत-सूक्ति

वह शान्त और तेजस्वी है, वह वाणी और मनकी पहुँचके बाहर है, वह व्यक्त भी है, अव्यक्त भी है, वह मायाविहीन है, वह न है, न नहीं है, वह जगदंकुरका एकमात्र बीज है, वेदोंने जिसका 'नेति-नेति' ('इतना ही नहीं है') कहकर वर्णन किया है, वह निराकार होते हुए भी तीनों लोकोंके रूपमें दिखाई पड़ता है, उसमें भ्रमसे जगत्का भान होता है— वह पूर्ण, एक, अद्वितीय, सर्वव्यापक, सौन्दर्य स्वरूप है, उसे न जाननेके कारण असत् पदार्थ भी सत् प्रतीत होते हैं। — संस्कृत-सूक्ति

'अहं ब्रह्मास्मि' जो इस 'अहं ब्रह्मास्मि' को जानता है, वह सब कुछ जानता है। देवगण भी उसको ब्रह्म हो जानेसे नहीं रोक सकते।

— उपनिषद्

ब्रह्मसे ही यह संसार उत्पन्न होता है, उसीमें यह वास करता है और उसीमें लय हो जाता है, ब्रह्मके ही प्रकाशसे यह जगत् भासमान हो रहा है, वह सहज आनन्दरूप है, उज्ज्वल है, शान्त, शाश्वत और निष्क्रिय है, ज्ञानी अपनी ज्ञान-ज्योतिसे भेदका अन्धकार दूर करके उसीमें मिल जाते हैं, वही परमात्मा अपने ब्रह्मा, विष्णु और महेश रूपोंसे संसारका सर्जन, पालन और संहार करता है, उसीके अधीन सब प्राणियोंके अच्छे-बुरे कर्म हैं।

— संस्कृत-सूक्ति

वह सर्वमय है, भव्य है, सर्वश्रेष्ठ है, सर्वैश्वर्ययुक्त है, वही सबके लिए शरण है, सदा सन्तुष्ट है, अगोचर है, शून्य है और सदा प्रकाशमान है, वह सब उपाधियोंसे परे है, स्वयं कल्याण-स्वरूप है, वह अमृत है, वह केवल आत्मज्ञानसे जाना जा सकता है। उसीकी इच्छासे सब पुरुष, परमाणु, कर्म, शरीर आदि सब कारण स्वयं असमर्थ होते हुए भी इस विश्वप्रपंचकी रचना करनेमें समर्थ हो जाते हैं।

— संस्कृत-सूक्ति

जब भूतके पृथग्भावको एकस्थ अनुभव करता है तभी विस्तार प्राप्त करके ब्रह्म होता है।

— गीता

ब्रह्मचर्य

परमात्माके राज्यमें प्रिय बननेके लिए अविवाहित जीवन बिताना धर्म है।

— ईसा मसीह

जो जीवनका वास्तविक आनन्द लेना चाहें उन्हें सदा ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिए।

— महात्मा गान्धी

ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्मकी – सत्यकी शोधमें चर्या अर्थात् तत्सम्बन्धी आचार। इस मूल अर्थमें सर्वेन्द्रिय-संयम रूपी विशेष अर्थ निकलता है।

— महात्मा गान्धी

ब्रह्मचर्यमय जीवन परम पुरुषार्थमय जीवन है। — श्री उड़ियाबाबा

मुझे यह बात कहनी ही होगी कि ब्रह्मचर्य-व्रतका तबतक पालन नहीं हो सकता, जबतक कि ईश्वरमें, जो जीता-जागता सत्य है, अटूट विश्वास न हो। — महात्मा गान्धी

ब्रह्मचर्य दुर्गतिको नष्ट कर देता है। — चाणक्य-नीति

ब्रह्मचर्यमय जीवन परम पुरुषार्थमय जीवन है। — श्री उड़ियाबाबा

ब्रह्मलोक

जो सच्चे, सीधे, तपस्वी, ब्रह्मचारी हैं, उन्हींको ब्रह्मलोक मिलता है।
— महर्षि पिप्पलाद

ब्रह्मज्ञान

काम-क्रोधादिके मिट जानेपर ब्रह्मज्ञानका साम्राज्य प्राप्त हो जाता है।
— ज्ञानेश्वरी

भ

भक्त

मैं भक्तके अधीन हूँ। — विष्णु भगवान्

भगवान्का सच्चा भक्त वही है जो सब जगह भगवान्को देखता है। भगवान्से अधिक अथवा भगवान्से बाहर कोई भी वस्तु नहीं है। सब कुछ जड़, चेतन, मनुष्य, पशु, पक्षी भगवान् ही हैं। फिर तुम किसीको क्यों बुरा कहोगे? क्या तुम भक्त होकर भगवान्को गाली दोगे? यदि तुम दूसरे किसीको बुरा कहते हो तो अपने ही भगवान्को बुरा कहते हो। इससे बढ़कर राग-द्वेषको मिटानेकी कोई और औषध नहीं है।
— श्री उड़ियाबाबा

भक्तने भगवान्‌को प्रकट किया है, इससे भक्त भगवान्‌से भी बढ़कर है। भक्तोंके गुणगान भगवान्‌के गुणगानसे भी बढ़कर हैं। – श्री उड़ियाबाबा

हे अर्जुन ! जो केवल मेरे ही भक्त हैं, वे मेरे वास्तविक भक्त नहीं। मेरे उत्तम भक्त तो वे हैं, जो मेरे भक्तोंके भक्त हैं। – भगवान् श्रीकृष्ण

भक्तोंकी स्थूल देखनेवाली क्रिया भी मानसिक अर्थसे भरी होती है।
– ज्ञानेश्वर

ज्ञानी भगवान्‌की आत्मा होता है, भक्त भगवान्‌का मालिक।
– स्वामी श्री अखण्डानन्दजी

भक्त नाम स्मरण करते हुए दिखाई देंगे, लेकिन नाम उनके लिए केवल शब्द नहीं है। वह उनके जीका भाव है। वह उनका एक-ही-एक तत्त्व है। उसी धुनमें उनकी सारी साधना चलती रहती है। – ज्ञानेश्वर

साधुका सेवक मोक्षकी पदवी प्राप्त करता है, और फिर उस पदवीको भी छोड़कर हरिभक्त होकर रहनेका सौभाग्य प्राप्त करता है। – ज्ञानेश्वर

भक्तोंके पास नामामृतका माधुर्य रहता है। उसमें-से सारा कार्यक्रम अपने-आप सूझता है। – ज्ञानेश्वर

प्रभु-भक्तोंको सब वस्तुएँ मंगलकारी हो जाती हैं। – फ़ेनेलन

सच्चा भक्त वह है जिसने जान लिया है कि वह और जगदीश्वर भिन्न नहीं हैं। – स्वामी रामदास

ईश्वरके भक्तकी बाज़ारमें क़ीमत नहीं; और भक्तके नज़दीक बाज़ारकी क़ीमत नहीं। – ज्ञानेश्वर

ईश्वरकी धुनमें सब पदार्थ ईश्वरमय नजर आते हैं। फिर न मैं रहता हूँ न मेरा व्यवहार। – ज्ञानेश्वर

भगवान्‌का भक्त होकर कोई भी दुःखी नहीं रह सकता, यह हमारा अनुभव है। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

मेरे भक्त तो निरपेक्ष होते हैं, वे मोक्ष भी नहीं चाहते। निरपेक्षता ही परम कल्याण है। निरपेक्षता ही मेरी सच्ची भक्ति है। — भगवान् श्रीकृष्ण

मेरा भक्त कभी नाशको प्राप्त नहीं होता। — भगवान् श्रीकृष्ण

जो समस्त प्राणियों और समस्त पदार्थोंमें आत्मस्वरूप भगवान्को ही देखता है, वह उत्तम भक्त है। — श्रीमद्भागवत

मुझे मेरा भक्त जैसा प्रिय है, वैसा प्रिय मुझे ब्रह्मा, शंकर, बलराम, लक्ष्मी नहीं; अपनी आत्मा भी नहीं। — भगवान् श्रीकृष्ण

मेरे एकनिष्ठ भक्तोंकी बुद्धि सुखोपभोगोंसे कभी मोहित नहीं होती। — भगवान् श्रीकृष्ण

भगवान् अपने आश्रितोंको अपनी ओर इस तरह खींचते हैं जैसे चुम्बक लोहेको। — शंकराचार्य

भक्तश्रेष्ठ समस्त प्राणियोंमें भगवान्को और भगवान्में समस्त प्राणियोंको देखता है। — शंकराचार्य

भक्त वही है जो किसीके दिलको नहीं दुखाता, बल्कि जहाँतक बने, सबकी सेवा करता है। — श्री उड़ियाबाबा

भक्त वही है जो 'भगवान् मेरे हैं और मैं भगवान्का हूँ' ऐसा समझकर विपत्तिकालमें किसी भी आदमीकी सहायता नहीं माँगता। — श्री उड़ियाबाबा

भक्तके लक्षण : १. क्रोध रूपी शैतानसे दूर रहना, २. किसी भी स्त्रीके साथ एकान्तमें बात न करना, ३. हमेशा एकान्तवासमें प्रेम होना, ४. कम बोलना, ५. सवेरे तीन बजेसे पाँच बजे तक भगवद्भजन करना। — श्री उड़ियाबाबा

भक्तके हृदयमें भगवान् बसते हैं, भगवान्के हृदयमें भक्त। — अज्ञात

भक्तके काम भगवान् करते हैं। — अज्ञात

भक्तको सारी सृष्टि रामरूप दिखती है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

जो ईश्वर-भक्त नहीं है वह धनवान् होनेपर भी कंगाल है। — सादी

भक्ति

चित्तकी शुद्धि और सद्‌गुणोंकी उपासना और उस उपासनाके जरिये प्रसंगानुसार दूसरोंके लिए अपने सुखका समर्पण, यही परमात्माकी श्रेष्ठ भक्ति है। — नाथजी

तिनकेसे भी नीचा होकर, वृक्षसे भी सहनशील होकर दूसरोंका मान करते हुए और स्वयं अमानी रहकर सदा हरिकीर्तन करे।

— चैतन्य महाप्रभु

'देव मेरा है' यह कहनेके बजाय 'मैं देवका हूँ' कहना चाहिए। लहर समुद्रकी है, समुद्र लहरका नहीं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

भक्ति माने भगवान् होनेकी स्थिति। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अन्दर बाहर परमात्मा दिखने लगना ही भक्तिका लक्षण है।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

भक्ति ज्ञानकी माँ है। निरा ज्ञान कोरडा, बाँझ और तर्कट है। परमार्थकी तमाम मिठास, साधनका सारा माधुर्य, साधुका सर्व समाधान भक्तिमें छिपा हुआ है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

ईश्वर-भक्ति कर्म--विपाकसे छुड़ाती है। यही उसकी विशेषता है।

— ज्ञानेश्वर

ज्ञान जीवनका फल है, भक्ति उसका रस है। — स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी

रामकी भक्ति कठिन है। कायरका काम नहीं। जो अपने हाथसे अपना सिर उतार सकता है, वही हरिनाम ले सकता है। — कबीर

मुखमें नारायणका नाम और करमें भूतदयाका काम। यही भक्ति-मार्ग है।

— निवृत्तिनाथ

जिसे हरिसे प्रेम होगा उसे विषयोंसे प्रीति न होगी; और जिसे विषयोंसे प्रीति होगी उसे हरिसे प्रेम न होगा। — कबीर

मुरदा पत्थरकी मूर्तियोंको पूजना और जिन्दा आदमियोंको धिक्कारना भक्ति नहीं है। — स्वामी रामदास

भक्तिकी पराकाष्ठा यह है कि हम सर्वव्यापी प्रभुको अपने हृदयमें देखने लगें। – स्वामी रामदास

प्रभु-प्राप्तिकी तीव्र अभिलाषाको भक्ति कहते हैं। – स्वामी रामदास

भक्तिके माने बेतरतीब ज़िन्दगी नहीं सुनियमित जीवन, तीव्र कर्तव्य-परायणता, धैर्य्य और प्रसन्नता भक्तके लक्षण हैं। – स्वामी रामदास

ईश्वरकी सच्ची भक्ति है – सबसे प्रेम। ईश्वरकी सच्ची पूजा है – सबकी सेवा। – स्वामी रामदास

पराभक्ति यह है कि इस सारे विश्वको प्रभुका रूप समझे।
– स्वामी रामदास

गुणोंका उत्कर्ष और उनकी पूर्णता साधनेका प्रयत्न भक्तिका सच्चा लक्षण है। – नाथजी

मानवी कर्तव्य-पालनमें भक्तिकी परिसीमा है – नाथजी

भक्ति, भक्त, भगवान् और गुरु एक ही चीज़के चार नाम हैं। – अज्ञान

जबतक हम और परमात्मा दोनों रहते हैं, तबतक तल्लीनता नहीं।
– उड़िया बाबा

सतत ईश्वर-भक्तिसे परमानन्दकी प्राप्ति होती है। – सन्त इफ्रम

निष्काम कर्म – भक्ति। – गीता

ईश्वरके प्रति श्रद्धा मुझे शैतानके प्रति घृणा करने तकका अवकाश नहीं देती। – रबिया

ज्ञानियोंके बोधका कारण भक्ति है। – शंकराचार्य

सचमुच मेरी (परमात्माकी) भक्ति मोक्षप्रद होती है।
– भगवान् श्रीकृष्ण

जब मैं परमात्माके सामने भक्तिमें लीन होकर खड़ा होता हूँ, तब उसमें और मुझमें कोई अन्तर नहीं रहता। – सन्त एकनाथ

बिना भक्तिके ज्ञान ऐसा है जैसा वह खेत जिसे जोता तो गया मगर बोया नहीं गया। — संस्कृत-सूक्ति

मुक्तिकी कारण-सामग्रीमें भक्ति ही सबसे बढ़कर है। अपने स्वरूपका अनुसन्धान ही भक्ति है। — शंकराचार्य

भगवान् केवल भक्तिसे तृप्त होते हैं। — अज्ञात

मोक्ष-प्राप्तिके साधनोंमें भक्ति ही सबसे बढ़कर है। — विवेक-चूड़ामणि

जो शुभ और अशुभका परित्यागी है और भक्तिमान् है, वही मुझे प्रिय है। — गीता

जबतक तुममें भक्ति थोड़ी है तबतक बुरी संगति और संसारके प्रपंचसे उसकी रक्षा करनी चाहिए। लेकिन उसमें दृढ़ता आ जानेपर कुवासनाओंको आनेकी हिम्मत न होगी और दुर्जन भी तुम्हारे सहवाससे सज्जन बन जायेंगे। — रामकृष्ण परमहंस

(सद किताबो सद वरक़ दर नार कुन।
जानो दिल रा जानिबे दिलदार कुन॥)

किताबोंके ढेरको और इन सैकड़ों वर्क़ोंको आगमें डाल दे और अपनी जान व दिलको अपने प्रीतम यानी ईश्वरकी तरफ़ लगा दे। — सूफ़ी

भक्षण

हे दाँतो ! नर-मादा जन्तुओंको मत खाओ। — अथर्ववेद

भगवत्कृपा

भगवत्कृपा तभी हो सकती है जब कि हम भगवान्‌की ओर लगें। — उड़ियाबाबा

भगवत्सेवा

उद्योगमें रहना ही सच्ची भगवत्सेवा है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

भगवान्

मैंने अनुभव किया है कि भगवान्का राज्य मेरे अन्दर है ।

— सन्त चार्ल्स फ़िलमोर

हमारे हृदयमें जब कोई विकारी भाव न आवे, किसी भी प्रकारका भय न रहे और नित्य प्रसन्नता रहे तो समझना कि हृदयमें भगवान् वास करते हैं ।

— गान्धी

भगवान् कल्पवृक्ष हैं; जो जिस इच्छासे उनके पास जाता है, उसे वही मिलता है ।

— उड़ियाबाबा

भगवान् मेरे समीप हैं और सदा रक्षा करते हैं ऐसा निश्चय करना चाहिए ।

— उड़ियाबाबा

भगवान् हर इनसानसे कहता है : "मैं तेरे लिए इनसान बनता हूँ। अगर तू मेरे लिए भगवान् न बने, तो तू मेरे प्रति अन्याय करता है ।"

— मिस्टर एकहार्ट

जहाँ सत्य और प्रेम है वहाँ भगवान् है ।

— रेटीनोस

सर्वोच्च भगवान् देवाधिदेव है और वह अन्दर रहनेवाला आत्मा ही है । वही कर्ता है, वही भोक्ता है, वही सारे विश्वका संचालक है ।

— समर्थ गुरु रामदास

लोग फ़िज़ूल बाहर भटकते रहते हैं और अपने अन्दर रहनेवाले भगवान्को भुलाये रहते हैं ।

— समर्थ गुरु रामदास

जो आदमी सब जानदारोंके अन्दर भगवान्को देखता है, सबको भगवान्का रूप समझता है और भगवान्के अन्दर सब जानदारोंको देखता है वही भगवान्का माननेवाला और सबसे अच्छा भक्त है ।

— भागवत

भगवान् सदा भक्तके हृदय-मन्दिरमें रहते हैं और अपने प्रिय भक्तसे निरन्तर प्रेमालाप करते रहते हैं ।

— स्वामी रामदास

भगवान् अनन्त कृपालु हैं ।

— स्वामी रामदास

वही भक्त है, वही भगवान् है। भक्त बनकर वही भगवान्को तलाश करता है। उसकी लीला अजीब है। — स्वामी रामदास

भगवान् अनन्त कृपालु हैं। — स्वामी रामदास

भजन

जवानीमें मौज करना और बुढ़ापा आनेपर माला लेकर भगवान्को भजना, आम खाकर गुठलीका दान करने-जैसा है। जवानीसे ही प्रभुकी भक्ति करनी चाहिए। — भक्तराज यादवजी

सीखनेकी वस्तु भजन ही है, ब्रह्म विचार नहीं। विचार तो भजनके फलसे स्वयं ही प्राप्त हो जाता है। जो भजन करता है उसे कालान्तरमें या जन्मान्तरमें विचार हो ही जायेगा। इसलिए विचारके लिए भजन नहीं छोड़ना चाहिए। — उड़ियाबाबा

भगवदाकार तैलधारावत् वृत्ति भजनका स्वरूप है। — उड़ियाबाबा

हरिभजनमें ये पाँच बातें नहीं सुहातीं – विषयभोग, निद्रा, हँसी, जगत्-प्रीति, बहुबात। — नारायण स्वामी

आसक्ति छोड़कर किये हुए सभी शुभ कर्म भजनमें शामिल हैं। — उड़ियाबाबा

जो मुखसे भजै सो मानवी; जो दिलसे भजै सो देव; जो जीसे जपै सो ज्योतिर्मय। — रज्जबजी

भद्रता

भद्रता समझदारी है; इसलिए अभद्रता बेवकूफी है। — शोपेनहोर

सद्गुण तक नागवार लगते हैं अगर उनके साथ अभद्रता मिली हो। — विशप मिड्लिटन

भय

भय चला जाय, तो घृणा न रहे। — महात्मा गान्धी

सुनो, मैं क्या कह रहा हूँ : खतरेसे खाली कोई जगह नहीं है। हर जगह सज्जनको दुर्जन मिल ही जाता है। — मिल्टन

हम जर्मन ईश्वरसे डरते हैं, मगर और किसीसे नहीं । — बिस्मार्क

जो औरोंमें भयका संचार करता है वह स्वयं सदा भयसे आतंकित रहता है । — क्लाडियन

डरना और डराना दोनों पाप हैं । — विनोबा

इनसान ही वह जानवर है जिनसे मैं बुज़दिलकी तरह डरता हूँ ।
— जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

वे ग़ुलाम हैं जो पतित और कमज़ोरोंके लिए बोलनेसे डरते हैं ।
— वौवैल

डर वह कर है जिसे अन्तरात्मा अपराधके लिए अदा करता है ।
— सेवैल

आइए हम ईश्वरसे डरें ताकि आदमीसे कभी न डरना पड़े । — गान्धी

जहाँ भय है वहाँ धर्म नहीं है । गान्धी

साहसीके लिए मरण इतना कष्टकारी नहीं जितना बुज़दिलके लिए भय है । — सर फ़िलिप सिडनी

जिसे दुःखका भय है, उसे भयका दुःख है । — फ़ान्स

भय किसका ? तुम्हीं तो वह अमर तत्त्व हो ! — स्वामी रामदास

भरण-पोषण

भगवान् विश्वम्भर हैं; अपने जनोंके भरण-पोषणकी उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी है । — अज्ञात

भरोसा

जिस क्षण तुम सिवाय ईश्वरके किसीका भरोसा नहीं रखो, उसी वक्त शक्तिमान् बन जाते हो, और तमाम निराशा ग़ायब हो जाती है ।
— गान्धी

भलाई

भली बात कड़वी होती है, लेकिन उसके कड़वेपनका स्वागत करना चाहिए क्योंकि उससे भलाई होती है । — भर्तृहरि

भला आदमी किसीसे बुराईकी आशंका नहीं रखता; बुरा आदमी किसीसे भलाईको आशंका नहीं रखता। — सिसरो

हे प्रभो! हम आपके मित्र हों, निर्भय हों, परोपकारी हों। — सामवेद

अपना भला तो सभी चाहते हैं, अपनोंका भला चाहनेवाले भी कुछ होते हैं, लेकिन सबका भला चाहनेवाले तो हरिचरणोंके दास ही होते हैं।
— सन्त तुलसीदास

अगर हम भले हैं तो सारी दुनिया हमारे लिए भली है।
— स्वामी रामदास

बुरे आदमीके साथ भी भलाई ही करनी चाहिए: एक टुकड़ा रोटी डाल-कर कुत्तेका मुँह बन्द कर देना ही अच्छा है। — सादी

'फलाँ आदमी दुनियामें नहीं रहा' — इस आवाजके आनेसे पहले नेकी कर लो। — सादी

असन्तोष फ़िज़ूल है। ईश्वर जानता है कि हमारी भलाई किसमें है।
— स्वामी रामदास

भलाई करना फ़र्ज़ नहीं है। वह तो आनन्द है, क्योंकि वह तुम्हारे स्वा-स्थ्य और सुखको बढ़ाता है। — ज़रथुष्ट्र

भले बनकर तुम दूसरोंकी भलाईका भी कारण बन जाते हो। — सुक़रात

आप भला तो जग भला। — हिन्दुस्तानी कहावत

कर भला होगा भला। — हिन्दुस्तानी कहावत

भलाई अमरताकी ओर जाती है, बुराई विनाशकी ओर।
— वाल्ट ह्विट मैन

शायद ईश्वरके विश्वासी ही गुप्त रूपमें भलाई कर सकते हैं। — बालज़क

केवल एक वस्तु दुःखमें परिणत नहीं होगी — वह भलाई जो हमने कर दी है। — अज्ञात

जो दूसरोंका भला करना चाहता है उसने अपना भला तो कर भी लिया।
— कन्फ़्यूशियस

क्रोधीके प्रति क्षमा, वैरीके प्रति प्रेम करना चाहिए। बुरा करनेवालेके साथ भी भलाई करनी चाहिए। — श्री उड़ियाबाबा

भलाई करनेवालेकी कभी दुर्गति नहीं होती। — कृष्ण

सिर्फ़ भले न बनो; कुछ भलाई करो। — थोरो

जो भलाईकी ख़ातिर भलाई करता है वह प्रशंसा या पुरस्कारकी अपेक्षा नहीं रखता, यद्यपि अन्ततः दोनोंके पा जानेका उसे निश्चय रहता है।
— विलियम पैन

भलाई जितनी ज्यादा दी जाती है उतनी ही ज्यादा मिलती है।
— मिल्टन

जब तुम दूसरोंके लिए अच्छे हो, तब अपने लिए सबसे अच्छे हो।
— बेंजामिन फ्रैंकलिन

दूसरोंकी भलाई चाहो, मगर उनकी शक्लों और ख़ामख़यालियोंके ग़ुलाम न बनो। — कार्लाइल

नेक आदमीका बुरा नहीं हो सकता, न तो इस ज़िन्दगीमें न मरनेके बाद। — सुक़रात

पाप न करना संसारकी भलाई करना है। — स्वामी दयानन्द सरस्वती

भलाईमें सब तरहके ज्ञान मौजूद हैं। — यूरिपिडीज़

जितनी तरह, जहाँ-जहाँ, जब-जब, जिस-जिसकी, जितनी भलाई कर सको, करो। — जॉन वैसली

भव्यता

वह ग़मग़ीन हृदय कितना भव्य है जो ख़ुशीका तराना गाता है।
— ख़लील जिब्रान

भविष्य

जो आज तक नहीं मरा वह आगे भी नहीं मरेगा, ऐसे तर्कमें न पड़ो; वर्ना फ़जीता होगा । — विनोबा

महान् आत्माओंमें भविष्यका डर नहीं होता; वे उस शक्तिमें दृढ़ श्रद्धान रखती हैं जो विश्वका संचालन करती हैं । — अरविन्द

मैं, रोज़बरोज़, जो कुछ सोच रहा हूँ और कर रहा हूँ, उससे लामुहाला तौरपर मेरे भविष्यका निर्माण हो रहा है । मैं अपने बहतर कामोंसे ही अपने बदतर भविष्यसे छुटकारा पा सकता हूँ । — ऐच० डब्ल्यू० ड्रेसर

दूसरोंके पत्ते देखकर खेलनेमें मज़ा नहीं । भविष्यको जाने बग़ैर प्रपंच करना चाहिए । — श्री ब्रह्मचैतन्य

भूतकालके अनुभवसे ज्ञानी भविष्यका अनुमान लगा लेता है ।
— सोफ़ोकिल्स

सब कुछ लुट जानेपर भी भविष्य बाक़ी रहता है । — बोवी

भाग्य

भारी भाग्यको सहनेके लिए हलकी आत्मा चाहिए । — डेनिस कहावत

भाग्यके बारेमें एक ही निश्चित बात है : कि वह बदलेगा ।
— विल्सन मिज़नर

पूर्वकृत कर्म (पुरुषार्थ)के अतिरिक्त दैव और कोई वस्तु नहीं है; पूर्वकृत पुरुषार्थ ही का नाम दैव है । — अज्ञात

फल देनेवाले पुरुषार्थ-द्वारा शुभाशुभ अर्थ-प्राप्तिरूप फलसिद्धिका नाम ही दैव है । — अज्ञात

क़दम-क़दमपर रत्न हैं, कोस-कोसपर रसकूप हैं, दुनियामें बहुत बेशक़ीमती चीज़ें, हैं, मगर भाग्यहीन उन्हें देख नहीं पाता । — संस्कृत-सूक्ति

देश बदलनेसे भाग्य बदल जाता है। — इटालियन कहावत

जो अपनी परिस्थितिको बदल देता है अपने भाग्यको बदल देता है।
— इटालियन कहावत

जिनकी निर्णय-शक्ति उत्तम है, भाग्य उनकी अवश्य सहायता करता है।
— यूरिपिडीज

भाग्य एक बाजार है जहाँ कुछ देर ठहरनेसे अकसर भाव गिर जाता है।
— बेकन

हर व्यक्ति अपने भाग्यका निर्माता स्वयं है। — सैलस्ट

सावधान रहनेसे दुर्भाग्य चला जाता है। — फ्रान्सीसी कहावत

सौभाग्य दरवाजा खटखटाता है और पूछता है — 'समझदारी अन्दर है क्या ?' — डेनिस कहावत

भार

इतनेसे ज्यादा मिले तो फ़िज़ूलका बोझा ही है – (१) प्राण बचा सके, इतना अन्न, (२) प्यास बुझे, इतना पानी, (३) लाज ढक सके, इतना कपड़ा, (४) रहने-जितना घर और (५) काममें आवे इतना ज्ञान।
— तपस्वी सर्री सक्ती

भाव

कुत्सित भावोंसे बन्धन होता है और सात्त्विक भावोंसे मोक्ष। — अज्ञात

जबतक तुम मानुषी भावोंमें रहोगे तबतक तुमको जीवनकी कटुता और खटास चखनी ही पड़ेगी। उन्हें छोड़कर जब ईश्वरीय भावोंमें निमग्न हो जाओगे, सच्चिदानन्द पद प्राप्त कर लोगे। — तपस्वी अबूहसन खर्कानी

जिसका जैसा भाव है उसीके अनुसार ईश्वर उससे पास या दूर है; उसीके अनुसार उसे फल मिलता है। — सन्त तुकाराम

भावना

देहधारी जीव स्नेहसे, द्वेषसे या भयसे जिस-किसीमें पूरी तरह अपने चित्तको संलग्न कर देता है, वैसा ही हो जाता है।

– श्रीमद्भागवत (एकादश स्कन्ध)

ज़बानकी क़लम इस्तेमाल करनेसे पहले उसे दिलकी रोशनाईमें डुबो लेना चाहिए। – इटालियन कहावत

रामकी आग घर-घरमें व्याप्त है; लेकिन हृदयकी चकमक न लगनेसे धुआँ होकर रह जाती है। – कबीर

सब संसार भावनासे ही बना है; देह भी भावनासे बना है। विपरीत भावनासे इस भावका अभाव करो। – उड़िया बाबा

सबसे महान् भावना है अपनेको बिलकुल भूल जाना। – रस्किन

भाषण

भाषणको आकर्षक और प्रभावक बनानेवाली चीज़ 'संक्षिप्तता' है।

– सिसरो

अनावश्यक भाषणका परित्याग करना चाहिए। – उड़िया बाबा

भाषण वक्ताओंको लम्बे नहीं लगते, श्रोताओंको छोटे नहीं लगते। – पैरी

भाषा

साहित्यमें नौसिखियेकी महत्त्वाकांक्षा होती है कि साहित्यिक भाषा सीखे; अभ्यस्तका संघर्ष उससे पिण्ड छुड़ानेके लिए होता है। – जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

सच्चेकी भाषा हमेशा सरल होती है। – यूरिपिडीज़

भिक्षा

भिक्षान्न सोम-अन्न है, अमृत है, इसके बराबर शुद्ध कोई अन्न नहीं है, साधुको सदैव भिक्षा करनी चाहिए। – उड़िया बाबा

भिक्षु

काम जिसे छू नहीं पाता, ममतामें जो बँधता नहीं, सुख-दुःखसे जो प्रभावित नहीं होता, वही सच्चा भिक्षु है। — बुद्ध

भूख

भूखे पेटके कान नहीं होते। — अज्ञात

भूख वह बादल है जिससे वक्तृत्व और ज्ञानका मेंह बरसता है; जब पेट खाली होता है, तो शरीर आत्मा बन जाता है; जब वह भरा होता है, तो आत्मा शरीर बन जाता है। — सादी

अगर तेरा दुश्मन भूखा हो, तो उसे खाना दे। — कहावत

भूतकाल

गुज़री हुई बातको गुज़री हुई समझो। — होमर

हम अपने मनको गुज़री बातोंसे बोझिल न करें। — शेक्सपीयर

जो भूतकालको याद नहीं रखते वे उसे दुहरानेको विवश होंगे।
— जॉर्ज सान्तायन

गया सो गया; कोई यहूदी उसे क़र्ज़ नहीं देगा। — जर्मन कहावत

भूल

जो जान गया कि उससे भूल हो गयी और उसे ठीक नहीं करता वह एक और भूल कर रहा है। — कन्फ़्यूशियस

ज्ञानी आदमी दूसरोंकी भूलोंसे अपनी भूलें सुधारता है।
— पबलियस साइरस

जो कोशिश करता है उससे भूलें भी होती हैं। — गेटे

भेद

जीवको अज्ञानसे ही भेदज्ञान हुआ करता है, समस्त पदार्थोंके भेदजनक ज्ञानका सम्पूर्ण रूपसे विनाश हो जानेपर आत्मा और ब्रह्मके भेदकी चिन्ता कौन करे? — अज्ञात

ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, हम ताप-त्रय-निमग्न; ईश्वर शुद्ध सत्त्वगुणी, हम त्रिगुणोंका मिश्रण; ईश्वर सर्वगुणमण्डित, हम सर्वदोष-आगार; ईश्वर अखण्ड, हम फटे-टूटे ! यह भेद इसलिए है कि हम साधना और भक्तिका सुख अनुभव करें ।
— ज्ञानेश्वर

भोग

वैषयिकतासे बच; क्योंकि वैषयिकता पश्चात्तापकी जननी है । — सोलन

भोग-विलास एक आग है, दोज़ख़की आग ! उससे बचते रहना, उसे तेज़ मत करना । तुम उसकी गरमी सहनेकी ताक़त कहाँसे लाओगे ? इसलिए उसपर सब्रका ठण्डा पानी छिड़क देना । — शेख़ सादी

परिज्ञानपूर्वक उपभोग किये भोग तुष्टि देते हैं; जान-पहचानकर रखा चोर दोस्ती करता है, चोरी नहीं करता । — योगवाशिष्ठ

जिनका चित्त मोहसे आच्छन्न नहीं है, वे भोगजनित सुखोंको दुःख ही मानते हैं । — मदालसा

भोगोंके न मिलनेपर तृष्णा तड़पाती है, मिलनेपर रागकी आग जलाती है, बिछुड़नेपर वियोगका काँटा कष्ट देता है; इस प्रकार सब भोग दुःख-रूप हैं । — योगवाशिष्ठ

भोग ख़ुद छोड़कर चले जायें तो दुःख होता है; हम स्वयं उन्हें छोड़ दें तो सुख होता है । — संस्कृत-सूक्ति

संसारके भोगोंमें पड़कर मैंने अपना जन्म बरबाद कर दिया — काँचकी क़ीमतपर चिन्तामणि रत्न दे डाला ! — संस्कृत-सूक्ति

भोग पहले तो अच्छे लगते हैं, लेकिन बादमें दुःख देते हैं ।
— संस्कृत-सूक्ति

योगी सांसारिक बन्धनोंको भोगता हुआ भी संसारके बन्धनोंमें नहीं पड़ता । — सिद्ध तिल्लोपाद

भोजन

क़ुदरतने खानेके दो वक़्त मुक़र्रिर कर दिये हैं – सुबह और शाम। बीचमें न खाय तो नित्य उपवासका फल मिलता है। – शान्तिपर्व

वैष्णवजन भोजन-वस्त्रकी व्यर्थ ही चिन्ता करते हैं; जो भगवान् सारे संसारका पेट भरते हैं, क्या वे अपने भक्तोंकी उपेक्षा कर सकते हैं ?

– पाण्डव गीता

भूखसे ज़्यादा खाना रोगोंको न्यौता देना है। – सादी

बिना इच्छाके गुलक़न्द भी खाओगे तो वह नुक़सान करेगा; उपवासके बाद सूखी रोटी भी खाओगे तो वह गुलक़न्दका मज़ा देगी। – सादी

भ्रम

इस बाग़े-आलममें फूलके अलावा कुछ नहीं। अपना भ्रम ही एक काँटा है। – स्वामी रामतीर्थ

म

मकान

मकान बनानेवालोंके लिए मेरा यह सूत्र है कि मालिकसे मकानकी शोभा हो, मकानसे मालिककी नहीं। – सिसरो

मज़ा

अति भोगसे हर मज़ा सज़ा बन जाता है। – बर्टुक

एक मज़ा, हज़ार अज़ाब। – फ़्रान्सीसी कहावत

मज़ाक़

वह मज़ाक़ मज़ाक़ नहीं जो किसीका जी दुखाये। – सरवैण्टीज़

अगर कोई बात मज़ाक़में कही गयी हो तो उसे गम्भीरतासे नहीं लेना चाहिए। — प्लॉटस

मदद

दलदलमें पड़े रहकर यह न चिल्लाओ : "या ख़ुदा कर मदद !"

— कहावत

मध्यम मार्ग

ईश्वर मध्यम मार्गपर चलनेवालोंकी हमेशा मदद करता है। — ऐशीलस

मध्यम मार्ग सुरक्षाका मार्ग है। — जर्मन कहावत

मध्यम मार्गमें हमेशा सबसे ज़्यादा सुरक्षा है। — मीनेण्डर

मधुरता

मेरा जाना मधुर हो, मेरा आना मधुर हो। — अथर्ववेद

मन

मनके बहुत-से रंग हैं जो कि क्षण-क्षण बदलते रहते हैं। एक रंगमें रंगा कोई बिरला होता है। — कबीर

केवल ईश्वरका चिन्तन करनेवाला मन केवल मधु ही पीनेवाले भ्रमरके समान है। — स्वामी रामदास

जिसका मन पवित्र नहीं, उसका कोई काम पवित्र नहीं होता। — अज्ञात

मूर्ख लोग तपस्यासे देहका दमन करते हैं, ज्ञानी-जन विकारके कारण मनका शमन करते हैं। लाठीसे मारे जानेपर कुत्ता गुस्सेसे लाठीको ही चबाता है, लेकिन शेर हथियार चलानेवालेपर ही हमला करता है।

— संस्कृत-सूक्ति

मनका परम श्रेय ईश्वरीय ज्ञान है। –स्पिनोज़ा

मेरा मन शुभ संकल्प करनेवाला हो। – यजुर्वेद

मनकी यह एक अच्छी आदत है कि इसे जिस बातका मज़ा मिल जाता है, फिर उसीका इसे चस्का लग जाता है। इसलिए इसे कौतुकसे घुमा-फिराकर आत्मसुखका चस्का लगाना चाहिए। – ज्ञानेश्वरी

कोई चीज़ दुःखमय है न सुखमय। सुख-दुःख तो मनके विकार हैं।
– महर्षि पराशर

मन तीन तरहका होता है – पहाड़की तरह अचल, पेड़की तरह चलायमान, तिनकेकी तरह हवाके हर झोंकेपर उड़नेवाला।
– तपस्वी सर्री सकती

मन नरकका स्वर्ग बना सकता है, स्वर्गका नरक। – मिल्टन

मनकी शक्ति क्रियाशीलतामें है, विश्राममें नहीं। – पोप

वासनाके नष्ट होनेपर मनका उपशम हो जाता है। – योगवाशिष्ठ

मन ही बन्ध और मोक्षका कारण है : विषयासक्त मन बन्ध है, निर्विषय मन मोक्ष है। – पंचदशी

मनकी शान्ति स्वास्थ्यका लक्षण है। – श्री उड़ियाबाबा

मनुष्य

मनुष्य क्या सर्वत्र ही अपनी क्षुद्र बुद्धि और तुच्छ प्रवृत्तिका शासन फैलाकर कहीं भी सुख-शान्तिका स्थान न रहने देगा? – रवीन्द्रनाथ टैगोर

जो अपनी देहको ही सर्वस्व मानता है सो जीव, और जिसे मानवता प्रिय होती है सो मनुष्य। – नाथजी

और देह केवल विषय-भोगके लिए है; केवल मानव-देह मोक्ष दिलानेमें समर्थ है, इसलिए देव लोग भी उसकी वांछा करते हैं। – भागवत

साधारण आदमी शरीफ़ इतना नहीं होता जितना खुशगवार।
– लिन युटांग

ज्ञानी कहते हैं कि मनुष्य परमेश्वर हो जाता है। – श्रीमद्राजचन्द्र

मनुष्य-जन्म

चिरकालके बाद भी मनुष्य-जन्म मिलना दुर्लभ है, क्योंकि पूर्व कर्मोंका फल दुर्निवार होता है। गौतम, क्षणमात्र भी प्रमाद न कर।

— भगवान् महावीर

मनुष्यता

मनुष्य अपनी श्रेष्ठता अन्दर दिखाते हैं, पशु बाहर। — रूसी कहावत

मनो-निग्रह

कुशाकी नोकसे समुद्र उलीचनेके लिए जैसे धैर्यकी ज़रूरत है वैसे खेद-रहित धैर्यसे मनका निग्रह हो सकता है। — गौडपादाचार्य

मनोरंजन

ज़िन्दगी काफ़ी अच्छी हो जाये अगर उसमें मनोरंजन न रहें।

— लिटन बैरन

कोई मनोरंजन इतना सस्ता नहीं जितना वाचन, न कोई ख़ुशी ही ऐसी स्थायी होती है। — लेडी मौण्टेन

ममता

जिन-जिन वस्तुओंमें मेरी ममता है वही मुझे दुःखदायी हैं; और जिन चीज़ोंसे मैं अनासक्त हो जाता हूँ वही मुझे आनन्ददायिनी हो जाती हैं।

— संस्कृत-सूक्ति

आदमी जितना ही सांसारिक सम्बन्धोंको प्रिय बनाता है उतनी ही शोकाग्नि उसके सीनेको दहकाती है। — संस्कृत-सूक्ति

ममता बन्धन है, निर्ममत्व मुक्ति। — गरुड़ पुराण

अगर कोई कहे कि ज़मीन मेरी है तो ज़मीन हँस देती है! कंजूसको देखकर धन हँस पड़ता है, और रणसे डरनेवालेको देखकर काल अट्टहास कर उठता है! — सन्तकवि बेमना

ममता बिलकुल छोड़ दे, और अगर न छोड़ सके तो सर्वत्र करे।

— संस्कृत-सूक्ति

मरण

धीर पुरुष ऐसा देह नहीं चाहता जिसमें कुमारावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था प्राप्त हों। – गीता

जीते जी मर रहे तो फिर मरना नहीं रहता। – कबीर

अल्लाहके रास्ते चलते हुए जो क़त्ल हो जायें उन्हें मरा हुआ कभी न समझना, वे दिखाई नहीं देते मगर ज़िन्दा हैं। – क़ुरान

दरिद्री, रोगी, मूर्ख, प्रवासी और ग़ुलाम ये पाँच ज़िन्दा भी हों तो भी मुरदेके समान हैं। – अज्ञात

मैं तो एक ही मरण जानता हूँ, वह है जीव-भावका ईश्वरके चरणोंमें समर्पण। – ज्ञानेश्वर

प्रभुकी भक्ति न करना ही मरण है। – ऋग्वेद

मशीन

आदमी अपने औज़ारोंके औज़ार हो गये हैं। – थोरो

मस्त

भविष्यका अनुसन्धान नहीं करता, अतीतकी चिन्ता नहीं करता, वर्तमान क्षणको हँसते-हँसते गुज़ारता है। – योगवाशिष्ठ

मस्ती

कहीं भी किसी भी परिस्थितिमें रहो, मनमें कमज़ोरी मत आने दो, जहाँ रहो मस्त रहो। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

महत्ता

अगर महत्ता चाहता हो तो दे, मगर किसीसे याचना मत कर।
– हेमचन्द्राचार्य

महत्त्वाकांक्षा

मरनेपर छह फ़ुट ज़मीन हमें काफ़ी हो जाती है, जीते जी हम सारी दुनियाको पा लेना चाहते हैं। – फ़िलिप

महात्मा

विपत्तिमें धैर्य, सम्पत्तिमें क्षमा, सभामें वाक्चातुरी, युद्धमें पराक्रम, यशमें अभिरुचि, शास्त्रोंमें लगन ये सद्गुण महात्माओंमें स्वाभाविक होते हैं।

– भर्तृहरि

महात्मा मनमें एक, वचनसे एक, कर्मसे एक होते हैं। दुरात्मा मनसे और, वचनसे और, कर्मसे और होते हैं। – महाभारत

मनमें भगवान्का स्मरण बना रहे और मर्यादाका उल्लंघन न हो, यही महात्मापन है। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

महानता

ईश्वरकी नज़रमें ऊँचे वे हैं जो नीतिमें ऊँचे हैं। – मुहम्मद

सचमुच महान् वह है जो समूहमें रहता हुआ भी एकान्तका आनन्द ले सकता है। – एमर्सन

सच्ची महानता हृदयकी पवित्रतामें है। कोई तुम्हारे बारेमें कुछ भी सोचे, इससे क्या ? – स्वामी रामदास

महान् पुरुष वह है जो जनसमूहकी वाहवाहीकी अवगणना कर सकता है, और उसकी नवाजिशके बग़ैर भी आनन्दमग्न रह सकता है।

– रिचार्ड स्टील

महानता उन व्यक्तियोंमें भी हो सकती है जिनका कार्यक्षेत्र बहुत छोटा है।

– फ़िलिप्स ब्रुक्स

महान् आदमीकी महानताका पता इस बातसे लग जाता है कि वह छोटे आदमियोंसे कैसे पेश आता है। – कार्लाइल

मनुष्य ठीक उसी परिमाणमें महान् बनता है जिस परिमाणमें वह मानव-मात्रके कल्याणके लिए श्रम करता है। – सुक़रात

महापुरुष हमेशा सदाचारका विचार करता है; क्षुद्र आदमी सुखका। महापुरुष शास्त्राज्ञाका विचार करता है; क्षुद्र आदमी लाभका। – कन्फ़्यूशियस

बड़ा वह है जो स्वयं समाधान प्राप्त कर औरोंको समाधान देता है।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

महान् वह है जो दयालु है; ज्ञानी वह है जो प्रसन्न है। — अज्ञात

अगाध जलमें रहनेवाला रोहित मत्स्य कभी विकारको प्राप्त नहीं होता; किन्तु चुल्लू-भर पानीमें रहनेवाली मछली फरफराती रहती है।

— संस्कृत-सूक्ति

नक़ल करके कोई आज तक महान् नहीं बना। — सैम्युएल जॉन्सन

लोकोत्तर महापुरुषोंके चित्तको कौन जान सकता है, वह वज्रसे कठोर और कुसुमसे भी कोमल होता है। — भवभूति

जिनकी आत्माएँ महान् हैं वे कोई काम अधूरा नहीं करते। — वीलेण्ड

आदमी धन या कुलसे नहीं, दिव्य स्वभाव और भव्य आचरणसे महान् बनता है। — ओविद

महापुरुष

महापुरुषमें महापुरुष पैदा करनेकी शक्ति होनी ही चाहिए।

—समर्थ गुरु रामदास

महापुरुषमें लेशमात्र भी काम-क्रोध नहीं रहते। उनमें काम-क्रोधका अत्यन्ताभाव होता है; पर दूसरे पुरुषोंको उनमें आभास दीख सकता है। उनमें काम-क्रोध क्यों नहीं होते? इसीलिए वे सम्पूर्ण विश्वको भगवान्की लीला तथा भगवद्रूप देखते हैं, अथवा अपना आत्मस्वरूप देखते हैं। दोनों प्रकारसे ही उनमें काम-क्रोधादि नहीं होते। — अज्ञात

'उमा जे रामचरनरत, बिगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहिं जगत, का सन करहिं बिरोध॥

— उड़ियाबाबा

महापुरुष वे ही हैं जो सम-चित्त, प्रशान्त, क्षमावान्, शीलसम्पन्न और परोपकारी हैं। – भगवान् ऋषभदेव

महान् पुरुष अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितिमें भी धीरज नहीं छोड़ते। – अज्ञात

मंज़िल

जो मंज़िले-मक़सूद तक पहुँचना चाहता है उसे एक ही रास्ता पकड़ना चाहिए, इधर-उधरकी बहुत-सी गलियों और बीथियोंमें भटकना नहीं चाहिए। – सेनेका

मन्तव्य

अगर चालीसपर भी हमारी वही मान्यता बनी रहे जो बीसपर थी तो गोया बीस बरस तक बेवक़ूफ़ ही बने रहे। – आर० ऐल० स्टीवेन्सन

माता

हाथोंसे केस पकड़कर घात भी कर दे तो भी माँका हेत कम नहीं होता। – कबीर

मान

इज़्ज़त खोजना आज़ादी खोना है। – लार्ड बेकन

अहंकारी अपनी मंज़िलपर नहीं पहुँच पाता। क्योंकि, वह चाहता तो इज़्ज़त और हुरमत है, मगर पाता है नफ़रत और तिरस्कार। – वाकर

मानी

लफ़्ज़ोंमें मत फँस मानीकी तरफ़ जा। – मौलाना रूम

शब्दोंपर मत चिपको, शब्द आदमीको मार डालते हैं; मानीकी तरफ़ जाओ, उसीसे तुम्हें अमर जीवन मिलेगा। – इंजील

मानव

दुनिया मेरा देश है, सारी मानव जाति मेरी बन्धु है, और नेकी करना मेरा धर्म है। — थौमस पेन

मानवजाति

हमें मानवजातिको केवल एक परिवार बनानेकी कोशिश करनी चाहिए।
— मैज़िनी

मानवता

ईश्वरकी प्रेमभावनाको पवित्रतम और श्रेष्ठतम मान भी लिया जाय फिर भी उस भावनामें आदमी चौबीसों घण्टे मग्न नहीं रह सकता। कुछ देर रह सकता है। इस थोड़े वक़्तकी मग्नतामें आदमी धन्यता या मानवता माने या उस पवित्र भावनाका जीवनके हर क्षेत्रमें, हर व्यक्तिके साथ आनेवाले सम्बन्धमें, कर्ममें और कर्तव्यमें सतत उपयोग करके उसके द्वारा उस दिव्य और पवित्र भावनाको प्रकट करनेमें धन्यता और मानवता माने ? कोई भी भावना उचित कर्माचरण बग़ैर पूर्ण नहीं हो सकती। इसलिए जो भावना उचित कर्ममें नहीं परिणमती वह पवित्र और श्रेष्ठ हो तो भी निकम्मी है। — नाथजी

मानवता मानव-हृदयमें खिलनेवाला सुन्दरतम पुष्प है। — जेम्स ऐलिस

यह ज्यादा अक़्लमन्दीकी बात हो कि हम उस ईश्वरकी बातें कम करें जिसे हम समझ नहीं सकते, और उन पारस्परिक लोगोंको बातें ज्यादा करें जिन्हें हम समझ सकते हैं। — ख़लील जिब्रान

चिड़ियोंकी तरह हवामें उड़ना और मछलियोंकी तरह पानीमें तैरना सीखनेके बाद अब हमें इनसानोंकी तरह ज़मीनपर चलना सीखना है।
— राधाकृष्णन्

इनसानको चाहिए कि कभी उपकारको न भूले, बल्कि उस उपकारसे भी बढ़कर प्रत्युपकार कर दे। — कुन्ती

मनुष्यता सौम्यमें है। — विनोबा

दुनियामें चारों तरफ़ जुल्म, अन्याय, स्वार्थ, वग़ैरहका साम्राज्य फैला हुआ हो उस वक़्त यह मानकर कि इस लोकका कर्तव्य पूरा हो गया, ईश्वरी प्रेममें मग्न या मस्त रहनेकी कोशिश करनेसे क्या मानवताकी वृद्धि हो सकती है ? — नाथजी

मानवधर्मके अनुसार वर्तन करनेसे ही मानवता प्राप्त हो सकती है। केवल शारीरिक या बौद्धिक श्रेष्ठतासे ईश्वर-विषयक भावनाके अतिरेकसे होनेवाले काल्पनिक आनन्दसे मानवता सिद्ध हो जाय यह मुमकिन नहीं है।

— नाथजी

देवतापद प्राप्त करना सहल है, पर इनसान बनना मुश्किल है।

— नाथजी

मानवताका प्रारम्भ विवेक और चित्तशुद्धिके प्रयत्नसे होता है और अन्त सद्‌गुणोंकी परिसीमामें चित्तशुद्धिके लिए संयमकी ज़रूरत है, और सद्‌-गुणोंकी परिसीमाके लिए पुरुषार्थकी ज़रूरत है। — नाथजी

स्वार्थमय जीवन पशुताकी निशानी है, परार्थमय जीवन मनुष्यताकी।

— अज्ञात

मनुष्यको न दानव बनना है न ईश्वर बनना है, बल्कि मानवकी तरह व्यापार करते हुए चैतन्यका सद्‌गुणों-द्वारा प्रकटीकरण करते हुए उसे मानवताकी सीमा तक पहुँचना है। — नाथजी

हमारी मानवता एक दरिद्र चीज़ होती अगर हमारे अन्दर चिन्मयी दैवि-कता न होती। — बेकन

मानवता महान् है, लेकिन मानव छोटा है। — बौर्न

हमारी सच्ची राष्ट्रीयता मानवता है। — ऐच० जी० वेल्स

राजपूती शानका ज़माना चला गया; मानवताका ज़माना आ गया है।

— चार्ल्स सुमनेर

मानवता माने दूसरोंके प्रति समभाव। — नाथजी

मैं अपने देशको अपने कुटुम्बसे ज़्यादा प्यार करता हूँ लेकिन मानवजाति मुझे अपनेसे भी ज़्यादा प्यारी है। — फ़ेनेनल

मानवधर्म

समुदायके रक्षणके लिए, उन्नतिके लिए और कल्याणके लिए समुदाय जिन नियमोंको आचरणमें लाये वही मानवधर्म है। — नाथजी

माया

माया सत् और असत्से विलक्षण है, अनादि है और सदैव परमात्माके आश्रय रहनेवाली है। यह त्रिगुणात्मिका माया ही चराचर जगत्को उत्पन्न करती है। — शंकराचार्य

माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र, मित्र, द्रव्य, सब मायाजाल हैं। मिथ्यादृष्टि जीव इन सबको अपना मानता है। — योगीन्द्रदेव

माया देख ली जानेपर बिजलीकी तरह ग़ायब हो जाती है।
— शंकराचार्य

ब्रह्मके आश्रित हुई माया ही जीवाश्रया अविद्या कहलाती है। यही चित्तकी जड़-चेतनग्रन्थि है। जबतक मोक्ष न हो तबतक इसे अक्षय ही जानना चाहिए। — शंकराचार्य

सब प्रकारके राक्षसी कपट-जाल छिन्न-भिन्न हो जायँ। — वेदवाणी

जो आती और जाती है सो माया है। — रज्जबजी

हम कैसी छायाएँ हैं, और कैसी छायाओंके पीछे पड़ते हैं! — बर्क

यह प्रकृति — अर्थात् माया — ही विश्वकी उन सब वस्तुओंका प्रसार करती है, जिनकी नाम और रूपके द्वारा प्रतीति होती है और वह प्रकृति मुझमें ही समरस होकर रहती है, इसलिए इस समस्त जगत्का आदि, मध्य और अन्त मैं ही हूँ। — भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

वह महत्तत्त्व आदि माया भी मेरी छाया ही है। इसी मायाका दूसरा नाम प्रकृति है। – भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

माया, मकान, स्त्री, धरती और व्यवहार – ये सन्तोंको तब मिलते हैं जब भगवान्का उनपर कोप होता है। – अज्ञात

मायाका नाम छोड़कर मुझे तो ईश्वरके चरणोंमें ही लीन रहना है। – ज्ञानेश्वर

वह शख्स जो मुझे पिस्तेकी तरह फूला हुआ मालूम होता था, उसपर प्याज़की तरह तहपर तह थी। – सादी

कोई बिरला ही जानता है कि माया और छाया एक-सी हैं – भागतेके पीछे फिरती हैं, और जो पीछे पड़ता है उसके आगे भागती हैं। – कबीर

माया मरी न मन मरा, न आशा मरी न तृष्णा मरी। सिर्फ़ शरीर मरता रहा। – कबीर

जो मिथ्या है वह हमें सत्य लगता है। जो सत्य है वह हमें मिथ्या लगता है। – समर्थ गुरु रामदास

यह दैवी भगवती महामाया ज्ञानीके भी चित्तको ज़बरदस्ती खींचकर मोहमें डालती है। – सप्तशती

मायाचार

धूर्त आदमीको न आदमी पहचान सकता है न फ़रिश्ता, उसे तो सिर्फ़ भगवान् जानते हैं। – जॉन मिल्टन

जो अवांछनीय महमानके प्रति दयालुता और मृदुलता दर्शाकर हार्दिक स्वागतका ढोंग करता है वह हज़ार स्पष्टवादियोंसे भी बदतर मायाचारी है। – लैवेटर

दिखावटी प्रेम, झूठी भावनाएँ और कृत्रिम भावुकता – ये सब ईश्वरके प्रति अपमान हैं। – स्वामी रामतीर्थ

'मोहिं कपट छल छिद्र न भावा'। – भगवान् राम

मायाचारी सिर्फ़ देखनेमें ही अच्छा लगता है। – पैरीकिल्स

दुष्टको धूर्तताका भार लाज़िमी तौरसे ढोना पड़ता है। – जॉन्सन

उस आदमीसे मुझे ऐसी घृणा है जैसी नरकद्वारसे, जिसके बाहरी शब्द उसके भीतरी विचारोंको छिपाते हैं। – होमर

धूर्त लोग ईसाके वेशमें शैतानको बेगार करते हैं। – मैथ्यू हैनरी

दुष्टोंके मन, वचन और कर्ममें और-और भाव होते हैं; सज्जनोंके मन, वचन और कर्ममें एक ही भाव रहता है। – चाणक्य-नीति

मार्ग

निम्नतम गहराईसे उच्चतम ऊँचाई तक रास्ता है। – कार्लाइल

असत्य मार्गपर हम चाहे जितनी दूर जा चुके हों, वहाँसे लौट पड़ना उसपर चलते रहनेसे बहतर है। – महर्षि टॉलस्टॉय

मार्ग है – रामनाम, ईशगुणचिन्तन और शरणागति। मार्ग है – जप, ध्यान और समर्पण। – स्वामी रामदास

श्रेष्ठतम मार्ग खोजनेकी प्रतीक्षाके बजाय हम ग़लत रास्तेसे बचते रहें और बहतर रास्तेको अपनाते रहें। – जवाहरलाल नेहरू

मार्गदर्शक

तुम्हारा रहबर अन्दर है; उसकी आवाज़पर चलो। महज़ दूसरोंके कहनेसे कोई काम न करो। – स्वामी रामदास

मार्दव

मृदुतासे कठोर जीता जाता है। मृदुतासे अकठोर भी जीता जाता है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो मृदुतासे न जीता जा सके। इसलिए मृदुता ही तीक्ष्णतम शस्त्र है। – महाभारत

मालिकी

जो ज़मीनका मालिक है, ज़मीन उसकी मालिक है। – एमर्सन

माँ

माँ ही पृथ्वीपर ऐसी भगवती है जिसके कोई नास्तिक नहीं। – ई० लेगोव

मांसाहार

मांसाहारीका ज्ञान-कथन ऐसा है जैसे नंगीका घूँघट निकालना।
– बाबा धरनीदास

मांसभक्षी दयाधर्मका विध्वंसक है। – गोरखनाथ

मितव्ययता

ज़मीनमें गाड़नेके लिए नहीं, नौकरोंकी फ़ौज खड़ी करनेके लिए नहीं, बल्कि स्वतन्त्रताका उज्ज्वल अधिकार पानेके लिए मनुष्यको मितव्ययी होना चाहिए। – बर्न्स

मित्र

मित्र अपनी प्रतिमूर्ति है। – अरस्तू

नेक सबके प्रति रहो, मित्र सर्वोत्तमको ही बनाओ। – इसोक्रेट्स

मित्र चुननेमें धीमे रहो, बदलनेमें और धीमे। – बेंजामिन फ्रैंकलिन

कोई किसीका मित्र नहीं और किसीका शत्रु नहीं है, बर्तावसे ही मित्र और शत्रु पैदा होते हैं। – चाणक्य-नीति

अरे पुरुषो ! तुम स्वयं अपने मित्र हो, अपनेको छोड़कर अन्य मित्र कहाँ ढूँढ़ रहे हो ? – आचारांग

मित्र मित्रको बचाता है। – वेदवाणी

मित्र कौन है ? जो पापसे हटाये। – शंकराचार्य

जो कुमार्गसे बचाकर सुमार्गपर चलाता है; अवगुणोंको छिपाकर गुणोंको प्रकट करता है; देते-लेते मनमें शंका नहीं करता; यथाशक्ति सदा हित करता है; और विपत्तिकालमें सौगुना प्रेम करता है, वही सच्चा मित्र है। – रामायण

वह मित्र नहीं जो मित्रको सहायता नहीं देता। — ऋग्वेद

मित्रको मित्रकी भलाई करनी चाहिए। — अथर्ववेद

दुनियाकी किसी चीज़का आनन्द परिपूर्ण नहीं होता, जबतक कि वह किसी मित्रके साथ न लिया जाय। — लैटिन

साथी-सहकारी करोड़ हो सकते हैं, मित्र तो एक ईश्वर ही हो सकता है। दूसरी मित्रता ईश्वरकी मित्रतामें विघ्नकारी है ऐसा मेरा अभिप्राय और अनुभव है। — महात्मा गान्धी

मित्रता

अगर दो मित्र एक दूसरेकी छोटी-छोटी ग़लतियाँ माफ़ नहीं कर सकते तो उनकी मित्रता ज्यादा दिन तक नहीं टिक सकती। — ब्रूयर

पहले तुम तो अपने मित्र बन लो, तब दूसरे भी बन जायँगे। — कहावत

मूर्खके साथ मित्रता करनेसे कभी लाभ नहीं होगा। — आसा दी वार

अजानसे दोस्ती और धनवान्से प्रेम पानीपर खींची गयी लकीरकी तरह है। — आसा दी वार

मित्रोंमें अगर अनबन होने लगे तो स्पष्ट सफ़ाइयाँ दे डालना अच्छा। इससे टूटती हुई दोस्ती जुड़ जायगी, बल्कि दृढ़तर हो जायगी; मगर गुप्त असन्तोष सदा विघातक होता है। — सिडनी स्मिथ

संसारमें मित्रता ही एक ऐसी चीज़ है जिसकी उपयोगिताके विषयमें सब एकमत हैं। — सिसरो

अपने साथियोंको चुननेमें बड़े विचारसे काम लो। — लूकेनस

दोस्ती बराबरवालेसे करे; क्योंकि जहाँ बराबरी नहीं है, दोस्ती ज्यादा दिन नहीं टिकती। — अफ़लातून

शायद सबसे ज्यादा मसर्रतबख्श दोस्तियाँ वो हैं जिनमें बड़ा मेल है, बड़ा झगड़ा है, और फिर भी बड़ा प्यार है। — जॉर्ज ईलियट

दूधने अपने पास आये हुए जलको अपने सब गुण दे दिये। जलने भी दूधको जलते देखकर अग्निमें अपनेको भस्म कर दिया। मित्रपर ऐसी आपत्ति देखकर दूध आगमें गिरनेके लिए उछलने लगा, जब उसमें जल फिर आ मिला तब शान्त हो गया। सज्जनोंकी मित्रता ऐसी ही होती है।

– भर्तृहरि

मित्रता लेन-देनका विनिमय है। – कार्डिनल ग्रेसियस

किसी भी संसारी पुरुषसे मित्रता न करे। – श्री उड़िया बाबा

अगर हम चाहते हैं कि दुनिया हमें मित्र-भावसे देखे, तो हमें भी दुनियाको मित्र-भावसे देखना चाहिए। – विनोबा

विश्वासके बिना मित्रता नहीं। – ऐपीक्यूरस

कृष्णका सखा बनना चाहिए। – विनोबा

सच्ची मित्रता समान-शील सज्जनोंमें ही होती है। – अरस्तू

मित्रताका यह विशेष अधिकार है कि मित्रके दोषोंको अपना माने और दोषोंके बावजूद अपने स्नेहकी पुनर्घोषणा करे। – गान्धी

न्याय नहीं बल्कि त्याग और केवल त्याग ही मित्रताका नियम है।

– गान्धी

अविवेकी मित्रसे ज़्यादा ख़तरनाक कोई चीज़ नहीं; उससे तो दाना दुश्मन अच्छा। – लॉ फ़ौण्टेन

मित्रताकी परीक्षा विपत्तिकालमें दी गयी मददसे होती है, और वह मदद बिला शर्त होनी चाहिए। – गान्धी

मित्रता आत्माकी कविता है। – अज्ञात

नज़रानोंसे दोस्ती ताज़ा रहती है। – जर्मन कहावत

मिथ्यात्व

आधा मिथ्यात्व परस्पर कथालापसे छूटता है, पाव भाग विचारसे छूटता है, और शेष आत्मप्रत्ययसे छूट जाता है। – योगवाशिष्ठ

भूखकी तरह प्रत्यक्ष पीड़ा देनेवाली विपरीत भावनाको जैसे बने वैसे टाले; इसमें अनुष्ठानका कोई क्रम नहीं है। – पंचदशी

मिलन

इस दुनियामें सबसे दौड़कर मिलिए, क्योंकि न जाने किस वेशमें नारायण मिल जायें। – सन्त तुलसीदास

मुक्त

जो हर हालतमें आनन्द-मग्न रहता है वह मुक्त है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जल शान्त हो या तरंगित, परन्तु समुद्रके लिए तो जल जल ही है। उसी प्रकार अदेह और सदेह मुक्तमें भेद नहीं। तरंगमें जो जल था वही शान्त जलमें भी है। – योगवाशिष्ठ

यह विश्वपरिस्पन्द मैं करता हूँ, ऐसी वासनासे रहित होकर जो कार्यमें प्रवृत्त होता है वह मुक्त है। – योगवाशिष्ठ

मुक्त कौन है? सांसारिक लोभ जिसको ग़ुलाम नहीं बना सकता।
– तपस्वी मुहम्मदअली हकीम तरमोजी

मुक्ति

तेरी ही शक्तिसे तेरा छुटकारा हो। – ज्ञानेश्वर

वासनाओं यानी ख्वाहिशोंके ज़रिये आदमीका मन संसारमें फँसा रहता है। इन ख्वाहिशोंसे आज़ाद होकर ही आत्मा आज़ाद हो सकती है।
– उपनिषद्

तू खुदाको भी पाना चाहता है और इस ज़लील दुनियाको भी हासिल करना चाहता है। यह ग़ैर-मुमकिन है। – एक सूफ़ी

जो आदमी अपना सारा संसार और अपने जीवनको प्रभुके अर्पण नहीं कर देता, वह दुनियाके इस भयानक जंगलको पार नहीं कर सकता।
– अज्ञात

शाश्वतपर नज़र जमाये क्षणिक दुनियाको देखना (और उससे प्रभावित न होना) ही मुक्ति है। – स्वामी रामदास

मुक्ति ज्ञानसे मिलती है, सर मुँड़ा लेनेसे नहीं। – अज्ञात

चित्तकी शान्ति ही सच्ची मुक्ति है। – रमण महर्षि

अपनी मुक्ति स्वयं प्राप्त कर लो। – बाइबिल

कर्तृत्व और भोक्तृत्व शान्त होनेपर शान्ति ही शेष रहती है। वही जब पुष्ट हो जाती है तो मुक्ति कहलाती है। – योगवाशिष्ठ

शास्त्र पढ़ो, देवोंको पूजो, कर्म करो, देवताको भजो, परन्तु आत्मैक्य बिना कभी मुक्ति नहीं मिलती। – विवेक-चूड़ामणि

औषध पिये बिना, केवल उसका नाम लेनेसे रोग नहीं जाता। प्रत्यक्ष अनुभव बिना ब्रह्म शब्द मात्रसे मुक्ति नहीं होती। – विवेक-चूड़ामणि

अगर तुझे मुक्तिकी इच्छा है तो विषयोंको विषके समान त्याग दे तथा क्षमा, सरलता, दया, पवित्रता और सत्यको अमृतके समान ग्रहण कर। – अष्टावक्र गीता

ईश्वरके आनन्दमें मग्न मनुष्य तर जाता है। – सामवेद

मोक्ष जानेवाले अपनी ही शक्तिसे मोक्ष जाते हैं। – महावीर चरित्र

अगर मुक्ति चाहता है तो विषयोंको विष समझकर छोड़ दे और क्षमा, दया, सत्य, सरलता और सन्तोषको अमृत मानकर अपना। – अज्ञात

सच्चिदानन्दकी प्राप्ति ही मुक्ति है और उसकी प्राप्ति होगी तब जब मनमें कोई वासना न होगी। – श्री उड़िया बाबा

यदि आप मुक्ति चाहते हैं तो विषयोंको विषकी तरह छोड़ दें। – वृद्ध चाणक्य-नीति

हे पुरुष ! तू अपनी आत्माको आशा तृष्णासे दूर रख जिससे दुःखसे मुक्ति पायगा। बन्ध और मोक्ष दोनों तेरे अन्दर मौजूद हैं। – भगवान् महावीर

अपना मोक्ष-मार्ग स्वयं बनाओ। – बाइबिल

किसी भी उपायसे अहंकार और ममताका नाश करनेका नाम ही मुक्ति है। – श्री रमण महर्षि

मुनि

जहाँ सम्यक्त्व है वहीं मुनित्व है। – आचारांग

जीव जिस ब्रह्मकी ओरसे सोये रहते हैं, संयमी उसकी ओर जाग्रत रहता है; जीव जिन विषयोंके लिए जागृत रहते हैं, मुनि उनकी ओर सोया रहता है। – ज्ञानेश्वरी

मुमुक्षु

मुमुक्षुको क्या करना चाहिए ? सत्संग, निर्ममता और ईश्वरभक्ति।
– शंकराचार्य

मुहब्बत

अल्लाह जब किसी बन्देसे मुहब्बत करता है तो उसे आज़मानेके लिए उसपर चारों तरफ़से बलाएँ भेजता है। – हज़रत मुहम्मद

मूर्ख

अपनेको ज्ञानी देखकर, मूर्खोंको सहर्ष सहन करो। – बाइबिल

मैं मूर्खसे दुष्टको अच्छा समझता हूँ; दुष्ट कभी थमता तो है।
– एलेग्ज़ेण्डर ड्यूमा

विद्वानोंका दास बनकर रहना अच्छा है, मूर्खोंका पण्डित बनकर रहना अच्छा नहीं। – सूरदास

मूर्खोंके बीच ज्ञानी ऐसा है जैसे अन्धोंके बीच सुन्दरी। – सादी

दौलतमन्द मूर्ख असहनीय बोझ है। – ऐशीलस

जो मूर्ख अपनी मूर्खताको जानता है वह धीरे-धीरे सीख सकता है; पर जो मूर्ख अपनेको बुद्धिमान् समझता है उसका रोग असाध्य है। – अफ़लातून

वह बेवक़ूफ़ है जो समझता है कि दूसरा समझता नहीं है।

– यूरोपियन कहावत

बेवक़ूफ़ोंको सिर्फ़ खुदा समझता है। – फ़ान्सीसी कहावत

पागल और साँड़के लिए रास्ता छोड़ दो। – स्पेनी कहावत

बेवक़ूफ़से दोस्ती करनेकी बनिस्बत साँपसे दोस्ती करना अच्छा। – सादी

ख़ाली दिमाग़का इलाज नहीं। – अँगरेज़ी कहावत

बेवक़ूफ़ बेवक़ूफ़ रहता है। – जर्मन कहावत

आधे बेवक़ूफ़की बनिस्बत पूरे बेवक़ूफ़से भिड़ना बहतर। – जर्मन कहावत

मूर्ख हमेशा शुरू ही करता रहता है। – फ़्रान्सीसी कहावत

हर बेवक़ूफ़को उसकी तारीफ़ करनेके लिए एक और बड़ा बेवक़ूफ़ मिल ही जाता है। – वौदलो

विद्वान् मूर्खसे बड़ा मूर्ख नहीं। – जर्मन और इटालियन कहावत

हर मूर्ख समझता है कि मैं काफ़ी चतुर हूँ। – डेनिश कहावत

विद्वान् मूर्ख अनजान मूर्खसे अधिक बड़ा मूर्ख है। – मौलियर

बारह बेवक़ूफ़ोंसे एक अक़्लमन्द आदमी नहीं बन जाता। – रस्किन

मूर्ख आदमीका जीना दुःखके लिए है। – योगवाशिष्ठ

अजगरसे दोस्ती करना ज़्यादा अच्छा है बनिस्बत इसके कि कोई जाहिल तेरा दोस्त हो। – सादी

मूर्ख सिवाय दुष्टताके कुछ नहीं कर सकता, कोई उससे सिवा बुरी बातके कुछ नहीं सुन सकता। – सादी

अक़्लमन्द आदमी तेरी जानका दुश्मन भी हो तो अच्छा है; बजाय इसके कि कोई जाहिल तेरा दोस्त हो। – सादी

जो मूर्ख है, पर जानता है कि वह मूर्ख है, वह दुनियाका सबसे अक़्लमन्द आदमी है, लेकिन जो मूर्ख है, मगर नहीं जानता कि वह मूर्ख है, वह दुनियाका सबसे बड़ा मूर्ख है। – सुक़रात

ऐ दिल ! अगर तू अक़्लमन्द और होशियार है तो जाहिलोंकी संगत मत कर, जाहिलोंसे तीरकी तरह भाग। – सादी

तार्किक युद्धमें मूर्ख पण्डितको हरा सकता है इससे यह साबित नहीं होता कि मूर्ख सत्यको पा गया है, रास्तेका एक बेडौल पत्थर बेशक़ीमती मोतीको तोड़ सकता है, तो क्या पत्थरको पसन्द किया जाय ?

– शेख़ सादी

मूर्खको उपदेश न दो, जहाँ तलवार भी टूट जाय वहाँ पत्थर मारनेसे क्या होगा ? – सन्त मलूकदास

मूर्खसे बहस करनेमें समझदारी नहीं है, दोनोंमें कौन मूर्ख है इसका पता औरोंको कैसे लगेगा ? – अज्ञात

मूर्खता

बदतरीन मर्ज़ है हिमाकत, क्योंकि सिर्फ़ इसीका कोई इलाज नहीं है।

– एडमण्ड एबाउट

मूर्ख लोग जीवनकी रक्षाके लिए धनका और धनकी रक्षाके लिए जीवनका दाव लगाते रहते हैं। – संस्कृत सूक्ति

तुम सबसे ज़्यादा बेवक़ूफ़ उस वक़्त होते हो जब किसी औरको बेवक़ूफ़ बना रहे होते हो। – रोशे

जहाँ धन है, जवानी है, पर-स्त्री है, वहाँ सब अन्धे और मूर्ख बने रहते हैं। – कपिलदेव

मूर्खताके पंख बाज़के हैं, लेकिन आँखें उल्लूकी। – डच कहावत

बेवक़ूफ़ औरत अपनी चटकमटकसे जान ली जाती है।

– फ्रान्सीसी कहावत

दूसरेके पैरके काँटा निकालकर अपने पैरमें घुसेड़ लेना बेवक़ूफ़ी है।
– डेनिश कहावत

बहरेको दो दफ़ा गाना सुनाना बेवक़ूफ़ी है। – डेनिश कहावत

मूर्तिपूजा

आनन्दका अधिष्ठान बाह्य मूर्ति नहीं, आन्तरिक प्रेम है। – ज्ञानेश्वर

मूर्तिका मोहक सौन्दर्य ईश्वरके अनन्त गुणोंका प्रतिबिम्ब मात्र है।
– ज्ञानेश्वर

मृतक

जीतेजी कौन मर चुका है? उद्यमहीन। – शंकराचार्य

मृत्यु

जैसे फाँसी पानेवाले आदमीकी मौत पास आती जाती है, वही हाल यहाँ हर संसारीका है।

तू मौतसे क्यों डरता है? क्या डरनेवालेको यमराज छोड़ देता है?
– संस्कृत सूक्ति

अपने सिरपर सवार मौतको अगर लोग देख सकें तो और तो क्या भोजन भी उन्हें अच्छा न लगे। – संस्कृत सूक्ति

लोग दूसरोंकी दौलत हड़पना चाहते हैं, पुत्रोंकी टोलियाँ चाहते हैं, भोगोपभोगका सामान चाहते हैं, दुश्मनोंके सिर कुचलना चाहते हैं, लेकिन यह कोई नहीं कहते कि हम मरना चाहते हैं। – संस्कृत सूक्ति

जैसे बलिका भेड़ा अपने सिरपर रखे हुए जौ, अक्षत आदिको बड़ी प्रसन्नतासे खाता है वैसे ही मौतसे बेखबर इनसान भी सांसारिक भोगोंमें लिपटा रहता है। – संस्कृत सूक्ति

मेल

क़दम मिलाकर चलो। – जवाहरलाल नेहरू

मेहनत

जो जिस्मानी मेहनत नहीं करता उसे खानेका हक़ कैसे हो सकता है ?

– महात्मा गान्धी

तू सिर्फ़ पसीनेकी रोटी खायेगा। – जेनेसिस

जितनी ही मेहनतसे लोग नरकमें जाते हैं उससे आधीसे स्वर्गमें जा सकते हैं। – एमर्सन

मेहमान

मैं तो सन्त होमरके इस क़ौलका क़ायल हूँ – 'आनेवाले मेहमानका स्वागत करो; जानेवाले मेहमानको जल्दी जाने दो।' – पोप

कोई मेहमान इतना अच्छा नहीं है कि तीन दिन बाद अपने मेज़बानको बुरा न लगने लगे। – प्लॉटियस

मैं

अहो, मैं यही नहीं जानता कि मैं क्या हूँ ? – अथर्ववेद

मोह

यह जीव मोहवशात् दुःखको सुख और सुखको दुःख मान बैठा है। यही कारण है कि इसे मोक्ष नहीं मिल रहा ! – मुनि रामसिंह

जिन बातोंको हमने हज़ार अनुभवसे दुःखदायी जान लिया है फिर भी मोहवश उन्हींमें प्रवृत्त होते रहते हैं। – संस्कृत सूक्ति

जिस मोहके कारण आदमी क्षणिक चीज़को शाश्वत मान लेता है उस मोहसे बड़ी बेवक़ूफ़ी क्या होगी ? – अज्ञात

मोक्ष

दया, नम्रता, दीनता, क्षमा, शील और सन्तोष जो इनको लेकर सुमिरन करेगा वह निश्चय ही मोक्ष पायेगा। – चरनदासजी

जो हर रोज़ क्षण-भर भी भगवान्के द्वारपर खड़ा रहता है, उसे मोक्षाभिमुख हो गया समझो। – ज्ञानेश्वर

मानव जीवनका लक्ष्य मोक्ष है । – महात्मा गान्धी

सुनो, ज्ञान सर्वस्व कहता हूँ; सुनकर अवधारण करो; भोगेच्छामात्र बन्ध है और उसका त्याग मोक्ष । – योगवाशिष्ठ

हृदयमें जो निर्मल और अचल चेतन शक्ति 'मैं' रूपसे रहती है, वह अहंकारका त्याग करके मोक्षदायिनी हो जाती है । – रमण महर्षि

इच्छा मात्र अविद्या है, उसका नाश मोक्ष है । वह मोक्ष असंकल्प मात्रसे सिद्ध होता है । 'मैं ब्रह्म नहीं हूँ' इस सुदृढ़ संकल्पसे बन्ध होता है 'मैं ब्रह्म हूँ' इस सुदृढ़ संकल्पसे मोक्ष होता है । – योगवाशिष्ठ

सत्संगतिसे सधनेवाले भक्ति-योगके सिवा मोक्षका उपाय नहीं ।
– भागवत

मोक्षके चार द्वारपाल हैं – शम, विचार, सन्तोष और सत्संग ।
– योगवाशिष्ठ

जो सदा विवेकी, संयत और पवित्र रहता है वह उस परम पदको प्राप्त कर लेता है जहाँसे लौटकर फिर जन्म नहीं लेना पड़ता ।
– कठोपनिषद्

गंगाके समान कोई तीर्थ नहीं है; सत्यसे कढ़कर कोई तप नहीं है; शान्तिके समान कोई बन्धु नहीं है; मोक्षसे बड़ा कोई लाभ नहीं है । – नारद० पूर्व०

हमारे कर्म सामुदायिक हैं: उनके फल भी सामुदायिक हैं; उनकी परम्परा विश्वमें सतत चालू है । इसलिए किसी अकेलेको ही मोक्ष मिले, ऐसी आशा करनेका कुछ भी आधार या अवकाश नहीं है । – नाथजी

तृष्णाको खत्म कर देना ही मोक्ष है । – महाभारत शान्तिपर्व

जो मोक्ष जाना चाहे वह संसर्गका त्याग कर दे । – शुभचन्द्राचार्य

शास्त्रकी बातें परोक्ष हैं; वे जीवको योग्य बनानेके लिए हैं । मोक्ष प्राप्त करनेके लिए ज्ञानीकी प्रत्यक्ष आज्ञा चाहिए । – श्रीमद्राजचन्द्र

जिसमें ममता नहीं है वह शाश्वत पदको प्राप्त होता है। — तत्त्वामृत

मोक्षके आनन्दका अनन्तवाँ भाग भी इस संसारमें नहीं है। — योगशास्त्र

आत्मज्ञानीको भी यदि हेय और उपादेय रहा तो वह मोक्षके लायक़ नहीं है। — उपदेशसाहस्री

माता, मेय, प्रमाण, देश, काल, दिक्, भाव, अभाव, विवर्त इत्यादि सब शिवपंकमय है। — योगवाशिष्ठ

मोक्ष क्या है ? अविद्याकी निवृत्ति। — शंकराचार्य

आत्म-ज्ञानके बिना मोक्ष नहीं मिलता। — विवेक-चूड़ामणि

पशु, म्लेच्छ आदि भी यदि इस ज्ञानदशाको प्राप्त हो तो वह सदेह हो या विदेह, निःसंशय मुक्त है। — योगवाशिष्ठ

हर आदमीको अपने ही रास्ते मोक्ष जाना पड़ेगा। — फ्रैडरिक महान्

हे पार्थ, जिसे मोक्ष-सुखके प्रति श्रद्धा होती है, मोक्ष-सुखके सिवा उसकी भला और कौन-सी गति हो सकती है ?

— भगवान् श्रीकृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

मौत

क्या मौत आखिरी नींद है ? नहीं, वह अन्तिम आखिरी जागरण है।

— स्कॉट

जिसे मौत कहते हैं, वह चीज़ है जिसपर आदमी रोते हैं, मगर फिर भी तिहाई ज़िन्दगी सोनेमें गुज़ार दी जाती है। — बायरन

हर रोज़ जीव यम-मन्दिर जा रहे हैं, फिर भी और लोग यहाँ स्थिर रहना चाहते हैं, इससे बड़ा आश्चर्य क्या होगा ? — महाभारत (वन पर्व)

मौत कोई दैत्य नहीं, सबसे सच्चा दोस्त है। — गान्धी

यमराज ही एक ऐसे देवता हैं जिन्हें उपहार तृप्त नहीं कर सकते ।

— ऐशीलस

हर दिनको अपनी ज़िन्दगीका आख़िरी दिन समझो और हर कामको आख़िरी काम । — सन्त मारकस अरलियस

निश्चय ही अन्तकालमें मौत आदमीको उसी तरह पकड़कर ले जाती है जैसे शेर हिरनको । उस वक़्त माता-पिता, भाई-बन्धु कोई मददगार नहीं होते । — भगवान् महावीर

मौत हमारे चेहरोंके आच्छादनोंके सिवा और किसी चीज़को नहीं बदलती । — ख़लील जिब्रान

जैसे वनमें नयी-नयी घासकी खोजमें विचरते हुए अतृप्त पशुको उसकी घातमें लगा हुआ व्याघ्र सहसा दबोच लेता है, उसी प्रकार भोगोंमें लगे हुए अतृप्त मनुष्यको मृत्यु उठा ले जाती है । — नारद० पूर्व

ज़िन्दगी और मौतमें कौन बहतर है, इसका ज्ञान परमात्माको और सिर्फ़ परमात्माको ही है । — सुक़रात

मरनेमें श्रेय है या जीनेमें श्रेय है यह हम नहीं जानते । इसलिए जीनेसे प्रसन्न और मरनेसे भयभीत नहीं होना चाहिए । — गान्धी

आत्माका ज्ञान लेनेपर आदमी मौतसे नहीं डरता । — अथर्ववेद

मौन

जो करना हो जल्दी कर लें, जो करें ख़ूब विचारकर करें । सतत विचारसे सदा नये उपाय निकालें । एकान्त, शान्त मौन होकर आत्मामें पहुँचें, वहाँ कोई कठिनाई सामने नहीं आयेगी । — समर्थ गुरु रामदास

मौन नींदकी तरह है, वह ज्ञानको ताज़ा कर देता है । — बेकन

बेवक़ूफ़की सबसे बड़ी अक़्लमन्दी ख़ामोशी है । अक़्लमन्दका ज़्यादा देर तक ख़ामोश रहना बेवक़ूफ़ी है । — क्वार्ल्स

मौनके वृक्षपर शान्तिका फल लगता है । — अरबी कहावत

तिरस्कार दिखानेका सर्वोत्तम तरीक़ा है मौन । — बर्नार्ड शॉ

बोलना क़ुदरती तौरसे आता है, चुप रहना समझदारीसे ।
— जर्मन कहावत

वहाँ चुप हो जाओ जहाँ विचारका आदर नहीं और जहाँ सत्य अप्रिय लगता हो । — फ़ुलर

ऐसे भी हैं जिनकी ख़ामोशी औरोंकी ख़ुशगोइयोंसे बढ़कर होती है ।
— डिसराइली

मौन रहो या फिर ऐसी बात कहो जो कि मौनसे बहतर हो ।
— जर्मन कहावत

तूफ़ानसे पहले और पीछे जैसे शान्ति नैसर्गिक है, उसी तरह कर्मशीलताके पूर्व और पश्चात् मौन आवश्यक है । — अज्ञात

अगर तुम झगड़ेका सामान देखो तो ख़ामोश हो जाओ; इसलिए कि ख़ामोश-मिज़ाज झगड़ेका फाटक बन्द कर देता है । — शेख़ सादी

य

यम-नियम

सत्य, क्षमा, आर्जव, ध्यान, क्रूरताका अभाव, हिंसाका सर्वथा त्याग, दम, प्रसन्नता, माधुर्य (मधुर बरताव करना), और मृदुलता (सबके प्रति कोमल भाव रखना) — ये दस 'यम' कहे गये हैं । शौच, स्नान, तप, दान, मौन, यज्ञ, स्वाध्याय, व्रत, उपवास और उपस्थ इन्द्रियका दमन — ये दस 'नियम' बताये गये हैं । — स्कन्द पुराण

यश

मानव जातिके सुख-संवर्धनके प्रयत्न करनेसे ही सच्चा और स्थायी यश मिलता है । — चार्ल्स सुमनेर

किसीने एक बिच्छूसे पूछा : "तू जाड़ेमें बाहर क्यों नहीं निकलता ?" उसने जवाब दिया : "मैं गरमीमें क्या नाम पैदा करता हूँ जो जाड़ेमें बाहर निकलूँ ?" — सादी

बिना किसी शुभ्र गुणके यश नहीं मिलता। — समर्थ गुरु रामदास

तुम इस बातमें यश प्राप्त करो कि तुम्हें कोई इच्छा नहीं थी।
— समर्थ गुरु रामदास

यज्ञका मर्म है त्याग, यज्ञमें वासनाकी, राग-द्वेषकी, आहुति देनी चाहिए।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

याचना

हमें जो माँगना है सो भगवान्‌से ही माँगें। — श्री ब्रह्मचैतन्य

माँगना मरण समान है, माँगनेसे मर जाना अच्छा। — कबीर

याचना करनेसे गौरव समाप्त हो जाता है। — संस्कृत-सूक्ति

भगवान् भोजन और वस्त्र दे, साधु सन्त अधिक नहीं माँगते।
— रज्जबजी

आदर, मान, महत्त्व और बालापनका स्नेह ये सब गये, ज्यूँही कहा 'कुछ दो'। — सन्त मलूकदास

ज्योंही मनुष्य भगवान्‌में एकाकार होता है, उसकी याचना समाप्त हो जाती है। — एमर्सन

भगवान्‌का भजन करो, पर उनसे कुछ माँगो मत; क्योंकि जितना भगवान् दे सकते हैं, उतना तुम माँग नहीं सकते। — श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

दया-क्षमा-शान्तिकी सिद्धि भी मुझे उपाधिरूप प्रतीत होने लगी है। इसलिए मुझे केवल तेरे नामकी समाधि प्राप्त हो — ज्ञानेश्वर

(विरक्त) रोटीके सिवा कुछ न माँगे चाहे मर जाय। — श्री उड़ियाबाबा

किसीसे यों कहना – 'दो' मरणके समान है। मर जाना भला है, किन्तु वाणी-द्वारा अथवा अन्य किसी चेष्टा-द्वारा अपनी आवश्यकताकी सूचना देना अपना पतन करना है। परोपकारके लिए भी माँगना अनुचित है। साधुको भूख लगनेपर मधुकरी माँग लेनी चाहिए। मधुकरी माँगना गृहस्तियोंको कृतार्थ करना है; किन्तु 'दो' इस शब्दके कहते ही शरीरमें स्थायी रूपसे रहनेवाले पाँच देवता चले जाते हैं। पाँच देव ये हैं – ह्री, श्री, धी, ज्ञान और गौरव। केवल माँगनेके संकल्प मात्रसे चेष्टामें मलिनता आ जाती है। माँगना बड़ा भारी पाप है। – उड़िया बाबा

माँगनेवाला अप्रिय होता है। – जातक

युद्ध

जबतक लोग कमर कसकर युद्धका खात्मा नहीं कर डालते, तो यक़ीनन् युद्ध ही उनका खात्मा कर डालेगा। – स्वाँसन न्यूसेट

आदमी अगर अपनी भलाई चाहता है तो फूलसे भी युद्ध न करे।

– अज्ञात

अपनी आत्माके साथ ही युद्ध करना चाहिए। बाहरी शत्रुओंके साथ युद्ध करनेसे क्या लाभ? – भगवान् महावीर

युद्ध छिड़ा, नरक खुला। – इटालियन कहावत

युद्ध युद्धको प्रश्रय देता है। – शिलर

योग

बुद्धियोगका तत्त्व यह है कि कर्म तो बराबर करते रहना चाहिए, परन्तु उन कर्मोंके फलपर कभी आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। इस बुद्धियोगके सध जानेपर ऐहिक सुखोंका तो कभी नाश होता ही नहीं, मोक्ष भी अपने हिस्सेमें रखा रहता है। – ज्ञानेश्वरी

योग माने समत्व – आत्माकी शान्ति और आनन्दकी अविचल स्थिति।

– स्वामी रामदास

विषयवस्तुओंके पास होनेपर भी उधर ध्यान न जाय तो समझ लो कि वियोगाभ्यास ख़त्म हो गया और योगाभ्यास शुरू हो गया। – उपासनी

योग माने जोड़, माने जीव और शिवको एक कर देना। – उपासनी

योगका मूल है दयादान। – गोरखनाथ

चित्तवृत्तिके निरोधको योग कहते हैं; और वह अभ्यास और वैराग्यसे होता है। – पातंजल सूत्र

योग-क्षेम

जिसकी तू उपासना करता है वह तेरी आवश्यकताओंको अवश्य पूर्ण करेगा, तुझे पैदा करनेसे पहले ही ईश्वरने तेरे पेटका प्रबन्ध कर दिया है।
– रामकृष्ण परमहंस

योगी

धैर्य जिसका पिता है, क्षमा जननी है, शान्ति पत्नी है, सत्य पुत्र है, दया बहन है, संयम भाई है, भूमि शय्या है, दिशाएँ वस्त्र हैं, और ज्ञानामृत भोजन है, ऐसे योगीको किसका भय हो सकता है! – संस्कृत-सूक्ति

योगीकी बुद्धि निज-रूपमें अचल रहती है। – ज्ञानेश्वरी

कर्मफलका आश्रय लिये बग़ैर जो कर्तव्य कर्म करता है वह योगी है, वह संन्यासी है, अग्निका त्याग करनेवाला या अक्रिय हो जानेवाला नहीं।
– गीता

योगी श्रेष्ठको शुभाशुभ बातें आत्मवत् लगनेके कारण क्लेशकारक नहीं होतीं। – ज्ञानेश्वरी

योग्यता

जो विवेकी, विरक्त, शमी, दमी और मुमुक्षु हो, उसीमें ब्रह्मविचारकी योग्यता मानी जाती है। – शंकराचार्य

अक़्लमन्द कमालको बन्दन करता है; बेवक़ूफ़ दौलतको। — फ़ुर्जेलियर

युरॅप

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि आजका युरॅप ईश्वर या ईसाई धर्मका उपासक नहीं बल्कि शैतानका उपासक है, और शैतान सबमें अधिक सफल तब होता है जब कि अपने होठोंपर ईश्वरका नाम लिये आता है। युरॅप सिर्फ़ कहनेके लिए ईसाई है, असलमें तो वह कुवेरका उपासक है।

— महात्मा गान्धी

र

रफ़्तार

भागे हुए घोड़ेकी रफ़्तारकी कुछ क़ीमत नहीं। — जीनकोक्टो

दौड़नेसे क्या फ़ायदा, जब कि हम सही सड़कपर नहीं हैं?

— जर्मन कहावत

रहस्य

रहस्य उसीपर प्रकट हो सकता है जिसे तीव्र अन्तर्दृष्टि प्राप्त है और जो एक मिनिट भी फ़िज़ूल नहीं खोता। — समर्थ गुरु रामदास

अपने आन्तरिक रहस्योंको जाननेवाले ईश्वरकी दया, प्रेम और भक्तिका तमाशा नहीं देखते। — सनाई

विश्वका रहस्य है व्यक्तित्व। — जे० सी० पोविस

रक्षण

सुष्टोंका रक्षण करना सच्चा धर्म है। इसके लिए भगवान्‌ने अवतार लिया। — श्री ब्रह्मचैतन्य

रक्षा

तुम आत्माकी रक्षा करो, हठपूर्वक वाद न करो, यह जग कँटीला जंगल हैं, देख-देखके पग रखना। — गोरखनाथ

कृपण, पापी और धूर्तसे हमारी रक्षा कर। — वेदवाणी

मनुष्योंके शूर और कल्याणकारी मित्र एवं रक्षक बनो। — ऋग्वेद

शूरतारहित संरक्षणके साधनोंसे हमारा रक्षण करो। — वेदवाणी

धैर्यसे सब संरक्षक शक्तियोंसे अपना संरक्षण करो। — वेदवाणी

रंज

समय तेरे रंजको कम करनेमें बड़ा वक्त लगायेगा; सम्यक्ज्ञानकी शरण ले, वह जल्द राहत देगा। — ग्रोटियस

रंजमें अपने बाल उखाड़ने लगना मूर्खतापूर्ण है, गंजेपनसे रंज कम नहीं हो जाता। — सिसरो

जो हो चुका और जिसका कोई उपाय नहीं किया जा सकता उसका रंज न करो। — शेक्सपीयर

रंजन

आदमी तभीतक विवादी और जनरंजक रहता है जबतक कि आत्म-रसके सुखका जानकार नहीं बन जाता। — हृदय-प्रदीप

राग

इस कायाकी हड्डियाँ तक अलग-अलग हो जायेंगी, प्रियजन किस शुमारमें हैं ? — बोधिचर्यावतार

प्रिय वस्तुसे शोक और भय उत्पन्न होते हैं, जो प्रियके बन्धनसे मुक्त है उसे शोक और भय नहीं। — धम्मपद

जिसमें अंश मात्र भी राग विद्यमान है, वह शास्त्रोंका ज्ञाता भले ही हो, आत्मा और अनात्माका ज्ञान उसे नहीं है। — आचार्य कुन्दकुन्द

राग-द्वेष

चित्तमें राग-द्वेष समा जानेपर कौन पशु नहीं हो जाता ? — संस्कृत-सूक्ति

शान्ति बिगाड़नेवाली दो ही चीज़ें हैं – राग और द्वेष। – श्री ब्रह्मचैतन्य

रागमें न फँसो; द्वेषमें न फँसो, राग और द्वेष दोनों समान रूपसे घातक हैं। – श्री ब्रह्मचैतन्य

राजद्वार

राजाके दरवाज़ेपर पैर न रखे। – गोरखनाथ

राजनीति

मेरी राजनीति भी मेरे धर्मसे निकली है। – गान्धी

मेरे नज़दीक धर्मशून्य राजनीति महा ग़लीज़ चीज़ है, हमेशा दूर रखने लायक़। – महात्मा गान्धी

रामनाम

व्यासादिक गवाह हैं कि भगवान्, नामस्मरण करनेवालेके वशीभूत हो जाते हैं। ज्ञानेश्वर

जो प्रभुका नाम लेंगे वो तर जायेंगे। – बाइबिल

नाममें प्रेम नामसे ही आयेगा। इस प्रेमके लिए विषयप्रेम कम करना चाहिए। नामपर दृढ़ निष्ठा चाहिए। नाम ही तारेगा, नाम ही सब-कुछ करेगा, ऐसा दृढ़ भाव चाहिए। वह रखकर व्यवहारमें प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन सफलता देना परमात्माके हाथ है ऐसा भाव चाहिए।

— सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

कामको छोड़कर ओ दीवाने, राम कह। मैं कोरी बात कहता हूँ कि हरिका नाम अभय पददाता है। – कबीर

आग कहने मात्रसे कोई नहीं जल जाता; भेद जाने बग़ैर राम कहनेसे क्या ! – कबीर

सब-कुछ विचार कर एक शब्दमें सब कह दिया – विषय-विकार छोड़कर निर्गुण नाम भजो। – कबीर

सब सन्तजन यही कहते आये हैं कि नामके सिवाय और साधन नहीं है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जहाँ नाम है वहाँ राम है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

नाम ही साधन है; नाम ही साध्य है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

नाम लेते ही राम हमारे पास आ जाते हैं। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जो काम राम करता है वही काम नाम करता है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

गुह्यसे गुह्य बात मैं तुम्हें बतलाता हूँ – वह है रामनामका प्रेम। – श्री ब्रह्मचैतन्य

रामके पास रहनेवाला, और दावेके साथ रामके पास ले आनेवाला, राम-नामके सिवाय और कोई साधन नहीं है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

नामसे वासनाका क्षय हो जाता है, और वासनाक्षयका नाम ही मोक्ष है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

"नाम लेनेमें प्रेम क्यों नहीं आता ?"
"नाम नहीं लेते इसलिए।" – श्री ब्रह्मचैतन्य

देवके गुण व रूपसे उसके गुण व रूप मिलेंगे; लेकिन उसके नामसे वह जैसा होगा तैसा पूरेका पूरा मिलेगा; इसलिए 'नाम' का साधन श्रेष्ठ है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

हमारा जीवन रामके वशमें है और राम नामके वशमें है। – श्रीब्रह्मचैतन्य

वेदान्ती जिसे 'ब्रह्म' कहते हैं, भक्त उसे ही 'नाम' कहते हैं। – श्री ब्रह्मचैतन्य

नाम-स्मरणमें शुरूसे ही भगवान्से सम्बन्ध है। — ज्ञानेश्वर

हरि-नाम-स्मरणमें ज्ञान और अज्ञानका विशेष मूल्य नहीं है। मुख्य वस्तु है भाव। — ज्ञानेश्वर

'राम' कहते ही सब पाप कट जाते हैं। — ज्ञानेश्वर

ईश्वर-प्राप्तिके तमाम मार्गोंमें नाम-स्मरणका मार्ग अत्यन्त सरल और अचूक है। — निवृत्तिनाथ

राम और उसका नाम एक ही है। — ज्ञानेश्वर

आकाशसे भी ज्यादा व्यापक है नाम! — निवृत्तिनाथ

मैंने जीवन-समुद्रमें डुबकी मारी और रामनामका रत्न पाया।
— स्वामी रामदास

रामनाम स्वयं ईश्वर है। — स्वामी रामदास

ईश्वर, ईश्वरकी कृपा और ईश्वरका नाम तीनों एक ही चीज हैं।
— स्वामी रामदास

नाम-जपसे चित्तशुद्धि होती है और सत्यकी प्रतीति होती है।
— स्वामी रामदास

हम प्रेम और विश्वाससे उसका नाम लें और उसे हमारे साथ कुछ भी करने दें। — स्वामी रामदास

रामके साम्राज्यकी कुंजी रामनाम है। — स्वामी रामदास

हे खगेस, सुनो! रामनाम बिना जीवनके क्लेश नहीं मिटते। — रामायण

श्रीरामनामके बराबर कुछ भी नहीं है। जो भी श्रीरामनाम जपता है उसके सब काम पूरे हो जाते हैं और उसे मोक्षकी भी प्राप्ति हो जाती है।
— श्री हरिहरबाबा

जो ईश्वरका नाम लेंगे वे मुक्त हो जायेंगे। — बाइबिल

सच्चा डॉक्टर तो राम ही है। — महात्मा गान्धी

निरक्षरकी भी शुद्धिका द्वार खुला रहना चाहिए, वह नामजपसे होता है।
– महात्मा गान्धी

जब-जब मुझपर विकट प्रसंग आये हैं, मैंने रामनाम लिया है और मैं बच गया हूँ। अनेक संकटोंसे रामनामने मेरी रक्षा की है। – महात्मा गान्धी

श्रद्धापूर्वक रामनामका उच्चारण करनेसे एकाग्रचित्त हो सकते हैं।
– महात्मा गान्धी

विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ उपाय रामनाम है।
– महात्मा गान्धी

सत्य और अहिंसापर अमल करनेवालोंके लिए सबसे अच्छी दवाई रामनाम है। – महात्मा गान्धी

रामनामसे आदमी सुरक्षित रहता है। शर्त यह है कि नाम भीतरसे निकलना चाहिए। – महात्मा गान्धी

कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदयसे रामनाम ले तो व्याधि नष्ट होनी चाहिए। – महात्मा गान्धी

"राम न सकहिं नाम गुण गाई।" – रामायण

रामनामके बिना जीवनके क्लेश नहीं मिट सकते। – रामायण

रामनाम अमृतसे भी मीठा है। – सन्त वचन

रामनाम अचूक रूपसे मेरी मदद करता है। – महात्मा गान्धी

रामराज्य

रामराज्यमें, मंगलावाणीके सिवा दूसरी वाणी ही किसीके मुँहसे नहीं निकलती। – तुकाराम

राय

राय खुश करनेके लिए नहीं, मददगार होनेके लिए दो। – सोलन

अपने दिलकी ही रायपर चल : क्योंकि उससे बढ़कर कोई तेरा वफ़ादार नहीं। – ऐपोक्रीफ़ा

राय अण्डीके तेलकी तरह है, देना आसान मगर लेना महा हवलनाक।
— जोश बिलिंग्ज

भीड़में कभी राय न दो। — अरबी कहावत

जो राय दो संक्षेपमें दो। — होरेस

माँगे बग़ैर कभी राय न दो। — जर्मन कहावत

हर बेवक़ूफ़ राय देना चाहता है। — इटालियन कहावत

विश्वके पास इतनी दौलत कभी न होगी कि वह किसी ईमानदार आदमी-की राय ख़रीद सके। — सन्त ग्रीगरी

दो रायोंके बीच तू कबतक रुका रहेगा? — बाइबिल

दुनियामें प्रतिध्वनियाँ बहुत हैं, ध्वनियाँ कम। — गेटे

रिश्तेदार

सत्य मेरी माता है, ज्ञान पिता है, धर्म भाई है, दया मित्र है, शान्ति स्त्री है, और क्षमा पुत्र है – ये छह ही मेरे बान्धव हैं। — चाणक्य-नीति

पिछले जन्मोंमें तू असंख्य माँ, बाप, बेटे और बेटियाँ बना चुका है।
— समर्थ गुरु रामदास

इस अनन्त भव-भ्रमणके दौरानमें सब जीवोंसे सब प्रकारके रिश्ते हो चुके हैं। — जैनधर्म

रूप

रूपसे प्रीति मत कर। रूपपर खिंचते हुए नेत्रोंको रोक। रूपासक्त पतिंगे-का दीपशिखापर हाल देख! — मुनि देवसेन

कुरूप मनसे कुरूप चेहरा अच्छा। —जेम्स ऐलिस

रोटी

रोटीके ब्रह्मको पहचाननेके बाद ज्ञानके ब्रह्मसे साक्षात्कार अधिक सरल हो जाता है। — राधाकृष्णन्

ल

लज्जा

लज्जा सुन्दरता और सद्गुण शीलताका क़िला है। — डिमेड्स

लज्जाका आकर्षण सौन्दर्यसे भी बढ़कर है। — शेक्सपीयर

लड़ाई

विजय निश्चित हो तो कोई भी बुज़दिल लड़ सकता है, मगर मुझे ऐसा आदमी बताओ जो पराजय निश्चित होनेपर भी लड़नेका पराक्रम दिखलाता है। — जॉर्ज ईलियट

लक्ष्मी

आनन्द ही सच्ची लक्ष्मी है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

जहाँ पति-पत्नीमें कलह नहीं होता वहाँ लक्ष्मी स्वयं आ जाती है।
— चाणक्य-नीति

कर्मठ, दक्ष, क्षमो, दमीके पास लक्ष्मी नित्य रहती है। — अज्ञात

मनोवृत्तिमें मोह उत्पन्न करती है, गुणावलिका खण्डन करती है, वियोग-परा लक्ष्मी महादुःख जालमें उतारती है। मनुष्य अपने या दूसरोंके लिए शीतल मृदुस्पर्शवाला तभी तक रहता है जबतक कि वह लक्ष्मीकी बरफ़ीली हवासे कठिन नहीं हुआ। — योगवाशिष्ठ

जैसे हवा आगको भड़काती है, दूध साँपके ज़हरको बढ़ाता है, वैसे ही दुष्टकी लक्ष्मी लोक-विनाशिनी होती है। — कपिलदेव

लक्ष्मीके मदसे विद्वान् भी मोहित हो जाते हैं। उसके रहते कोई अपने वास्तविक स्वरूपको कैसे जान सकता है? इसलिए उस लक्ष्मीको छीनकर महान् उपकार करनेवाले समस्त लोकके साक्षी भगवान् नारायणको मैं नमस्कार करता हूँ। — भक्त प्रह्लाद

लक्ष्य

सबका लक्ष्य है प्रेमपूर्ण हृदय और स्वतन्त्र, आनन्दमय निस्स्वार्थ जीवन।
– स्वामी रामदास

जीवनका लक्ष्य स्वतन्त्रता है। पूर्ण मुक्तावस्था प्राप्त करनेके लिए नियमन अंगीकार किया जाता है। – स्वामी रामदास

इससे बड़ी और कोई घातक भूल नहीं कि हम मंज़िलको मंज़िले-मक़सूद समझ लें या किसी आरामगाहपर ज़रूरतसे ज़्यादा देर तक ठहरे रहें।
– अरविन्द

दुनिया हटकर उस शख्सको रास्ता दे देती है जो जानता है कि वह कहाँ जा रहा है। – डी० एस० जौडर्न

सत्पुरुषकी आज्ञाका पालक निरीह रहकर सिर्फ़ एक आत्मोन्नतिका लक्ष्य रखकर देहदमन करे। – आचारांग

लक्ष्य रखना काफ़ी नहीं है, उसे प्राप्त करना चाहिए। – इटालियन कहावत

आदमीका अन्तिम लक्ष्य है ईश्वरका साक्षात्कार, इसलिए उसकी सब प्रवृत्तियाँ – सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक – ईशप्राप्तिके लक्ष्यको ध्यानमें रखकर ही चलनी चाहिए। मानवजातिकी तत्काल सेवा उस प्रयासका एक आवश्यक अंग है, क्योंकि ईश्वरको पानेका एक ही उपाय है कि ईश्वरको उसकी सृष्टिमें देखा जाय और उससे एकमेक हुआ जाय।
– महात्मा गान्धी

सबका साध्य एक ही है; और वह साध्य ब्रह्मके साथ समरसता प्राप्त करना है। – ज्ञानेश्वरी

लाभ

संसारमें बड़े-बड़े लाभ उठानेवाले और यश प्राप्त करनेवाले हुए, लेकिन अपनी कमाई और कीर्तिको लेकर न जाने कहाँ चले गये! – संस्कृत-सूक्ति

अशुभ लाभ तत्क्षण जरा मजेदार लगते हैं, लेकिन बादमें स्थायी पीड़ा पहुँचाते हैं। — ऐण्टीफ़ेन्स

उसे शहद बहुत महँगा पड़ता है जिसे उसको काँटोंसे चाटना पड़े।
— डच कहावत

उच्चतम नियमानुसार हर-एकको वह चीज़ मिल जाती है जिसे वह इस्तेमाल कर सकता है। — थोरो

शुभ लाभ सुखमें नहीं है, बल्कि शान्तिसे भोगे जानेवाले दुःखमें है।
— सन्त पिगल

जो लाभ आत्माकी प्रतिष्ठाके साथ न हो, उसे कौन चाहेगा? —महाभारत

महादुर्लभ मनुष्य जन्मको पाकर भी जो काम-परायण हो दूसरोंसे द्वेष करता है और धर्मकी अवहेलना करता है, वह महान् लाभसे वंचित रह जाता है। — महर्षि पराशर

लालची

लालची पूरी दुनिया पानेपर भी भूखा रहता है। मगर सन्तोषी एक रोटीसे ही पेट भर लेता है। — शेख सादी

लिपि

हमारे देशमें लिपि-भेद एक बड़ी भारी दीवार है। अगर एक लिपि हो तो सब भाषाएँ आसानीसे सीखी जा सकें। सारे युरॅपमें एक ही लिपि चलती है। यहाँ भी एक लिपि होनी चाहिए। — विनोबा

लीनता

जैसे कुएँकी छाया बाहर नहीं निकलती, उसी तरह मन-मनसा हरिमें रखो। — रज्जबजी

लीला

ईश्वरका हर काम एकत्व, सन्तुलन और आनन्दके लिए है।
— स्वामी रामदास

मायाका खेल जब हमें मालूम हो जाता है तो वह लीला बन जाती है ।

– श्री ब्रह्मचैतन्य

जो दुःख रूप है सो माया है; जो आनन्द रूप है सो लीला है ।

– श्री ब्रह्मचैतन्य

विश्वास करो, मंगलमय श्री हरि तुम्हारे साथ निरन्तर खेल कर रहे हैं । दुःखी क्यों होते हो ? दुःखी होना अपनेको अविश्वासकी अवस्थामें फेंकना है । – श्री उड़ियाबाबा

जबतक चित्त लीन नहीं होता तबतक क्रियाके सम्बन्धसे विकार हुए बिना नहीं रह सकता । चित्त लीन हो जानेपर फिर जो क्रिया होती है वह केवल लीला मात्र होती है; उसमें आस्था न रहनेके कारण कोई विकार नहीं होता । – श्री उड़ियाबाबा

इस सबको आनन्दकी लीला समझो । –स्वामी रामदास

जरूरत सिर्फ़ उसकी लीलामें शामिल होने लायक़ बननेकी है ।

– स्वामी रामदास

लेखक

वह लेखक जो अपनी ही किताबोंके बारेमें बोलता है, तक़रीबन् उतना ही बुरा है, जितनी वह माँ, जो अपने ही बच्चोंकी बातें करती है ।

– डिसराइली

लेन-देन

देकर भूल जाय, लेकर कभी न भूले । – सेनेका

ईश्वर ही देता है, ईश्वर ही लेता है; क्योंकि सब-कुछ वही है ।

– स्वामी रामदास

लोक-प्रियता

जो लोकप्रिय है वह अच्छा आदमी है । वह अजर-अमर हो जाता है ।

– श्री ब्रह्मचैतन्य

लोकलाज

सब काम मटियामेट करनेके लिए लोकलाज साथ लगी रहती है।

– सन्त तुकाराम

लोगोंकी शरमका ख़याल रखेंगे तो कुछ नहीं कर सकेंगे।

– सन्त नन्दलाल

लोकसंग्रह

साधकके लिए लोक-संग्रह अत्यन्त विघ्नकारी है। साधन परिपक्व हो जानेपर लोक-संग्रह हानिकर नहीं होता। – श्री उड़िया बाबा

लोकाचार

लोकाचार छोड़ दो

लोभ

दुनियामें अत्याचार, अनीति, अधर्म, असमाधान इन सबका कारण यह है कि आदमी ज़्यादा लोभी हो गया है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

सबसे नीच लोभी आदमी। – तपस्वी यूसुफ़ हुसेन रथी

कैलास पर्वतके समान सोने-चाँदीके असंख्य पर्वत भी लोभी मनुष्यकी इच्छा पूरी नहीं कर सकते; उसकी इच्छा आकाशके समान अनन्त है।

– भगवान् महावीर

लोभी आदमी रेगिस्तानकी बंजर रेतीली ज़मीनकी तरह है जो तृष्णासे तमाम बरसात और ओसको सोख लेती है, मगर दूसरोंके लाभके लिए कोई फलद्रुम जड़ी-बूटी या पौधा नहीं उगाती। – ज़ैनो

मूँज़ी आदमी हमेशा कंगाल रहता है। – फ़्रान्सीसी कहावत

आदमी लोभका प्याला पीकर बे-अक़्ल और दीवाना हो जाता है।

– सादी

तूने अपना दिल दिरमको इस तरह दे रखा है कि उसकी चाहमें तू शरमसे भी हाथ धो बैठा है। – सादी

उस तुच्छ आदमीका दिल कभी खुश नहीं रह सकता जिसने धनके लिए धर्मको बरबाद कर दिया। – सादी

जिसपर धनका लोभ छा गया उसने ज़िन्दगीके खलियानको हवामें उड़ा दिया। – सादी

धनकी दीवानगीमें अपनेको क्यों मिटाता है? सोने-चाँदीका गधा क्यों बनता है। – सादी

जैसे ओससे कुआँ नहीं भरता, उसी तरह धनसे लालचीकी आँखें नहीं भरतीं। – सादी

लोभकी पूर्ति कभी नहीं होती; इसलिए लोभके साथ क्षोभ हमेशा लगा रहता है। – समर्थ गुरु रामदास

अगर तू मनुष्य है तो हज़ार दानोंकी माला फेरनेके बजाय अपने तईं लोभ-लालचसे बचा। – सादी

लोभी

सूमका धन ज़मीनसे उस वक़्त निकलता है जब वह खुद ज़मीनमें जाता है। – सादी

व

वक्तृता

सम्यक् वक्तृत्व इसमें है कि जो कुछ उचित है कह दिया जाय, उससे अधिक कुछ नहीं। – रोशे

वचन

बड़े काम करो, पर बड़े वायदे न करो। – पिथागोरस

कोई वचन पत्तेकी तरह है, कोई फूलकी तरह, कोई फलकी तरह। – स्वामी सुन्दरदास

वफ़ा

अगर तू वफ़ाकी राहसे अपनी बाग़ न फेरेगा तो दुश्मनोंके दिलमें भी दोस्त बन जायेगा। – सादी

वफ़ादारी

स्वयं अपने प्रति सच्चे रहोगे तो ग़ैरके प्रति झूठे नहीं हो सकोगे।

– स्वामी रामतीर्थ

वशीकरण

इस जगत्में क्षमा वशीकरण रूप है। क्षमासे क्या नहीं सिद्ध होता? जिसके हाथमें शान्ति रूपी तलवार है उसका दुर्जन क्या कर लेंगे?

– सन्त विदुर

दया, मैत्री, दान और मधुर वचनसे बढ़कर त्रिलोकमें कोई वशीकरण नहीं। – आदि०

क्षमा, दया, प्रेम, मधुर वचन, सरल स्वभाव, नम्रता और सेवासे सारी दुनियाको वशमें करना चाहिए। – चाणक्यनीति

"वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर।" – अज्ञात

वस्त्र

कपड़े सात्त्विक हों, उनमें किसी तरहकी दिखावट न हो।

– ख्वाजा क़ुतुबुद्दीन

वस्तु

कोई वस्तु स्वभावतः अच्छी है न बुरी। एक ही चीज़ किसीको प्रिय है किसीको अप्रिय। विधुरोंके लिए जो चन्द्रमा जलती हुई अँगीठी है वही चकोरीके लिए शीतल जलका घड़ा है। – संस्कृत-सूक्ति

वहम

वहम आदमीको अहमक़ बना देता है और अविश्वास उसे पागल बना देता है। – फ़ील्डिंग

वाचन

चिन्तन-मनन-रहित वाचन ऐसा ही है जैसे पचन-विहीन भोजन ।

— अज्ञात

वाचालता

धनवान् और बेवक़ूफ़ दीवानावार बकते हैं । — डेनिश कहावत

जो बहुत ज्यादा बोलता है वह पाप करता है । — तालमुद

महा बक्की महा झूठा । — फ़्रान्सीसी कहावत

ज़्यादा बोलनेवाला कम जीता है । — फ़्रान्सीसी कहावत

वाणी

शाह और चोरको बोलते ही पहचाना जा सकता है, अन्तरंगका परिचय वाणीसे मिल जाता है । — कबीर

मनका आपा खोकर ऐसी वाणी बोलिए जो अपना तन शीतल करे, औरोंको भी सुख दे । — कबीर

किसीके मुँहसे कड़ुई बात निकलनेसे पहले ही उसका मुँह मीठा कर दो ।

— सादी

आदमीके ऐब और हुनर उसकी बोलीसे जाने जा सकते हैं । — सादी

वाणीसे बढ़कर चारित्रकी निश्चित परिचायिका और कोई चीज़ नहीं ।

— डिज़राइली

वह खुशगोई (wit) नहीं जिसके साथ सद्ज्ञान (wisdom) न हो ।

— साउथ

इस तरह बोलना कि किसीका भी जी न दुखे, इसे वाणीका तप कहते हैं ।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

वाणीसे आदमीके अन्त:करणकी परीक्षा हो जाती है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

सम्यक् वाणी कितनी शक्तिशालिनी होती है ! — बाइबिल

बुरे शब्द सुलक्षणोंका घात करते हैं। — डच कहावत

हम अपनी करनीसे इतने दोस्त नहीं बनाते जितने अपनी वाणीसे दुश्मन बनाते हैं। — कॉलिन्स

जो मनचाहा बोलता है उसे अनचाहा सुनना पड़ता है।
— युरॅपियन कहावत

कटु वचनसे प्रेम समाप्त हो जाता है। — संस्कृत-सूक्ति

एक बाल्टी पानी जितनी गरमीको ठण्डा करता है उससे ज्यादा गरमीको एक अच्छा शब्द ठण्डा कर देता है। — इटालियन कहावत

वाणी मनकी परिचायिका है। — सैनेका

अधजल गगरी छलकत जाय। — पूर्वी और पश्चिमी कहावत

मधुरभाषीके लिए कौन शत्रु है ? — चाणक्य-नीति

आदमी जैसा होता है उसके मुँहसे वैसी ही बात निकलती है।
— पुर्तगाली कहावत

कोमल वाणीसे दोस्तीके ज़ख्म भर जाते हैं। — डेनिश कहावत

हम प्रियसे प्रिय, मीठीसे मीठी, वाणी बोलें। — सामवेद

मीठे वचनोंसे सब सन्तुष्ट होते हैं। — अज्ञात

आत्मानुभूतिके अभावमें वाक्-चातुरी केवल अनर्थका ही कारण होती है।
— अज्ञात

कभी बोलना मीठा है, कभी चुप रहना। उनहालेमें छाया अच्छी है, सियालेमें धूप। — रज्जबजी

मधुर शब्दोंमें कही हुई बात अनेक प्रकारसे कल्याणकी प्राप्ति कराती है; किन्तु कड़वी बोली महा अनर्थकारी होती है। — सन्त विदुर

बोलनेकी शक्तिसे ही तो मनुष्य पशुसे बढ़कर माना गया है। अगर तू अच्छी बात न कहेगा तो तुझसे तो पशु ही अच्छे। — शेख़ सादी

कितने लोगोंकी बोलती बन्द हो जाय अगर उन्हें आत्म-प्रशंसा और पर-निन्दा करनेसे रोक दिया जाय। — चिंग चाउ

मर्मवेधक वाणी न बोलो; उलझन-भरी बातें न करो; बे-समझे-सोचे न बोलो। — भगवान् महावीर

सोच ले, तब मुँहसे बात निकाल और, लोगोंके 'बस' कहनेसे पहले ही बोलना बन्द कर दे। — शेख़ सादी

जानपर आ बननेपर भी निर्दय वचन नहीं बोलना चाहिए। — शुभचन्द्राचार्य

रूखी वाणी आदमीके मर्म, हड्डी, दिल और प्राणको जलाती है, इसलिए धर्मनिष्ठ पुरुष तीव्र और रूखी वाणीका हमेशाके लिए त्याग कर दें। — उद्योग०

वात्सल्य

द्वेष-रहित बनो, जैसे गाय बछड़ेसे प्रेम करती है वैसे एक-दूसरेसे प्रेम करो। — अथर्ववेद

वाद

वाद करनेवालेको न बुरा समझना, सन्तोंको राम-स्मरणसे फ़ुर्सत नहीं होती। — अज्ञात

योगीको वाद न करना चाहिए। — गोरखनाथ

वाद-विवाद

माता, पिता, बहन, भाई, स्त्री, पुत्र, पुत्री और नौकर-चाकर इनके साथ वाद-विवाद न करे। — मनु

व्यायाम

स्वास्थ्यप्रद व्यायामोंसे मन लचीला और शरीर शक्तिशाली बनता है।
– जे० टी० इविंग

गीता-पाठ करनेकी अपेक्षा व्यायाम करनेसे तुम स्वर्गके अधिक समीप पहुँच सकोगे। – विवेकानन्द

वायदा

झूठे वायदेसे नम्र इनकार अच्छा। – ई० पी० डे

वाल्दैन

भूमिसे भारी माता और आकाशसे भी उच्च पिता है। – शान्तिपर्व

सबसे पहले तू अपनी माँ-बापकी इज़्ज़त कर ? – फ़िलीमन

वासना

राग-द्वेष नष्ट कर देना चाहिए, इसीमें वासनाका मरण है।
– श्री ब्रह्मचैतन्य

हम अपने भी घरमें महमानकी तरह रहें। इस तरह रहनेसे वासना क्षीण होगी। – श्री ब्रह्मचैतन्य

वासनाको मारनेके लिए भगवान्‌का अधिष्ठान ही एक उपाय है, नामसे वासनाका क्षय हो जाता है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

राग + द्वेष = वासना। श्री ब्रह्मचैतन्य

जबतक वासना है तबतक कर्म उत्पन्न होते रहेंगे, कर्म नष्ट करना है तो वासनाको मारना होगा; और वह भगवान्‌के नामसे मरती है।
– श्री ब्रह्मचैतन्य

किन्हीं गुलामोंका ऐसा दलन नहीं होता जैसे वासनाके गुलामोंका।
– क्ले डि लैसपिनास

निरन्तर अभ्यास करते रहने तथा पूर्णरूपेण वासनारहित होनेपर ही अनुभव होता है, शास्त्रके केवल पढ़ लेनेसे नहीं, जबतक वासना है चित्त-में शान्ति नहीं आ सकती, वासनाका नाश करते ही चित्तमें शान्तिका उदय होता है, वासनारहित चित्त ही परमतत्त्वके चिन्तनका अधिकारी है।

— एकशास्त्रज्ञ

वासनाकी दीवानगी थोड़ी देर रहती है लेकिन उसका पछतावा बहुत देर।

— शिलर

वासनाग्रस्त चित्त पिंजड़ेके शेरकी तरह चंचल रहता है। — योगवाशिष्ठ

वासनाओंकी तृप्तिके लिए शरीर धारण करने पड़ते हैं। — उपासनी

विकार

चित्तका विकार तभी जा सकता है जब कि शरीर मात्रको मलमूत्रका थैला समझा जाय। — श्री उड़िया बाबा

कोई अनिर्वचनीय महामोहपूर्ण विकार हमें जड़ बना रहा है और सन्ताप दे रहा है। — संस्कृत-सूक्ति

विकाररूपी मलकी शुद्धिके लिए हार्दिक उपासना एक जीवनजड़ी है।

— महात्मा गान्धी

जब तुम्हारे विकार तुमपर हावी होना चाहें, तब तुम घुटनोंके बल झुक-कर भगवान्‌से मददकी प्रार्थना करो। — महात्मा गान्धी

मुझे विक्षेप है न समाधि। विक्षेप या समाधि तो विकारी मनको होती है।

— उपदेशसाहस्त्री

विकास

जो मनसे पहले तनको सजाते हैं, वे मानो तलवारसे ज्यादा मियानके प्रशंसक हैं। — लॉर्ड होव

शरीर, बुद्धि और मनमें कहीं भी जड़ताका अंश रहा हो तबतक अपने विकासके लिए गुंजाइश है। — नाथजी

विघ्न

मोहियोंके लिए स्त्री-पुत्रादिक सत्संगमें बाधा डालते हैं, ज्ञानियोंके लिए शास्त्रका व्यसन योगाभ्यासमें बाधा डालता है। – संस्कृत-सूक्ति

जिस समय विघ्न उपस्थित हो, उस समय सरल भावसे भगवान्‌की प्रार्थना करनी चाहिए। – श्री उड़िया बाबा

अल्प-बुद्धिवालोंको संसारमें स्त्री-पुत्र विघ्नरूप होते हैं; और विद्वानोंको योगाभ्यासमें शास्त्र-संसार विघ्नरूप होते हैं। – रमण महर्षि

विचार

अमंगल विचारोंके परिणाम-स्वरूप अमंगल भावनाएँ निर्माण होती हैं और वे भावनाएँ आपको दूर-दूर ले जाकर निगलनेके लिए तैयार बैठे हुए असुरोंके हाथमें दे डालती हैं। फलतः आप निराधार हो जाते हैं। कभी न समाप्त होनेवाले आपके दुःखों-कष्टोंका बुनियादी कारण यही है।

– श्री माताजी

हमारे सद्विचार ही देवदूत हैं। – ख़लील जिब्रान

मनुष्य जैसा विचार करता है वैसा बनता है। – मानस शास्त्र

शरीर विचारका अनुगमन करता है। – आधुनिक मनोविज्ञान

जो बिना विचारे करता है वह पछताता है। पंचतन्त्र

व्यक्तिकी महत्ता विचारकतामें है। विस्तारके लिहाज़से विश्व मुझे घेरकर एक एटमकी तरह निगल जाता है; विचारसे मैं उसे निगल जाता हूँ।

– पास्कल

जैसे शैवाल पानीपर-से हटा दिये जानेपर फ़ौरन ही फिर छा जाता है उसी प्रकार आत्मविचार-विहीनको माया फिर घेर लेती है। – शंकराचार्य

जिस विचारको मैंने पचा लिया वह मेरा हो गया। मैंने केला खाया और पचा लिया, उसका मेरे शरीरमें रक्त-मांस बन गया, फिर केला कहाँ रहा? – विनोबा

जो कुछ हम हैं, अपने विचारों-द्वारा ही बने हैं। — भगवान् बुद्ध

ज्योंही आपने अपनी निजी विचारधाराकी पकड़ खोयी कि आपकी क़ीमत ख़त्म हुई। — जवाहरलाल नेहरू

विचार-जलको कषायोंकी आग बुझाने दो। — शेक्सपीयर

मख़ौलकी कसौटी विचार है, सत्यकी कसौटी मख़ौल नहीं। — बारबर्टन

विचारकी बातको न तो अति ग़रीबी सुन सकती है न अति अमीरी। — फ़ील्डिंग

जो बहुत पहलेसे सोचकर योजना नहीं बनाता वह मुसीबतको अपने दरवाज़ेपर खड़ी पायेगा। — कन्फ़्यूशियस

अपने विचारोंके प्रति ख़ूब सावधान रहो, हमारे विचारोंको स्वर्गवाले सुनते हैं। — यंग

काम आरम्भ करनेसे पहले उसके परिणामका निश्चय कर लेना चाहिए; क्योंकि अति जल्दीमें किये गये कामोंका दुष्परिणाम मरने तक दिलको आगकी तरह जलाता और काँटेकी तरह छेदता रहता है। — भर्तृहरि

आचार-रहित विचार चाहे जितना अच्छा हो फिर भी खोटे मोतीकी तरह समझना। — गान्धी

मनुष्य जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। इसलिए हमें हमेशा उस अनन्तका चिन्तन करना चाहिए। — एनीबेसेण्ट

बिना सोचे नहीं बोलना चाहिए। पाँव पटककर नहीं चलना चाहिए। गर्व नहीं करना चाहिए। सहज-स्वाभाविक रहना चाहिए। — गुरु गोरखनाथ

जिसके मनमें दुष्ट विचार आते रहते हैं उसे तरह-तरहके दुःख घेरे रहते हैं। — उपासनी

यह ज़िन्दगी विचार-द्वारा पूरी करूँगा। — सन्त तुकाराम

रूढ़िसे न चिपटे रहकर विचार करना चाहिए। — सन्त तुकाराम

विचारक

मूर्ख ही सम्पत्ति पाकर प्रसन्न और विपत्तिमें पड़कर दुःखी होते हैं; विचारशील पुरुषोंके लिए न सम्पत्ति कुछ होती है न विपत्ति।

— संस्कृत-सूक्ति

मूर्खकी अमरतासे विचारकका एक वर्ष अच्छा। — मौनक्योर कॉनवे

यह सत्य है कि जिसने मन जीता उसने संसार जीता। — स्वामी रामतीर्थ

सबसे महान् विजेता वह है जो अपने-आपको जीते। — जर्मन कहावत

सच्ची विजय आत्मापर विजय प्राप्त करना है। वर्ना विजयी मनुष्य एक प्रकारका दास ही है। — टॉमसन

आत्म-विजय सबसे बड़ी विजय है। — अफ़लातून

जो पशुबलसे जीतता है, वह अपने दुश्मनको सिर्फ़ आधा जीतता है।

— मिल्टन

क्रोधको शान्तिसे, मानको मृदुतासे, कपटको सरलतासे और लोभको सन्तोषसे जीते। — भगवान् महावीर

वितरण

मेरा आदर्श है समान वितरण। — गान्धी

विद्या

विद्या धर्म रक्षाके लिए है न कि धन जमा करनेके लिए। — सादी

विद्या वह है जो मुक्ति दिला दे। — गरुड़ पुराण

विद्यासे अमृत मिलता है। — यजुर्वेद

जो विद्याहीन हैं वे अगर ख़ूबसूरत हों, जवान हों और बड़े घरमें भी पैदा हुए हों तो भी गन्धहीन टेसूके फूलकी तरह शोभा नहीं पाते।

— चाणक्य-नीति

सच्ची विद्या उस वक्त शुरू होती है जब आदमी तमाम बाहरी सहारोंको छोड़कर अपनी अन्दरूनी अनन्तताकी ओर ध्यान देता है। उस समय मानो वह मौलिक ज्ञानका एक स्वाभाविक स्रोत बन जाता है, महान् नवीन-नवीन विचारोंका चश्मा बन जाता है। —स्वामी रामतीर्थ

विद्वत्ता

बहुत पढ़ लिया तो क्या ? ज्ञानकी चिनगारीको पढ़ जो जलते ही पुण्य और पापको एक क्षणमें भस्म कर देती है। — मुनि रामसिंह

विद्वत्ता जितनी ज्यादा होगी, निष्ठा उतनी ही कम होगी।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

ज्यादा सीखनेसे आदमी पागल हो जाता है। — बाइबिल

विद्वान्

विद्वान् होकर शान्त रहना अर्थात् वाद-विवाद न करना श्रेष्ठ पुरुषोंका लक्षण है। — श्री उड़िया बाबा

विद्वान् लोगोंको बादशाहोंके पास रहनेकी इतनी आवश्यकता नहीं है जितनी कि बादशाहोंको विद्वानोंके सदुपदेशोंकी आवश्यकता है। — अज्ञात

विधवा

मैंने देख लिया है, युवति स्त्री विधवा हो जाय तो उसका पुनर्विवाह हो सकता है। — अथर्ववेद

विधान

भगवान्का प्रत्येक विधान मंगलमय होता है। — अज्ञात

विनय

पण्डितोंमें पूजनीय कौन है ? सदा स्वाभाविक विनयी। — शंकराचार्य

विनोद

विनोदशीलता सन्तुलनमें है। — खलील जिब्रान

विनोदशीलता माने नेकी और समझदारीका सम्मिश्रण। — एवैन मैरिडिथ

विनोद उतना ही अच्छा कि अगले दिन दोस्तोंको एक-दूसरेसे मिलनेमें शर्मिन्दगी न हो। — वाल्टन

विनोदपर हमेशा विवेकका अंकुश रहना चाहिए। — एडीसन

अगर मुझमें विनोदवृत्ति न होती, तो मैंने बहुत पहले आत्महत्या कर ली होती। — महात्मा गान्धी

विनोदवृत्ति जीवनका रस है। — अरविन्द

विपत्ति

हे जगद्‌गुरो! यत्र-तत्र सर्वत्र हमपर विपत्तियाँ आती रहें, जिससे पुनर्जन्म-का नाश करनेवाला आपका दर्शन मिला करे। — कुन्ती (श्रीमद्‌भागवत)

जो निरुत्साह, दीन और शोकाकुल रहता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं और वह बड़ी विपदामें पड़ जाता है। — रामायण

विपत्तिमें भी जिस हृदयमें सद्ज्ञान उत्पन्न न हो वह उस सूखे वृक्षके मानिन्द है जो पानी पाकर भी पनपता नहीं, सड़ जाता है। — प्रेमचन्द

ईश्वर ऐसी कोई विपत्ति नहीं भेजता जो सहन न की जा सके।
— इटालियन कहावत

हे प्रभो! मुझे विपत्तियाँ दे; क्योंकि विपदामें ही तेरे दर्शन होते हैं, और तेरे दर्शनसे ही मुक्ति मिलती है। — कुन्ती

विरक्ति

कर्तव्यमें बाधक बननेवाली हर बातको एक तरफ़ हटा देनेको ही विरक्ति कहते हैं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

विरह

मिलनसे विरह अच्छा है, क्योंकि मिलनमें तो अकेला प्रिय ही होता है परन्तु विरहमें सम्पूर्ण जगत् ही तद्रूप हो जाता है। – संस्कृत-सूक्ति

विलास

इस संसार-कारावासमें जेलरकी तरह रहो, क़ैदीकी तरह नहीं। आज़ाद रहकर, आत्माका विलास जानकर, सब काम करते रहो।

– सन्त श्री रामानन्द लुकिमान

विवाद

आत्मा और अनात्माका प्रश्न बखेड़ा है। इससे विक्षिप्त मन और भी विक्षिप्त हो जाता है। इस प्रकारके निरर्थक विवादोंमें मेरी रुचि नहीं।

– बुद्ध

विवेक

मनके हाथीको विवेकके अंकुशमें रखो। – रामकृष्ण परमहंस

श्रेय और प्रेय दोनों ही मनुष्यके सामने आते रहते हैं। श्रेष्ठबुद्धि श्रेयको अपनाता है, मन्द बुद्धि प्रेयको। – कठोपनिषद्

जाग्रत कौन है? विवेकी। – अज्ञात

विवेकपूर्ण आचरण करनेवाला सम्पत्ति-विपत्तिको समान समझता है।

– अज्ञात

मन्दमति सम्पत्तिसे सुखी होते हैं, विपत्तिसे दुःखी, किन्तु विवेकियोंके लिए न कुछ सम्पत्ति है न कुछ विपत्ति। – संस्कृत-सूक्ति

विवेक मुक्तिका साधन है। – अज्ञात

विवेक बिना ज्ञान व्यर्थ है। – अज्ञात

विवेक जीवनका सर्वश्रेष्ठ गुण है। – समर्थ रामदास

पूर्ण सत्त्वगुणी पुरुषकी सब इन्द्रियोंमें विवेक काम करता है।

– सन्त ज्ञानेश्वर

जहाँ सन्त वहाँ विवेक । – सन्त वचन

सत्य और मिथ्यामें, मुख्य और गौणमें, उपयोगी और अनुपयोगीमें, सच और झूठमें, स्वार्थ और परमार्थमें विवेक करो । – जे० कृष्णमूर्ति

विवेकसे आनन्द मिलता है; अविवेकसे दुःख मिलता है; जो चाहो चुन लो ।
– समर्थ गुरु रामदास

विवेकी पर-पदार्थमें अहं-ममत्व-बुद्धि नहीं रखता, जबतक अहं ममबुद्धि है तबतक अज्ञान है । – आचार्य कुन्दकुन्द

विवेक-शून्य स्त्रीमें सौन्दर्य ऐसा है जैसे शूकरीकी नाकमें रत्नजटित नथुनी । – बाइबिल

मेधावी पुरुष लोक-रुचिकी तरफ़ न लुढ़ककर आत्माभिमुख होकर विवेक-पूर्वक बरते, क्योंकि इस प्रकार किया गया कर्म कर्म-बन्धका कारण नहीं होता । – आचाराङ्ग

विवेक, गुरुकी तरह, तमाम कृत्याकृत्यको प्रकाशित कर देता है – अज्ञात

तुम्हारा विवेक ही तुम्हारा गुरु हो । – शेक्सपीयर

ज्ञान खज़ाना है, विवेक उसकी कुंजी । – फ़ैलथम

फूल ले लो, काँटे छोड़ दो । –इटालियन कहावत

विश्राम

जैसे आदमी सिरसे बोझा उतारकर आराम पाता है, उसी तरह संसार व्यापारको त्याग कर विश्राम पाता है । – श्री विद्यारण्य महामुनि

झूठी इच्छाओं और झूठे विचारोंसे आदमीने अपने लिए एक झूठा संसार बना लिया है । हर जीव मानो एक मायामयी गुफासे घिरा हुआ है, सत्य-के शोधकको पहले इससे प्रयत्नपूर्वक बाहर निकलना चाहिए ।
– एवलिन अण्डरहिल

विश्व ईश्वरका एक विचार है । – शिलर

आनन्दने प्रेममें आकर ये सब शक्लें अख्तियार कर लीं ।
– स्वामी रामदास

विश्वास

विश्वास – जिसपर विश्वासका आसन हो, यानी जिसपर दुनिया टिकी हुई हो। – सूरजचन्द डाँगी

विश्वास क्या है? अपनेको ईश्वरकी मर्ज़ीपर पूरी तरह छोड़ देना। – स्वामी रामदास

विश्वाससे आश्चर्यजनक प्रोत्साहन मिलता है। विश्वासीके रास्तेमें या तो कोई खरखशा आता ही नहीं, या फिर उसकी शानदार अग्निपरीक्षा होती है। – मिल्टन

विश्वासको बल प्रदान करनेवाली चीज़ोंमें नीति-परायणतासे बढ़कर कोई नहीं। – एडीसन

विश्वास कोई नाजुक फूल नहीं है, जो ज़रासे तूफ़ानी मौसममें कुम्हला जाय, वह तो अटल हिमालयके समान है; बड़ेसे बड़ा तूफ़ान भी उसे नहीं हिला सकता है। – महात्मा गान्धी

अगर धैर्यकी कुछ क़ीमत है तो वह कालके अन्त तक क़ायम रहेगा और जीवित विश्वास भयंकरतम तूफानोंमें भी बरक़रार रहेगा। – महात्मा गान्धी

आचार-रहित विश्वास मर जाता है। – बाइबिल

जिसे अपनेमें विश्वास नहीं उसे भगवान्‌में विश्वास नहीं हो सकता। – विवेकानन्द

जिसे ईश्वरपर ज़रा भी विश्वास हो उसे किसी भी बातकी चिन्ता करनेमें शर्म आनी चाहिए। – गान्धी

यह तो वास्तवमें विश्वास है जो हमें तूफ़ानोंके पार ले जाता है, यह विश्वास ही है जिसके सहारे हम समुद्रोंको लाँघ सकते हैं और पहाड़ोंको उखाड़ सकते हैं। यह विश्वास हमारे हृदयमें रहनेवाले भगवान्‌के अलावा और कुछ नहीं है, जिसमें यह विश्वास है उसे फिर कुछ भी नहीं चाहिए। – महात्मा गान्धी

जहाँ विश्वास है वहाँ भगवान् है। – कहावत

शेख़ीख़ोरका उतना ही विश्वास करो जितना झूठेका करते हो।

– इटालियन कहावत

विश्वासके साथ चारित्र न हुआ तो विश्वास मर जाता है।

– बाइबिल

बिना विश्वासके आदमी ऐसा है जैसे बिना स्याहीका फ़ाउण्टेनपेन।

– ऐस० जी० मिल्स

विश्वास ज्ञानका आरम्भ नहीं अन्त है। – गेटे

विश्वास और प्रेममें एक बात समान है : दोनोंमें-से कोई ज़बरदस्ती नहीं पैदा किया जा सकता। – शोपेनहोर

अपने देवत्वमें विश्वास रखनेवाला भगवान् है, बाहरी शक्तियोंपर निर्भर रहनेवाला इनसान। – स्वामी रामतीर्थ

विश्वास जानता ही नहीं कि निराशा क्या होती है। – महात्मा गान्धी

विश्वास जीवनकी शक्ति है। – टॉलस्टाय

विश्वास ज्ञानका सातत्य है। – विलियम आदम्स

वह श्रद्धानी नहीं जो अपने श्रद्धानपर नहीं चलता। – थॉमस फ़ुलर

प्रबल विश्वास बलवानोंमें घर करता है और फिर उन्हें बलवत्तर बना देता है। – वाल्टर बेझोट

सच्चे विश्वासवाली आत्मा हर भवमें अनन्त सुखी होती है।

– सूक्ति-मुक्तावलि

जो वस्तु नहीं है उसे हम अपने विश्वाससे पैदा कर सकते हैं। – टेनिसन

अगर धैर्यकी कुछ क़ीमत है तो उसे कालके अन्त तक टिके रहना चाहिए। और ज़िन्दा विश्वास कालेसे काले तूफ़ानमें भी बरक़रार रहेगा।

– महात्मा गान्धी

विश्वास ही फल लाभका उपाय है। — श्री उड़ियाबाबा

हमें यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि सत्य और अन्तरात्माकी पुकार हमें चाहे जिस हालतमें पहुँचाये, वह झूठपर आधारित जीवनसे बुरी नहीं हो सकती। — महर्षि टालस्टॉय

विश्वासघात

विश्वासघातसे बचनेका कोई उपाय नहीं है। — जर्मन कहावत

विष

यह सत्य है कि वकवादियों, बाहरी नाम-रूपोंमें विश्वास करनेवालों और शर्मनाक 'प्रतिष्ठा' के बेशर्म गुलामोंकी संगतिके समान और कोई विषैला पदार्थ नहीं है। — स्वामी रामतीर्थ

विषय

जो आदमी विषय-तृप्तिके रास्ते पूर्ण होना चाहता है वह अपनेको धोखा देता है। — सन्त पिंगल

श्रीकृष्णरूपी शाश्वत विषयके रहते हुए पापके कारण अन्य क्षणिक विषयोंमें आसक्त होना दुर्भाग्य है। — शंकराचार्य

विषयोंकी भावना ही संसारसे सबको बाँधती है। — योगवाशिष्ठ

इन्द्रियोंसे मिलनेवाले सुख दुःखरूप हैं, पराधीन हैं, बाधाओंसे परिपूर्ण हैं, नाशशील हैं, बन्धनकारी हैं, अतृप्तिकर हैं। — आचार्य कुन्दकुन्द

विषय जीतनेका सुवर्ण नियम 'रामनाम'के सिवा कोई नहीं है। — महात्मा गान्धी

ईश्वरमें प्रेम होनेसे विषयप्रेम दूर हो जाता है। — श्री उड़ियाबाबा

विषय-सुखोंमें घोर दुःख भरा है। नियम है कि शुरूमें वे मीठे लगते हैं, लेकिन बादमें उनके कारण शोक ही होता है। — समर्थ गुरु रामदास

दादको खुजानेसे पहले कुछ सुख मिलता है, बादमें असह्य दुःख, इसी प्रकार संसारके सुख पहले सुखदायक प्रतीत होते हैं, बादमें अत्यन्त दुःखदायी। – रामकृष्ण परमहंस

विषयभोग

क्षण-भरके विषयसुखके कारण सौ करोड़ जन्म लेने पड़ते हैं।

– सन्त नन्दलाल

विषयी

विषयीका संग साक्षात् विषयसे अधिक भयावह है। विषय अग्नि है तो विषयी अग्निमय चिमटा। अंगारको हाथमें उठाकर, जल्दीसे उठाकर फेंक दो तो उतना नहीं जलोगे, पर यदि चिमटा कहीं छू जाय तो चाहे जितनी जल्दी करो फफोला पड़ ही जायगा। इसलिए चिमटोंसे सदा बचते रहो।

– श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

विषाद

मनमें विषाद न आने पाये! विषादमें बड़ा दोष है, विषाद आदमीको इस तरह डसता है जैसे क्रोध-भरा साँप बालकको। – रामायण

विस्मृति

भूल जाना भी स्वतन्त्रताका एक रूप है। – खलील जिब्रान

विहार

हे राघव, तुमने समस्त भावोंका अन्तर सम्यक् रूपसे जान लिया है। अब तुम कृत्रिम उल्लास और हर्ष, कृत्रिम उद्वेग और तिरस्कार, एवं कृत्रिम आरम्भवृत्ति और उत्साह धारण करके दुनियामें विहार करो।

– गुरु वशिष्ठ

विज्ञान

हर विज्ञान दर्शनशास्त्रकी तरह शुरू होता है और कलापर खत्म हो जाता है। – विल ड्यूरेण्ट

ईश्वर-विहीन विज्ञान प्रकृतिका अध्ययन उसी प्रकार करता है जैसे मिल्टन-की लड़कियाँ हिब्रू पढ़ती थीं, शब्द जोड़-जोड़कर वाक्य तो ठीक बनाती थीं, लेकिन मानी नहीं समझती थीं। – कोली

वीतरागता

जो कुछ जमीनपर है और जो कुछ आसमानमें है वह सब, हे राम, राग-द्वेषके पूरी तरह नष्ट हो जानेपर मिल जाता है। – योगवाशिष्ठ

वीर

सैनिक वीरोंकी सभामें बैठे वीर, युद्धमें मरनेके लिए तैयार होकर, पौरुष-की ही बातें करते हैं। – वेदवाणी

वीरता

अपने सिद्धान्तोंके लिए अपनी जगहपर डटे रहकर मर जाना वीरतापूर्ण है, मगर अपने सिद्धान्तोंके लिए लड़ने और जीतनेके वास्ते निकल पड़ना और भी वीरतापूर्ण है। – फ्रैंकलिन डी० रूज़वैल्ट

आत्म-विश्वास वीरताकी जान है। – एमर्सन

पापसे सबसे ज्यादा डरो, तो समझ लो कि तुम्हारी नैतिक वीरता परिपूर्ण हो गयी। – सी सिमन्स

तीर-तलवारसे लड़नेवाला शूर नहीं है। शूरवीर वह है जो माया त्यागकर भक्ति करे। – कबीर

मर्द कौन है ? आसुरीवृत्ति जिसको बाँध नहीं सकती। – सूफ़ी

वृत्ति

अपने पूर्वजोंसे जिन तत्त्वों और वृत्तियोंका वारसा हमें मिला है उनमें-से किसीका भी सम्पूर्ण नाश हम नहीं कर सकते। उनमें-से जो वृत्तियाँ हमें अनिष्ट लगती हैं उन्हें हम बहुत कर सकें तो क्षीण कर सकते हैं, शुद्ध कर सकते हैं। चित्तवृत्तियोंको कुछ समयके लिए हम लय कर सकते हैं, पर उनका सम्पूर्ण नाश हम कभी नहीं कर सकते। सृष्टिका वह धर्म नहीं है, प्रकृतिका वह नियम नहीं है। – नाथजी

वेदना

तुम्हारे ज्ञानके ऊपर पड़े हुए जड़ताके परदेको फाड़नेके लिए क़ुदरतकी तरफ़से तुम्हें एक चीज़ दी गयी है – वह है तुम्हारी वेदना ।

– खलील जिब्रान

वेदान्त

संकुचित मनको विशाल करना, स्वार्थीसे निःस्वार्थी बनना यही वेदान्तका मर्म है ।

– श्री ब्रह्मचैतन्य

समस्त वेदान्त सिद्धान्तका सार यह है कि स्वयं (अहंकार) मिटकर स्वयं (आत्मा) बन जाता है और फिर स्वयं (आत्मा) ही शेष रहता है ।

– रमण महर्षि

सच्चा वेदान्त वही है जो रोज़के व्यवहारमें काम आवे ।

– श्री ब्रह्मचैतन्य

वैकुण्ठ

यदि विष्णुपद चाहते हो तो सदा समता भाव धारण करो ।

– शंकराचार्य

वैभव

"क्या यह सारा ऐश्वर्य एक ही क्षणके लिए था ?"

– महारानी एलिज़ाबैथ, प्रथमके अन्तिम शब्द

संसारका नश्वर वैभव नहीं चाहिए मुझे । – विवेकानन्द

अन्यायसे प्राप्त किये हुए धनमें बरकत नहीं होती । – कहावत

वैर

शत्रुओंमें अशत्रु होकर जीना परम सुख है । वैरियोंमें अवैरी होकर रहना चाहिए ।

– बुद्ध

वैराग्य

वैराग्य ईश्वर-प्राप्तिका गूढ़ उपाय है। उसे तो गुप्त रखनेमें ही कल्याण है। जो अपने वैराग्यको प्रकट करते हैं उनका वैराग्य उनसे दूर भागता है।

— अज्ञात

इच्छुकोंकी आशा पूरी करके, शत्रुओंको भी मित्र बनाकर, शास्त्रोंके पार पहुँचकर जो वनवासी हो जाते हैं, वे धन्य हैं। — संस्कृत-सूक्ति

'यह हो' ऐसा लगा और वह नहीं मिला तो दुःख होता है। 'यह हो' ऐसा लगने ही मत दो। परमात्मा रखे वैसे रहनेमें समाधान माननेका नाम ही वैराग्य है। — सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

मैं वैराग्यको किसी भी प्रेमसे बढ़कर मानता हूँ। — एकहार्ट

विषय पासमें रहनेपर भी उसमें राग न हो; इन्द्रियोंके समीप विषय रहने-पर भी उनके भोगमें अरुचि होनेको वैराग्य कहते हैं। वैराग्य घरमें रहने-पर भी हो सकता है — श्री उड़िया बाबा

वैराग्य = देह-सुखकी अनासक्ति। — श्री ब्रह्मचैतन्य

वैषयिकता

जब मनुष्यको इस बातका प्रत्यक्ष अनुभव होता है कि 'मैं ही ब्रह्म हूँ' तब देह-धर्मका लोप हो जाता है और इन्द्रियाँ विषयोंको भूल जाती हैं। इसके सिवाय और किसी उपायसे इन्द्रियाँ वशमें नहीं आतीं। — ज्ञानेश्वरी

विषयी जीवनका अन्त निराशापूर्ण मृत्यु होती है। — बियोन

इन्द्रिय-विषय-सुखका पर्यवसान निश्चित रूपसे दुःख और पीड़ामें होता है। — स्वामी रामतीर्थ

वह दिल जो गुलोंके पीछे दीवाना हो जाता है, हमेशा पहले काँटोंमें बिंधता है। — मूर

व्यक्तित्व

सच्चा व्यक्तित्व अपनेको शून्यवत् बनानेमें है। — गान्धी

व्यभिचार

जो परायी स्त्रीको पाप-दृष्टिसे देखता है वह परमात्माके क्रोधको भड़काता है और अपने लिए नरकका रास्ता साफ़ करता है। — स्वामी रामतीर्थ

व्यवस्था

समयकी सुव्यवस्था सुव्यवस्थित मनकी अचूक निशानी है। — पिटमैन

अपने घरको व्यवस्थित रख। — बाइबिल

क़ुदरतका पहला क़ानून है व्यवस्था। — पोप

अपनेको व्यवस्थित रखो। — बाइबिल

व्यवहार

व्यवहार पोशाककी तरह होना चाहिए — अति तंग नहीं, बल्कि ऐसा कि जिसमें हरकत और कसरत आसानीसे हो सके। — बेकन

परमार्थका मार्ग व्यवहारसे होकर जाता है। इसलिए व्यवहारको शास्त्र-मर्यादाके अनुसार बनाओ। व्यवहार अमर्याद हुआ तो परमार्थका पता नहीं चलेगा। — श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

जो बात सिद्धान्ततः ग़लत है वह व्यवहारमें कभी उचित नहीं है। — डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद

जो इन्द्रियोंके राज्यमें रहता है, वह रंजके राजमें मरेगा। — बक्सटर

जो आदर्श व्यवहारमें न उतर सके, फ़िज़ूल है। — स्वामी रामदास

जो व्यवहार परमार्थके काम आवे वही सच्चा व योग्य व्यवहार है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

व्यवहारमें भी विवेकपूर्ण सावधानीसे काम ले! — श्रीमद्‌राजचन्द्र

जितना भी व्यवहार दिखाई देता है सब परमार्थ है; अज्ञान रहने तक वह व्यवहार है, परन्तु वस्तुतः वह परमार्थ ही है। — श्री उड़ियाबाबा

व्यसन

जिससे एक व्यसनका निर्वाह होता है उससे दो बच्चोंका पालन-पोषण हो सकता है। — फ्रैंकलिन

श

शक्ति

अच्छी आदतोंसे शक्तिकी बचत होती है। दुर्गुणोंसे शक्तिकी भयंकर बरबादी होती है। — जेम्स ऐलन

पुरुषोत्तमके संकल्पसे शक्ति उत्पत्ति, रक्षण और विनाश निरन्तर कर रही है। — स्वामी रामदास

आत्मसम्मान, आत्म-ज्ञान, आत्म-संयम ये तीन ही जीवनको परम शक्तिकी ओर ले जाते हैं। — टैनीसन

सबसे बड़ी कठिनाईमें-से सबसे बड़ी शक्ति निकलती है। — अरविन्द घोष

धैर्य और मृदुतामें शक्ति है। — लीहंट

जो दूसरोंको जीतता है वह बली है, जो स्वयंपर विजय प्राप्त करता है वह शक्तिशाली है। — लाओत्ज़े

कोमलतासे बढ़कर कोई शक्ति नहीं; सच्ची शक्तिसे बढ़कर कोई कोमलता नहीं। — सन्त फ्रांसिसी डि सेल्स

शत्रु

शत्रु कौन है ? अकर्मण्यता, उद्योगहीनता। — शंकराचार्य

दक्षिणमें हमारा कोई शत्रु न हो, उत्तरमें कोई शत्रु न हो, हे प्रभो ! पश्चिममें हमारा कोई शत्रु न हो, पूर्वमें कोई शत्रु न हो। — अथर्ववेद

अगर हममें भगवद्भाव आ गया तो हमारा कोई शत्रु नहीं होगा।
— सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

शब्द

मधुर शब्द मधुके समान है – आत्माके लिए मधुर और शरीरके लिए स्वास्थ्यकर। – सुलैमान

शरण

एक (भगवान्)को मज़बूतीसे पकड़ लो तो अनेकोंकी खुशामद नहीं करनी पड़ेगी। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

जिस दिन भक्त गुरुकी शरणमें जाता है, उस दिन उसे नया जन्म प्राप्त होता है। – उड़िया बाबा

सर्व धर्म छोड़कर मुझ अकेलेको (परमात्माकी) शरणमें आ। मैं तुझे सब पापोंसे मुक्त कर दूंगा। – भगवान् श्रीकृष्ण

ईश्वरकी शरण गये बग़ैर साधना पूर्ण नहीं होती। – ज्ञानेश्वर

शरणागति

आत्मामें लीन होना ही ईश्वरकी शरण जाना है। – रमण महर्षि

शरीर

ईश्वर इस शरीर-यन्त्रसे अपना पूरा काम लिये बग़ैर तोड़कर नहीं फेंकनेवाला। – स्वामी रामदास

पुत्रो ! यह मनुष्य-शरीर विषय-भोग प्राप्त करनेके लिए ही नहीं है। ये भोग तो विष्ठा-भोजी शूकर-कूकरादिको भी मिलते ही हैं। इस शरीरसे दिव्य तप करना चाहिए जिससे अन्तःकरण शुद्ध हो और अनन्त ब्रह्मानन्दकी प्राप्ति हो। – भगवान् ऋषभदेव

जीवन और शरीरको पार कर जाना है; लेकिन उनको पूर्ण बनाना और काममें भी लाना है। – अरविन्द

शरीर जीर्ण होता जा रहा है। सिरके बाल पककर सफ़ेद हो गये हैं। सब प्रकारका बल क्षीण हो रहा है। इसलिए गौतम, क्षणमात्र भी प्रमाद न कर। – भगवान् महावीर

जहाँ पृथ्वी जल जाती है, मेरु बिखर जाता है, समुद्र सूख जाता है वहाँ इस शरीरका क्या ज़िक्र ? — संस्कृत-सूक्ति

शरीर एक रथ है; इन्द्रिय उसके घोड़े; बुद्धि सारथी; और मन लगाम है। केवल शरीर-पोषण करना आत्मघात करना है। — ज्ञानेश्वरी

शरीरश्रम

शरीरश्रमका मुख्य हेतु है सृष्टिके साथ एकरूप होना। — विनोबा

शर्म

देशमें सुव्यवस्था हो तो ग़रीब और साधारण आदमी बने रहना शर्मनाक है; जब देशमें गड़बड़ हो उस वक़्त धनवान् और अफ़सर बनना शर्मनाक है। — कन्फ़्यूशियस

वह शख़्स बहुत शर्मिन्दा होता है जो बिना कुछ काम किये दुनियासे विदा होता है। — शेख़ सादी

शर्म जवानके लिए आभूषण है, वृद्धके लिए दूषण। — अरस्तू

शहीद

आत्म-रक्षामें मरनेवाला शहीद है। — हज़रत मुहम्मद

शादी

औरत बड़ी बला है। लेकिन देखना, कोई घर इस बलामें मुबतिला होनेसे बचने न पाये ! — ईरानी

विवाह एक घिरा हुआ क़िला है; बाहरवाले जिसके अन्दर आना चाहते हैं, अन्दरवाले बाहर जाना। — अरबी

एक स्त्रीकी साड़ीकी क़ीमत है उसके पतिकी शान्ति। — अफ़रीक़ी

शादीके साथ ही आदमीकी मुसीबतें शुरू हो जाती हैं। — फ़िलीपन

शादी स्वर्ग और नरक है। — जर्मन कहावत

सच्ची शादी वही है जो प्रेममय हो। — टालस्टॉय

सब दुःख मृत्युसे समाप्त हो जाते हैं और सब सुख शादीसे। — बायरन

शादी ऐसी किताब है जिसका पहला अध्याय कवितामें लिखा जाता है और शेष अध्याय गद्यमें। — बेवर्ली निकल्स

शान

अच्छे कुलमें जन्म होना बिला शक अच्छा है, मगर उसमें शान तो पूर्वजोंकी ही है। — प्लुटार्क

ईश्वर न करे कि मैं प्रभु येसु ख्रीस्तके क्रॉसके सिवा किसी और चीज़में शान मानूँ। — बाइबिल

प्रभुका परिपूर्ण यन्त्र बन जानेसे बढ़कर और कोई शान और अभिमानकी बात नहीं। — अरविन्द

शासक

किसीको शासक नहीं बनना चाहिए, अगर वह शासितोंसे बढ़कर नहीं है। — साइरस

जबतक दार्शनिक लोग शासक नहीं बन जाते, या जबतक शासक लोग दर्शनशास्त्र नहीं पढ़ लेते, तबतक आदमीको मुसीबतोंका अन्त नहीं हो सकता। — अफ़लातून

शासन

महावाक्य चार हैं – प्रज्ञानं ब्रह्म। अयमात्मा ब्रह्म। तत्त्वमसि। अहं ब्रह्मास्मि। इनके चिन्तनके बग़ैर शासनसे मुक्ति नहीं मिल सकती। — विनोबा

अपने ऊपर अपना शासन जितना ज्यादा होगा उतनी ही दूसरेके शासनकी जरूरत कम होगी। — जयप्रकाश नारायण

दुनियापर कमअक़्लोंका राज्य है। — इटालियन कहावत

किसीपर शासन चलानेके लिए मेरे पास प्रेमके सिवा कोई शस्त्र नहीं है ।
— गान्धी

शासकपर कौन शासन करेगा ? — प्लुटार्क

चुपकेसे धन लूटनेवाला और फैलानेवाला तुझपर शासन् न करने पाये ।
— यजुर्वेद

दुनियाको जीतनेवाले पुरुष वे हैं जो दुनियाके उस पार देखते हैं ।
— रैवरेण्ड पी० सी० एन्सवर्थ

शास्त्र

परम तत्त्वको जाने बिना शास्त्राध्ययन निष्फल है, परम तत्त्व जान लेनेके बाद भी शास्त्राध्ययन निष्फल है । — विवेक-चूडामणि

शास्त्र देखते-देखते तुम्हारा जन्म नष्ट हो जायगा, समझते-समझते तुम्हारा जीवन समाप्त हो जायगा, परन्तु हाथ कुछ न लगेगा, इसलिए गुरुके वचनोंमें विश्वास करके शास्त्रानुसार साधना करो । — उड़िया बाबा

कर्तव्यका ज्ञान और भगवान्‌का अखण्ड अनुसन्धान यही सब शास्त्रोंका सार है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

जो शास्त्र समाधान दे वही सच्चा शास्त्र है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

शान्ति

तुम्हारा अन्तिम ध्येय शान्ति है । उसके प्राप्त करनेका उपाय त्याग और सेवा है । — स्वामी रामदास

शान्ति परमार्थकी पहली पायरी है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

जिस घरमें शान्ति है वहाँ भगवान् रहते हैं । — श्री ब्रह्मचैतन्य

शान्ति अद्वैतमें है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

शान्तिके लिए अन्दरूनी परिवर्तन चाहिए, बाहरी नहीं । — स्वामी रामदास

हे मुनि, सारासारका परिच्छेद करके, बोधसे विश्रान्ति पाकर, मेरा मन चपलतासे मुक्त, शान्त, स्थिर हो गया है । — योगवाशिष्ठ

हाँ, तूफ़ान बिना शान्ति नहीं होती, जंग बग़ैर सुलह नहीं होती, शान्तिमें संग्राम छिपा हुआ है, ज़िन्दगी अन्दरूनी या बाहरी तूफ़ानके ख़िलाफ़ शाश्वत संग्राम है। इसलिए तूफ़ानके दर्मियान भी शान्ति अनुभव करनेकी ज़रूरत है। – गान्धी

अपनेसे सुलह कर लो, तो ज़मीन और आसमान भी तुमसे सुलह कर लेंगे। – सन्त ईसक

धन्य हैं शान्ति करनेवाले : क्योंकि वे ईश्वरके बालक कहलायेंगे।
– सन्त मैथ्यू ('सरमन ऑन दी माउण्ट')

शान्तिको डण्डेके ज़ोरसे क़ायम नहीं किया जा सकता वह तो केवल पारस्परिक समझौतेसे ही लायी जा सकती है। – अलबर्ट आइन्स्टाइन

शान्ति, शान्ति; जब शान्ति न हो। – बाइबिल

आओ हम उन बातोंके पीछे लगें जिनसे शान्ति आती है। – बाइबिल

ईश्वरकी शान्ति शान्तिके ईश्वरसे आती है। – स्पर्जियन

शान्ति विजय-स्वरूपा है। क्योंकि इसमें दोनों पक्ष भव्य रूपसे परास्त हो जाते हैं, और कोई पक्ष नुक़सानमें नहीं रहता। – शेक्सपीयर

सत्संगी चुप और शान्त रहते हैं। लेकिन आदमी कोई काम शोर मचायें बग़ैर नहीं करते। – बलवर

वाणीको मनमें, मनको बुद्धिमें, बुद्धिको महत्में, महत्को शान्त आत्मामें विलीन करना। – कठोपनिषद्

जबतक आदमी बुरे कामोंसे मुँह नहीं मोड़ता, तबतक वह अपने अन्दर शान्ति पैदा नहीं करता; जबतक कि दुनियाकी चीज़ोंका लोभ उसमें-से नहीं जाता, तबतक उसका मन शान्त नहीं होता। – उपनिषद्

जो निष्काम, निःस्पृह, निर्मम और निरहंकार है उसे ही शान्ति प्राप्त होती है। – गीता

जिसका चित्त शान्त है उसे हर चीज़में ऐशका सामान नज़र आता है ।

— हिन्दुस्तानी कहावत

शान्तिका उपाय यह है कि ईश्वर जो करे उसमें समाधान माने ।

— मिगल मौलिन

जो अभिमानी और भेददर्शी है, जिसने सबसे वैर बाँध रखा है, इस तरह जो दूसरेके शरीरमें स्थित मुझ अन्तर्यामी परमात्मासे द्वेष रखता है, उसके मनको कभी शान्ति नहीं मिलती । — श्रीमद्भागवत

ईश्वरी शान्ति, जो तमाम ज्ञानसे परे है । — बाइबिल

शान्तिके दूतोंको फ़ायर-ब्रिगेडकी तरह नहीं होना चाहिए जो कि अलार्म पाने तक ठहरा रहता है, बल्कि उन्हें तो अंगूरोंके बाग़में काम करने-वालोंकी तरह होना चाहिए जो कि अपने मालिकके आगमनकी तैयारीमें सदा लगे रहते हैं । — एस० जी० मिल्स

शान्त मनसे ज्यादा स्वास्थ्यप्रद और आनन्दप्रद कोई चीज़ नहीं ।

— ऑरिसन स्वेट मार्डन

शान्तिका प्रचार करनेवाले धन्य हैं, क्योंकि वे ही भगवान्के पुत्र कहे जायेंगे । — ईसा

शान्तिका रास्ता यह है कि सब बातोंमें भगवान्की इच्छाके अनुसार चले ।

— सन्त पिगल

शिक़ायत

शिकायतकी वजह हमारी कठिनाईकी बिकटता इतनी नहीं होती जितनी हमारी आत्माकी लघुता । — जेरेमी टेलर

शिकार

हे प्रभो ! खरगोशको मेरा शिकार बनानेसे पहले मुझे शेरका शिकार बना देना । — ख़लील जिब्रान

शिव

शिव आत्मरूप हैं, आत्मा शिव-रूप है। — स्वामी रामदास

शिक्षण

शिक्षण वह है जो आत्माका परिचय करा दे और वही लेना चाहिए। — रस्किन

वाणीसे विचार गहराईपर है; विचारसे भावना गहरी है। आदमी ग़ैरोंसे वह कभी नहीं सीख सकता जिसे वह ख़ुदसे सीखता है। — फ्रेंच

कब 'हाँ' कहना और कब 'ना' यही हमारे युगकी समस्या है, हमारी शिक्षा-प्रणालीकी निष्फलताका इससे बड़ा प्रमाण और क्या है? — बर्नार्ड शॉ

चारित्रके बिना शिक्षण क्या है, और निजी पवित्रताके बिना चारित्र क्या है? — गान्धी

नवयुवकोंका तमाम शिक्षण फ़िज़ूल है अगर उन्होंने सद्व्यवहार नहीं सीखा। — गान्धी

शिक्षण वह है जिससे आत्मज्ञान प्राप्त हो, और केवल उसीके लेनेकी ज़रूरत है। — रस्किन

शिक्षा

किसीने अरस्तूसे पूछा, 'अशिक्षितोंसे शिक्षित कितने श्रेष्ठ हैं?' 'जितने मुर्दोंसे जिन्दे,' उसने जवाब दिया। — डायोजिनीज़

शिक्षा निश्शुल्क होनी चाहिए ताकि सबको मिल सके। — महात्मा गान्धी

शील

जैसा शील वैसे गुण। — अज्ञात

शुद्धि

सबके चरणोंमें मेरा दण्डवत् प्रणाम है। सब अपना चित्त शुद्ध करें। — सन्त वचन

चित्तकी शुद्धि और सद्‌गुणोंकी वृद्धि इन दो ख़ास बातोंपर ही हमें ज़ोर देना चाहिए। — नाथजी

जिनका अन्त:करण शुद्ध है, वे धन्य हैं; क्योंकि ईश्वरका साक्षात्कार उन्हींको होगा। — ईसा

शूर

शूरवीर साधारण आदमीसे ज्यादा बहादुर नहीं होता, मगर वह बहादुरी पांच मिनिट ज़्यादा दिखलाता है। — एमर्सन

शूर पुरुष कभी बड़बड़ नहीं करते, वे केवल पराक्रम दिखलाते हैं।
— भगवान् श्रीकृष्ण

शैतान

शैतानोंको शैतानों-द्वारा खदेड़ना चाहिए। — जर्मन कहावत

शैतानका मुक़ाबला करने खड़े हो जाओ, वह भाग जायेगा। — बाइबिल

शैतानको न्यौता देकर बुला लेना आसान है, उससे पिण्ड छुड़ा लेना मुश्किल। — डेनिश कहावत

शोक

जन्मके बाद मृत्यु, उत्थानके बाद पतन, संयोगके बाद वियोग, संचयके बाद क्षय निश्चित है। यह समझकर ज्ञानी हर्ष और शोकके वशीभूत नहीं होते। — महर्षि वेदव्यास

गिरे हुए दूधका ग़म न करो, क्योंकि ब्रह्माण्डकी तमाम ताक़तें उसे गिराने-पर तुली हुई थीं। — सोमरसैट मौग़म

ज्ञानी पुरुष किसीके भी लिए शोक नहीं करता। — गीता

यह कुछ भी नहीं रहेगा, फिर शोक किसके लिए किया जाय?
— संस्कृत-सूक्ति

शोभा

ऐश्वर्यकी शोभा सुजनता है, शूरवीरताकी शोभा वाक्-संयम है, ज्ञानकी शोभा उपशम है, विद्याकी शोभा विनय है, धनकी शोभा सत्पात्रको दान करना है, तपकी शोभा अक्रोध है, समर्थकी शोभा क्षमा है, धर्मकी शोभा दम्भहीनता है और सबकी शोभा सुशीलता है जो सभी सद्गुणोंका हेतु है। — भर्तृहरि

शोषण

दूसरोंके शोषणसे ऐशो-आराम करनेकी नीयतने दुनियाको दुःखी कर रखा है। — रविशंकर महाराज

श्रद्धा

श्रद्धा वह है जिससे वस्तु-स्वरूप जाना जा सके। — विवेक-चूड़ामणि

श्रद्धावान् पुरुष पापका इस प्रकार त्याग कर देता है जैसे साँप केंचुलीका।
— महाभारत

श्रद्धा परमार्थकी पूँजी है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

श्रद्धावान् ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है और ज्ञान-प्राप्तिके बाद ही इन्द्रियोंको संयत रखा जा सकता है। — गीता

किसी अत्यन्त पवित्र और महान् शक्तिपर श्रद्धा और निष्ठा होना जरूरी है। — नाथजी

प्रपंचमें जैसे प्रेमकी जरूरत है, वैसे ही परमार्थमें श्रद्धा चाहिए।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

बुद्धि पंगु है। श्रद्धा सर्वसमर्थ है। बुद्धि बहुत नहीं चलती, वह थककर कहीं-न-कहीं ठहर जाती है। श्रद्धा अघटित कार्य सिद्ध कर दिखाती है।
— रामकृष्ण परमहंस

बालकके समान जिसका मन सरल रहता है, उसीको ईश्वरपर श्रद्धा होती है। — रामकृष्ण परमहंस

क्रियाशून्य श्रद्धा मर जाती है। — एस० जी० मिल्स

अन्धश्रद्धालु धर्मको नहीं जान सकता। — भगवान् महावीर

श्रद्धान

श्रद्धान उस चीजपर विश्वास करना है जिसे हम नहीं देखते; और इस श्रद्धानका पुरस्कार यह मिलता है कि हम उसे देखने लगते हैं जिसपर हम विश्वास करते हैं। — सन्त आगस्ताइन

श्रम

महान् आविष्कारोंके बीज हमारे चारों तरफ़ निरन्तर फेंके जाते हैं; पर उनका अंकुर उसी दिमाग़में उग पाता है जिसमें श्रमका खाद भी मौजूद रहता है। — जोसेफ़ हेनरी

श्रमण

सर मुड़ा लेने मात्रसे कोई श्रमण नहीं होता; ॐके उच्चारण मात्रसे को ब्राह्मण नहीं होता; आचरण मात्रसे कोई मुनि नहीं होता; और वल्कर चीर-धारण मात्रसे कोई तपस्वी नहीं होता। — भगवान् महावी

श्रीमन्त

सच्चा श्रीमन्त वह है जो दूसरोंको भी श्रीमन्त बना दे।

— कृ० अ० देगावकर

श्रेष्ठ

श्रेष्ठ वह है जो न आप किसीसे दुखे और न अन्य किसीको दुखावे।

— रामचन्द्र वेदान्ती

स

सखा

ईश्वरका सखा न कभी मारा जाता है न कभी हारता है। — अथर्ववेद

सगुण

जैसे पानी और बर्फ़ एक हैं, उसी प्रकार निर्गुण और सगुण ब्रह्म एक हैं ।

– रामायण

सज्जन

सज्जन धागेसे बँध जायगा, दुर्जन रस्सीसे भी नहीं बँधेगा ।

– स्कॉटिश कहावत

सज्जनोंमें अग्रणी तो वही हो सकता है जिसका अपना हित दूसरोंके हितमें ही हमेशा सन्निहित हो । – महाभारत

आज मैं किसी सन्तको पा जानेकी आशा नहीं रखता । लेकिन अगर मुझे कोई सज्जन भी मिल जाय, तो मैं बिलकुल सन्तुष्ट हो जाऊँगा ।

– कन्फ़्यूशियस

सज्जन गुणोंको ही ग्रहण करनेवाले होते हैं । – सुभाषित-संचय

सज्जनसे सज्जन मिले तो दो-दो बात होती हैं; गधेसे गधा मिले तो दो-दो लात खाते हैं । – कबीर

मैं मानता हूँ कि इस दुनियामें दो-तीन ही सज्जन हैं, बाक़ी सब दुष्ट ।

– अज्ञात

सज्जन कभी शोक नहीं करते । – अज्ञात

सज्जनोंका क्रोध प्रणाम करते ही खत्म हो जाता है । – अज्ञात

केवल सज्जनोंका ही आश्रय ग्रहण करना चाहिए । – अज्ञात

सज्जनोंके गलेमें अमृत रहता है । – अज्ञात

सज्जन चाहे फटेहाल ही हो, बड़प्पनके पूरे ठाठवाले दुर्जनसे ज्यादा ताक़तवर होता है । – मैसिंजर

उत्तम पुरुष किसी कामको शुरू करके खत्म किये बग़ैर नहीं छोड़ते ।

– अज्ञात

जानपर आ बननेपर भी सज्जनोंकी सज्जनतामें विकृति नहीं आती ।

– अज्ञात

धर्ममें तत्परता, वाणीमें मधुरता, दानमें उत्साह, मित्रोंसे निष्कपटता, गुरुजनोंके प्रति नम्रता, चित्तमें गम्भीरता, आचारमें शुचिता, गुणोंमें रसिकता, शास्त्रमें विद्वत्ता, रूपमें सुन्दरता और हरिभजनमें लगन – ये गुण सत्पुरुषोंमें ही देखे जाते हैं। – चाणक्य-नीति

सज्जनता

सौजन्य है सच्ची दयालुता दयालु रूपसे दरशाना : सच्ची सज्जनताका यही सार-सर्वस्व है। – विदरस्पून

अपनेसे रोज़ पूछो कि आज कितने दुर्बुद्धियोंके प्रति सौजन्य दरशाया। – औरेलियस

शराफ़त सबके प्रति दरशाओ, घनिष्ठता कुछके प्रति; लेकिन कुछोंको अच्छी तरह आज़मानेके बाद ही अपना विश्वासपात्र बनाना। – वासिंग्टन

सत्य, मृदु, प्रिय और हितकर वचन बोलना। आत्मप्रशंसा और परनिन्दा-का परित्याग करना। – महानिर्वाण

शरीफ़ आदमी ईश्वरकी मूर्ति है। – टीक

शरीफ़ दिखिए नहीं, बनिए। – ऐशीलस

सज़ा

एक आदमीने गुनाह किया। और दूसरे आदमियोंको उस गुनाहका विरोध करनेके लिए इससे बहतर और कोई तरीक़ा नज़र नहीं आया कि वे भी एक गुनाह करें – जिसे वे सज़ा देना कहते हैं। – टालस्टॉय

सतर्कता

सावधान रहो कि कोई काम यहाँ ऐसा न हो जाय कि जिसके लिए चलते समय पछताना पड़े। यदि सतर्क नहीं रहोगे तो नीचे गिरनेसे बच नहीं सकते। संसारका प्रवाह नीचे ही गिरायेगा। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

सतयुग

सोते रहनेका नाम कलियुग है, आलस्यमें सदा तन्द्रिल रहनेका नाम द्वापर है, अनिश्चयमें खड़े रहनेका नाम त्रेता है, और हमेशा गतिशील रहनेका नाम सतयुग है। — ऐतरेय ब्राह्मण

सत्

जो कुछ नित्य है वही सत् है; और जो कुछ अनित्य है वही असत् है। — ज्ञानेश्वरी

सत् नाम एक ही है। उपासनाके लिए उपासक भिन्न-भिन्न रूप पसन्द करते हैं। — वेद

नाम रूपवाले चित्र, द्रष्टा, परदा, प्रकाश, सब वही है। — रमण महर्षि

परम सत्का अस्तित्व हृदयमें है। वह विचार-द्वन्द्व रहित है। वह स्वयं हृदय ही है। उसे जानना यानी हृदयमें तद्रूप (तन्मय) हो जाना। — रमण महर्षि

सब आत्मा ही है। सब परमात्मा ही है। — अज्ञात

सत्कर्म

अच्छा हेतु + अचूक मार्ग = सत्कर्म। — श्री ब्रह्मचैतन्य

सत्ता

मैं यह कभी न समझ पाया कि कोई समझदार प्राणी दूसरोंपर सत्ता चलाकर स्वयं आनन्द कैसे पा सकता है! — जफ़र्सन

सत्पुरुष

उत्तम कोटिके लोग अपनी जान देनेको तैयार हो जाते हैं मगर सत्य छोड़नेको तैयारी नहीं होते। — अज्ञात

सत्पुरुष कहते न हों, करते न हों, फिर भी उनकी सत्पुरुषता उनकी निर्विकार मुखमुद्रामें है। — श्रीमद्राजचन्द्र ('वचनामृत')

सत्य

जो सत्यपर जान देता है उसे अपनी क़ब्रके लिए पवित्र भूमि हर जगह मिल जाती है। — जर्मन कहावत

सत्य बीचमें है। — लैटिन सूत्र

मैं यह ज्यादा पसन्द करूँगा कि सारी दुनियासे मेरी अनबन हो जाय और वह मेरा विरोध करने लगे, बनिस्बत इसके कि खुद मुझीसे मेरी अनबन हो जाय और मैं खुद अपना ही विरोध करने लगूँ। — अफ़लातून

जैसे रवि-किरणको किसी बाहरी स्पर्शसे मैला नहीं किया जा सकता उसी तरह सत्यको मलीन कर सकना असम्भव है। — मिल्टन

महान् है सत्य और अन्तिम विजय सत्यकी ही होती है। — बाइबिल

सत्यवादिताका कोई अपवाद नहीं है। — गान्धी

सत्यके सिवा मुझे किसी और ईश्वरकी सेवा नहीं करनी। — गान्धी

सौन्दर्य सत्य है, सत्य सौन्दर्य। — कीट्स

वह सभा नहीं जिसमें वृद्ध न हों; वे वृद्ध नहीं जो धर्मकी बात न कहें वह धर्म नहीं जिसमें सत्य न हो; और वह सत्य नहीं जो निश्छल न हो — संस्कृत-सूक्ति

झूठसे लहलहानेकी अपेक्षा सत्यसे मुरझा जाना अच्छा। — डेनिस कहावत

सत्य और अहिंसाका पुजारी होनेके नाते मेरा काम है नग्न सत्य कह देना। — गान्धी

सत्यको मृदुल भाषामें बोलना चाहिए। — गान्धी

वैषयिकताको मिटाये बग़ैर परात्पर सत्य दिखाई नहीं दे सकता। — गान्धी

सत्यकी खोज अनन्त है। — स्टर्न

सत्य अमर है, भूल मरणशील है। — मेरी बेकर ऐडी

महान् है सत्य, और सब चीजोंसे अधिक बलवान्। — ऐस्ड्रास

सत्य शक्तिशाली है और विजयी होगा। — थॉमस ब्रुक्स

सत्य, सूरजकी किरनकी तरह, किसी भी बाहरी स्पर्शसे नहीं बिगाड़ा जा सकता। — मिल्टन

सत्य सरल है, उसे न पढ़नेकी जरूरत होती है न सँवारनेकी। — अमीन

सचको कुचलकर खाकमें मिला दो, वह फिर उठ खड़ा होगा। — ब्रायण्ट

सचाई ईश्वरकी बेटी है। — स्पेनी कहावत

समय क़ीमती है, पर सत्य समयसे भी ज्यादा क़ीमती है। — डिज़राइली

मुझे दोनों प्यारे हैं, लेकिन फ़र्ज़ मजबूर करता है कि मैं सचाईको तरजीह दूँ। — अरस्तू

तर्कका नहीं, आत्माका सत्य पूर्ण सत्य है। — अरविन्द घोष

प्रेम-पगा सत्य बोलो। — सन्त पॉल

झूठ फ़ानी है, सच लाफ़ानी। — मेरी बेकर ऐडी

इनसानकी शान इसमें है कि वह सत्यकी खोज करे, उसे देखे, उससे प्रेम करे, और उसकी खातिर अपनी जान क़ुर्बान कर दे। — गीसप प्रेज़ोलिनी

जब सत्यके बोलनेका वक्त आ गया हो, बोलना लाज़िमी हो गया हो, तब उसे जरूर बोल देना चाहिए, ख्वाह वह बाहरसे कैसा ही कठोर लगे। — गान्धी

धर्मके जाननेवालोंने सत्यको ही उत्तम धर्म कहा है। — रामायण

सत्यसे ही धर्मकी वृद्धि होती है। — मनुस्मृति

जो सत्यपर क़ायम रहता है, सारी क़ुदरत लाज़िमी तौरसे उसकी मदद और सेवा करती है। — स्वामी रामतीर्थ

सत्यके समान धर्म नहीं है और न सत्यसे बढ़कर कोई और चीज़ है।

— महाभारत

सत्यसे ही धर्मकी उत्पत्ति होती है। — महाभारत शान्तिपर्व

सत्यसे ही मनकी मलीनता मिटती है। — अज्ञात

जहाँ सत्य नहीं है वहाँ धर्म नहीं है। — रामायण

सत्यसे बड़ा कोई धर्म नहीं है। — महाभारत शान्तिपर्व

छलयुक्त सत्य सत्य नहीं है। — रामायण

सत्य होनेपर भी पर-पीड़ाकारक वचन नहीं बोलना चाहिए।

— योगशास्त्र

पहले तलाश सत्यकी हो, शिव और सुन्दर स्वयं आ जायगा। — गान्धी

सत्यसे वाणी पवित्र होती है। — तत्त्वामृत

सत्य वचन श्रेयस्कर होते हैं। — महाभारत विराट पर्व

जिससे प्राणियोंका अत्यन्त हित हो, वही सत्य है। — महाभारत शान्तिपर्व

सत्यका मार्ग सहल है। — ऋग्वेद

सत्यके मार्गको दुष्कर्मी पार नहीं कर सकते। — ऋग्वेद

जैसे गायें अनेक रंगोंकी होती हैं लेकिन उनका दूध सफ़ेद ही होता है, उसी तरह सत्य-प्रवर्तकोंके कथनमें भाषा-भेद होता है, भाव-भेद नहीं।

— उपनिषद्

धर्मात्माको सत्यकी नाव पार लगाती है। — ऋग्वेद

'सत्य' शब्द 'सत्' से बना है। सत्का अर्थ है अस्ति। सत्य अर्थात् अस्तित्व। सत्यके बिना दूसरी किसी चीज़की हस्ती ही नहीं है। परमेश्वरका सच्चा नाम ही 'सत्' अर्थात् 'सत्य' है। — महात्मा गान्धी

शुद्ध सत्यकी शोध करनेके मानी हैं राग-द्वेषादि द्वन्द्वसे सर्वथा मुक्ति प्राप्त कर लेना। – महात्मा गान्धी

सत्य ऐसी वेश्या नहीं है कि आकर अन्यमनस्क मनुष्यके गले पड़े; वह तो एक लजवन्ती नारि है!....उसके लिए सर्वस्व बलिदान कर देनेपर भी उसकी महर हो भी और न भी हो। – शॉपेनहोर

तमाम उच्च सत्य काव्य है। विज्ञानके आविष्कारोंको लो; वे और उनके तरीक़े हिम-शीतल सौन्दर्यकी आभासे प्रदीप्त हैं। – बक्स्टन

सत्यके मार्गमें ईश्वर रक्षक है। – ऋग्वेद

सत्यको आपकी रंगीनिगारीकी ज़रूरत नहीं है; वह तो स्वयं सुन्दर है और प्रकट होते ही लोगोंपर जादू करता है। – डॉक्टर थॉमस

आत्मिक सौन्दर्य ही परम सत्य है। – सुक़रात

जो सत्यकी आज्ञामें हैं उन्हें दुनियामें किसीका भय नहीं। – आचारांग

सत्यका मुँह सोनेके पात्रसे ढँका हुआ है। – यजुर्वेद

सच्चाई वह गुलज़ार है जिसमें कोई काँटा नहीं। – सादी

सत्य क्या है? जिसके द्वारा प्राणियोंका हित हो। – शंकराचार्य

ऐ दिल! अगर तू सच्चाईको अख़्तियार कर ले, तो दौलत तेरी दोस्त और भाग्य तेरा मददगार हो जाय। – सादी

जिसने ठीक तरह जीना सीखा है वही सत्यको प्राप्त करेगा और तभी, उससे पहले नहीं, वह सब कष्टोंसे मुक्त भी हो जायगा। – प्लेटो

संसारमें हर चीज़ मनुष्यको निराशा देती है। सिर्फ़ एक भगवान् ही उसे निराश नहीं करते, अगर वह पूरी तरह उनकी ओर मुड़ जाय। इसलिए भगवान्की ओर मुड़ना ही जीवनका एकमात्र सत्य है।

– तपस्वी अरविन्द घोष

जो मनुष्य सत्यसे विचलित होता है, वह श्मशानकी तरह त्याग देने योग्य है। मनुष्यके लिए अपने सत्यकी रक्षासे बढ़कर कोई धर्म नहीं बतलाया गया। – महारानी शैव्या

जगत् और उसका ज्ञान जिस पूर्णतामें-से उत्पन्न होता है और जिसमें लय होता है और जो स्वयं अस्तोदय रहित प्रकाशित है वही पूर्ण सत्य है।

– रमण महर्षि

वही कुछ कहो, जिसे स्वयं देखा हो, जिसके सम्बन्धमें विश्वस्त जानकारी हो। उसे भी व्यक्त करते समय संयमित परिमित कहो, ताकि उद्विग्नता न फैले। – भगवान् महावीर

सुन्दर सत्यको अल्प शब्दोंमें कहो, परन्तु कुरूप सत्यको किन्हीं शब्दोंमें नहीं। – ख़लील जिब्रान

सुबहकी तरह अगर तू सच्चाईके साँस लेने लगे तो अज्ञानके अँधेरेसे निकलकर ज्ञानके उजालेमें आ जाय। – सादी

सच्चाईसे ख़ुदा ख़ुश होता है। मैंने सच्चाईके रास्ते चलनेवालोंको कभी भटकते नहीं देखा। – शेख़ सादी

सत्य ही सबसे बढ़कर हितका साधन है। – नारद० पू०

हमारा ध्येय सत्य होना चाहिए, न कि सुख। – सुक़रात

भरपूर नम्रताके बग़ैर कोई सत्यको नहीं पा सकता। – गान्धी

सत्य तो एक है, फिर भी प्रेम उस एक सत्यसे द्वैत चाहता है, ताकि दूर-पासका खेल खेला जा सके। – स्वामी रामदास

सत्यका तब पता लगता है जब दो शख़्स हों – एक कहनेवाला और एक समझनेवाला। – ख़लील जिब्रान

शुद्ध और एकाग्र मन ही आध्यात्मिक सत्यको ग्रहण कर सकता है।

– स्वामी रामदास

संयमहीन अगर सत्यको पा भी गया तो रख नहीं सकता।

– स्वामी रामदास

सत्यकी ख़ातिर मैं स्वराज्यका भी त्याग करनेके लिए तैयार हो जाऊँगा।

– महात्मा गान्धी

एक नया सत्य प्राप्त करना एक नयी इन्द्रिय प्राप्त करनेके समान है ।
– लीबिग

सत्यकी खोजकी खातिर आदमी ग्रन्थ पढ़ता है; उसकी हर बातमें फँसकर नहीं रह जाता, सोनेका खोजी जमीन खोदता-खादता सोनेके पास रुकेगा; बीचकी चीजें छोड़ता चला जायगा, सत्यका खोजी इसी तरह आगे बढ़ता चला जायगा; पर रास्तेमें आये असत्यको सत्य समझकर अपनी खोज नहीं छोड़ बैठेगा । – महात्मा भगवानदीन

सत्यको सजानेकी जरूरत नहीं होती, सजानेसे उसकी सुन्दरता कम हो जाती है क्योंकि सत्यसे सुन्दर जगत्‌में दूसरी चीज नहीं 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' का यह अर्थ नहीं कि तीनों अलग-अलग चीजें हैं, इसका अर्थ है, सत्य शिव और सुन्दर है, सत्यको ईश्वर कहा जाता है, तब तो शिव-सुन्दर नहीं होगा तो और कौन होगा ? – महात्मा भगवानदीन

असत्यके अनन्तरूप हैं, सत्यका सिर्फ़ एक । – रूसो

सत्य बोले, प्रिय बोले, अप्रिय सत्य न बोले, प्रिय भी असत्य न बोले ।
– स्कन्दपुराण

जो कपटसे पूर्ण हो वह सत्य नहीं है । – सन्त विदुर

सत्याग्रह

सत्याग्रह विशुद्ध आत्मिक शक्ति है, यह शारीरिक बल नहीं है, सत्याग्रही शत्रुको कष्ट नहीं देता, सत्याग्रही शत्रुका नाश नहीं चाहता, सत्याग्रही बन्दूक़ आदि शस्त्रोंका प्रयोग नहीं करता, सत्याग्रहके प्रयोगमें द्वेषका सर्वथा अभाव है । अज्ञानसे यदि कोई हमें कष्ट देगा तो हम उसको प्रेम-से जीत लेंगे, सत्याग्रह सदा विजयिनी शक्ति है, सत्याग्रही अपनी जानकी परवा नहीं करते, वे जिस बातको सत्य समझते हैं उसे नहीं छोड़ते, पराजयका शब्द उनके कोषमें है ही नहीं, वे शत्रुपर रोष नहीं करते किन्तु दया-भाव रखते हैं । – महात्मा गान्धी

सत्याग्रही

सत्याग्रही जानता ही नहीं कि संसारमें पराभव भी कोई चीज है, लोगोंके पराजित कहनेसे न तो वह पराजित होता है और विजयी कहनेसे विजयी, उसके जय-पराजयका रहस्य कोई बिरला जानता है। — महात्मा गान्धी

जो न्यायका सच्चा पालन करनेवाला होगा वही सत्याग्रही हो सकेगा।
— महात्मा गान्धी

सत्संग

बहुत जन्मके पुण्यपुंजसे भाग्योदय होनेपर जब सत्संगकी प्राप्ति होती है तभी अज्ञानजन्य मोह और मदान्धकारका नाश होकर विवेकका उदय होता है। — पद्मपुराण

सत्संगका विलक्षण असर होता है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

बिना सत्संगके तरणोपाय ही नहीं। — ज्ञानेश्वर

सत्संग उसी महात्माका करे जो इष्टमें समानता रखता हो। — उड़ियाबाबा

साधन करनेका कष्ट उठाये बग़ैर साध्य प्राप्त करनेका उपाय सत्संगति है।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

कल्पवृक्ष केवल कल्पित वस्तुएँ ही देता है, कामधेनु केवल कामित भोग ही प्रदान करती है; चिन्तामणि भी चिन्तित पदार्थ ही देती है; किन्तु सत्पुरुषोंका संग सभी कुछ देता है। — संस्कृत-सूक्ति

कमलके पत्तेपर पड़ी हुई बूँद जितनी तरल है, उससे भी ज्यादा चपल यह जीवन है, लेकिन इसमें क्षण-भरका ही सत्संग भवसागर तरनेके लिए नौका बन जाता है। — शंकराचार्य

साधु-संगत वैकुण्ठ ही है। — कबीर

सत्पुरुष या सत् — परमात्मा — के संगको सत्संग कहते हैं। — उड़ियाबाबा

सत्संगका परिणाम सुख और कुसंगका परिणाम दुःख है। — उपासनी

बिना सत्संगके भक्ति लाभ नहीं होता और भक्तिसे ही सब लाभ होता है।
— श्री हरिहर बाबा

सत्संग पारसमणि है। — महात्मा गान्धी

सत्संग उसे समझना जहाँ सिर्फ़ मालिकका गुणानुवाद होता हो।
— सन्त नन्दलाल

सदाचार

मैं जीवन और सदाचार दोनों चाहता हूँ, अगर ये दोनों मुझे साथ-साथ नहीं मिलते हैं तो मैं जीवनको छोड़ दूँगा और सदाचारपर क़ायम रहूँगा। — चीनी सन्त मेनसियस

सदाचरण ही सदाचरणका फल है। — श्री कृष्ण

सद्गुण

सद्गुणोंके सिवा धर्म नहीं; सद्गुणोंके सिवा मानवता नहीं। — नाथजी

सद्गुणका पुरस्कार है सम्मान। — सिसरो

सद्गुण ही सद्गुणशीलताका पुरस्कार है। — एमर्सन

बुलबुल! तू वसन्तकी बात कह, बुरी ख़बर उल्लूके लिए छोड़ दे।
— सादी

सद्गुणकी भी सीमाएँ होती हैं, उनका उल्लंघन कर दिया जाय तो वह सद्गुण नहीं रहता। — होरेस

सद्गुणोंको मान देनेवाले बहुत हैं, उनपर जान देनेवाले कम।
— हलवेशियस

सद्गुणशीलता

सद्गुणशीलता तन्दुरुस्ती है, दुर्गुणरतता बीमारी। — पैट्रार्क

सद्‌गुणी

जो सद्‌गुणी है वह लड़ाई नहीं मोल लेता; लड़ाई मोल लेता है तो हारता नहीं है; हार भी जाता है तो पराजित नहीं होता। — अज्ञात

सन्त

जिनकी कल्पना सत्य निकली और जो अत्यन्त सुखमें हैं उन्हें सन्त कहते हैं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अवतारी पुरुष और दूसरे महात्मा मामूली आदमियोंकी तरह काम करते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी आत्माएँ कर्मोंसे मुक्त रहकर निजस्वरूपमें विश्राम करती रहती हैं। — रामकृष्ण परमहंस

सन्तोंके ऋणसे मुक्त होनेके लिए उन्हें क्या दें? ये प्राण उनके चरणोंमें अर्पण कर दें तो भी थोड़ा है। — सन्त तुकाराम

इस भयंकर संसार-सागरसे स्वयं तरे हुए शान्त और महान् सन्तजन, निःस्वार्थ भावसे औरोंको भी तारते हुए, वसन्तके समान लोकहित करते रहते हैं। — विवेक-चूड़ामणि

जब किसीने सन्तको पहचान लेनेका दावा किया तो मैंने कानोंपर हाथ रख लिये। — तुलसी

हरिभक्त सन्त सज्जन पैदा न हुए होते, तो 'जल मरता संसार'। — सन्त कबीर

जो चित्तको प्रसन्न करनेवाला, व्यसन-विमुख, शोक तापको शान्त करनेवाला, पूज्य भाव बढ़ानेवाला, श्रवणसुखद, न्यायानुकूल, सत्य, हितकर, नम्र, सार्थक, वादमुक्त और निर्दोष वचन बोलता है, बुधजन उसे ही सन्त कहते हैं। — अमितगति

सच्चा सन्त लोक-प्रतिष्ठा नहीं चाहता और भगवान्‌के दियेमें सन्तोष मानता है। — सन्त पिंगल

जो सन्त तितिक्षु, करुणामय, सबके सुहृद्, अजातशत्रु और शान्त होते हैं वे साधुओंमें भूषण रूप हैं। — श्रीमद्भागवत

साधुजन मेरे हृदय हैं और मैं साधुओंका हृदय हूँ; वे मेरे सिवा कुछ भी नहीं जानते और मैं उनके सिवा कुछ नहीं जानता।

– श्रीमद्भागवत

सन्त और भागवतमें भेद नहीं है। – गुरु रामदास

भगवान्‌ने सन्तोंको वरदान दे रखा है कि आपके कृपा-कटाक्षसे जीवोंको निजपदकी प्राप्ति होगी। – ज्ञानेश्वर

सन्त परमेश्वरका सगुण रूप हैं। – ज्ञानेश्वर

सन्त गाँठ नहीं बाँधते; पेट समाता लेते हैं; साईंके सम्मुख रहते हैं; वह माँगते ही देता है। – कबीर

[illegible]रिका प्रेमी दूरसे ही दिख जाता है – तन क्षीण, मन उन्मन, जगसे [illegible] हुआ। – कबीर

सन्त निःस्पृह, भगवत्परायण, प्रशान्त, समदर्शी, निर्मम, निरहंकार, निर्द्वन्द्व और निष्परिग्रह होते हैं। – भागवत

सन्त एक भी मिनिट फ़िज़ूल नहीं खोता। – समर्थ गुरु रामदास

सन्त हमेशा कुछ-न-कुछ काम करता रहता है। – समर्थ गुरु रामदास

सन्त सन्तपन नहीं छोड़ते चाहे करोड़ों असन्त मिलें, चन्दनसे साँप लिपटे रहते हैं, फिर भी वह शीतलता नहीं छोड़ता।

– कबीर

सन्त वह है जिसमें कोई इच्छा न हो, जिसमें क्रोध न हो, जिसकी इच्छाएँ आत्मामें केन्द्रीभूत हो गयी हों, और जिसका ख़ज़ाना 'नाम' हो।

– समर्थ गुरु रामदास

सन्तका प्रधान गुण है – प्रभुमय जीवन। – समर्थ गुरु रामदास

सन्त कपड़ोंसे भिखारी-सरीखा लगता है। उसकी शक्ति उसके खामोश काममें है। — समर्थ गुरु रामदास

सन्त मार्मिक वचन बोलता है और इतना उदासीन होता है कि फ़ौरन सभाको छोड़कर चल देता है। — समर्थ गुरु रामदास

सन्त अपने रहस्यअनुभवके बलपर सब दार्शनिक विचारधाराओंको हमवार कर देता है और लोगोंको मजबूर कर देता है कि वे लक़ीरके फ़क़ीर न रहें।

— समर्थ गुरु रामदास

जो मनकी मलिनतासे रहित, दुनियाके जंजालसे मुक्त और लौकिक तृष्णासे विमुख है, वही सच्चा सन्त है। — अज्ञात

सन्त सबके हृदयोंको जानता है और उन्हें रोशन करनेके विविध तरीके जानता है। — समर्थ गुरु रामदास

सन्त कम कहता है, और कम कहकर भी सबके दिलोंको खींच लेता है।

— समर्थ गुरु रामदास

सन्त जहाँ जाय मेहमानकी तरह रहे; लोग चाहें कि वह और ठहरे। मगर अति परिचयके भयसे वह वहाँ अधिक न ठहरे।

— समर्थ गुरु रामदास

सन्त चूँकि ईश-सेवाका व्रत लिये होता है उसका काम यही रहता है कि दुनियाको ईश्वरसे भर दे। — समर्थ गुरु रामदास

सच्चा सन्त ईश्वरकी गोदमें खेलता-मुसकराता सुन्दर बालक है।

— अज्ञात

जो भगवान्‌का स्वरूप है वही सन्तका स्वरूप है।

— श्री उड़ियाबाबा

सन्तुलन

सारा संगीत बेमजा हो जाता है अगर ताल-सुरका ख़याल न रखा जाय। यही हाल मानव-जीवन-संगीतका है। — शेक्सपीयर

सन्तोष

ऐ सन्तोष ! मुझे दौलतमन्द बना दे, क्योंकि दुनियाकी कोई दौलत तुझसे बढ़कर नहीं है । — सादी

वही सबसे धनवान् है जो सबसे कमपर सन्तोष कर सकता है, क्योंकि सन्तोष ही सच्चा धन है । — सुक़रात

सन्तोष प्रभुका वह वरदान है जो श्रद्धा और शरणागतिसे मिलता है । — स्वामी रामदास

सन्तोषी अपनी तमाम आकांक्षाओंको समाप्त किये होता है । वह आत्म-रंजन करता है, लोक-रंजन नहीं । — हृदय-प्रदीप

धनवान् कौन है ? जिसको सन्तोष है । — अज्ञात

न्याय-नीति पूर्वक कमाये हुए धनसे ही अपना निर्वाह करना चाहिए । — पाराशर-स्मृति

[illegible] ताज मेरे दिलमें है, सिरपर नहीं । उस ताजको बिरले ही राजा [illegible]न सकते हैं । वह ताज है सन्तोषका ताज । — शेक्सपीयर

विपत्तिको भी सम्पत्ति मानना — इसीका नाम सन्तोष है । — तपस्वी जुन्नेद बग़दादी

मनुष्यका सुख सचमुच सन्तोषमें है । — महात्मा गान्धी

हमें सन्तोष और आत्मतृप्ति तभी हो सकती है जब कि हम अपने भाग्यका निपटारा स्वयं अपने तरीक़ेसे करें । — जवाहरलाल नेहरू

इनसान अगर लालचको ठुकरा दे, तो बादशाहसे भी ऊँचा दर्जा हासिल कर ले; क्योंकि सन्तोष ही इनसानका माथा हमेशा ऊँचा रख सकता है । — शेख़ सादी

बन्दा अपने ख़ुदासे सन्तुष्ट है यह कब समझा जाय ? सम्पत्ति मिलनेपर जैसे शुक्र अदा करता है, वैसे ही दुःख पड़नेपर एहसान माने तब ? — तपस्विनी रबिया

सन्तोषसे सर्वोत्तम सुखका लाभ होता है । — महर्षि पतंजलि

जो खुशक़िस्मत हैं वे सन्तोष करते हैं। अगर तू खुशक़िस्मती चाहता है तो सन्तोषके नूरसे अपनी जानको रोशन कर। — सादी

अल्पसन्तोष और सारग्रहणका सबक़ भौंरेसे सीखो। — भागवत

ऐसा कोई उपाय नहीं है कि जिससे सब लोगोंको सन्तुष्ट किया जा सके; सर्वथा स्वहित करना; लबाड़ लोग क्या कर लेंगे? — जीवन्मुक्ति-विवेक

जिसने दीनताको ठुकरा दिया है और जो आत्म-सन्तुष्ट रहता है वही कर्मोंको निर्मूल करता है। — संस्कृत-सूक्ति

सन्तोष दो प्रकारका है; एक परिश्रमसे सम्बद्ध है, दूसरा प्रमादसे। पहला पुण्य है, दूसरा पाप। — श्रीमती ऐजवर्थ

सन्देह

जब तुम सन्देहमें होओ तो इस कसौटीसे काम लो। निर्धनतम और दुर्बलतम आदमीके चेहरेको याद करो और अपनेसे पूछो कि मेरे इस क़द[illegible] से उसका क्या भला होगा। — महात्मा [illegible]

सन्मार्ग

सन्मार्गसे हम विचलित न हों। — अथर्ववेद

सनातन

'सनातनो नित्यनूतनः' (सनातन वह है जो नित्य-नूतन हो।) — अज्ञात

सफलता

सफलताकी कुंजी सिर्फ़ यह है कि वह करो जो तुम अच्छी तरह कर सकते हो, और अपने हर कामको अच्छी तरह करते वक़्त यशका खयाल तक न आने दो। — लौंगफ़ैलो

प्रसन्न और मधुर आदमी सदा सफल होते हैं। — वोल्टेर

सफलताका रहस्य यह है कि लक्ष्यको सदा सामने रखे। — डिज़रायली

सफलताका पहला रहस्य है आत्मविश्वास। — एमर्सन

सब कार्योंमें, सफलता पूर्व तैयारीपर निर्भर रहती है; पूर्व तैयारीके बग़ैर निश्चित रूपसे असफलता ही हाथ लगती है। — कन्फ़्यूशियस

जो परमात्मामें लीन रहते हैं सफलता और शक्ति प्राप्त करते हैं; परमात्मा-से बिछुड़ जानेवाले विफल और बरबाद होते हैं। — स्वामी रामतीर्थ

वही सफल होता है जिसका काम उसे निरन्तर आनन्द देता रहता है।
— थोरो

मेरे दाहिने हाथमें पुरुषार्थ है और बायें हाथमें सफलता। — अथर्ववेद

सभ्यता

मानवजातिका अन्त इस प्रकार होगा कि सभ्यता आख़िरकार उसका दम साध देगी। — एमर्सन

हमारी सभ्यताकी जान यह है कि हम अपने तमाम सार्वजनिक या निजी कामोंमें नैतिकताको प्रधान स्थान देते हैं। — गान्धी

सभ्यताकी एक मात्र कसौटी है सहनशीलता। — आर्थर हैल्प्स

आधुनिक सभ्यताका मैं घोर विरोधी रहा हूँ और हूँ। — महात्मा गान्धी

औद्योगिक सभ्यता एक बीमारी है क्योंकि वह नितान्त पापपूर्ण है।
— गान्धी

सभ्य लोग प्रशान्त महासागरमें आये शराब, सिफ़लिस, पतलून और बाइ-बिल लेकर। — हैवलॉक ऐलिस

नीतिका पालन करना, अपने मन और इन्द्रियोंको वशमें रखना और अपनेको पहचानना सभ्यता है; इसके विरुद्ध जो है वह असभ्यता है।
— महात्मा गान्धी

युरॅपकी सभ्यता आसुरी है। — महात्मा गान्धी

सभ्यताका अन्तिम सुफल यह हो कि हमें फ़ुरसतके वक़्तका उपयोग समझदारीसे करना आ जाय। — बर्ट्रेण्ड रसल

सभ्यता उस आचरणका नाम है जिससे मनुष्य अपना कर्तव्य-पालन करता रहता है। — महात्मा गान्धी

समझ

सामान्य समझके मानी हैं सन्तुलनकी भावानुभूति। — महात्मा गान्धी

जिसमें कोमलताकी कमी है उसमें समझदारीकी कमी है। — पोप

समझदारी

जो एक नज़र देख लेनेसे नहीं समझ सकता वह बहुत-कुछ समझानेपर भी नहीं समझेगा। — अरबी कहावत

साफ़गोईसे बढ़कर समझदारी नहीं। — डिसरा[illegible]

समझदारीका एक लक्षण यह है कि दुस्साहस न करे। — [illegible]

ज़रा-ज़रा-सी बातोंका बुरा मानना हमेशा महा मग़रूरी या नि[illegible] नासमझीका लक्षण है। — पोप

समझौता

समझौता शैतानका काम है। — इब्सन

समता

समरस अवस्था माने प्रेम-कलिकामें उँडेला हुआ ज्ञान-प्रकाश। सगुणसे निर्गुण प्रकट हो। दृश्य लुप्त न होते हुए द्रष्टाका तेज फैले। चैतन्यकी क्रीड़ामें, कर्मयोगमें, व्यवहार करते हुए शान्तिका अनुभव करें। शब्द बोलते हुए निःशब्दमें लीन रहें। प्रेमकी कोमलता और ज्ञानकी प्रखरताका योग साधें। — ज्ञानेश्वर

समता, सुख या ऐशो-आरामसे नहीं, संयमसे प्राप्त होती है। — विनोबा

जो सुख-दुःखको सर्वत्र समतासे देखता है वह परम योगी है। — गीता

चित्तको सदा सम रखना ही योगका सार है। — ज्ञानेश्वरी

सर्वत्र दुःख-साम्यकी योजना किये बिना हरिकी समाधि नहीं मिलेगी।
— ज्ञानेश्वरी

ईश्वरकी नज़रमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है। — एक कवि

जिसके लिए जो योग्य है सो देना इसीमें सच्ची समता है।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

हे धनंजय, संग छोड़कर, योगस्थ रहकर कर्म कर; सिद्धि और असिद्धिमें समान रह। समत्व ही योग है। — गीता

[illegible]मदर्शी सबके प्रिय और सबके हितकारी होते हैं। उन्हें सुख-दुःख; स[illegible]ा-गाली समान हैं। — गोसाईं तुलसीदासजी

[illegible]-चित्रित युद्धमें सैन्यकी जैसी अक्षुब्धता है वैसी ही समता व्यवहार-रत ज्ञानीकी रहती है। — योगवासिष्ठ

शत्रु और बन्धु, सुख और दुःख, प्रशंसा और निन्दा, मिट्टी और सोना तथा जीवन और मरणमें श्रमण समबुद्धि होता है। — प्रवचनसार

श्रमण ऐहलौकिक विषय-तृष्णासे विरत और पारलौकिक विषयाकांक्षाओंसे रहित होता है। उसका आहार-विहार सन्तुलित होता है। वह कषाय-वासनाओंसे निर्मुक्त रहता है। — प्रवचनसार

जिसे ममता नहीं वही समता पाता है। — योगशास्त्र

समभाव ही मानव जातिकी खरी सिद्धि है। — सन्त वचन

समताका रहस्य यह है कि मनुष्य यह समझ ले कि सबमें समान रूपसे रहनेवाला जो एकमेवाद्वितीय ब्रह्म है वह मैं ही हूँ। — ज्ञानेश्वरी

समभावसे हमारा देह-सीमित 'आत्म-भाव' व्यापक हो जाता है।
— नाथजी

राग-द्वेष तभी मिटता है, जब अपना स्वरूप मिल जाता है।

— सन्त नन्दलाल

जिसमें समता आ गयी उसने संसार जीत लिया। — गीता

कर्मासक्तिका आश्रय न ले, मूढ़ताका आश्रय न ले, नैष्कर्म्यका भी आश्रय न ले; यथास्थित समान रह। — योगवाशिष्ठ

समदर्शी

समदर्शी लोग पाप नहीं करते। — आचारांग

समय

मैंने समयको नष्ट किया। और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।

— शेक्सपीयर

साइरसके पास जो आदमी आते उनसे कहता : "थोड़ेमें कह दीजिए, समय बहुत क़ीमती है"। — अज्ञ

नदीके प्रवाहमें तुम दो दफ़ा नहीं नहा सकते। समयका प्रवाह भी ऐसा ही है, बह गया सो बह गया। — हिरेक्लीटस

एक आज दो कलके बराबर है। — फ्रैंकलिन

वर्तमानका हर क्षण अनन्त मूल्यवान् है। — गेटे

वो किसी महान् कार्यके लिए पैदा नहीं हुआ जो वक़्तकी क़ीमत नहीं जानता। — वनूवेनर्ग

जो अपने समयका सबसे ज्यादा दुरुपयोग करते हैं वे ही समयकी कमीकी सबसे ज्यादा शिकायत करते हैं। — ब्रूयर

समय अमूल्य है, यह समझकर आजकी २१६००० विपलका उपयोग करना। — श्रीमद्राजचन्द्र

भगवच्चिन्तनमें समय व्यतीत करना मनुष्यका मुख्य कर्तव्य है। भक्तके लिए भगवान्की सम्पत्तिका अपव्यय करना महापाप है। — श्री उड़ियाबाबा

समयकी सुचारु व्यवस्था, सुव्यवस्थित मनकी अचूक परिचायिका है।

— पिटमैन

सर टूट जानेके बाद वह अपनी फ़ौलादी टोपी पहन रहा है।
— इटालियन कहावत

पकड़ लिये जानेपर चिड़ियाका चीखना फ़िज़ूल है। — फ़्रान्सीसी कहावत

बच्चेके डूब जानेपर कुएँके ढकनेसे क्या होता है। — डेनिस कहावत

हर चीज़ ठीक वक़्तपर। — जर्मन कहावत

जबतक समय है समय रहते समयको पकड़ो, क्योंकि समयके निकल जानेपर समय नहीं है। — अज्ञात

सिवा दिन-रातके हर चीज़ खरीदी जा सकती है। — फ़्रान्सीसी कहावत

वक़्तका हर मिनिट सोनेके हर तारकी तरह क़ीमती है। — मैसन

समय वह बूढ़ा न्यायाधीश है जो सब अपराधियोंकी परीक्षा करता है।
— शेक्सपीयर

सौ हज़ार गुज़रे हुए कल एक आजकी बराबरी नहीं कर सकते।
— वर्ड्सवर्थ

समरसता

ईश्वरके साथ समरसता साधनेके बाद भी अगर हममें पुरुषार्थ और समता न आवे; दया, न्याय, उदारता, प्रेम, क्षमा, वात्सल्य वग़ैरह गुण हममें पूरी तरह न उतरें; अखण्ड सत्कर्म-परायणता हममें न व्यापे; तो उस तादात्म्यकी और समरसताकी मानवी पूर्णताकी दृष्टिसे कुछ क़ीमत नहीं। — नाथजी

समष्टि

जबतक सब आज़ाद नहीं हैं कोई पूरी तरह आज़ाद नहीं है; जबतक सब नीतिमान् नहीं हैं कोई पूरी तरह नीतिमान् नहीं है; जबतक सब सुखी नहीं हैं कोई पूरी तरह सुखी नहीं है। — हरबर्ट स्पेन्सर

समाज

समाजमें दो वर्ग हैं : एक वे जिनके पास भूखसे ज्यादा भोजन है और दूसरे वे जिनके पास भोजनसे ज्यादा भूख है। — निकोलस चैम्फ़र्ट

वर्गरहित समाजकी रचनाका आदर्श केवल लक्ष्य बनाकर न रहने दिया जाय बल्कि उसकी स्थापनाके लिए प्रयास किया जाय। — गान्धी

समाजरचना

जिसके हृदयमें यह निष्ठा दृढ़ हो गयी कि 'मेरा जीवन मुझ अकेलेका नहीं है, बल्कि सबके लिए है,' तो समझना उसमें मानवता जाग उठी। इस मानवताका जिस समाज-पद्धतिमें विकास हो उस समाज-रचनाकी हमें ज़रूरत है। महाप्रयत्नसे भी हमें वह निर्मित करनी चाहिए। — नाथू

समाजवाद

मेरा आदर्श 'सोशलिज़्म' ऐसा है कि सबको सरीखी रोज़ी मिले। आज सबकी रोज़ी सरीखी नहीं है इतना ही नहीं, दो आदमियोंकी रोज़ीमें ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ है। — महात्मा गान्धी

समाधान

मेरे हृदयमें तम्बूरा स्वरमें मिला हुआ है। — गान्धी

जबतक 'मैं' और 'मेरा' है तबतक समाधान नहीं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

जहाँ कर्तव्यकी जागृति व भगवान्की स्मृति है वहीं समाधानकी प्राप्ति होती है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

जहाँ असमाधान है वहाँ दुष्ट शक्तियोंको काम करनेका मौक़ा मिलता है; जहाँ समाधान है वहाँ अच्छी शक्तियाँ मदद करती हैं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

संकीर्ण वृत्तिके आदमीको समाधान मिलना मुमकिन नहीं। – श्री ब्रह्मचैतन्य

क्षणिकसे स्थायी समाधान कैसे मिल सकता है? – श्री ब्रह्मचैतन्य

पूर्ण समाधान ही सच्चा भगवद्दर्शन है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

समाधान माने पूर्णता। – श्री ब्रह्मचैतन्य

वृत्तिका स्थिर होना, शान्त होना ही समाधान है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जो सब जगह परमात्माको भरा देखेगा उसे ही समाधान मिलेगा। – श्री ब्रह्मचैतन्य

लेनेकी अपेक्षा देनेमें ज्यादा समाधान है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

कर्तव्यमें तत्काल समाधान है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

समाधानके सिवा और किसी बातसे हमारे जीकी तलमल और हुरहुर [illegible] नहीं हो सकती। – श्री ब्रह्मचैतन्य

[illegible] चीज़ जहाँ रखी है उस जगहके सिवा त्रिलोकमें भी ढूँढ़नेपर नहीं मिल सकती। समाधान सिर्फ़ भगवान्‌के पास है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

समाधानके लिए निष्ठा अत्यन्त आवश्यक है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

समाधि

प्रपंचमें व्यवहार करते हुए भी जब वृत्ति भगवान्‌से नहीं हटती तब उसे 'सहज-समाधि' कहते हैं। – श्री ब्रह्मचैतन्य

सहज समाधिमें हर परिवर्तन आनन्द-नर्तन प्रतीत होता है। –स्वामी रामदास

सारी आशातृष्णाके लिए पातकरूप तत्त्वावबोध ही समाधि है, मौन बैठ रहना नहीं। – योगवाशिष्ठ

वृत्ति निर्विकार हो, फिर ब्रह्माकार हो, फिर उसका सम्यक् विस्मरण हो, इसीका नाम ज्ञान-समाधि है। – अपरोक्षानुभूति

समस्त कल्पनाओंसे सर्वथा रहित होकर केवल स्वरूपमें ही स्थिर रहनेको समाधि कहते हैं। — अज्ञात

समाधिका अर्थ है सर्वत्र ध्येयका ही साक्षात्कार करना। समाधिका अर्थ है ध्येयेतर सृष्टिका विस्मरण। समाधिका अर्थ सारी सृष्टिका विस्मरण नहीं है। — साने गुरुजी

स्वानुभवके रसके आवेशमें दृश्य और शब्दकी उपेक्षा करनेवालेको निवातस्थ दीप-जैसी निर्विकल्प समाधि सिद्ध होती है। — दृग्दृश्यविवेक

समानता

किसी आदमीका अपनेको दूसरेसे बढ़कर, मानकर उसपर सवारी कसना इनसान और भगवान्‌के प्रति पाप है। — गान्धी

"आत्मवत् सर्वभूतेषु" यह क्या केवल पोथियोंमें ही धरा रहेगा?

समालोचना

दूसरोंकी समालोचना न करना वैराग्यका लक्षण है।

— श्री उड़ियाबाबा

सम्पत्ति

लोगोंके आगे दुखड़े रोनेके बजाय प्रभुके आगे रोओ तो सम्पत्ति भी प्राप्त हो। — तपस्वी अबू हसन खर्कानी

सम्पत्ति और वैभवके मदसे मनुष्य भानरहित और उच्छृंखल हो जाता है।

— भगवान् श्री कृष्ण

जिसे तुम सम्पदा समझते हो वह आपदा है। और जिसे आपदा समझते हो वह आपदा नहीं है। — योगवाशिष्ठ

सम्पत्ति चोरी है। — प्रोधन

सत्ता और सम्पत्तिकी धुन्दसे अन्ध बने लोगोंको मेरा कालदण्ड नहीं दीखता। — भगवान् श्री कृष्ण

जबतक मेरे पास ज़रूरतसे ज्यादा खानेकी चीजें हैं और दूसरोंके पास कुछ नहीं है, जबतक मेरे पास दो वस्त्र हैं और किसी आदमीके पास एक भी नहीं है, तबतक दुनियामें सतत चलते हुए पापका मैं भागीदार हूँ।
– टॉलस्टॉय

लक्ष्मीको पाते ही आदमी कठोर हो जाता है। – योगवाशिष्ठ

मुझ मोक्षदायकको प्रसन्न करके जो केवल सामान्य सम्पत्तिकी इच्छा करता है वह सचमुच मन्दभाग्य है। – भगवान् श्रीकृष्ण

अपनेको सबके मंगलके लिए लुटा देना ही सबसे बड़ी सम्पत्ति है।
– संस्कृत-रत्नाकर

हमारी सम्पत्तिका आधार कमानेकी ताक़त नहीं त्याग-शक्ति है। – अज्ञात

हर-एकको खाने-पीनेके लिए भरपूर मिलना चाहिए, यही सम्पत्तिकी [illegible]ान-बाँटनी है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

[illegible]के हाथमें बड़ी सम्पत्ति बड़ी विपत्ति है। – अज्ञात

सम्बन्ध

मालीसे सम्बन्ध रखोगे तो पूरी वाटिकासे लाभ उठा सकोगे। भगवान्से सम्बन्ध बना लो तो भगवान्की वाटिकारूप यह सारा संसार तुम्हारा हो जायगा। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

सम्बन्धी

संसारमें जितने सम्बन्धी मिले और बिछुड़ गये उतने तो गंगाकी बालूके कण भी नहीं हैं। – संस्कृत-सूक्ति

मेरे लिए न तो माता है, न पिता है, न कोई सगा-सम्बन्धी ही है। भगवान्के सिवा मेरा कोई नहीं है। – भक्त प्रह्लाद

जो प्रिय सम्बन्धीको मौतकी फाँसीसे नहीं छुड़ा देता वह स्वजन स्वजन नहीं है, पिता पिता नहीं है, माता माता नहीं है, पति पति नहीं है, गुरु गुरु नहीं है, देव देव नहीं है। – भगवान् ऋषभदेव

सम्मान

अगर आदमी सम्मान चाहे; तो सम्माननीय लोगोंका संग करे ।

— ला ब्रूयर

सम्यग्दर्शन

जो आत्मा सम्यग्दर्शनवाली होती है वह कर्मोंसे लिप्त नहीं होती ।

— मनुस्मृति

सम्यक्-विचारसे बढ़कर भवरोगका इलाज नहीं । — हृदय प्रदीप

सम्यग्दर्शन-शून्य आत्मा संसरण करता रहता है । — मनुस्मृति

सरलता

सरलता भक्तिमार्गका सोपान है । — श्री उड़िया बा[illegible]

चालबाज़ और धूर्तको सबसे ज्यादा व्याकुलता उस वक़्त होती है जब उसका पाला किसी सीधे और सच्चे आदमीसे पड़ता है । — कोल्टन

जहाँ सचाई है वहीं सरलता रहती है । — जेम्स एलन

महत्तम सत्य सरलतम होते हैं; महत्तम व्यक्ति भी । — हेयर

महत्तासे सरल कुछ नहीं; सचमुच सरल होना ही महान् होना है ।

— एमर्सन

महात्माओंका मन, वचन कर्म एक होता है । — सुभाषित संचय

सर्वोदय

आज़के विद्वान् सर्वोदयको अव्यवहार्य भी मानते हैं । लेकिन यह अव्यावहारिकता गाली नहीं, गौरव है ! ब्रह्म कैसा है ? अव्यवहार्य है, यानी वह व्यवहारका कॉइन (सिक्का) नहीं बन सकता । वह तो व्यवहारको, बाज़ारको तोड़ेगा । सस्ता ख़रीदनेको ही आज व्यवहार मानते हैं । हम कहते हैं, महँगा ख़रीदो, सस्ता चीज़ तो चोरीकी होती है । — विनोबा

आस्तिक माने ईश्वरको माननेवाले। ईश्वर कौन है? वही मालिक है। अगर हम मालिक बनते हैं तो हम ईश्वरका ही स्थान लेते हैं। यह तो नास्तिकता है। इसलिए सही आस्तिकता रखनी चाहिए। सही आस्तिकता यानी परमेश्वरने जो चीजें दी हैं उनका भोग सबको मिले, इसीका नाम है सर्वोदय। — विनोबा

सर्वोदय-समुद्रका अमृत है — सत्य और अहिंसा। — विनोबा

सहज

अपूर्व आनन्दके भेदको जो जानता है, उसे सहजका ज्ञान एक क्षणमें प्राप्त हो जाता है। — सिद्ध तिल्लोपाद

जैसे घोर अन्धकारमें चन्द्रमणि उजाला कर देती है, उसी तरह सहज [illegible]यावस्थाका अलौकिक महासुख तमाम दुश्चरितोंका नाश कर देता है। — सिद्ध सरहपाद

महासुख निर्मल सहज स्वरूप है; न वहाँ पाप है, न पुण्य। — सिद्ध तिल्लोपाद

सहनशीलता

जो लोगोंकी तुच्छ ग़लतियोंको दरगुज़र नहीं कर सकता वह दरिद्र आत्मा है। — फ़ैल्थम

जो लोग शान्तिसे सब कुछ सह लेते हैं, उनके सम्बन्धमें यह बिलकुल निश्चित है कि उन्हें भीतरी चोट बड़ी गहरी पहुँची होती है। — रवीन्द्रनाथ टैगोर

गाली सह लेनेके मानी हैं गाली देनेवालेकी इच्छाके वश न होना, गाली देनेवालेको असफल बना देना; यह नहीं कि जैसा वह कहे वैसा करना? — गान्धी

अपनेसे बलवान्‌के अपराध तो सभी विवश होकर सहन करते हैं। सहन-शीलता तो वह है जिससे अपनेसे निर्बलके अपराध सहन किये जायें।
— बोधिसत्त्व

जो पत्थरकी तरह सहनशील हो गया वह लक्ष्मीनारायण बन गया।
— उपासनी

जीओ और जीने दो, क्योंकि पारस्परिक सहिष्णुता और सहनशीलता जीवनका नियम है। मैंने यह सबक़ क़ुरान, इंजील, ज़ैन्द अवस्ता और गीतासे सीखा है। — महात्मा गान्धी

क्रोधरहित और दुर्भावरहित सहनशीलताके सूर्योदयके सामने कठोरतम हृदय भी पिघलना ही चाहिए और घोरतम अज्ञान भी दूर होना ही चाहिए। — गान्धी

सब प्रकारके दुःखोंको शान्तिपूर्वक सहना चाहिए। — श्री उड़ियाबाबा

आर्य पुरुषोंमें इतनी सहनशीलता होती है कि दुर्जनोंके वचन-अंगारे जलाये जानेपर भी कड़ुआ नहीं बोलते। — सुभाषित-संचय

सहनशक्तिके शिखरपर ही भगवान् विराजते हैं। — उपासनी

सहयोग

मनुष्योंके साथ प्रगति कर। — वेदवाणी

एक हाथ दूसरेको धोये, वर्ना दोनों मैले हो जायेंगे। — डेनिश कहावत

सहानुभूति

सहानुभूति वह सार्वभौमिक भाषा है जिसे जानवर भी समझ लेते हैं और उसकी क़द्र करते हैं। — जेम्स एलन

सहानुभूतिसे हमारी खुशियाँ बढ़ती हैं और हमारे रंज कम होते हैं।
— चैरी क्रेट्स

डूबनेवालेके प्रति सहानुभूतिका मतलब उसके साथ डूब जाना नहीं है, बल्कि खुद तैरते हुए उसे बचानेकी कोशिश करना है। — अज्ञात

सहायक

ईश्वर असहायोंकी सहायता करता है, समर्थोंकी नहीं । – गान्धी

जो असहाय हैं उनका सहायक ईश्वर है । – तमिल कहावत

सहायता

ज़ब एक दरवाज़ा बन्द हो जाता है, सौ दरवाज़े खुल जाते हैं ।
– स्पेनी कहावत

जब आवश्यकता अधिकतम होती है, सहायता निकटतम होती है ।
– जर्मन कहावत

यदि आप लँगड़े और असमर्थ हैं तो दूसरेकी सहायता और कृपासे सत्य-नगरके दिव्य प्राचीरपर चढ़नेमें लज्जाका अनुभव नहीं करना चाहिए ।
– सन्त मारकस अरलियस

[illegible]नी सहायता स्वयं करोगे तो ईश्वर भी तुम्हारी सहायता करेगा ।
– डच और डेनिश कहावत

सहिष्णुता

सहनशीलता सर्वोत्तम धर्म है । – विक्टर ह्यूगो

सभ्यताकी एकमात्र कसौटी है सहिष्णुता । – आर्थर हैल्प्स

संकट

आत्मबलका बढ़ना माने देहबुद्धिका कम होना । परमात्मा इसीके लिए संकट भेजता है । लेकिन तुम डरते हो ! इसे क्या कहा जाय ? ऐसी स्थितिमें संकट वापस लेना तुम्हारा अहित करना है ।
– सद्‌गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

संकल्प

एक आवश्यक काम पूरा करना होगा । वह है – 'मनमें भरे हुए नाना तरहके संकल्पोंका नाश ।' ज्योंही तुम्हें इस कार्यमें सफलता मिलेगी त्योंही संसारी प्रलोभन नितान्त सुलभ हो जायेंगे । – उड़ियाबाबा

समस्त दृश्य-जगत् संकल्पसे पूर्ण है। जैसा संकल्प करोगे, ठीक उसी भाँति दृष्टिगोचर होने लगेगा। संकल्प समुद्रके जलकी बूँदके समान है। अनन्त संकल्पसमूह ही संसार है। वास्तवमें संकल्पसे इतर कुछ नहीं है। ऐसा विचार करके विश्वप्रपंचकी आसक्तिका नाश कर दो। — उड़ियाबाबा

इस दुनियामें हर चीज संकल्प-शक्तिपर निर्भर है। — डिसराइली

हम दृढ़ संकल्पसे सब कुछ कर सकते हैं। संकल्पसे सृष्टिकी उत्पत्ति एवं प्रलय भी कर सकते हैं। ईश्वर प्राप्ति भी दृढ़ संकल्पसे ही हो सकती है। — उड़ियाबाबा

विश्वव्यापी महान् शक्तिको अपने अनुकूल कर लेनेका मार्ग और सामर्थ्य हमारे दृढ़ संकल्पमें है। — नाथजी

संकल्पका संन्यास किये बिना कोई योगी नहीं होता। — गी

विश्वमें कुछ भी कठिन नहीं है; केवल संकल्पकी दृढ़ता चाहिए। — चीनी स्त

लोगोंमें बलकी नहीं, संकल्प-शक्तिकी कमी होती है। — विक्टर ह्यूगो

संकल्प-विकल्प

संकल्प-विकल्पके मिटते ही स्वयं जीव ही परमात्मा हो जाता है। — ज्ञानेश्वरी

संकल्प-शक्ति

हमारी संकल्प-शक्ति ही हमारे अन्दर रहनेवाली सच्ची ईश्वरशक्ति है। — नाथजी

संकोच

अति संकोच अनुचित है। वह आदमीको परेशानी और गुलामीमें ला पटकता है। — स्वामी रामतीर्थ

संग

संगका सर्वथा त्याग करना चाहिए। किन्तु यदि उसका त्याग न किया जा सके तो सत्पुरुषोंका संग करना चाहिए, क्योंकि सत्संग ही उसकी औषधि है। कामनाओंको सर्वथा छोड़ देना चाहिए। परन्तु यदि वह छोड़ी न जा सके तो मोक्षकी कामना करनी चाहिए, क्योंकि मुमुक्षा ही कामनाको मिटानेकी दवा है। — मदालसा

परमात्माका वास व्याघ्रमें भी है, पर उसके पास जाना उचित नहीं। परमात्मा दुष्टसे दुष्ट व्यक्तिमें भी है, पर उसका संग करना उचित नहीं।

— रामकृष्ण परमहंस

संगति

जो जैसी संगति करता है वैसा फल खाता है — कबीर

साधुकी संगति औरोंकी व्याधि हरती है; असाधुकी संगतिसे आठों पहर व्याधि रहती है। — कबीर

संग किसका करना चाहिए? जिसमें 'मैं' और 'तू' न हो।

— तपस्वी जुन्नुन मिसरी

कौआ हमेशा कौएके पास बैठता है। — यूनानी कहावत

हाथमें लाठी लेते ही यूँ ही किसीको मारनेके भाव हो जाते हैं। यह है लाठीकी संगतिका असर। हाथमें माला लें तो उसे जपनेका ही मन होगा। — श्री ब्रह्मचैतन्य

शास्त्रोंमें सन्तोंकी सेवाको मुक्तिका और स्त्री-संगी कामियोंके संगको नरकका द्वार बताया है। — भगवान् ऋषभदेव

जैसे सूखी लकड़ियोंके साथ रहनेसे गीली लकड़ी भी जलती है, उसी तरह पापियोंके सम्पर्कमें रहनेसे धर्मात्माओंको भी उन्हींके समान दण्ड भोगना पड़ता है। — महाभारत

भलोंके साथ रहो, तुम भी भले हो जाओगे।

— इटालियन और स्पेनी कहावत

जब कोई कबूतर कौओंसे मिलने लगता है तो उसके पंख सफ़ेद रहते हैं, लेकिन उसका दिल काला हो जाता है। — जर्मन कहावत

जिनके विद्या, कुल और कर्म श्रेष्ठ हों उन सज्जनोंकी सेवामें रहे। उनके साथ उठना-बैठना शास्त्र पढ़नेसे भी बढ़कर है। — महाभारत

कुसंगतिसे एकान्त अच्छा। — युरॅपियन कहावत

संगीत

संगीतका दूसरा नाम संजीवनी है। — सादी

संगीतके पीछे खुदा चलता है। जिस दिलके दरियाको संगीतकी हवा लहरायमान करती है उससे शैतान भी डर जाता है। — सादी

जिस मनुष्यकी आत्मामें संगीत नहीं है उसका विश्वास मत करो।

— अङ्ग

हर वस्तुमें संगीत है, अगर मनुष्य उसे सुन सकें। — बा

संग्रह

शहदकी मक्खियाँ बड़े परिश्रमसे शहद इकट्ठा करती हैं, पर उसे और ही कोई ले जाते हैं। संग्रहका नतीजा नाश है। — भागवत

ज्ञान अगर छिपाकर रखा जाय, और खज़ाना दबाकर रखा जाय तो इन दोनोंसे क्या फ़ायदा? — एकलस

संन्यासी एक दिनका संग्रह करे, गृहस्थ तीन दिनका। आपके पास तीन दिनके लिए खानेको हो तो फिर ज़रा भी फ़िक्र न करें।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

संग्राम

शूरका संग्राम दो-चार पलका है; सतीके घमसानमें एक पल लगता है; साधुका संग्राम है देह-पर्यन्त रात-दिन जूझना। — कबीर

संघटन

संघशः ज्ञानका प्रचार करनेवालेका नाश नहीं होता। — वेदवाणी

संघर्ष

कामनाओंका संघर्ष केवल यह दरशाता है कि जीवन व्यवस्थित होना चाहता है। उसकी माँगको समझो। – खलील जिब्रान

संचय

जोड़-जोड़ मर जायेंगे, माल जँवाई खायेंगे। – हिन्दुस्तानी कहावत

सन्तान

जो बच्चे पैदा करके माँ-बाप बननेकी इच्छा नहीं रखते, वे ही परमेश्वर रूपसे जगत्के माँ-बाप बनते हैं। – उपासनी

पुत्रसे सद्गति होती है – यह सर्वथा युक्ति-विरुद्ध है। – शंकराचार्य

सन्ताप

सन्तापसे रूप नष्ट होता है; सन्तापसे बल नष्ट होता है; सन्तापसे ज्ञान नष्ट होता है; सन्तापसे व्याधि पैदा होती है। – सन्त विदुर

सँभाल

माँसे बच्चेको यह नहीं कहना पड़ता कि तुम मुझे सँभालो। माँकी तरह ही भगवान् भक्तकी खबर रखते हैं। – सन्त तुकाराम

सम्भाषण

सम्भाषण वह कला है जिसकी स्पर्धामें सारी मानवजाति उतरी हुई है। – एमर्सन

बातचीतमें न तो इतने संक्षिप्त बनो कि मानो खब्त हो जायँ; न इतनी बकवास करो कि सुननेवालोंको कँटाला आने लगे। – प्रोतागोरस

जो अत्यधिक बोलता है, पाप करता है। – तालमुद

ऐसे आदमियोंकी भीड़ अत्यन्त बहुसंख्यक है जो सोचते बहुत कम हैं और बोलते बहुत ज्यादा हैं। – ड्रायडन

जिन्हें सुन्दर वार्तालाप करना नहीं आता वही सबसे ज्यादा बोलते हैं।
— अफ़लातून

सम्भोग

स्त्री-सहवासका जो सुख क्षण-भरके लिए जीवोंको प्राप्त होता है वह मुक्तको सदा अखण्ड रूपसे प्राप्त है। — एकनाथी भागवत

संयम

संयमीको वनकी क्या आवश्यकता? और असंयमीको वनमें जानेसे क्या लाभ? संयमी जहाँ भी रहे उसके लिए वही वन है और वही आश्रम है।
— श्रीमद्भागवत

चेष्टाहीनता, मौन और प्राणायामसे शरीर, वाणी और मन वशीभूत हो जाते हैं। — श्री उड़ियाबाबा

संयम और उपवाससे बहुत रोग दूर हो जाते हैं। — डेनिश कहावत

हमेशा संयमकी पोशाक पहने रह, क्योंकि बहिश्त सिर्फ़ परहेज़गारोंके रहनेकी जगह है। — सादी

संयममें पहला क़दम है विचारोंका संयम। — गान्धी

सब बातोंमें संयम। — कोरिंथियन्स

संयमी पुरुष रोज़-ब-रोज़ अधिकाधिक शक्ति और शान्ति पाता है।
— गान्धी

कुछ भी हो, बिना संयमके कुछ भी नहीं हो सकता। संयमके द्वारा ही दिव्य दृष्टिकी प्राप्ति होती है। संयम-रहित जीवन व्यर्थ है। दृढ़ अभ्यासकी निरन्तर आवश्यकता है। शिथिल अभ्याससे कुछ नहीं होनेका। सावधान चित्तसे निरन्तर अभ्यासमें लगे रहो। यह पुस्तकी विद्या नहीं है अनुभवका पथ है। — श्री उड़ियाबाबा

जिसका मन और वाणी सदा शुद्ध और संयत रहती है वह वेदान्त-शास्त्रके सब फलोंको प्राप्त कर सकता है। – मनु

संयमसे कभी किसीकी तन्दुरुस्ती नहीं बिगड़ती। – गान्धी

संयम और शिस्त ही हमें पशुओंसे जुदा करते हैं। – गान्धी

संयोग

इत्तिफ़ाक़ (चान्स) नामकी कोई चीज़ नहीं है। इस शब्दसे हम केवल अपने अज्ञानपर परदा डालने और उसे क्षमा करनेका काम लेते हैं।

– अरविन्द

संशय

संशयात्मा शान्ति नहीं पा सकता। – आचारांग

अज्ञानी, अश्रद्धावान और संशयात्माका विनाश होता है। उसका यह लोक है न परलोक। संशयात्माको सुख नहीं। – गीता

संसार

चार बातें हमेशा याद रखो; ये चार श्रेणियाँ हैं – पहले, संसारको दुःख-रूप समझना; दूसरे, उसे स्वप्नवत् समझना; तीसरे, उसे भगवान्‌की माया समझना; और चौथे, उसे आत्माकी तरंग जानना।

– श्री उड़ियाबाबा

दृश्य जगत्‌का सहारा लेना ही जंगलीपन है। – लेडी मौर्गन

संसार सपनेके मानिन्द है। जिस तरह जागनेपर सपना झूठा मालूम होता है, उसी तरह आत्मज्ञान होनेपर संसार मिथ्या लगता है।

– याज्ञवल्क्य

लोग संसारी लोगोंकी क्या कुशल पूछते हैं! भाड़में पड़े हुओंसे क्या पूछना कि तुम जले या नहीं। – संस्कृत-सूक्ति

संसार-चिन्तनसे तुम जितने ही उपराम होगे, संसार तुमसे उतना ही अधिक प्रेम करेगा। – श्री उड़ियाबाबा

संसार तो मुसाफ़िरखाना है, असली घर तो प्रभुका धाम है।
— भक्तराज यादवजी

संसारका मूल क्या है ? विषय-चिन्ता। — शंकराचार्य

सारा संसार तो तुम्हें मोहनेको तैयार हैं। तुमको संसारसे युद्ध करना है। संसार एक तरफ़ और तुम एक तरफ़ हो। — श्री उड़ियाबाबा

जब भगवान्से पूर्ण प्रेम होगा तब संसार तुम्हारे अधीन हो जायेगा।
— श्री उड़ियाबाबा

आहा ! यह संसार बड़ा ही प्यारा है। — अथर्ववेद

कामनाएँ ही संसार हैं। — अज्ञात

जैसे मुसाफ़िर कहीं मिल जाते हैं और कुछ देर आराम कर अपनी-अपनी राह चल देते हैं, बस यही हाल हमारे सांसारिक सम्बन्धोंका है। — बु[illegible]

यह संसार स्वप्न, माया किंवा मनोराज्यकी तरह हैं, ऐसा समझकर अपना-अपना नियमन करके शान्तचित्त होकर सबसे समभावसे बरते।
— भगवान् श्रीकृष्ण

सब बन्धुजन संसारकी बेड़ियाँ हैं; जितने लोग हैं वे सब महारोग हैं; और तृष्णा केवल मृगतृष्णा है। — योगवाशिष्ठ

संसारमें रहो, लेकिन संसारी न बनो। — रामकृष्ण परमहंस

संस्कृति

आदमी या औरतकी संस्कृतिका पता इस बातसे लग जाता है कि वे झगड़ेके समय कैसा बरताव करते हैं। — बर्नार्ड शॉ

मनकी संस्कृति हृदयकी संस्कृतिके अधीन रहनी चाहिए।
— महात्मा गान्धी

संस्कृति एक चीज़ है वार्निश दूसरी। — एमर्सन

सर्वोच्च संस्कृति यह है कि बुरा न बोले। — विलकॉक्स

साकार

जब मैं देखता हूँ कि अधर्मने धर्मको दबा लिया, तब मैं अपना जन्मरहि-तत्व और अमूर्तत्व एक ओर रख देता हूँ; और निराकार होते हुए भी मायाका आश्रय लेकर साकार हो जाता हूँ।

— भगवान् श्रीकृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

साक्षात्कार

ईश्वर-साक्षात्कार और कुछ नहीं, अपनी ही दिव्यताका प्रकटीकरण है।

— स्वामी रामदास

जिसने अपने आत्माका साक्षात्कार नहीं किया उसने यदि राजमान्या विद्याका उपार्जन कर लिया तो क्या ? विचित्र वैभवयुक्त सम्पत्ति प्राप्त सा[illegible] ली तो क्या ? और सुन्दरी स्त्रीका उपभोग कर लिया तो क्या ?

— संस्कृत-सूक्ति

परात्पर ब्रह्मका साक्षात्कार हो जानेपर अज्ञानका परदा फट जाता है, सब संशय कट जाते हैं और तमाम कर्म नष्ट हो जाते हैं। — उपनिषद्

साक्षात्कार तीन प्रकारका होता है — (१) इष्टदेवका प्रत्यक्ष दर्शन, (२) स्वप्न-दर्शन और (३) तल्लीनता। इसमें स्वप्न-दर्शन अधम, प्रत्यक्ष दर्शन मध्यम और तल्लीनता उत्तम है। तल्लीनताके बाद साधक जगत्को स्वप्नवत् देखता है। — श्री उड़ियाबाबा

भौंरा तभीतक भनभनाता है जबतक कमलपर बैठकर मधुपान नहीं करने लगता। मनुष्य तभीतक तर्क-वितर्क और वाद-विवाद करता है जबतक उसे ईश्वरका साक्षात्कार नहीं हो जाता। — रामकृष्ण परमहंस

सादगी

सादगी जीवनके सम्यक् ऐश्वर्यका लक्षण है। — स्वामी रामदास

गम्भीर विचारका सहज परिणाम है चारित्रकी सरलता। — हैज़लिट

साधक

साधक भूतदयाके कारण कर्मयोगमें प्रवृत्त होता है। — ज्ञानेश्वर

मनस्वी कार्यार्थी न सुख गिनता है न दुःख। — भर्तृहरि

साधन

महान् पुरुष अपने लक्ष्योंकी प्राप्ति ऐसे साधनोंसे करते हैं जो कि दुर्बुद्धियोंकी पकड़से बाहर होते हैं और जो कि आम लोगोंके तरीक़ोंसे नितान्त ख़िलाफ़ भी होते हैं। लेकिन इसके लिए मनका ऐसा गम्भीर ज्ञान चाहिए जैसा कि उस दार्शनिकको भौतिक पदार्थका था जिसने गरमीकी मदद लेकर बर्फ़ बना दिया। — कोल्टन

साधनसे एक मिनिट भी ख़ाली रहना पाप है। — श्री उड़ियाबाबा

साधन स्वाधीन होना चाहिए, उसमें किसी तरहके कर्मकाण्डकी ख़टपट न होनी चाहिए। — नाथजी

मेरे लिए साधनका जानना काफ़ी है। मेरे जीवन-दर्शनमें साधन और साध्य परस्पर परिवर्तनीय हैं। — महात्मा गान्धी

ऐ अरब, तू काबा कभी न पहुँचेगा, क्योंकि तूने जो रास्ता पकड़ा है वह तुर्किस्तान जाता है। — सादी

अपने साधनोंको कभी अपने साध्योंके ताबे न होने देना।
— महात्मा गान्धी

साधन बीज है, साध्य वृक्ष। जितना सम्बन्ध बीज और वृक्षके दर्मियान है उतना साधन और साध्यके दर्मियान है। — गान्धी (हिन्द स्वराज)

सब साधनोंकी कसौटी है — अहंकार और ममकारका त्याग : ऊँच-नीच और अपने-परायेके भेदभावका त्याग अर्थात् सर्वत्र ईश्वरदर्शी-भक्ति।
— ज्ञानेश्वर

लोग कहते हैं कि 'साधन आखिर साधन है'। मैं कहता हूँ कि 'साधनमें ही सब कुछ समाया हुआ है'। जैसा साधन वैसा साध्य। साध्य और साधनमें अन्तर नहीं है। जगत्कर्ताने हमें साधनपर यत्किंचित् अधिकार दिया भी है, साध्यपर तो बिलकुल नहीं। साधन जितना शुद्ध होगा उतना ही साध्य शुद्ध होगा। इस विधानका एक भी अपवाद नहीं है।

— महात्मा गान्धी

साधना

वह विचार कैसा जिसमें उदारता नहीं? वह योग कैसा जिसमें परोपकार-की भावना नहीं? वह धर्म कैसा जिससे द्वेषोन्मूलनकी प्रेरणा न मिले? वह चारित्र कैसा जिससे शान्ति न मिले? — संस्कृत-सूक्ति

साधना स्वेच्छासे स्वीकारी हुई शिस्त है। — स्वामी रामदास

साधनाको लीला समझो। — स्वामी रामदास

पहली डुबकीमें यदि रत्न न मिले तो रत्नाकरको रत्नहीन मत समझो। धीरजके साथ साधना करते रहो। समयपर भगवत्कृपा अवश्य होगी।

— रामकृष्ण परमहंस

जबतक तुम बदलकर फिरसे छोटे बच्चोंकी तरह न हो जाओगे तबतक तुम ईश्वरके राजमें दाखिल नहीं हो सकते। — इंजील

एकको साधनेसे सब सध जाते हैं; सबको साधनेसे सब चले जाते हैं। अगर तू मूलको सेवै तो फूले, फूले, अघाये। — कबीर

अनुभवी गुरुके मार्ग-दर्शनमें जिसने सांगोपांग साधना की है उस भाग्य-शालीको ही प्रखर वैराग्ययुक्त संन्यास और अनुभवात्मक ब्रह्मज्ञानका लाभ होता है। — ज्ञानेश्वर

विशुद्ध साधना करनी है तो भूखसे कम खाओ, दुनियवी वाहवाही छोड़ दो, ग़रीबी अपनाओ और ईश्वरकी मर्ज़ीमें सन्तोष मानो।

— तपस्वी सहल तस्तरी

साधनाके महा मार्गपर वीर पुरुष ही चल सकते हैं। — आचारांग

जो प्रभु-आज्ञाको नहीं मानता और मनके वेगमें वह जाता है, वह न सिद्धि पाता है, न सुख, न मोक्ष। – अज्ञात

साधु

शतगंठी कौपीन है, मगर साधु शंका नहीं मानता। राम-मद-माता रहता है और इन्द्रको भी रंक समझता है। – कबीर

साधुकी जाति न पूछो, ज्ञान पूछो। तलवारका मोल करो, म्यान पड़ी रहने दो। – कबीर

जो गाँठमें पैसा नहीं रखते, स्त्रीसे नेह नहीं रखते, मैं ऐसे साधुओंके चरणोंकी धूल हूँ। – कबीर

सिंहोंके झुण्ड नहीं होते; हंसोंकी पंक्ति नहीं होती; लालोंकी बोरियाँ नहीं होतीं; साधु टोलियोंमें नहीं चलते। – कबीर

साधु शान्ति और दयाकी मूर्ति होता है। भूतदयाका उतावला होता है। जिसका जैसा अधिकार वैसा उसको बोध देता है। वह किसीके दिलको धक्का नहीं पहुँचाता। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जिसको दृष्टिमें जन्म और मरण दोनों समान हैं, वही सच्चा साधु है।

– सूफ़ी

कल्याणेच्छु लोगोंको सत्पुरुषोंकी ही सेवा करनी चाहिए। कारण देव स्वार्थी हैं, साधु ऐसे नहीं हैं। – भगवान् श्रीकृष्ण

कोई कैसा ही घोर दुराचारी क्यूँ न रहा हो, अगर वह अनन्य भावसे ईश्वरकी भक्ति करने लगा है तो उसे साधु ही मानना चाहिए, क्योंकि वह ठीक रास्तेपर लग गया है। – गीता

साधुओंकी वृत्ति निरन्तर धर्ममें ही रहती है। सन्त न कभी दुःखित होते हैं न व्यथित। सत्संग कभी निष्फल नहीं होता। सत्पुरुष परोपकार करते हैं, प्रत्युपकारपर नज़र नहीं डालते। सन्त सबके रक्षक होते हैं।

– सती सावित्री

साधु वह है जो अपकारीके प्रति भी उपकार करे। – जैन पंचतन्त्र

मन-वचन-कर्मसे समस्त प्राणियोंके प्रति अद्रोह, सबपर कृपा करना और दान देना – यह सत्पुरुषोंका सनातन धर्म है। – सती सावित्री

सत्पुरुषोंका सबके प्रति अकारण स्नेह होता है, इससे उनके प्रति विश्वास पैदा होता है। ऐसा विश्वास मनुष्यको अपनेपर भी नहीं होता। इसलिए सब लोग साधुओंसे प्रेम करते हैं। – सती सावित्री

साधु-सन्त दर्शन मात्रसे पावन करते हैं। – भगवान् श्रीकृष्ण

साधु केवल शान्ति चाहते हैं। – लघु चाणक्य-नीति

साधुता

अल्पाहारमें, दिव्य शान्तिमें और लोक-संसर्गके त्यागमें साधुता रहती है। – तपस्वी सहल तस्तरो

सामंजस्य

सद्‌गुणोंका सामंजस्य, सुमेल, साधना आना चाहिए; वर्ना सद्‌गुणोंका असर नष्ट हो जाता है, बल्कि वे सद्‌गुण ही कभी अपने और दूसरेके नाशका कारण बन जाते हैं। – नाथजी

सामर्थ्य

परमात्मा-विषयक निष्ठामें और अपने सत्संकल्पमें जो सामर्थ्य है वह और किसीमें नहीं। – नाथजी

साम्यवाद

कम्युनिज़्मका आदर्श जो कि लैनिन सरीखी महान् आत्माओं-द्वारा प्रतिष्ठित हुआ है व्यर्थ नहीं जा सकता। – महात्मा गान्धी

कम्युनिज़्म जिस विश्वाससे सरशार है वह उतना ही हितकारी और प्राचीन है जितनी कि पर्वतमालाएँ। – महात्मा गान्धी

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद ईश्वरकी हस्तीका इनकार है। – गान्धी

सार

स्वकर्म-समाधान, परदु:खनिवारण, नामनिष्ठा, सत्संग, चारित्र्यपरिपालन – यही सन्त-सुधा-सार है। – विनोबा

विश्वशक्तिमें-से, ईश्वरी शक्तिमें-से, प्रकट होकर हम मानवता तक आ पहुँचे इस मानवताके दानको अधिक शुद्ध और मानवी सद्‌गुणोंसे अधिक समृद्ध करके भविष्यकी प्रजाके कल्याणके लिए मानवजातिको समर्पण करना चाहिए। इसीमें मानवताका और मानवजातिका गौरव है यही सब धर्मोंका सार है। भक्ति और तत्त्वज्ञानकी परिसीमा भी इसीमें है।

– नाथजी

जो कुछ क्षणिक है वह असार है; और जो कुछ सार है वह नित्य है।

– ज्ञानेश्वरी

मैंने क़ुरानका मग़ज़ निकाल लिया है और हड्डियाँ कुत्तोंके लिए छोड़ दी हैं। – मौलाना जलालुद्दीन रूमी

सावधान

मनुष्य कैसे चले, कैसे ठहरे, कैसे बैठे, कैसे सोये, कैसे खाये, कैसे बोले कि पापकर्मका बन्ध न हो? मनुष्य सावधान होकर चले, सावधान होकर ठहरे, सावधान होकर बैठे, सावधान होकर सोये, सावधान होकर खाये, सावधान होकर बोले, तो पापबन्ध नहीं होगा। – दशवैकालिक सूत्र

जो हमेशा सतर्क नहीं रहता वह सुरक्षित नहीं रहता।

– फ़्रान्सीसी कहावत

मनुष्यको अपनी मानवता क़ायम रखनेमें हमेशा सावधान और दक्ष रहना चाहिए। – नाथजी

क्या तुम जानना चाहते हो कि तुम्हें किस शख़्ससे सबसे ज्यादा सावधान रहनेकी ज़रूरत है? – अज्ञात

तुम्हारा दर्पण उसके चेहरेको बहुत कुछ सही तौरसे दिखला देगा।

– बिशप व्हेटली

साहस

क्रोध इतना कारगर नहीं होता जितना साहस। – फ़ान्सीसी कहावत

सच्चा साहस और शराफ़त हमेशा साथ रहते हैं। सबसे वीर लोग सबसे ज्यादा क्षमाशील और झगड़ोंसे बचनेके लिए प्रयत्नशील होते हैं।

– थैकरे

साहसके बिना विद्या उस मोमके पुतलेके समान है जो देखनेमें तो सुन्दर लगता है, मगर किसी चीज़के छूते ही पानी हो जाता है। – गान्धी

साहित्य

साहित्यमें 'अच्छा लगना' और 'बुरा लगना' ही चरम बात है; और विज्ञानमें 'सत्य' और 'मिथ्या'का विचार ही अन्तिम विचार है।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

मैं ऐसी कला और ऐसा साहित्य चाहता हूँ जिसे करोड़ों समझ सकें।

– गान्धी

सिद्धान्त

धर्मरहित जीवन सिद्धान्तरहित जीवन है, और सिद्धान्तरहित जीवन पतवार-रहित नौकाके समान है। – महात्मा गान्धी

शाश्वत सिद्धान्त हैं जो समझौता गवारा नहीं करते; उनपर चलते हुए आदमीको अपनी जान तक दे डालनेके लिए तैयार रहना चाहिए।

– महात्मा गान्धी

अनुभवके आधारपर ही सिद्धान्त बनते हैं, यह न भूलना! – नाथजी

सिद्धान्त यही है कि सब कुछ द्रष्टा ही है। – श्री उड़ियाबाबा

सिद्धि

प्रीति और श्रद्धासे ईश्वरका नाम लेकर शुभ कार्य शुरू करनेसे सफलता जरूर मिलती है। कारण ईश्वरके नामसे बुद्धि निःशंक होती है और काममें हार्दिकता आती है। निःशंक बुद्धि और हार्दिकतासे किया गया काम कैसे सिद्ध नहीं होगा ? — ज्ञानेश्वर

सारी क़ुदरत सिद्ध पुरुषके हुक्मकी तामील करती है।

— स्वामी रामतीर्थ

सन्त हों या भगवन्त वे हमें कुछ समय तक आज़माते हैं। अगर हम चिमटे रहें तो हमारा काम कर देते हैं। — श्री ब्रह्मचैतन्य

अहिंसा ही परम सिद्धि है। — पद्मपुराण

जो सिद्ध सत्य है उसे पहचानना और उसमें स्थित होना ही सच्ची सिद्धि है। — रमण महर्षि

पाँच-सात साखी कह दीं, एक-दो पद गा दिये। इससे कारज नहीं सरेगा, पेट-भराई भले ही हो जाय। — दरिया साहब

अनन्य भक्तिसे हर कार्यकी सिद्धि की जा सकती है। — अज्ञात

त्रिगुणातीतके लिए क्या विधि और क्या निषेध ! — शंकराचार्य

सिफ़ारिश

किसीकी सिफ़ारिशसे स्वर्ग जाना, नरक जानेके बराबर है। — सादी

सुख

झूठे सुखको सुख मानकर खुश हो रहे हैं ! यह नहीं देखते कि दुनिया कालका चबैना है, कुछ मुँहमें, कुछ गोदमें। — कबीर

न मैं घोड़ेपर सवार हूँ, न ऊँटकी तरह बोझेसे लदा हुआ हूँ। न किसीका मालिक हूँ, न किसीका ग़ुलाम। अगले-पिछले झगड़ोंको छोड़कर मैं सुखसे साँस लेता हूँ और मौज़से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारता हूँ। — सादी

ज्ञानी पुरुषोंके आत्मसुखकी बातें हम कबतक करते रहेंगे ? क्या हमें उस सुखका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं लेना चाहिए ? – ज्ञानेश्वर

स्त्रीके अंगको अपने अंगसे और उसके मांसको अपने मांससे दबाकर जो मैं अपनेको सुखी समझ रहा था वह सब निरे मोहकी विडम्बना थी।
– संस्कृत-सूक्ति

ऐ जीव-भ्रमर, रस-सेवनके लिए तू दुनिया-भरमें घूमता रहता है। रस-वृत्ति कोई अवगुण नहीं कहा जा सकता। लेकिन बहिर्मुखता और चंचलता तेरे बड़े भारी अवगुण कहे जाने चाहिए। – ज्ञानेश्वर

स्वतन्त्र घूमना, बिना माँगे भोजन करना, सत्पुरुषोंसे बातचीत करना, शान्ति देनेवाले शास्त्रका चिन्तन करना और बाहरी वस्तुओंसे बहुत ममता न रखना किसी बड़ी तपस्याके फलसे ही होता है। – संस्कृत-सूक्ति

प्यास लगनेपर लोग पानी पीते हैं, भूख लगनेपर खाना खाते हैं, कामाग्नि भड़कनेपर काम-सेवन करते हैं, इस प्रकार निरोगी होनेके बजाय औषधोपचारमें ही सुख माने बैठे हैं। – संस्कृत-सूक्ति

सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना ज्यादा दूसरोंपर छिड़केंगे उतनी ही खुशबू आपके अन्दर आयेगी। – एमर्सन

जबतक आप पापसे नहीं लड़ेंगे, कभी सच्चा सुख नहीं पा सकते।
– जी० सी० राइल

मैं नरकमें जाऊँ या स्वर्गमें; किन्तु मैंने जो कुछ पुण्य किये हों उनसे सभी दुःखी प्राणियोंको सुख हो। – महर्षि आपस्तम्ब

ज्ञानके समान नेत्र नहीं, सत्यके समान तप नहीं, रागके समान दुःख नहीं, त्यागके समान सुख नहीं। – महाभारत, शान्ति पर्व

सुखी है वह जो नम्रतापूर्वक महान् कार्य कर रहा है। – डिमॉस्थनीज

व्यवहारमें सुख कर्तव्यसे मिलता है; परमार्थमें सुख निष्ठासे मिलता है।
– श्री ब्रह्मचैतन्य

जिसके मुखमें निन्दा-स्तुति नहीं है उसके सुखका पारावार नहीं है ।
— श्री ब्रह्मचैतन्य

जबतक आप पापसे नहीं लड़ेंगे, कभी सच्चा सुख नहीं पा सकते ।
— जे० सी० राइल

सुख त्यागमें है भोगमें नहीं । — श्री ब्रह्मचैतन्य

मनुष्य सुखके लिए चड़पड़ करता है और अन्ततः दुःखदायक विषयोंकी आशा करता है ! — सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

आज तक तुमने विषय भोगे, लेकिन उनसे सुख नहीं मिला। क्या इस तरह भगवान्ने यह ज़ाहिर नहीं कर दिया कि विषय मिथ्या है ?
— सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

सब प्राणियोंको जीवन प्रिय है, सुख अच्छा लगता है, दुःख प्रतिकूल है ।
— आचारांग

तृष्णाको त्याग देनेसे ही सुख मिलता है । — महर्षि शौनक

निःस्पृह आदमी ही सुखी है । — अज्ञात

वास्तविक सुख वैराग्यमें ही है; इसलिए जंजाल मोहिनीसे अभ्यन्तर मोहिनी न बढ़ा । — श्रीमद्राजचन्द्र

छोटे सुखोंको त्यागे बिना ऊँचे दर्जेके सुख पानेके योग्य हम नहीं बन सकते । — केदारनाथ

जो स्वाधीन नहीं है वह सुखी नहीं हो सकता; और जीवन-शुद्धिके बग़ैर स्वाधीनता सम्भव नहीं । — नाथजी

जो परमात्माके दर्शन करना चाहे, सदा सुख भोगना चाहे तथा भवबन्धन-से छूटना चाहे उसे कामिनी और कांचनमें आसक्ति नहीं रखनी चाहिए । जो इनमें मन लगाये रहते हैं उन्हें सिद्धि नहीं मिलती । भगवान् उनसे सदा दूर रहते हैं । — श्री उड़ियाबाबा

सबके सुखकी इच्छा रखनेमें ही सच्चा सुख है । — केदारनाथ

आत्मीयता बढ़ानेमें ही सुख है। मानव जीवन इस श्रेष्ठ सुखके लिए ही है और इसीमें मनुष्यकी उन्नति है। — केदारनाथ

जो दुःखी है, अपने सुखकी इच्छासे दुःखी है; जो सुखी है, दूसरोंके सुखकी इच्छासे सुखी है। — बोधिचर्यावतार

भगवान् परिपूर्ण हैं, हमें उनसे प्रेम करना चाहिए। ज्ञानमें सुख नहीं, सुख तो प्रेममें ही है। — श्री उड़ियाबाबा

स्वेच्छासे विहार करनेवाला, बिना घरका, और किसीसे भी न बँधा हुआ पुरुष जिस सुख-सन्तोषका अनुभव करता है वह इन्द्रको भी दुर्लभ है।

— बोधिचर्यावतार

मानवी जीवन केवल सुखमय ही होना चाहिए यह कल्पना हमें छोड़ देनी चाहिए। — नाथजी

स्वार्थ छोड़कर त्यागपर आ जाओ; स्थायी सुख मिलने लगेगा।

— जेम्स एलन

जिसे ऐहिक सुख कहते हैं वह सुख नहीं, दुःखका पूर्वरूप है। — उपासनी

दूसरेके सुखके लिए जीना और दूसरेको सुखी देखना, इसके समान दूसरा कोई सुख नहीं। — गान्धी

दुष्ट बुद्धिवालोंके लिए जिसका त्याग कठिन है, जो शरीरके जीर्ण होने पर भी जीर्ण नहीं होती, जो प्राणान्तकारी रोगके समान है उस तृष्णाका त्याग करनेवालेको ही सुख मिलता है। — वशिष्ठपत्नी अरुन्धती

परवशता दुःख है, आत्मवशता सुख। — अज्ञात

तृष्णाक्षयके दिव्य सुखकी तुलनामें सांसारिक काम-सुख धूलके समान है।

—बुद्ध

जो और किसीका आश्रय न लेकर अपने पराक्रमसे पैदा किये हुए शाकको भी घरमें पकाकर खाता है, उसे महान् सुख मिलता है। — महर्षि बक

पाप न करें, केवल पुण्य करें तो बहुत वर्षों तक सुख भोगते हुए जी सकते हैं। — उपासनी

समष्टिके सुखमें ही व्यष्टिका सुख है। — रिचार्ड कम्बरलेण्ड

मान त्याग देनेपर मनुष्य सबका प्रिय हो जाता है; क्रोध छोड़ देनेपर शोक-रहित हो जाता है; कामका त्याग कर देनेपर धनवान् होता है; और लोभ छोड़ देनेपर सुखी हो जाता है। — धर्मराज युधिष्ठिर

सुख क्या है ? समस्त संगोंका त्याग। — शंकराचार्य

सकाम कर्म करनेवालेको ज़रा भी शुद्ध सुख मिलना सम्भव नहीं है।
— भागवत

महासुख निर्मल सहज स्वरूप है, न वहाँ पाप है न पुण्य। — सिद्ध तिलोपा

केवल आत्म-सुखपर अपने अन्तःकरणका सारा भार रखो। — ज्ञानेश्वरी

वही महान् और सुखी है जिसे कुछ बननेके लिए न तो किसीपर हुक्म चलाना पड़ता है न किसीका हुक्म बजाना पड़ता है। — गेटे

विद्याके समान नेत्र नहीं; सत्यके समान तप नहीं, रागके समान दुःख नहीं और त्यागके समान सुख नहीं। — चाणक्यनीति

यह हम कभी न भूलें कि हम सद्‌गुणसे सुखी होते हैं परिग्रहसे नहीं; अपने मनकी पवित्रता और शक्तिसे, न कि बाहरसे पायी हुई किसी चीज़से हम उन्मत्त उत्सुकतासे सुरक्षा और भोगोपभोगसे साधन जुटानेमें लगे रहते हैं, मगर मनको अशिक्षित और चारित्र्यको भ्रष्ट बनाये रखते हैं।
— रिवरेण्ड चैनू

आदमीको अपने सुख और अन्दरूनी शान्तिकी तलाश उन चीज़ोंमें करनी चाहिए जो उससे कभी न छीनी जा सकें। — वान हम्बोल्ट

सुखी है वह आदमी जिसे प्रभुने रोटीका एक टुकड़ा दिया है और जिसे उसके लिए सिवा अपने और किसीका आभारी नहीं बनाया।
— सरवैण्टीज़

धनधान्य-प्रयोगमें, विद्योपार्जनमें, भोजनमें और व्यवहारमें लज्जा न करने-वाला सुखी होता है। — चाणक्यनीति

इससे बड़ा सुख नहीं कि आदमी दूसरोंके सुखके लिए जीये और उन्हें सुखी देखे। — गान्धी

सुख या दुःख मनसे है, स्थान या परिस्थितिसे नहीं। — ला सेस्ट्रेंज

वे सुखी हैं जिन्होंने ज़िन्दगीकी बुराइयोंको शान्तिसे सहना सीख लिया है। — जुवैनल

जो भला है वह सुखी है। — हैविंग्टन

जीवनकी सबसे सुखी स्थिति वह है जहाँ फ़ज़ूलियातकी ज़रूरत नहीं और ज़रूरियातकी कमी नहीं। — प्लुटार्क

इस सत्यको जान लो, आदमीके लिए इसीका जानना काफ़ी है; कि यहाँ सद्गुणशीलतामें ही सुख है। — पोप

विद्याके समान कोई बन्धु नहीं है; मुक्तिसे बढ़कर कोई गति नहीं है; वैराग्यसे बड़ा भाग्य नहीं है, त्यागके समान सुख नहीं है। — संस्कृत-सूक्ति

जबतक आत्मानन्द नहीं मिला, तबतक सुखकी पराकाष्ठा विषयानन्दमें जान पड़ती है। — ज्ञानेश्वरी

जिसे आत्मसुखका अनुभव हो जाता है, वह लौकिक वैभवको तुच्छ समझने लगता है। — ज्ञानेश्वरी

स्वर्ग-सुख उस सुखके सामने बहुत ही हलके हैं जो ब्रह्मज्ञानके प्राप्त होने-पर होता है। — ज्ञानेश्वरी

सुखी और स्वाधीन होनेके लिए हमें क्या करना चाहिए इसका हमें विचार करना चाहिए। व्यक्तिगत सुखशान्तिकी कल्पना हमें छोड़ देनी चाहिए। समूहके कल्याणको महत्त्व देकर हमें मानवी जीवनका विचार करके इस विषयके सिद्धान्त निश्चित करने चाहिए। — नाथजी

ब्रह्मज्ञानीका अन्तरंग असीम, अक्षय, दिव्य आत्मानन्दसे भरा रहता है, इसलिए वह अल्प, क्षणिक और तुच्छ विषयानन्दका सेवन नहीं करता। — ज्ञानेश्वरी

अपने आत्मसुखके अनुभवका रस नष्ट मत होने दो। — ज्ञानेश्वरी

सच्चा सुख इसमें नहीं है कि जिस चीज़की इच्छा हुई वह तत्काल मिल जाया करे, बल्कि इसमें है कि कोई इच्छा ही न हो और फिर जो मिले उसमें आनन्द माना जाय। — मेलिडिमस

सुख-दुःख

सुखके बाद दुःख और दुःखके बाद सुख इस तरह आते रहते हैं जैसे पहियेकी धुरीके इर्द-गिर्द अरे घूमते रहते हैं। — महर्षि वेदव्यास

दुःखमें दुःखी और सुखमें सुखी होनेवाला लोहेके समान है; दुःखमें भी सुखी रहनेवाला सोनेके समान है; सुख-दुःखमें बराबर रहनेवाला रतनके समान है; और जो सुख-दुःखकी भावनासे भी परे है वह सच्चा रूहानी बादशाह है। — सन्त वाणी

सुखी

संसारमें सुखी कौन है? जिसने तमाम चीज़ों और लोगोंसे ईश्वरको बड़ा समझा है। — तपस्वी जुन्नुन मिसरी

सुधार

जो अपना सुधार करना चाहे वह पहले समाजको सुधारे।

— जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

जो दोष तुम्हें दूसरेमें नज़र आवे उसे अपने अन्दर न रहने दो। — स्प्रैट

सच्चा सुधार वह है जिससे आदमी अधिक आनन्दी हो। — श्री ब्रह्मचैतन्य

सुन्दर

सुन्दर वह है जो सुन्दर कार्य करे। — फील्डिंग

सुन्दर वस्तु आनन्दकी गंगोत्री होती है। — कीट्स

सुन्दर हमेशा शुभ नहीं होता, लेकिन शुभ हमेशा सुन्दर होता है।

— निनन

सुन्दरता

सुन्दरता दुनिया-भरकी सिफ़ारिशी चिट्ठियोंसे बढ़कर है। — अरस्तू

सुन्दरता चाँदनी है सचाईके चाँदकी। — महात्मा भगवानदीन

सुन्दरता दूरसे आतिशबाज़ी और पाससे दहकती भट्टी है। — महात्मा भगवानदीन

सुन्दरता प्रकृतिकी अनुपम और महान् देन है। — होमर

सुन्दरता गूँगी ठगनी है। — फ़ीसागोरस

सुन्दरता मीठा पक्षपात है। — जालीनूस

सुन्दरता दो दिनका सुख है। — सुक़रात

सुन्दरता वक़्तकी रियायत है। — अफ़लातून

उपयोगितामें ही सच्ची सुन्दरता है। यह ज्ञान तो तू शीघ्र प्राप्त कर ही ले। — लौंगफ़ैलो

सुन्दरता लासानी हुकूमत है। — कारनीड

सुन्दरता है सच्चिदानन्दकी रसलीला। — महाकवि नान्हालाल

सच्ची सुन्दरताके लिए लज्जा आवश्यक है। — यूनानी कहावत

सुभाषित

संसाररूपी कटुवृक्षके अमृतोपम दो फल हैं— सुभाषित और सत्संग। — अज्ञात

सुरक्षा

सुरक्षा दुर्भाग्यका पहला कारण है। — जर्मन कहावत

सुवर्ण

सत्यका मुँह सोनेके बरतनसे ढँका हुआ है। — ईशावास्योपनिषद्

सुवर्ण और स्त्री इन दोनोंसे बचकर रहो, ये भगवान् और जीवके बीचमें खाईं बनाते हैं, जिससे यमराज मुँहमें धूल डालता है। — श्री उड़ियाबाबा

सूरत

हमें आदमीकी अक़्ल देखनी चाहिए, उसकी शक्ल नहीं। — ईसप

सृष्टि

यह सारी सृष्टि उसी अनन्त और सदा एक-सा रहनेवाले परमात्माका नित्य बदलता हुआ लिबास है। — डॉक्टर भगवानदास

तत्त्व-दृष्टिसे यह प्रपंच ज्योंका-त्यों भगवत्सत्ता ही है। विवेकीकी दृष्टिमें यह प्रपंचसत्ता है, किन्तु वस्तुतः आत्मसत्ता ही है। — श्री उड़ियाबाबा

भगवान्‌का मूल स्वरूप शान्ति और आनन्दमय है। यह सब सृष्टि चूँकि भगवान्‌से ही उत्पन्न हुई है इसलिए वह इसमें व्याप्त है। इसलिए तमाम सृष्टि आनन्दमय होनी चाहिए। पर भ्रमके कारण ऐसा नहीं दीखती।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

हमारे वर्तमान प्रकृतिमय जीवनमें, हमारे बहिर्मुख सतही जीवनमें दुनिया हमें बनाती प्रतीत होती है; लेकिन अगर हम आध्यात्मिक जीवन शुरू कर दें तो हम ही स्वयं अपने और अपनी दुनियाके स्रष्टा हो जायँ।

— अरविन्द

निर्गुण परमात्मा सृष्टि रूपसे सगुण साकार हुआ है। — ज्ञानेश्वर

सृष्टि आनन्दमय होते हुए भी हमें वैसी नहीं दीखती। यह हमारा भ्रम है। इस भ्रमका मूल हमारे अन्दर है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

ज्ञानकी दृष्टि सर्वदा एक आत्मवादपर ही रहती है; उसके लिए अनेक कर्ता हैं ही नहीं। अतः सारे संसारका व्यापार उसीका है।

श्री उड़ियाबाबा

ईश्वरने मूर्खतापूर्ण चीज़ोंको ज्ञानियोंको उलझनमें डालनेके लिए बनाया और दुर्बल चीज़ोंको शक्तिशालियोंको उलझनमें डालनेके लिए बनाया।

— बाइबिल

आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, नक्षत्र, जीव-जन्तु, दिशाएँ, वृक्ष, नदियाँ, समुद्र इत्यादि सब हरिका ही तो शरीर हैं; इसलिए सभीको अनन्य भावसे प्रणाम करें। – श्रीमद्भागवत

सब-कुछ द्रष्टा ही है। – श्री उड़ियाबाबा

स्वप्न सृष्टिवाले जागनेपर नहीं मिल सकते; जाग्रत सृष्टिवाले मरनेपर नहीं मिल सकते। – अज्ञात

सृष्टि भगवान्‌के आनन्दका व्यक्त रूप है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

सेवक

मनुष्य चुप रहनेसे गूँगा, प्रवचनपटु होनेसे चापलूस या बकवादी कहलाता है; पासमें बैठे तो ढीठ, दूर रहे तो दब्बू, क्षमा रखे तो डरपोक और अन्याय न सह सके तो प्रायः बुरा समझा जाता है, इसलिए सेवा-धर्म परम गहन है। इसे योगी भी नहीं जान पाते। – भर्तृहरि

स्वामीको चाहिए कि उदारतापूर्वक सेवकको स्वामीका पद प्रदान करे। सेवकको चाहिए कि नम्रतापूर्वक सेवकका पद न छोड़े। इसीमें माधुरी है। – ज्ञानेश्वर

जो दूसरोंकी सेवा करता है उसके हृदयमें ईश्वर अपने-आप अपनी ग़रज़से रहता है। – महात्मा गान्धी

सेवा

हमारी हर सेवा प्रभुकी सेवा है। – स्वामी रामदास

गिरा देनेवाले घोड़ेसे पहुँचा देनेवाला गधा अच्छा। – डच कहावत

जो मदद नहीं करता वह उस फ़व्वारेकी तरह है जो छिड़काव नहीं करता। – एस० जी० मिल्स

ज्ञानियोंके अन्तरतममें यह सत्य रोशन रहता है कि दूसरोंकी मदद करनेसे ही अपनी मदद होती है। – अलबर्ट हब्बार्ड

जैसे माँ प्रेमका आक्रमण करती है वैसे ही सेवाका आक्रमण होना चाहिए। – विनोबा

स्वयंके लिए कुछ न करना ही सेवा कराना है, शोषण है। — अज्ञात

जो दूसरोंके जीवनमें प्रकाश छिटकाते हैं, स्वयं भी उससे वंचित नहीं रहते। — जे० एम० बैरी

सेवासे बढ़कर कोई कला नहीं है। — सादी

प्रेमपूर्वक मदद करनेसे जितनी सेवा होती है, उतनी ही सेवा प्रेमपूर्वक मदद स्वीकार करनेसे होती है। — अरण्डेल

प्रज्ञानी अज्ञानियोंमें जाकर बैठें और उन्हें ज्ञान दे। — ऋग्वेद

जो यह सोचते हैं कि वे किसी प्रकारकी सेवा करने योग्य नहीं हैं वे शायद पशुओं और वृक्षोंको भूल जाते हैं। — अरण्डेल

ईश्वरकी सेवा आज़ादीसे बढ़कर है, बल्कि हुक्मरानीसे भी बढ़कर है। — फ़िलो

एक हाथ दूसरेको धोता है और दोनों मुँहको धोते हैं। — युरॅपियन कहावत

तुम्हें वह करना चाहिए जिसमें तुम्हारे मित्रका भला हो ख्वाह उससे वह ख़ुश हो या नाख़ुश; प्रेमका लक्ष्य सेवा है न कि विजय। — वुडरो विल्सन

सेवासे भीतरकी आत्मा रोशन होती है। — सादी

सेवासे सौभाग्य प्राप्त होता है। — सादी

भगवान्की सेवा करनी हो तो दूसरोंका भला करो और सहिष्णु बनो। — सन्त पिगल

आत्मसंयमी ही सच्ची सेवा कर सकता है। — अरण्डेल

सौभाग्य जिस किसीका ग़ुलाम होता है, उसका दिल सदा ईश्वरकी सेवामें लगा रहता है। — सादी

मनुष्य-शरीर केवल सेवाके लिए मिला है, वैषयिकताके लिए कदापि नहीं। — गान्धी

मेरा केन्द्रीय लक्ष्य है समूची मानव जातिके प्रति समान व्यवहार और उस समान व्यवहारके माने हैं समान सेवा। — गान्धी

हमारे लिए पेट-भर खाना या आराम हराम होना चाहिए जबतक कि एक भी सशक्त पुरुष या स्त्री काम या भोजनके बिना हो। — गान्धी

सच्ची सेवाके लिए पहली आवश्यक शर्त है आत्म-शुद्धि। — गान्धी

अगर मुझे मालूम हो जाय कि मुझमें ग़रीबोंकी सेवाकी कोई योग्यता है और उसका भरपूर उपयोग न करूँ, तो मैं बेवक़ूफ़ समझा जाऊँगा।
— गान्धी

हमारी सारी आयु सज्जनोंके हितार्थ हो। — सामवेद

अगर अच्छी सेवा चाहते हो तो अपने सेवक स्वयं बनो।
— स्पेनी और पुर्तगाली कहावत

सेवा करो तो तुम्हारी भी सेवा जरूर होगी। अगर तुम लोगोंसे प्रेम करो और उनकी सेवा करो तो तुम लाख जतन करनेपर भी उसके पुरस्कारसे नहीं बच सकते ? — एमर्सन

जो सर्वाधिक सेवा करता है वह सर्वाधिक लाभमें रहता है।
— आर्थर ऐफ़ शैल्डन

वास्तविक स्नेह प्रशंसासे नहीं, सेवासे दर्शाया जाता है। — गान्धी

आत्म-दर्शनका एक ही उपाय है – हृदय-शुद्धि और निकटवर्ती जीव-सृष्टिकी सेवा। — ज्ञानेश्वर

सोऽहम्

जो तू है सो मैं हूँ। — ईशावास्योपनिषद्

सोसाइटी

कलाकारको चाहिए कि बहतरीन सोसाइटीके लायक़ बने और उससे दूर रहे। — रस्किन

धनिकोंकी मूर्खतापूर्ण बातें सोसाइटीमें ज्ञान-भरी सूक्तियाँ समझी जाती हैं।
– सर्वेण्टीज़

सौन्दर्य

सौन्दर्य आन्तरिक वस्तु होनेसे उसका प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो सकता है।
– गान्धी

वसन्त या ग्रीष्ममें वह सुषमा कहाँ जो पतझड़में है। – जॉन डौन

सौन्दर्यका एक आवश्यक गुण है नित्य नूतनता। – डिज़राइली

स्त्रीका सौन्दर्य, जंगलकी प्रतिध्वनि, और इन्द्रधनुष शीघ्र ही ओझल हो जाते हैं। – जर्मन कहावत

सौन्दर्य और आनन्द अलग नहीं किये जा सकते। – अरविन्द घोष

सौन्दर्यके अतिरिक्त और कोई सत्य नहीं है। – अनातोले फ़्रान्स

सच्चा सौन्दर्य आत्माका सौन्दर्य है। – महात्मा गान्धी

हर नयी चीज़ ख़ूबसूरत होती है। – इटालियन कहावत

ख़ूबसूरती और बेवक़ूफ़ी अकसर साथ रहती हैं।
– फ़्रान्सीसी और इटालियन कहावत

सद्‌गुणशून्य सौन्दर्य सौरभशून्य गुलाबके समान है। – डेनिश कहावत

सौन्दर्यके लिए कोई प्रसाधन इतना उत्कृष्ट नहीं जैसा आनन्द।
– लेडी ब्लैसिंग्टन

लोग सद्‌गुणकी अपेक्षा सौन्दर्यसे अधिक आकृष्ट होते हैं। – कन्फ़्यूशियस

सौन्दर्य और आनन्द एक दूसरेसे कभी अलग नहीं किये जा सकते। सुन्दर कलाकृति अनन्त आनन्द देती है। जहाँ आनन्द नहीं है वहाँ सौन्दर्य नहीं है। – के० एम० मुंशी

सौन्दर्य वह है जो तुम्हारी आत्माको आकृष्ट करे। उसे देना प्रिय है लेना नहीं। वह पवित्रोंमें पवित्रतम है। वह आपसे शुरू होकर अनन्तमें समाप्त होता है। – ख़लील जिब्रान

अपना अन्तरंग देखो। अगर वह सुन्दर न दिखे तो मूर्तिकारकी तरह उसे सुन्दर बनानेमें लग जाओ। – प्लोटिनस

सौन्दर्य नरकमें भी है, पर वहाँके रहनेवाले उसकी पहचान नहीं कर पाते, यही तो उनकी सबसे बड़ी सज़ा है। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

कोयलोंकी सुन्दरता स्वर है, स्त्रीका सौन्दर्य सतीत्व है, कुरूपका रूप उसकी विद्या है और तपस्वीका सौन्दर्य क्षमा है। – चाणक्यनीति

याद रखो कि दुनियामें सबसे ज़्यादा ख़ूबसूरत चीज़ें सबसे ज़्यादा निकम्मी होती हैं जैसे मोर और कमल। – रस्किन

सच्चा सौन्दर्य हृदयकी पवित्रतामें है। – महात्मा गान्धी

सौभाग्य

सौभाग्यका लक्षण यह है कि एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दे।
– समर्थ गुरु रामदास

विषयभोग सौभाग्य नहीं, सौभाग्य तो वह वैराग्य है जिसके लिए ब्रह्मा, इन्द्र और शंकर भी तरसते रहते हैं। – संस्कृत-सूक्ति

जिसने बुरे दिन नहीं देखे वह अच्छे दिनोंमें भी परेशान रहता है।
– जॉर्ज हर्बर्ट

सौभाग्य वीरोंका साथ देता है। – जर्मन कहावत

ख़ुशक़िस्मतीके सिवा सब चीज़ें बरदाश्त की जा सकती हैं।
– इटालियन कहावत

सौभाग्य हर ज्ञानीका साथी है। – यूरिपिडीज़

सौभाग्य साहसी आदमीकी सहायता करता है। — फ़्रान्सीसी कहावत

उद्योगशीलता सौभाग्यकी जननी है। — जर्मन कहावत

स्त्री

'रज्जब'ने घर-घरणी छोड़ दी, उसे पर-घरणी कैसे सुहा सकती है? साँप अपनी कंचुकी छोड़कर किसकी पहनने जायगा? — रज्जबजी

जन्मरूपी तालाबमें पड़े हुए, और चित्तरूपी दलदलमें फँसे हुए मनुष्यरूपी मत्स्योंको पकड़नेके लिए दुर्वासना ही डोरी है, और नारी उससे बँधा हुआ मांसपिण्ड है। जिसके स्त्री है उसे भोगकी इच्छा है, जिसके स्त्री नहीं उसके भोग-भूमिका कहाँ? स्त्रीका त्याग किया कि जगत्का त्याग हो गया, और जगत् छोड़ा कि सुख मिला। — योगवाशिष्ठ

हर लड़की, हर हिन्दुस्तानी लड़की शादी करनेके लिए पैदा नहीं हुई। — गान्धी

सौन्दर्यसे स्त्री अभिमानी बनती है, उत्तम गुणोंसे उसकी प्रशंसा होती है, और लज्जाशीला होकर वह देवी बन जाती है। — शेक्सपीयर

तारे आकाशकी कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वीकी। — हारग्रेव

स्त्री परमात्माका सबसे बड़ा जादू है। — आस्कर वाइल्ड

स्त्री अहिंसाका अवतार है। — गान्धी

जिसके घरमें माता नहीं है और जिसकी स्त्री कटुवचन बोलनेवाली है, उसे वनमें चला जाना चाहिए, क्योंकि उसके लिए जैसा वन है वैसा घर। — चाणक्यनीति

मैं यह नहीं मानता कि स्त्रियाँ आजीविकाके लिए मज़दूरी या व्यापार करें। — गान्धी

जो स्त्री ऊँची आवाज़से बोलती है वह गृह-जीवनमें अपनी इज़्ज़त खोती है। — अज्ञात

स्तुति

मेरी स्तुतियाँ परमात्माका पार नहीं पातीं। – ऋग्वेद

स्थितप्रज्ञ

जिसे आत्मज्ञान हो गया है, जो आत्मानन्दमें मस्त रहता है, वही स्थित-प्रज्ञ है। वह ममतारहित, निरहंकार, निष्काम और निःस्पृह होता है। वह विश्वरूप होकर विश्वमें परम आनन्दसे रहता है। इसीको ब्राह्मी स्थिति कहते हैं। – ज्ञानेश्वरी

जो अभेदपूर्वक केवल आत्मस्वरूपमें रहता है उसे स्थितप्रज्ञ समझना चाहिए। – ज्ञानेश्वरी

जो मनकी समस्त कामनाओंको छोड़कर आत्मासे आत्मामें तुष्ट रहता है उसे स्थितप्रज्ञ कहते हैं। – गीता

जिसका मन आत्मसुखमें सदा मग्न रहता है, वह स्थितप्रज्ञ है।
– ज्ञानेश्वरी

स्पष्टता

शब्दोंके प्रयोगमें सबसे अहम् बात है स्पष्टता। – क्विण्टीलियन

स्मरण

परमात्माके दर्शनमें लीन होकर उसका स्मरण करना भी भूल जाना ऊँचेसे ऊँचा स्मरण है। – अज्ञात

माला तो हाथमें फिर रही है; जीभ मुँहमें फिर रही है; मन दसों दिशाओं-में फिर रहा है। यह कोई सुमिरन है ? – कबीर

ईश्वरका स्मरण करो तो ऐसा कि फिर दूसरी बार उसे याद ही न करना पड़े। – अज्ञात

भगवान्‌का विस्मरण विषयका आमन्त्रण है उसका स्मरण विषयका मरण है। – श्री ब्रह्मचैतन्य

जो पिछले पहर जागकर चित्त लगाकर भजन करता है वह निश्चय ही सद्गति पाता है। — चरनदासजी

स्मरण काफ़ी नहीं है, स्मरणके साथ अनुकरण चाहिए। उच्चार काफ़ी नहीं है, उच्चारके साथ आचार चाहिए। समझना काफ़ी नहीं है, समझनेके साथ कर्तव्य सूझना चाहिए। — विनोबा

जो प्राणी ईश्वरोन्मुख होता है, वह कभी पाप नहीं कर सकता, सदा निर्दोष रहता है और आगे चलकर महान् सन्त हो जाता है। — सन्त जॉन जोसफ़

स्मरण कृति है, विस्मरण वृत्ति है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

स्वतन्त्र

स्वतन्त्र कौन है? ज्ञानी जो कि अपनी कषायोंपर शासन कर सकता है; जिसे अभाव, मौत या ज़ंजीरोंका डर नहीं; जो अपनी इच्छाओंका दृढ़तापूर्वक निरोध करता है और लोक-प्रतिष्ठासे घृणा करता है; जो पूर्णतया स्वयंपर निर्भर रहता है; जिसका स्वभाव सौम्य और शान्त बन गया है। — हौरेस

जो भगवान्के सहारे है वह स्वतन्त्र है। — श्री ब्रह्मचैतन्य

स्वतन्त्रता

अपने अन्दर अनन्त एकत्वका साक्षात्कार करके लोक-सेवामें लग जानेमें ही पूर्ण स्वातन्त्र्य और निगूढ़ साम्राज्य है। — अरविन्द

बलवान्में ही स्वतन्त्र रहनेकी योग्यता है। निर्बलकी स्वतन्त्रता तो मानो पागलके हाथमें डायनामाइटकी छड़ी है। — जवाहरलाल नेहरू

स्वतन्त्रताका गहनतम अर्थ यह है कि व्यक्ति स्वयं अपने स्वभावानुकूल नियम-द्वारा परिपूर्णताकी ओर विकसित और उन्नत हो सके। — अरविन्द

सच्ची स्वतन्त्रता हर हालतमें आनन्दमस्त रहनेमें है। — स्वामी रामदास

जहाँ प्रभुमय जीवन है वहाँ स्वतन्त्रता है। — बाइबिल

कपोत स्वतन्त्र रहकर कंकड़ चुगना पसन्द करता है। — अज्ञात

स्वधर्म

स्वधर्माचरण करोगे तो जो काम करोगे सिद्ध होगा और सब कामनाएँ पूर्ण होंगी। तुम्हारी बात कभी खाली न जायगी। तुममें आज्ञा करनेकी शक्ति आ जायगी और सब प्रकारकी सिद्धियाँ तुम्हारी आज्ञाकी याचना करने लगेंगी। स्वयं दैव सब प्रकारकी सुख-समृद्धि लेकर तुम्हें ढूँढ़ता आयगा। – ज्ञानेश्वरी

सन्तोंको तो स्वकर्मका अनुष्ठान कभी नहीं छोड़ना चाहिए। – ज्ञानेश्वरी

जो लोग पूर्ण रूपसे निष्काम हो गये हैं और ब्रह्मपदको प्राप्तकर धन्य हुए हैं, वही दूसरे लोगोंको उचित मार्गपर लगा सकते हैं; इसलिए ज्ञानोत्तर कालमें भी उन्हें कर्म करना पड़ता है। – ज्ञानेश्वरी गीता

हे अर्जुन, मैं औरोंकी बात तुमसे क्या कहूँ! मैं स्वयं भी स्वकर्मानुष्ठानके मार्गसे चलता हूँ। – भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

इन्द्रियोंका निग्रह करके और स्वार्थ सम्बन्धी तमाम इच्छाओंको छोड़कर विहित स्वधर्माचरण करो। जो निष्काम बुद्धिसे स्वधर्म पालन करता है वही ब्रह्म-स्थितिमें पहुँचता है। – ज्ञानेश्वरी

स्वधर्मका पालन न करनेवाले मनुष्यको चारों ओरसे महापातक घेर लेते हैं और उसे नोच डालते हैं। – ज्ञानेश्वरी

स्वधर्मका ही नाम 'नित्य यज्ञ' है और उसका पालन करनेमें पापका लेशमात्र भी नहीं होता। – ज्ञानेश्वरी

स्वधर्माचरणसे सभी इच्छित वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। – ज्ञानेश्वरी

स्वधर्मका आचरण करते समय लाभ और हानिकी कल्पना भी मनमें नहीं आने देनी चाहिए। – ज्ञानेश्वरी

यदि सकाम बुद्धिसे स्वधर्मका आचरण किया जाय तो वह भी दोषका ही कारण होता है। – ज्ञानेश्वरी

कल्पान्त ही क्यों न हो जाय, फिर भी स्वधर्मका त्याग करना किसी प्रकार उचित नहीं है। – ज्ञानेश्वरी

स्वधर्मके अनुसार आचरण करनेसे त्रिकालमें भी कोई दोष नहीं होता ।
– ज्ञानेश्वरी

जलचर प्राणी जलसे बाहर निकले तो समझ लेना चाहिए कि उसकी मौत आ गयी । इसी प्रकार स्वधर्मको भी किसीको कभी नहीं छोड़ना चाहिए, नहीं तो सर्वस्व नष्ट हो जायगा । – ज्ञानेश्वरी

यदि स्वधर्माचरणका लोप हो जाय तो समझ लेना चाहिए कि समस्त सुखोंका आधार ही टूट गया । जहाँ स्वधर्मका उच्छेद हुआ, वहाँ स्वतन्त्रताका भी ठिकाना नहीं रह जाता । – ज्ञानेश्वरी

जो निष्कर्मताका साधन करना चाहता है उसे वे कर्म नहीं छोड़ने चाहिए जो उसके स्वधर्मके लिए विहित हैं । – ज्ञानेश्वरी गीता

स्वधर्मके अनुसार आचरण करनेसे समस्त कामनाएँ सहजमें सिद्ध हो जाती हैं । – ज्ञानेश्वरी

जब हम स्वधर्मका आचरण करेंगे तब और लोगोंकी भी उस ओर प्रवृत्ति होगी, जिससे संसारके दुःख दूर होंगे । – ज्ञानेश्वरी

जिस मनुष्यसे स्वधर्मका पालन न होता हो उसे बकरीके गलेमें लटके हुए स्तनकी तरह नितान्त निरुपयोगी समझना चाहिए । – ज्ञानेश्वरी

स्वप्न

सपने भगवान्-द्वारा भेजे जाते हैं । – होमर

स्वभाव

अच्छे स्वभावका उत्कृष्ट अंश है दूसरोंकी बदमिज़ाजीको सह लेना ।
– एम्पसन

जो अपनेसे छोटे दर्जेवालोंके प्रति बदतमीज़ी और हेकड़ीका व्यवहार करते हैं, वे अकसर अपनेसे ऊँचे दर्जेवालोंके प्रति नरमी, खुशामद और गिड़गिड़ाहटसे पेश आते हैं । – फ़ुलर

मानसरोवरमें हंस और बगुले एक-से दिखते हैं। मगर बगुले मछली ढूँढ़ते हैं, हंस मोती चुगते हैं। – कबीर

तुम्हें मेरा स्वभाव चाहे पसन्द न हो, पर तुम्हें अपना नेक स्वभाव नहीं छोड़ना चाहिए। – सादी

स्वमान

बिना आज़ादीके स्वमान असम्भव है। – श्रीमती स्टोव

स्वर्ग

हमारे ऊपर छाये हुए बादल हमारे स्वर्गको नहीं ढँक सकते।
– एडवर्ड विगलिसवर्थ

स्वर्ग जानेसे नरक जाना ज्यादा मेहनतका काम है। – जर्मन कहावत

पेश्तर इसके कि मैं स्वर्गमें होऊँ, स्वर्ग मुझमें होना चाहिए। – स्टैनफ़र्ड

नरकपर ख़ुशियोंका परदा है, स्वर्गपर दुःखों और कठिनाइयोंका।
– मुहम्मद

सदा प्रसन्नमुख रहना, मीठा बोलना, सुशीलता, स्वजनोंसे प्रेम, सज्जनोंका संग और नीचोंकी उपेक्षा – ये स्वर्गमें रहनेवालोंके लक्षण हैं।
– संस्कृत-सूक्ति

बहुत-से लोग जितनी मेहनतसे नरकमें जाते हैं, उससे आधीसे स्वर्गमें जा सकते हैं। – एमर्सन

"दुनिया तुम्हारे क़दमोंपर है" मगर यह तभी जब कि स्वर्ग तुम्हारे दिलमें हो। – एन्सवर्थ

ये दो पुरुष स्वर्गसे भी ऊँचा स्थान पाते हैं – समर्थ होनेपर भी क्षमा करनेवाला और निर्धन होनेपर भी दान देनेवाला। – सन्त विदुर

दरिद्रका दान, सामर्थ्यशालीकी क्षमा, जवानीकी तपस्या, ज्ञानीका मौन, समर्थकी सुखेच्छा-निवृत्ति और समस्त प्राणियोंपर दया ये सद्‌गुण स्वर्गमें ले जाते हैं। — पद्मपुराण

जैसे दिन और रात हमारे तमाम समयको विभाजित करते हैं, उसी प्रकार स्वर्ग और नरक हमारे तमाम विचारों, शब्दों और कर्मोंको विभाजित करते हैं। — विलियम लॉ

सात्त्विक लोग स्वर्ग जाते हैं। — मनुस्मृति

स्वर्गकी सड़क है, पर कोई उसपर नहीं चलता; नरकका कोई दरवाज़ा नहीं है, लेकिन लोग छेद करके उसमें घुस जाना चाहते हैं — चीनी कहावत

स्वराज्य

अहिंसकपूर्ण स्वराज्यकी मुख्य चाबी है — आर्थिक समानता। आर्थिक समानता माने सब आदमियोंके पास एक सरीखो सम्पत्तिका होना, यानी कि सबके पास क़ुदरती ज़रूरतें पूरी करने लायक़ सम्पत्तिका होना।
— महात्मा गान्धी

स्वात्माभिमान

मान-सहित मरना, अपमान-सहित जीनेसे अच्छा है। — सादी

स्वाद

हे जीव! जीभका संवरण कर। स्वादिष्ट भोजन अच्छा नहीं होता।
— मुनि देवसेन

स्वाधीनता

स्वाधीनता चाहते हो तो अपनी शक्तिपर विश्वास रखकर ज़ोर लगाओ।
— बाइरन

पराधीनतामें सब कुछ दुःख रूप है और स्वाधीनतामें सब सुख रूप है — यह संक्षेपमें दुःख-सुखका लक्षण जानना चाहिए। — मनु

पराधीनताका नहीं स्वाधीनताका मार्ग अपनाओ। – श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

स्वाध्याय

मोक्ष-मार्ग-प्रकाशक एक श्लोक, जन-रंजनार्थ-पठित करोड़ ग्रन्थोंसे बढ़कर है। – हृदय-प्रदीप

स्वामी

तुम एक ही साथ इन्द्रियोंके दास और विश्वके स्वामी नहीं हो सकते। – स्वामी रामतीर्थ

स्वार्थ

केवल स्वार्थकी ख़ातिर जोड़े हुए सम्बन्ध कभी क़ायम नहीं रह सकते। – नाथजी

स्वार्थ हमारे अन्दर पाशविकताकी निशानी है। आदमीमें आदमियत सिर्फ़ तब शुरू होती है जब कि वह दूसरोंके लिए कुछ करता है। – स्वेण्डनबर्ग

स्वार्थ ही एक पाप है, नीचता ही एक दुर्गुण है, घृणा ही एक अपराध है। – अरविन्द घोष

हममें-से कोई सिर्फ़ अपने लिए नहीं जीता। – बाइबिल

शैतान सिर्फ़ अपना स्वार्थ देखता है। – गेटे

स्वार्थ ही एकमात्र पक्की नास्तिकता है; निस्स्वार्थ ही एक मात्र सच्चा धर्म है। – जैंगविल

स्वार्थी आदमी निश्चित रूपसे ईर्ष्यालु होता है। – गेटे

जो आदमी केवल स्वयंके लिए जीता है, वह दुनियाके सबसे अधम आदमीके लिए जीता है। – जोकिन मिलर

स्वार्थ ही वह क़ैदख़ाना है जो आत्माको क़ैदी बना सकता है। – हैनरी वान डायक

जो अपने भलेके लिए दूसरेका बुरा करते हैं वे राक्षस हैं। — अज्ञात

हममें-से कोई केवल अपने लिए नहीं जीता। — बाइबिल

स्वार्थके कारण आदमी सुखसे दूर हटता जाता है। — जेम्स एलन

स्वार्थमूलक कृत्योंसे सच्चे सुखकी लवलेश प्राप्ति नहीं होती।
— भगवान् श्रीकृष्ण

स्वावलम्बन

क्या इससे बढ़कर कोई शानदार चीज हो सकती है कि हमारी इच्छाएँ कमसे कम हों, और हम खुद ही उन्हें पूरा करें। — एमर्सन

खुद किया, जल्दी हुआ। — जर्मन कहावत

स्वाश्रय

जो काम स्वयं कर सको, उसीमें हाथ लगाओ। दूसरोंके बलपर काम उठानेमें अशान्ति भोगनी पड़ेगी। — श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती

स्वास्थ्य

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वास्थ्य केवल साधन है किसी साध्यका।
— स्वामी विवेकानन्द

जिस कारणसे शरीर बिगड़ा हो उससे बिलकुल उलटा रहन-सहन रखनेसे क़ुदरतका सन्तुलन लौट आता है। — नेपोलियन

ह

हक़

जीनेका, आज़ादीका और आनन्दके मार्गपर चलनेका सबको हक़ है।
— जफ़रसन

हरिजन

हरिसे हरिजन बड़े हैं। जिस हरिमें सारा संसार है सो हरि हरिजनमें है।
– कबीर

हरीच्छा

दे और क़ीमत न देखे; लड़े लेकिन ज़ख्मोंपर ध्यान न दे; कर्मरत रहे पर आराम न ले; मेहनत करे लेकिन कोई पुरस्कार न चाहे सिवा इस मान-के कि मैं 'तेरी इच्छा' पूरी कर रहा हूँ। – सन्त इग्नेशियस लोयोला

हवा

खूनको साफ़ करनेवाली तमाम दवाओंमें साफ़ हवा सबसे अच्छी दवा है।
– एक डॉक्टर

हँसी

हँसी अच्छी है। इससे हमारी आत्माओंका उद्धार न भी हो, मगर हमारी जानें अकसर बच जाती हैं। इससे पागलपन नहीं होता। हँसी मक्खनकी तरह ताज़ा और साफ़ होनी चाहिए। गम्भीर कार्योंकी रोटीपर इसे बहुत ज्यादा नहीं थोपना चाहिए। – डॉक्टर क्रेन

क़हक़हा मारकर हँसनेसे रंज करना ज्यादा अच्छा है, क्योंकि रंजसे दिल पाक होता है। बुद्धिमान् आदमीका दिल हमेशा रंज या मातमके घरमें रहता है, और मूर्खोंका दिल खुशी और ठठोलबाज़ोंके महलमें रहता है।
– इंजील

हो सकता है जिसपर तुम हँस रहे हो वह तुमसे अच्छा हो। – क़ुरान

हँसी ज्यादा, खुशगोई कम। – पुर्तगाली कहावत

अगर कोई कहे कि ज़मीन मेरी मिलकियत है तो ज़मीन हँस देती है। कंजूसको देखकर धन हँस पड़ता है और रणसे डरनेवालेको देखकर काल अट्टहास कर उठता है। – तेलुगुके सन्त कवि वेमना

ज्ञानीको सबसे ज़्यादा चक्करमें डालनेवाली चीज़ है बेवक़ूफ़की हँसी ।
— लॉर्ड बायरन

हानि

राज्यकी ओरसे हमपर जो कर लगे हुए हैं वे बेशक कड़े हैं । मगर उतना ही महसूल हमें आलस्यको, उससे दूना घमण्डको और चौगुना बेवक़ूफ़ी-को देना पड़ता है । — फ्रैंकलिन

अपनेको नुक़सान पहुँचानेवाले खुद हम ही हैं । — अज्ञात

गधेका सर धोना साबुन ख़राब करना है । — स्पेनी कहावत

चीज़ खो गयी, उसकी क़ीमत मालूम हो गयी । — फ़ान्सीसी कहावत

एक खोया, दो पाये । — डच कहावत

हास्य

हास्य आनन्दका व्यक्त रूप है । — श्री ब्रह्मचैतन्य

जब हँस सको ज़रूर हँसो । यह बड़ी सस्ती दवा है । — लॉर्ड बायरन

हँसिए और मोटे हो जाइए, जनाब । — बैन जॉनसन

उससे ज़्यादा निपट दुःखी कोई नहीं जो अत्यधिक हँसता है । — रिचटर

बेवक़ूफ़का हँसना ऐसा है जैसे भाड़में चनोंका भुनना । — बाइबिल

हँसनेकी बात न हो, तो भी बेवक़ूफ़ हँसता है । — मीनेण्डर

हित

एक-दूसरेके वास्तविक हित एक-दूसरेसे विरुद्ध रहते ही नहीं । — ज्ञानेश्वर

अपना हित देहबुद्धिके नष्ट हो ज़ानेमें है । — सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

हिसाब

ईश्वरकी बहीमें हमारी करनी ही लिखी जाती है, हमारी पठनी-कथनी नहीं । — महात्मा गान्धी

हिंसा

वृक्षोंको छिन्न-भिन्न करनेसे, पशुओंकी हत्या करनेसे, खून-खराबी करनेसे अगर स्वर्ग मिले तो फिर नरकमें कौन जायगा ? — संस्कृत रत्नाकर

इस खाककी खूराक जिस्मके लिए दूसरोंको तकलीफ़ देना कहाँतक मुनासिब है ? — संस्कृत-सूक्ति

जो हिंसा बन्द करना चाहते हैं उन्हें शोषण बन्द करनेका उपाय करना चाहिए। — धीरेन्द्र मजूमदार

कोई मुझे क्षति पहुँचाता है तो अपने-आपको ही क्षति पहुँचाता है। क्या मैं उसे क्षति पहुँचाकर अपने-आपको क्षति पहुँचाऊँ ? — एपिक्टेटस

जो बदको बख्श देता है नेकको ईज़ा पहुँचाता है। — पब्लियस साइरस

मैं किसीकी हत्या करनेकी नीचतापर उतरूँ इससे पहले यही अच्छा है कि कोई और मुझे मार डाले। — खलील जिब्रान

जहाँ मन, वचन या कायसे तथाकथित विरोधीको हानि पहुँचानेका इरादा है वहाँ हिंसा है। — गान्धी

खुद और भी बड़ी ईज़ा पाये बग़ैर तुम किसीको ईज़ा नहीं पहुँचा सकते।
— डॉक्टर आरनॉट

मारेगा तो तू भी मारा जायेगा और जो तुझे मारेगा वह भी मारा जायगा। — स्पेनी कहावत

जो तलवार उठायेंगे, तलवारके घाट उतार दिये जायेंगे। — बाइबिल

यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिंसापर कोई शाश्वत चीज़ खड़ी नहीं की जा सकती। — महात्मा गान्धी

तू किसीकी जान हर्गिज़ नहीं लेगा। — बाइबिल

जो प्राणियोंकी हिंसा स्वयं करता है, दूसरोंसे कराता है या हिंसा करनेवालोंका अनुमोदन करता है वह संसारमें अपने लिए वैरको बढ़ाता है।
— भगवान् महावीर

मानसिक हिंसामें शक्ति नहीं होती, वह तो उसी शख्सको हानि पहुँचाती है जिसके विचार हिंसापूर्ण हैं। — गान्धी

आतंक और धोखा सशक्तके नहीं दुर्बलके हथियार हैं। — गान्धी

बेक़सूरकी हत्या करना बड़ा भयंकर है। — अथर्ववेद

देखना ! निरपराधकी हिंसा करना बड़ा भयंकर है। — अथर्ववेद

हनने लायक़ तो तू खुद ही है। — आचारांग

हज़ार इबादत करें, हज़ार दान करें, हज़ार जागरण करें, हज़ार भजन करें, हज़ार रोज़े रखें; हज़ार नमाज़ पढ़ें – कुछ क़ुबूल न होगा अगर किसीका दिल आपने दुखा दिया। — शेख़ सादी

प्राणियोंका वध अधर्म है। — महाभारत शान्तिपर्व

खानेके लिए पशु-पक्षियोंका नाश करनेवाले आगे पशु-पक्षी ही बनते हैं। — उपासनी

कष्ट पानेवालेको अपेक्षा कष्ट देनेवालेको ही अधिक दुःख सहना पड़ता है। — अरण्डेल

ओ मुल्ला, मनको मार। स्वादका घाट छोड़। सब सूरतें सुबहानकी हैं। ऐ ग़ाफ़िल, गला न काट। — रज्जबजी

हीनता

हीनताका मूल क्या है ? याचना। महत्त्वका मूल क्या है ? अयाचन। — शंकराचार्य

सन्तोंके सामने तुम कबतक हीन बनते रहोगे ? स्पर्श पाकर, स्वयं सन्त बन जाओ। — स्वामी रामदास

हुस्न

'ज़र्रेका हुस्न ज़र्रा नहीं आफ़ताब है।' — एक उर्दू शायर

हेतु

मानव शरीरमें रहनेवाली तमाम शक्तियोंकी शुद्धि और वृद्धि करके अपनी पूर्णता साधना जीवनका हेतु है। — नाथजी

अनेक मत हैं; अनेक साधन हैं; हज़ारों प्रकारकी क्रियाएँ हैं; उन सबका हेतु एक ही है — दोषोंकी निवृत्ति और परमेश्वरकी प्राप्ति।

— श्री ब्रह्मचैतन्य

हृदय

मैं शास्त्रज्ञ हूँ, हाँलाकि मैं बुद्धिका काफ़ी उपयोग कर लेता हूँ, लेकिन जो कुछ बोलता हूँ और लिखता हूँ वह बुद्धिसे नहीं पैदा होता, उसका मूल हृदयमें रहता है, और हृदयकी बात निबन्धके रूपमें नहीं आ सकती।

— गान्धी

जो दिलसे आता है, दिलतक जाता है। — जर्मन कहावत

क्ष

क्षणिक

जिसका लंका-सा क़िला था, समुद्र-सी खाई थी, उस रावणकी खबर नहीं मिलती। — कबीर

संसारमें जो वस्तु पैदा होती है वह मिटती है। उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए। — ब्रह्मपुराण

क्या माँगूँ ! कुछ क़ायम नहीं रहता। आँखों देखते दुनिया चली जा रही है। जिस रावणके एक लाख पूत सवालाख नाती थे उसके घरमें न दीया है न बाती। — कबीर

इस दुनियामें कोई चीज़ टिकनेवाली नहीं है। तू इसमें ग़फ़लतसे अपनी उम्र न गुज़ार। — सादी

फ़ायदेवाले बहुत हो गये, इज्ज़तवाले बहुत हो गये। वे फ़ायदा और इज्ज़तके साथ ख़बर नहीं कहाँ चले गये। — बोधिचर्यावतार

तू ही है कि अनन्तानन्त वस्तुवैचित्र्यरूपी भावाभाव-विलासिनीके साथ इस तरह विलास करता है मानो वह नित्य ही हो। — योगवाशिष्ठ

यौवन, रूप, जीवन, रत्नराशि, ऐश्वर्य, प्रियसंवास — अनित्य हैं। समझदार इनमें मोहित नहीं होते। महर्षि शौनक

सब क्षणिक वस्तुएँ प्रभुमें शाश्वत हैं। — ट्रेहर्न

यह भी नहीं रहेगा। — सुलैमान

क्षति

औरोंने तुम्हारे प्रति जो अपराध किये हों उनका उपाय है उन्हें भूल जाना। — सायरस

जो दूसरोंको नुक़सान पहुँचाना चाहता है वह अपना नुक़सान पहले कर लेता है। — हज़रतअली

क्षमा

क्षमा करनेसे ही मनुष्य क्षमाका पात्र बनता है। — सन्त फ़ान्सिस

क्षमा कर देना शत्रुपर विजय प्राप्त कर लेना है। — हज़रतअली

ज्ञानका भूषण क्षमा है। — क्षेमेन्द्र

क्षमा करना अच्छा है, भूल जाना सबसे अच्छा है। — ब्राउनिंग

जिसके हाथमें क्षमाका धनुष है, दुर्जन उसका क्या कर लेगा?
— वृद्ध चाणक्य-नीति

क्षमाके समुद्रको क्रोधकी चिनगारीसे गरम नहीं किया जा सकता।
— सुभाषित-संचय

दूसरेका अपराध सहनकर अपराधीपर उपकार करना, यह क्षमाका गुण पृथ्वीसे सीखना, और पृथ्वीपर सदा परोपकाररत रहनेवाले पर्वत और वृक्षोंसे परोपकारकी दीक्षा लेना। — भगवान् श्रीकृष्ण

मैं सब जीवोंको क्षमा करता हूँ, सब जीव मुझे क्षमा करें। सब जीवोंसे मेरी मित्रता है, मेरा किसीसे भी वैर नहीं है। — भगवान् महावीर

जिसके हाथमें क्षमाकी तलवार है, उसका दुर्जन क्या कर सकते हैं ? तृण-रहित स्थानमें गिरी हुई अग्नि स्वयं शान्त हो जाती है।

— संस्कृत-सूक्ति

मानव कभी इतना सुन्दर नहीं लगता जितना कि उस समय जब कि वह क्षमाके लिए प्रार्थना कर रहा हो। या जब वह किसीको क्षमा प्रदान कर रहा हो। — रिचटर

औरोंको अकसर क्षमा करो, खुदको कभी नहीं। — सायरस

दूसरोंकी बहुत-सी बातें माफ़ कर दो, लेकिन अपनी कोई नहीं।

— औसोनियस

मित्रकी अपेक्षा शत्रुको क्षमा करना सरल है। — डोरोथी डैल्यूजी

वृक्ष अपने काटनेवालेको भी छाया देता है। — चैतन्य

जगत्-पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।

— सेण्ट ल्यूक

नरकमें क्षमा नहीं है, स्वर्ग उससे भरा पड़ा है। — ऐस० जी० मिल्स

क्षुद्रता

मनुष्य सर्वत्र ही अपनी क्षुद्र बुद्धि और तुच्छ प्रवृत्तिका शासन फैलाकर कहीं भी सुख-शान्तिका स्थान न रहने देगा। — रवीन्द्रनाथ टैगोर

क्षेम

जो एकनिष्ठ होकर मेरा चिन्तन करते हैं और मेरी उपासना करते हैं, उनका योगक्षेम मैं चलाता हूँ। — भगवान् कृष्ण

ज्ञ

ज्ञाता

पहले ज्ञाता और ज्ञेयकी पृथक्ताका ज्ञान होता है, फिर इस भावके दृढ़ हो जानेपर ज्ञेय-ज्ञाताकी दमक ही मालूम पड़ने लगती है, और कुछ नहीं। — श्री उड़ियाबाबा

ज्ञेयका ध्यान न करना ही ज्ञाताका ध्यान है। — श्री उड़ियाबाबा

ज्ञान

ब्रह्म-विचारमें जिसका चित्त एक क्षणके लिए भी स्थिर हो गया, उसने समस्त-तीर्थ-सलिलमें स्नान कर लिया, सारी पृथ्वीका दान दे दिया, हज़ारों यज्ञ कर लिये, तमाम देवताओंका पूजन कर लिया तथा अपने पितरोंको संसार-सागरसे पार कर दिया और स्वयं तो वह त्रिलोक-पूज्य हो ही गया। — संस्कृत-सूक्ति

इनसानमें ज्ञान ही सार है। — माधव-वया

ज्ञान जब इतना घमण्डी बन जाय कि वह रो न सके, इतना गम्भीर बन जाय कि हँस न सके और इतना आत्मकेन्द्रित बन जाय कि अपने सिवा और किसीकी चिन्ता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञानसे भी ज्यादा ख़तरनाक होता है। — खलील जिब्रान

ज्ञानाग्नि सब कर्मोंको भस्म कर देती है। — भगवद्गीता

सब ज्ञानोंमें आत्म-ज्ञान श्रेष्ठ है। — मनुस्मृति

स्वयं ज्ञानी होकर औरोंको ज्ञान दे। — सामवेद

उस अनन्तको जान लेना ही असली ज्ञान है। उसे न जाननेसे इन्द्रियाँ ज़ोर करती हैं और यही बुराई है। लाओ-त्से —

सचमुच आँख खोलकर देखोगे तो तमाम छबियोंमें तुम्हें अपनी छबि दिखाई देगी। और अगर कान खोलकर सुनोगे तो तमाम ध्वनियोंमें तुम्हें अपनी ध्वनि सुनाई देगी। — खलील जिब्रान

सिर्फ़ एक बार ऐसा हुआ जब कि मैं निर्वाक् हो गया। वह तब जब कि एक आदमीने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो ?" – ख़लील जिब्रान

जब ईश्वरने मुझ कंकड़को इस अद्‌भुत झीलमें फेंका तो मैंने उसकी सतहको बेशुमार वर्तुलोंसे लहरायमान कर दिया। लेकिन जब मैं उसकी गहराइयोंमें पहुँचा तो मैं ख़ामोश हो गया। – ख़लील जिब्रान

ज्ञानका फल है हर जगह ईश्वर और शाश्वत आनन्दको देखना।
– स्वामी रामदास

ईश्वर दयालु है। वह हमें कटु अनुभवसे सिखाता है कि इच्छाएँ ही हमारी दुश्मन हैं। – स्वामी रामदास

ज्ञानका पहला असूल यह है कि असल हक़ीक़त एक है।
– डॉक्टर भगवानदास

हमारे चौतरफ़ छाया हुआ अन्धकार अभिशाप नहीं वरदान है। दैवी प्रकाशने एक क़दम रोशन कर दिया तो काफ़ी है। उसके बाद अगला क़दम भी ज़रूर सूझेगा। अन्धकार तभी निविड़ लगता है जब हम अपने अधैर्यके कारण उस एक क़दमसे आगे देखना चाहते हैं। – महात्मा गान्धी

ओ प्रेमल ज्योति, मुझे रास्ता दिखाती चल। मैं दूर तक नहीं देखना चाहता, मेरे लिए एक क़दम काफ़ी है। – कार्डिनल न्यूमैन

इस जीवनमें परब्रह्मको जान लिया तो कुशल है; नहीं तो महाविनाश है।
– उपनिषद्

जिसने दुराचरणका त्याग नहीं किया, जिसका मन शान्त नहीं है, जिसका चित्त एकाग्र नहीं है, वह परमात्माको नहीं जान सकता। – उपनिषद्

शास्त्र पढ़ा मगर पाने योग्य पदको नहीं पाया तो शास्त्र भार है। पढ़कर विचार-चर्चा की मगर सार ग्रहण नहीं किया तो विचार-चर्चा भी भार है। – योगवाशिष्ठ

भगवान्‌ने पत्ते-पत्तेपर ज्ञान लिखा है, मगर हमें वह लिपि नहीं मालूम ।

— अज्ञात

वास्तवमें मेरा केवल यही ज्ञान है कि केवल मैं ही मैं हूँ ।

— भगवान् श्रीकृष्ण

ज्ञानके सूर्यका उदय होनेपर तृष्णाकी रात्रि समाप्त हो जाती है ।

— योगवाशिष्ठ

अक़्लमन्द लोगोंके खेल-कूदसे ही सब कुछ सीख लेता है । बेवक़ूफ़ तत्त्व-ज्ञानके सौ अध्याय सुननेके बाद भी कुछ नहीं सीखता । — शेख़ सादी

युक्तियुक्त वचन बालकका भी ग्रहण कर लो; युक्तिशून्य वचन ब्रह्माका भी त्याग कर दो । — व्यास मुनि

आत्मज्ञान ही सम्यक्ज्ञान है । — समर्थ गुरु रामदास

हमारेमें जो अच्छी बातें हैं, उन्हींको तुम मानो दूसरीको नहीं ।

— तैत्तिरीयोपनिषद्

ज्ञान मोक्षका साक्षात् कारण है । जैसे आग बिना पाक नहीं, उसी तरह ज्ञान बिना मोक्ष नहीं । — आत्मबोध

विचारके सिवा अन्य किसी साधनसे ज्ञान पैदा नहीं होता ।

— अपरोक्षानुभूति

जिस सन्मतिवालेकी भोगलालसा दिन-ब-दिन कम होती जाय उसीका विचार सफल हुआ समझना । — योगवाशिष्ठ

समुद्रका-सा गाम्भीर्य, मेरुका-सा धैर्य, क्षौर चन्द्रमाकी-सी शीतलता विचार-सिद्धमें उत्पन्न होती है । — योगवाशिष्ठ

ज्ञानानुभवका कारण केवल शिष्यकी प्रज्ञा है । — योगवाशिष्ठ

आत्मा ही ज्ञान है और वही एकमेव सत्य है । विविधताका भान अज्ञान है । ऐसा मिथ्या ज्ञान भी ज्ञानस्वरूप आत्मासे भिन्न नहीं है ।

— रमण महर्षि

जिस स्थितिमें कुछ जानना नहीं है अथवा जानना नहीं रहता वही सच्चा ज्ञान है। जानना सच्चा ज्ञान नहीं है। आत्मा ही ज्ञान है, कारण कि वह अन्य कुछ जाननेकी और किसीको जनानेकी अपेक्षा रहित प्रकाशित है। वह शून्य नहीं है। – रमण महर्षि

केवल एक अद्वितीय आत्मा है ऐसा दृढ़ निश्चय होना ही ज्ञान है।
– भागवत

ज्ञानकी कुंजी तपस्या है। – तपस्वी भरद्वाज

किसीके आत्मज्ञानका अन्दाज़ा इसीसे होता है कि वह ईश्वरके कितने नज़दीक पहुँचा हुआ है। – तपस्वी सर्री सकती

शुद्ध सम्यक् ज्ञान माने दुनियाकी किसी चीज़की प्रतीति न होना।
– उपासनी

शुद्ध प्रतीति = बोधमात्र = शुद्ध ब्रह्म = निजरूप = अखण्ड आनन्द।
– उपासनी

किताबोंका अन्त नहीं, वक़्त थोड़ा है और आदमी कम अक़्ल। इसलिए तू वही सीख जिससे बुढ़ापे और मौतका ख़ात्मा कर सके। – मुनि रामसिंह

ईश्वरका डर ज्ञानकी शुरूआत है। – इंजील

"अगर मुझे मालूम होता" से सावधान रहो। – इटालियन कहावत

जिससे धर्म-ज्ञान प्राप्त करे उसके प्रति विनयी होना चाहिए, उसे साष्टांग सम्मान देना चाहिए। – भगवान् महावीर

शोकके हज़ारों और भयके सैकड़ों मुक़ाम हैं, वे बेवक़ूफ़पर ही अपना असर डालते हैं, समझदारपर नहीं। – नारद० पूर्व०

भक्तिसे ज्ञान होता है और ज्ञानका अर्थ है – भगवान्‌का दर्शन हो जाना।
– श्री हरिहरबाबा

उत्तम बातको चाहे कोई बच्चा ही बतलावे, तुच्छ न समझ, अमूल्य मोतीका मूल्य घट नहीं जाता, चाहे उसे किसी बच्चेने ही समुद्रसे निकाला हो।
– अज्ञात

दिमाग़में भरे हुए ज्ञानका अंश जितना काममें लाया जाय उतने ही का कुछ मूल्य है, बाक़ी सब व्यर्थ बोझा है। – महात्मा गान्धी

ज्ञान अज्ञानका नाश करता है, व्यवहारका नहीं। दैवी सम्पत्ति ज्ञानको पुष्ट करती है और आसुरी उसका आच्छादन करती है, इसलिए शुभ कर्मको छोड़ना नहीं चाहिए। चित्तका स्वभाव ही चिन्तन करना है। शुभ कर्म छोड़ देनेसे मन विषय-चिन्तन करेगा। कर्म बुद्धिका विषय है, साक्षीका नहीं। अतः विचारवान् पुरुष कर्म करता हुआ उसका साक्षी बना रहे। – श्री उड़ियाबाबा

मतवादी तत्त्ववादीकी बात नहीं समझता। उल्लू दिनको रात समझता है। – दरिया साहब

कुछ लोगोंको सोसाइटीका बड़ा ज्ञान होता है, मानवजातिका बिलकुल नहीं। – डिसराइली

जीवन-विज्ञान इसमें है कि हम जितनी बुराइयोंको रोक सकें रोकें, और जो अवश्यम्भावी है, उसका सर्वोत्तम सदुपयोग करें। – रस्किन

ज्ञानमें जो पुरुषार्थ न हो, शक्ति निर्माण करनेका गुण न हो, तो ज्ञान अज्ञानमें कुछ फ़र्क नहीं है। – नाथजी

जिस तरह अच्छी तरह जलती हुई आग ईंधनको भस्म कर देती है, उसी तरह ज्ञानाग्नि सब कर्मोंको भस्म कर देती है। – गीता

जिसने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, उसपर काम और लोभका विष नहीं चढ़ता। – रामकृष्ण परमहंस

जिससे परमात्मा जाना जाता है वही ज्ञान है, बाक़ी सब अज्ञान है। – समर्थ गुरु रामदास

ज्ञान मनको पवित्र बनानेवाला है। – सूक्ति-मुक्तावलि

ज्ञान आदमीका तीसरा नेत्र है। – सुभाषित-रत्न सन्दोह

ज्ञानके समान और कोई सुख नहीं है। – तत्त्वामृत

ज्ञानी प्रकाशके मार्गपर चलते हैं, अज्ञानी अन्धकारके रास्तेपर, तावक़्ते कि वो ज्ञानी नहीं हो जाते । — अज्ञात

अपने आपको जानो । — चिलन और थेल्स

ज्ञानका नौ-दशमांश समयपर ज्ञानसे काम लेनेमें है । — थ्योडोर रूज़वेल्ट

साँपकी तरह समझदार बन और कबूतरकी तरह निर्दोष । — बाइबिल

सर्वाधिक कल्याणकारी वस्तु ज्ञान है । — सन्त ऑगस्ताइन

दुनियामें नीति, भविष्य, वेद, शास्त्र और ब्रह्मके जाननेवाले मिल सकते हैं, परन्तु अपने अज्ञानके जाननेवाले विरले ही हैं । — संस्कृत-सूक्ति

अपने घरसे बाहर निकले बग़ैर भी आदमी दुनियाको जान सकता है ।
— लाओत्ज़े

जीवनमें सबसे मुश्किल चीज़ है अपनेको जानना । — थेल्स

ज्ञानके बीज एकान्तमें बोये जाने चाहिए, लेकिन वे फलित होने चाहिए सबके बीच । — पौलक

अल्प ज्ञान बड़ी खतरनाक चीज़ है । या तो गहरा पी वर्ना इस गंगोत्रीको स्पर्श ही न कर । — पोप

ज्ञान सीखनेसे नहीं आता। वह तो इनसानको भगवान्‌की देन है ।
— पॉल फ़्लैमिंग

शब्दातीत त्रिगुणरहित तत्त्वबोधको प्राप्त कर । जिसकी सन्देहवृत्ति नष्ट हो गयी है उसके भेद और अभेद तत्काल गल जाते हैं, पुण्य और पाप विशीर्ण हो जाते हैं; माया और मोक्ष क्षीण हो जाते हैं, त्रिगुणातीत मार्गमें विचरनेवाले उस योगीके लिए क्या विधि है और क्या निषेध ?
— शुकाष्टक

जिसे आत्मज्ञान प्राप्त करनेकी लालसा न हो, उसका जीनेकी अपेक्षा मर जाना ही अच्छा है । — ज्ञानेश्वरी

ज्ञान स्वयं शुद्ध होनेपर भी काम और क्रोधसे आच्छादित रहनेके कारण गूढ़ बना रहता है । — ज्ञानेश्वरी

तुम चाहे पापोंके सागर, अज्ञानके आगर और विकारोंके पर्वत ही क्यों न हो, तो भी परम ज्ञानकी शक्तिके सामने सब दोष तुच्छ हैं। जिस ज्ञानके प्रकाशके सामने उस अमूर्त्त परमतत्त्वकी विश्वाभास-रूपी छाया भी बाक़ी नहीं रह जाती, उस ज्ञानको तुम्हारे मनका मल दूर करनेमें कितना परिश्रम करना पड़ेगा ? – ज्ञानेश्वरी

जिसे आत्म-ज्ञान हो जाता है उसमें वह माया नहीं रहती जिससे सब कर्म उत्पन्न होते हैं। – ज्ञानेश्वरी

न इधर ही कुछ है न उधर ही, जहाँ-जहाँ जाता हूँ वहाँ कुछ भी नहीं है। विचार करके देखता हूँ तो यह जगत् भी कुछ नहीं है। स्वात्माके बोधसे बढ़कर कुछ भी नहीं है। – संस्कृत-सूक्ति

कामके समान कोई रोग नहीं, मोहके समान कोई शत्रु नहीं, क्रोधके समान कोई आग नहीं, ज्ञानके समान कोई सुख नहीं। – चाणक्य-नीति

यदि तुम्हें मेरे सत्स्वरूपका ज्ञान हो जाय, और किसी प्रकारका ज्ञान न भी हो, तो तुम सुखी ही होगे। – भगवान् कृष्ण (ज्ञानेश्वरी)

जो ज्ञान मनको शुद्ध करे वही ज्ञान है। शेष सब अज्ञान है। – रामकृष्ण परमहंस

पहले तुम 'परम ज्ञान' के समुद्रकी तरंग बनो। फिर तुम देखोगे कि स्वयं तुम ही यह सब चराचर जगत् हो। – ज्ञानेश्वरी

ज्ञानकी क़ीमत लालोंसे बढ़कर है। – बाइबिल

ज्ञान उड़नेकी बनिस्बत झुकनेके वक़्त हमारे ज़्यादा नज़दीक होता है।
– वर्ड्सवर्थ

ज्ञानका पर्यवसान चारित्र-निर्माणमें होना चाहिए। – गान्धी

सच्चे ज्ञानकी हर वृद्धि मानवीय शक्तिकी वृद्धि है। – होरेसमैन

ज्ञाननिष्ठा

जब सारा प्रपंच गन्धर्वनगरवत् या आकाश-कुसुमवत् मालूम होने लगे और कोई भी चमकीला विषय अपनी ओर न खींच सके तब समझना कि ज्ञाननिष्ठा पूर्ण हो गयी। – उड़ियाबाबा